॥ श्री सिद्धांत प्रकरण संग्रह ॥

सुधारा वधारा सहित,

छपावी प्रसिद्ध करनार

श्रीजीवनदास रुगनाथदास शाह,

आकाशेठना कुवानी पोळ—अमदावाद.

आवृत्ति १ ली   प्रत १०००   संवत १९७८   सने १९२१

किम्मत त्रे रुपैया पाका पुंठाना २—८—०

प्रस्तावना.

श्रीजिनवरेंद्रायनमः ॥ श्री जैन धर्मी साधु साध्वी श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध संघने ज्ञान दर्शन चारित्र तप ए ४ मोक्ष मार्गना हेतु छे तेहमां पण ज्ञान ए मुख्य हेतु छे. केमके दशवैकालिक अध्ययन चोथे पढमंनाणं तओदया कह्यु छे वळि नंदिसूत्रमां नवपूर्वना भणनार मां सम्यक्त्व भजना कहि छे, ने उपरना पूर्व भणनारमां नियमां सम्यक्त्व कह्युं छे. तेमज भगवतीमां एकला शीलसंपन्न ने देशआराधक कह्या छे, ने एकला श्रुतसंपन्न ने देशविराधक कह्या छे माटे सूत्र सिद्धांत वांचवानां जैनमां ज्ञान विशेष छे. ते ज्ञान भणवाथि हेय ज्ञेय ने उपादेय पदार्थनुं जाणपणुं थाय छे. जेथि जिवने वैराग्य दशा प्राप्त थाय छे. ने परंपराए मोक्षनि गतिनो लाभ थाय छे, एवं ज्ञाननुं माहात्म्य जाणिने आजना अल्प बुद्धि जिवोने थोडा काळमां विशेष ज्ञान थवा माटे श्री सिद्धांत प्रकरण संग्रह ३२ थोकडानुं पुस्तक मर्हुम श्रीमन्मंगळजी महाराजना शिष्य मुनि करसनजी महाराज पासे शुद्ध करावी छपावि प्रसिद्ध कर्युं छे तेमां कोइ भूल चुक रहि गइ होय तो पंडित जन अमारा उपर कृपा करि सिद्धांत तथा ग्रंथ जोइ सुधारि लेशो ए अमारि विनंति छे आ पुस्तक उघाडे मुखे तथा दिवाने अजवाळे वांचवुं नहि जेथि ज्ञाननि आशातना न थाय.

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा सोम संवत १९७८ }

ली. त्रीलोचनदास भगवानदास शाह.
पालशेटना पुरानी पोळ–अमदावाद.

॥ अनुक्रमणिका ॥

आ पुस्तक अमदावाद प्रसिद्ध कर्ता पासेथी तेमज निचेना ठेकाणेथी मळशे. जेनस्थानकवासी विद्यालय सी. पी. टेंकरोड नं. ५३–५७ मुंबाइ. श्रावक नोसनी माणेक–मांजनी बंदर–मुंबाइ. शा. बालाभाइ छगनलाल कीकाभटनी पोळ–अमदावाद. संघवी–बाडीलाल काकुभाइ सारंगपर तळीयानी पोळ–अमदावाद.

॥ अथ श्री नवतत्वनो थोकडो. ॥

श्रीपार्श्वनाथाय नमः ॥ अथ श्री नवतत्व लिख्यते ॥ हवे विवेकि सम्यक्त्वदृष्टि जीवने । नव पदार्थ जेहवा छे । तेहवा । तथारूप बुद्धिप्रमाणे गुरु आम्नायथि धारवा ॥ ते नवपदार्थना नाम कहेछे ॥ जीवतत्व ॥ १ ॥ अजीवतत्व ॥ २ ॥ पुण्यतत्व ॥ ३ ॥ पापतत्व ॥ ४ ॥ आश्रव तत्व ॥ ५ ॥ संवरतत्व ॥ ६ ॥ निर्जरातत्व ॥ ७ ॥ बंधतत्व ॥ ८ ॥ मोक्षतत्व ॥ ९ ॥ हवे जीवतत्व ते केहने कहिये ॥ चैतन्यलक्षण ॥ सदासउपयोगी ॥ असंख्यात प्रदेशी । सुख दुःखनो जाण ॥ सुखदुःखनो वेदक तेहने जीवतत्व कहिये ॥ १ ॥ अजीवतत्व ते केहने कहिये जडलक्षण ॥ चैतन्यरहित ॥ तेहने अजीवतत्व कहिये ॥ २ ॥ पुण्यतत्व ते शुभ कमाणिये करी ॥ शुभ कर्मने उदये करी ॥ जेहना फल आत्माने भोगवतां मीठां लागे तेहने पुण्यतत्व कहिये ॥ ३ ॥ पापतत्व ते अशुभ कमाणिये करी ॥ अशुभ कर्मने उदये करी ॥ जेहना फल आत्माने भोगवता कडुवा लागे । तेहने पापतत्व कहिये ॥४॥ आश्रव-तत्व ते । अव्रतने अपच्चखाणे करी । विषय कषायने सेववेकरी ॥ आत्मारूपतलावने विषे ॥

इंद्रियादिक घरनाले छिद्रकरी । कर्म पापरूप जलनो प्रवाह आवे । तेहने आश्रवतत्व कहिये ॥५॥ संवरतत्व ते जीवरूप तलावने विषे ॥ कर्मरूप जल आवतां व्रतपच्चखाणादिक द्वार देवेकरी रोकीये ॥ तेहने संवरतत्व कहिये ॥६॥ निर्जरातत्व ते ॥ आत्माना प्रदेशथि बार भेदे तपस्याये करी देशथकि कर्मनुं निर्जरवुं करीने दूर थावुं ॥ तेहने निर्जरातत्व कहिये ॥ ७ ॥ बंधतत्व ते । आत्माना प्रदेशने कर्मपुद्गलना दल खीरनीरनी परे ॥ लोहपिंड अग्निनी परे । लोलीभूत अन्योन्यभाव ॥ तेहने बंधतत्व कहिये ॥७॥ मोक्षतत्व ते सकल आत्माना प्रदेशथि सकल कर्मनुं छुटवुं ॥ सकल बंधनु मुकावबु ॥ सकल कार्यनि सिद्धि थाय ॥ तेहने मोक्षतत्व कहिये ॥९॥ ए नव पदार्थनुं जाणपणुं ॥ तेहने तत्व कहिये ॥ हवे जीवनो एक भेद छे ॥ सकल जीवोनुं चैतन्य लक्षण एक छे ॥ माटे संग्रहनये करि एक भेदे जीव कहिये ॥ तथा बे प्रकारे पण जीव कहिये ॥ त्रस ॥१॥ थावर ॥२॥ तथा ॥ सिद्ध ॥१॥ ने संसारी ॥२॥ तथा त्रण भेदे जीव ॥ स्त्री वेद ॥ १ ॥ पुरुषवेद ॥ २ ॥ नपुंसकवेद ॥ ३ ॥ तथा भवसिद्धिया ॥१॥ अभवसिद्धिया ॥२॥ नोभवसिद्धिया नोअभवसिद्धिया ॥३॥ तथा-च्यार भेदे जीव ॥ नारकी ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ मनुष्य ॥ ३ ॥ देवता ॥ ४ ॥ तथा

चक्षुदर्शनी ॥ १ ॥ अचक्षुदर्शिनी ॥ २ ॥ अवधि दर्शनी ॥३॥ केवलदर्शनी ॥४॥ तथा पांच प्रकारे जीव ॥ एकेंद्रिय ॥१॥ बे इंद्रिय ॥२॥ तेइंद्रिय ॥३॥ चउरिंद्रिय ॥४॥ पचेंद्रिय ॥५॥ तथा । सजोगी ॥ १ ॥ मनजोगी ॥ २ ॥ वचनजोगी ॥ ३ ॥ कायजोगी ॥ ४ ॥ अजोगी ॥ ५ ॥ तथा । छ प्रकारे जीव ॥ पृथवीकाय ॥१॥ अप्काय ॥ २ ॥ तेउकाय ॥३॥ वाउकाय ॥ ४ ॥ वनस्पतिकाय ॥ ५ ॥ त्रसकाय ॥ ६ ॥ तथा ॥ सकषायी ॥ १ ॥ कोहकषायी ॥ २ ॥ मानकषायी ॥ ३ ॥ मायाकषायी ॥ ४ ॥ लोभकषायी ॥ ५ ॥ अकषायी ॥६॥ तथा सात प्रकारे जीव । नारकी ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ तिर्यचणी ॥ ३ ॥ मनुष्य ॥ ४ ॥ मनुष्यणी ॥ ५ ॥ देवता ॥ ६ ॥ देवी ॥ ७ ॥ तथा । आठ प्रकारे जीव सलेशी ॥१॥ कृष्णलेशी ॥२॥ निललेशी ॥ ३ ॥ कापुतलेशी ॥ ४ ॥ तेजुलेशी ॥ ५ ॥ पद्मलेशी ॥ ६ ॥ शुकललेशी ॥ ७ ॥ अलेशी ॥ ८ ॥ तथा नव । प्रकारे जीव ॥ पृथवी ॥ १ ॥ अप ॥२॥ तेउ ॥३॥ वाउ ॥४॥ वनस्पति ॥५॥ बेइंद्रिय ॥६॥ तेइंद्रिय ॥ ७ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ८ ॥ पचेंद्रिय ॥ ९ ॥ तथा दश भेदे जीव ॥ एकेंद्रिय ॥१॥ बेइंद्रिय ॥२॥ ते इंद्रिय ॥३॥ चउरिंद्रिय ॥४॥ पचेंद्रिय ॥५॥

ए ५ ना अप्रजासा । ने । प्रजासा । एवं ॥१०॥ तथा ॥ इग्यार नेदे जीव ॥ एकेंद्रिय ॥१॥ बेइंद्रिय ॥ २ ॥ तेइंद्रिय ॥३॥ चउरिंद्रिय ॥४॥ नारकी ॥५॥ तिर्यंच ॥६॥ मनुष्य ॥ ७ ॥ नवनपति ॥ ८ ॥ वाणव्यंतर ॥ ए ॥ ज्योतिषी ॥ १० ॥ वैमानिक ॥ ११ ॥ तथा ॥ १२ ॥ नेदे जीव ॥ पृथवी ॥१॥ अप ॥ २ ॥ तेउ ॥३॥ वाउ ॥४॥ वनस्पति ॥५॥ त्रसकाय ॥६॥ ए ठना अप्रजासा ने प्रजासा ॥ एवं ॥ १२ ॥ तथा तेरनेदे जीव ॥ कृष्णलेशी ॥ १ ॥ निललेशी ॥ २ ॥ कापुतलेशी ॥ ३ ॥ तेजुलेशी ॥ ४ ॥ पद्मलेशी ॥ ५ ॥ शुक्ललेशी ॥ ६ ॥ ए। ठना अप्रजासा ने प्रजासा एवं ॥ १२ ॥ ने । एक अलेशी ॥ १३ ॥ एवं ॥ १३ ॥ हवे जीवना ॥ १४ ॥ नेद कहे ठे ॥ सुक्ष्म एकेंद्रियनो अप्रजासो ॥ १ ॥ ने प्रजासो ॥ २ ॥ बादर एकेंद्रियनो अप्रजासो ॥ ३ ॥ ने प्रजासो ॥ ४ ॥ बेइंद्रियनो । अप्रजासो ॥ ५ ॥ ने । प्रजासो ॥६॥ तेइंद्रियनो । अप्रजासो ॥७॥ ने । प्रजासो ॥८॥ चउरिंद्रियनो अप्रजासो ॥ ए ॥ ने प्रजासो ॥ १० ॥ असंज्ञी पंचेंद्रियनो अप्रजासो ॥ ११ ॥ ने प्रजासो ॥१२॥ संज्ञी पंचेंद्रियनो अप्रजासो ॥१३॥ ने प्रजासो ॥१४॥ हवे व्यवहार विस्तार नये करीने पांचसेत्रे-

सठ भेद जीवना कहे छे ॥ तेहमां त्रणसेनेत्रणभेद मनुष्यना ॥ एकसोअठाणुभेद देवताना ॥ अम्तालीस भेद तिर्यंचना ॥ चउदभेद नारकीना ॥ एवं ॥५६३॥ भेद जीवना कह्या ॥ हवे तेहमां ॥ मनुष्यना ॥३०३॥ भेद कहेछे ॥ ते ॥ १५ कर्म भूमिना मनुष्य ॥३०॥ अकर्मभूमिना मनुष्य ॥ ५६ ॥ अंतर द्विपना मनुष्य ॥ एवं ॥ १०१ क्षेत्रना गर्भज मनुष्यना ॥ अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ॥ एवं ॥ २०२ ॥ ने एकसोने एक क्षेत्रना समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता एवं ॥३०३ भेद मनुष्यना ॥ हवे कर्मभूमि ते केहने कहिये ॥ असी ॥ १ ॥ मसी ॥ २ ॥ कृषी ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ प्रकारना व्यापारे करी जीवे तेहने कर्मभूमिनां मनुष्य कहिये ॥ ते कर्मभूमिना क्षेत्र केटलाछे ॥५॥ भरत ॥५॥ इरवत ने ॥ ५ महाविदेह । एवं ॥१५॥ ते कर्मभूमि किहां छे ॥ एकलाख जोजननो जबुद्विप छे ॥ तेहमां ॥ १ ॥ भरत ॥ १ ॥ इरवत ॥ १ ॥ महाविदेह ए ॥३॥ क्षेत्र कर्मभूमिनां जंबुद्विपमां छे ॥ तेहने फरतो ॥ बे लाख जोजननो लवण समुद्र छे ॥ तेहने फरतो चारलाख जोजननो धातकीखंडद्विप छे ॥ तेहमां ॥ २ ॥ भरत ॥ २ ॥ इरवत ॥ २ ॥ महाविदेह छे ॥ तेहने फरतो ॥८॥ लाख जोजननो । कालोदधि समुद्र छे ॥

तेहने फरतो ॥८॥ लाख जोजननो । अर्द्धपुष्कर । द्विप छे ॥ तेहमां ॥ २ भरत ॥ २ इरवत ॥२
महाविदेह छे ॥ एवं । छहु ॥१२॥ ने ॥३॥ पनर कर्मभूमिना मनुष्य कह्या ॥ हवे ३० अकर्मभू-
मिना मनुष्य कहेछे ॥ अकर्मभूमि ते केहने कहिये ॥ ३ कर्मरहित दशप्रकारना कल्पवृक्षेकरीने
जीवे तेहने अकर्मभूमिना मनुष्य कहिये ॥ ते केटला छे ॥५॥ हेमवय ॥ ५ हिरणवय ॥ ५हरि-
वास ॥ ५ रमकवास ॥ ५ देवकुरु ॥ ५ उतरकुरु ॥ एवं ॥३०॥ अकर्मभूमिना मनुष्य जाणवा ॥
हवे जंबुद्विपमां ॥ १ हेमवय ॥ १ हिरणवय ॥ १ हरिवास ॥ १ रमकवास ॥ १ देवकुरु ॥ १
उतरकुरु ॥ एवं ॥ ६ ॥ क्षेत्रजंबुद्विपमां छे ॥ धातकिखंडमां बबे जाणवा ॥ एवं ॥ १८ ॥
अर्द्धपुष्करद्विपमां बबे जाणवा ॥ एवं ॥३०॥ अकर्मभूमिना मनुष्य कह्या ॥ हवे छपनअं-
तरद्विपना मनुष्य कहे छे ॥ जंबुद्विपना भरतक्षेत्रनि मर्यादानो करणहार । चुल हिमवंतनामा
पर्वत छे ॥ ते पीला सोनामय छे ॥ ते सो जोजननो उंचो छे ॥ सो गाउनो उंडो छे ॥ एकहजार
बावन जोजन ने बार कलानो पहोलो छे ॥ चोविशहजार नवशेंबत्रिश जोजननो लांबो छे ॥
तेहने पूर्व पश्चिमने छेहडे बबे डाढा निकलि छे ॥ एकेकि डाढा चोरासीशे चोरासीशे जोजननी

झाझेरी लांबि छे॥ते एकेकि माढाउपरे॥सातसात अंतरद्वीपाछे॥ तेअंतरद्वीपा किहांछे॥ जग-
तिना कोटथकि ॥३००॥ जोजनलवणसमुद्रमां जाइये । तिवारे पहेलो अंतरद्वीपो आवे ॥ते॥
३००॥जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहांथि ॥४००॥ जोजन जाइये ॥ तिवारे बिजो अंतर
द्वीपो आवे ते ॥ ४०० ॥ जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहांथि ॥ ५०० ॥ जोजन
जाइये तिवारे ॥ त्रिजो अंतरद्वीपो आवे ॥ ते ॥५००॥ जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहां
थि छसे जोजन जाइये तिवारे ॥ चोथो अंतरद्वीपो आवे ते ॥६००॥ जोजननो लांबो ने पहो
लो छे ॥ तिहांथि ॥७००॥ जोजन जाइये तिवारे । पांचमो अंतरद्वीपो आवे ॥ ते ॥ ७०० ॥
जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहांथि ॥८००॥ जोजन जाइये तिवारे छठो अंतरद्वीपो
आवे ॥ ते ॥८००॥ जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहांथि ॥९००॥ जोजन जाइये तिवारे
सातमो अंतरद्वीपो आवे ते ॥९००॥ जोजननो लांबो ने पोहोलो छे॥ एव। सात चोकु॥२८॥
अंतरद्वीपा जाणवा ॥ एमज ऐरवतक्षेत्रनी मर्यादानो करणहार शिखरीनामे पर्वत छे ॥ ते चुल
हिमवंत शरिखो जाणवो ॥ तिहां पण ॥२८॥ अंतरद्वीपा छे ॥ अठाविश ५ ॥५६॥ अंतर द्वीपा

जाणवा ॥ अंतरद्वीपाना मनुष्य ते केहने कहिये ॥ छेठे समुद्र छे ॥ अने उपर आभर
भाढामां द्वीपाना रहेनार छे ॥ माटे अंतर द्वीपाना मनुष्य कहिये । हवे १०१ क्षेत्रना समु.छिम
मनुष्य ॥१४ स्थानकमां उपजे छे ते कहेछे ॥ उच्चारेसुवा ते वडिनितमां उपजे ॥१॥ पासवणे-
सुवा ते लघुनितमां उपजे ॥२॥ खेले सुवा ते बलखामां उपजे ॥३॥ सघाणेसुवा ते लिटमां
उपजे ॥४॥ वंतेसुवा ते वमनमां उपजे ॥५॥ पीत्तेसुवा ते निलापिला पीतमां उपजे ॥६॥
पुअएसुवा ते परुमां उपजे ॥७॥ सोणिएसुवा ते रुधिरमां उपजे ॥८॥ सुक्केसुवा ते विर्यमा उपजे
॥९॥ सुक्कपोगलपरिसाडिएसुवा ते विर्यादिकना पुजलसुकाणा ते फिरि निना थाय तेहमां
उपजे ॥ १० ॥ विगयजीव कलेवरेसुवा ते मनुष्यना कलेवरमा उपजे ॥ ११ ॥ इत्थिपुरिस
संजोगेसुवा ते स्त्रीपुरुषना संजोगमां उपजे ॥ १२ ॥ नगरनिधमणेसुवा ते नगरनी खालोमां
उपजे ॥१३॥ सव्वेसुचेवअसुइठाणेसुवा ते सर्वमनुष्य संबधिअशुचिस्थानकोमा उपजे ॥१४॥
एवं ॥ १०१ क्षेत्रनासमुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता ॥ एव सर्व मिली ॥३०३॥ भेद मनुष्यना
कह्या ॥ हवे देवताना ॥ १९८ ॥ भेद कहेछे ॥ तेहमां । दश भवनपतिना नाम ॥ असुर

कुमार ॥१॥ नागकुमार ॥ २ ॥ सुवर्णकुमार ॥ ३ ॥ विज्जुकुमार ॥ ४ ॥ अग्निकुमार ॥ ५ ॥ द्वीपकुमार ॥ ६ ॥ उदधिकुमार ॥ ७ ॥ दिशाकुमार ॥ ८ ॥ पवनकुमार ॥ ए ॥ थणितकुमार ॥१०॥ हवे ॥१५॥ परमाधामिना नाम कहेछे ॥ अंब ॥ १ ॥ अंबरिस ॥२॥ शाम ॥३॥ सबल ॥ ४ ॥ रुद्र ॥ ५ ॥ वेरुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महाकाल ॥ ८ ॥ असिपत्र ॥ ए ॥ धनुष्य ॥१०॥ कुंभ ॥११॥ वालु ॥१२॥ वेतरणी ॥ १३ ॥ खरस्वर ॥ १४ ॥ महाघोष ॥१५॥ सोल वाणव्यतरना नाम पिशाच ॥१॥ भूत ॥ २ ॥ जक्ष ॥३॥ राक्षस ॥ ४ ॥ किन्नर ॥५॥ किंपुरिस ॥ ६ ॥ महोरग ॥ ७ ॥ गंधर्व ॥ ८ ॥ आणपन्नी ॥ ए ॥ पाणपन्नी ॥ १० ॥ इसिवाइ ॥ ११ ॥ भूइवाइ ॥१२॥ कंदिय ॥ १३ ॥ महाकंदिय ॥ १४ ॥ कोहंड ॥ १५ ॥ पयगदेव ॥१६॥ दश जंभकाना नाम ॥ आणजंभका ॥१॥ पाणजंभका ॥ २ ॥ लयणजंभका ॥३॥ शयणजंभका ॥४॥ वत्थजंभका ॥ ५ ॥ पुप्फजंभका ॥ ६ ॥ फलजंभका ॥ ७ ॥ बीय जंभका ॥८॥ विज्जुजंभका ॥ए॥ अवियत्त जंभका ॥१०॥ दश ज्योतिषीना नाम ॥ चंद्रमा ॥ १ ॥ सूर्य ॥२॥ ग्रह ॥३॥ नक्षत्र ॥४॥ तारा ॥५॥ ए ॥५ ॥ चल ने अढि द्वीपमा छे । ने ॥ ५

कुमार ॥१॥ नागकुमार ॥ २ ॥ सुवर्णकुमार ॥ ३ ॥ विज्जुकुमार ॥ ४ ॥ अग्निकुमार ॥ ५ ॥ द्वीपकुमार ॥ ६ ॥ उदधिकुमार ॥ ७ ॥ दिशाकुमार ॥ ८ ॥ पवनकुमार ॥ ए ॥ थणितकुमार ॥१०॥ हवे ॥१५॥ परमाधामिना नाम कहेछे ॥ अंब ॥ १ ॥ अंबरिस ॥२॥ शाम ॥३॥ सबल ॥ ४ ॥ रुद्र ॥ ५ ॥ वैरुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महाकाल ॥ ८ ॥ असिपत्र ॥ ए ॥ धनुष्य ॥१०॥ कुंभ ॥११॥ वालु ॥१२॥ वेतरणी ॥ १३ ॥ खरस्वर ॥ १४ ॥ महाघोष ॥१५॥ सोल वाणव्यतरना नाम पिशाच ॥१॥ भूत ॥ २ ॥ जक्ष ॥३॥ राक्षस ॥ ४ ॥ किन्नर ॥५॥ किंपुरिस ॥ ६ ॥ महोरग ॥ ७ ॥ गंधर्व ॥ ८ ॥ आणपन्नी ॥ ए ॥ पाणपन्नी ॥ १० ॥ इसिवाइ ॥ ११ ॥ भूतवाइ ॥१२॥ कंदिय ॥ १३ ॥ महाकंदिय ॥ १४ ॥ कोहंड ॥ १५ ॥ पयगदेव ॥१६॥ दश जंभकाना नाम ॥ आणजंभका ॥१॥ पाणजंभका ॥ २ ॥ लयणजंभका ॥३॥ शयणजंभका ॥४॥ वत्थजंभका ॥ ५ ॥ पुप्फजंभका ॥ ६ ॥ फलजंभका ॥ ७ ॥ बीय जंभका ॥८॥ विज्जुजंभका ॥ए॥ अवियत जंभका ॥१०॥ दश ज्योतिषीना नाम ॥ चंद्रमा ॥ १ ॥ सूर्य ॥२॥ ग्रह ॥३॥ नक्षत्र ॥४॥ तारा ॥५॥ ए ॥५॥ चल ने अढि द्वीपमा छे । ने ॥ ५

सुक्ष्म ॥१॥ प्रत्येक ॥ २ ॥ ने । साधारण ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ ना । अप्रजाप्ता ने ॥ ३ ॥ ना । प्रजाप्ता ॥ ए ॥६॥ एवं ॥२२॥ एकेंद्रियना ॥ त्रण विकलेंद्रिय ॥ बे इंद्रिय ॥ १ ॥ ने इंद्रिय ॥२॥ चउरिंद्रिय ॥३॥ ए ॥३॥ ना अप्रजाप्ता ने ॥३॥ ना । प्रजाप्ता । ए ॥ ६ ॥ एवं ॥२७॥ जलचर ॥१॥ थलचर ॥ २ ॥ उरपर ॥ ३ ॥ भुजपर ॥ ४ ॥ खेचर ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ॥ समुर्छिम ने ॥५॥ गर्भज ॥ एवं ॥१०॥ ना । अप्रजाप्ता ने ॥ १० ॥ ना । प्रजाप्ता ॥ ए ॥ २० ॥ एवं ॥४७॥ भेद तिर्यंचना कह्या । हवे ॥१४॥ भेद नारकिना कहेछे ॥ सात नरकना नाम॥ घमा ॥१॥ वशा ॥२॥ शिला ॥३॥ अजणा ॥४॥ रिठा ॥५॥ मघा ॥६॥ माघवइ ॥७॥ हवे ए ॥ ७ ॥ ना गोत्र कहेछे रत्नप्रभा ॥ १ ॥ शर्करप्रभा ॥ २ ॥ वालुप्रभा ॥ ३ ॥ पंकप्रभा ॥ ४ ॥ धुमप्रभा ॥ ५ ॥ तमप्रभा ॥ ६ ॥ तमतमाप्रभा ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ ना अप्रजाप्ता । ने ॥७॥ ना प्रजाप्ता । एवं ॥१४॥ भेद नारकिना कह्या ॥ एव । सर्व मिलीने ॥५६३॥ भेद जीवना जाणवा ॥ इति जीवतत्त्व समाप्तं ॥१॥ हवे अजीवतत्त्वना ॥ १४ ॥ भेद कहेछे ॥ धर्मास्तिकायनो स्कंध ॥ १ ॥ देश ॥ २ ॥ प्रदेश ॥ ३ ॥ अधर्मास्तिकायनो ॥ स्कंध ॥४॥

कालथकि अनादिअनंत ॥२८॥ नावथकि । अवर्णे । अगंधे । अरसे । अफासे । अमूर्ति ॥२९॥ गुणथकि वर्त्तनालक्षण ॥ २० ॥ एवं ॥ २० ॥ ने ॥ १० ॥ पूर्वे कह्या ते ॥ एवं ॥ ३० ॥ नेद अरूपि अजीवना जाणवा ॥ हवे ॥५३०॥ नेदरूपि अजीवना कहेछे तेहमां । वर्ण ॥ ५ ॥ कालो ॥ १ ॥ निलो ॥ २ ॥ रातो ॥ ३ ॥ पिलो ॥ ४ ॥ धोलो ॥ ५ ॥ एकेका वर्णमाहि वीश वीश नेद लाने ॥ ते ॥२॥ गंध ॥ ५ ॥ रस ॥ ५ ॥ संठाण ॥ ८ ॥ स्पर्श ॥ एव । विश पचा सो ॥ हवे ॥२॥ गध ते । सुरन्निगंध ॥ १ ॥ डुरन्निगध ॥ २ ॥ एकेका गधमाहि त्रेविश त्रे-विश नेद लाने ॥५॥ वर्ण ॥५॥ रस ॥ ५ ॥ सठाण ॥ ८ ॥ स्पर्श । एव ॥ ४३ छेतालिश नेद जाणवा ॥ हवे ॥५॥ रस ते ॥ तिखो ॥ १ ॥ कडुवो ॥ २ ॥ कसायलो ॥ ३ ॥ खाटो ॥ ४ ॥ मिठो ॥ ५ ॥ एकेका रसमां वीश वीश नेद लाने ॥ ५ ॥ वर्ण ॥ २ ॥ गध ॥ ५ ॥ संठाण ॥८॥ स्पर्श । एव । वीश पचा सो ॥ हवे ॥५॥ सठाण ॥ परिमंडल सठाण ॥ १ ॥ वटसंठाण ॥ २ ॥ त्रंश संठाण ॥३ ॥ चउरस सठाण ॥ ४ ॥ आयतसठाण ॥ ५ ॥ एकेका संठाणमां वीश वीश नेद लाने ॥५॥ वर्ण ॥२॥ गध ॥५॥ रस ॥८॥ स्पर्श । एव । वीश पचा

जाणवा॥ अंतरद्वीपाना मनुष्य ते केहने कहिये॥ हेठे समुद्र छे ॥ अने उपर आ,धर
काढामां द्वीपाना रहेनार छे ॥ माटे अंतर द्वीपाना मनुष्य कहिये । हवे १०१ क्षेत्रना समु,र्छिम
मनुष्य ॥१४ स्थानकमां उपजे छे ते कहेछे ॥ उच्चारेसुवा ते वडिनितमां उपजे ॥१॥ पासवणे-
सुवा ते लघुनितमां उपजे ॥२॥ खेले सुवा ते बलखामां उपजे ॥३॥ सघाणसुवा ते लिंटमां
उपजे ॥४॥ वंतेसुवा ते वमनमां उपजे ॥५॥ पीत्तेसुवा ते निलापिला पीतमां उपजे ॥६॥
पुअसुवा ते पस्मां उपजे ॥७॥ सोणिएसुवा ते रुधिरमां उपजे ॥८॥ सुक्केसुवा ते विर्यमा उपजे
॥९॥ सुक्कपोगलपरिसाडिएसुवा ते विर्यादिकना पुद्गलसुकाणा ते फिरि तिना थाय तेहमां
उपजे ॥ १० ॥ विगयजीव कलेवरेसुवा ते मनुष्यना कलेवरमा उपजे ॥ ११ ॥ इत्थिपुरिस
संजोगेसुवा ते स्त्रीपुरुषना सजोगमां उपजे ॥ १२ ॥ नगरनिधमणेसुवा ते नगरनी खालामां
उपजे ॥१३॥ सव्वसुचेवअसुइठाणेसुवा ते सर्वमनुष्य सवधिअशुचिस्थानकोमां उपजे ॥१४॥
एवं ॥ १०१ क्षेत्रनासमुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता ॥ एव सर्व मिली ॥३०३॥ भेद मनुष्यना
कह्या ॥ हवे देवताना ॥ १९८ ॥ भेद कहेछे ॥ तेहमां । दश भवनपतिना नाम ॥ असुर

कुमार ॥१॥ नागकुमार ॥ २ ॥ सुवर्णकुमार ॥ ३ ॥ विज्जुकुमार ॥ ४ ॥ अग्निकुमार ॥ ५ ॥
द्वीपकुमार ॥ ६ ॥ उदधिकुमार ॥ ७ ॥ दिशाकुमार ॥ ८ ॥ पवनकुमार ॥ ९ ॥ थणितकु-
मार ॥१०॥ हवे ॥१५॥ परमाधामिना नाम कहेछे ॥ अंब ॥ १ ॥ अंबरिस ॥२॥ शास ॥३॥
सबल ॥ ४ ॥ रुद्र ॥ ५ ॥ वैरुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महाकाल ॥ ८ ॥ असिपत्र ॥ ९ ॥
धनुष्य ॥१०॥ कुंभ ॥११॥ वालु ॥१२॥ वेतरणी ॥ १३ ॥ खरस्वर ॥ १४ ॥ महाघोष ॥१५॥
सोल वाणव्यंतरना नाम पिशाच ॥१॥ भूत ॥ २ ॥ जक्ष ॥३॥ राक्षस ॥ ४ ॥ किन्नर ॥५॥
किंपुरिस ॥ ६ ॥ महोरग ॥ ७ ॥ गधर्व ॥ ८ ॥ आणपन्नी ॥ ९ ॥ पाणपन्नी ॥ १० ॥ इसि-
वाइ ॥ ११ ॥ भूइवाइ ॥१२॥ कदिय ॥ १३ ॥ महाकदिय ॥ १४ ॥ कोहंड ॥ १५ ॥ पयग-
देव ॥१६॥ दश जंभकाना नाम ॥ आणजभका ॥१॥ पाणजभका ॥ २ ॥ लयणजभका ॥३॥
शयणजंभका ॥४॥ वत्थजंभका ॥ ५ ॥ पुप्फजंभका ॥ ६ ॥ फलजभका ॥ ७ ॥ बीय जभका
॥८॥ विज्जुजंभका ॥९॥ अवियत जभका ॥१०॥ दश ज्योतिषीना नाम ॥ चंद्रमा ॥ १ ॥
सूर्य ॥२॥ ग्रह ॥३॥ नक्षत्र ॥४॥ तारा ॥५॥ ए ॥५॥ चल ते अढि द्वीपमा छे । ने ॥ ५

स्थिर ते अढि द्वीपबाहिर छे ॥ एव ॥१०॥ हवे ॥३॥ किल्बिषिना नाम ॥ त्रण पलिया ॥१॥ त्रण सागरिया ॥२॥ तेर सागरिया ॥३॥ नव लोकांतिकना नाम ॥ सारस्वत ॥ १ ॥ आदित्य ॥२॥ विन्हि ॥३॥ वरुण ॥४॥ गर्द्दतोया ॥५॥ तोषिया ॥ ६ ॥ अव्याबाधा ॥ ७ ॥ अगिच्चा ॥ ८ ॥ रिठा ॥९॥ बार देवलोकना नाम ॥ सुधर्म ॥१॥ इशान ॥२॥ सनत्कुमार ॥३॥ माहेंद्र ॥४॥ ब्रह्मलोक ॥५॥ लंतक ॥ ६ ॥ महाशुक्र ॥ ७ ॥ सहस्रार ॥ ८ ॥ आणत ॥९॥ प्राणत ॥ १० ॥ आरण ॥ ११ ॥ अच्चुय ॥ १२ ॥ नव ग्रीवेकना नाम ॥ भद्दे ॥ १ ॥ सुभद्दे ॥ २ ॥ सुजाए ॥ ३ ॥ सुमाणसे ॥ ४ ॥ प्रियदर्शणे ॥ ५ ॥ सुदंशने ॥ ६ ॥ आमोहे ॥७॥ सुपडिबद्धे ॥८॥ जशोधरे ॥ ९ ॥ पांच अनुत्तर विमानना नाम ॥ विजय ॥ १ ॥ विजयंत ॥२॥ जयंत ॥३॥ अपराजित ॥४॥ सर्वार्थसिद्ध ॥ ५ ॥ ए ९९ जातना देवता अप्रजाप्ता ने ॥ ९९ जातना प्रजाप्ता । एव ॥१९८॥ भेद देवताना कह्या ॥ हवे तिर्यंचना ॥४८॥ भेद कहे छे ॥ पृथ्वी ॥१॥ पाणि ॥२॥ तेउ ॥ ३ ॥ वाउ ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ सुक्ष्म ने ॥ ४ बादर ॥ एव ॥८॥ ए ना अप्रजाप्ता ने ॥ ८ ना प्रजाप्ता ॥ एवं ॥१६॥ वनस्पतिना ॥३॥ भेद ॥

सुक्ष्म ॥१॥ प्रत्येक ॥ २ ॥ ने । साधारण ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ ना । अप्रजाप्ता ने ॥ ३ ॥ ना ।
प्रजाप्ता ॥ ए ॥६॥ एवं ॥२२॥ एकेंद्रियना ॥ त्रण विकलेंद्रिय ॥ बे इंद्रिय ॥ १ ॥ ते इंद्रिय
॥२॥ चउरिंद्रिय ॥३॥ ए ॥३॥ ना अप्रजाप्ता ने ॥३॥ ना । प्रजाप्ता । ए ॥ ६ ॥ एव ॥२७॥
जलचर ॥१॥ थलचर ॥ २ ॥ उरपर ॥ ३ ॥ भुजपर ॥ ४ ॥ खेचर ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ॥ समु-
र्छिम ने ॥५॥ गर्भज ॥ एवं ॥१०॥ ना । अप्रजाप्ता ने ॥ १० ॥ ना । प्रजाप्ता ॥ ए ॥ २० ॥
एव ॥४७॥ भेद तिर्यंचना कह्या । हवे ॥१४॥ भेद नारकिना कहेछे ॥ सात नरकना नाम॥
घमा ॥१॥ वंशा ॥२॥ शिला ॥३॥ अजणा ॥४॥ रिठा ॥५॥ मघा ॥६॥ माघवइ ॥७॥ हवे ए
॥ ७ ॥ ना गोत्र कहेछे रत्नप्रभा ॥ १ ॥ शर्करप्रभा ॥ २ ॥ वालुप्रभा ॥ ३ ॥ पंकप्रभा
॥ ४ ॥ धुमप्रभा ॥ ५ ॥ तमप्रभा ॥ ६ ॥ तमतमाप्रभा ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ ना अप्रजाप्ता ।
ने ॥७॥ ना प्रजाप्ता । एवं ॥१४॥ भेद नारकिना कह्या ॥ एव । सर्व मिलीने ॥५६३॥ भेद
जीवना जाणवा ॥ इति जीवतत्त्व समाप्तं ॥१॥ हवे अजीवतत्त्वना ॥ १४ ॥ भेद कहेछे ॥
धर्मास्तिकायनो स्कंध ॥ १ ॥ देश ॥ २ ॥ प्रदेश ॥ ३ ॥ अधर्मास्तिकायनो ॥ स्कंध ॥४॥

देश ॥ ५ ॥ प्रदेश ॥ ६ ॥ आकाशास्ति कायनो स्कंध ॥ ७ ॥ देश ॥ ८ ॥ प्रदेश ॥ ९ ॥ अद्धासमयकाल ॥१०॥ ए ॥१०॥ नेद अरूपि अजीवना कह्या ॥ हवे रूपि अजीवना ॥ ४ नेद कहेठे ॥ पुद्गलास्तिकाय नो स्कध ॥ ११ ॥ देश ॥ १२ ॥ प्रदेश ॥ १३ ॥ परमाणु पुद्गल ॥ १४ ॥ एवं ॥ १४ ॥ हवे व्यवहार विस्तारनयेकरी ॥ ५६० ॥ नेद अजीवतत्वना कहेठे ॥ तेहमां ॥३०॥ नेद । अरूपि अजीवना कहेठे ॥ धर्मास्तिकाय द्रव्यथकि एक॥१॥ क्षेत्रथकि आखा लोक प्रमाणे ॥२॥ कालथकि अनादिअनंत ॥३॥ नावथकि । अवर्णे अगंधे । अरसे । अफासे । अमूर्त्ति ॥४॥ गुणथकि चलणसहाय ॥ ५ ॥ अधर्मास्तिकाय द्रव्यथकि एक ॥६॥ क्षेत्रथकि आखा लोकप्रमाणे ॥७॥ कालथकि अनादिअनंत ॥ ८ ॥ नावथकि । अवर्णे । अगंधे । अरसे । अफासे । अमूर्त्ति ॥९॥ गुणथकि स्थिर सहाय ॥१०॥ आकाशास्तिकाय द्रव्यथकि एक ॥११॥ क्षेत्रथकि लोकालोक प्रमाणे ॥ १२ ॥ कालथकि अनादि अनंत ॥ १३ ॥ नावथकि । अवर्णे । अगंधे । अरसे । अफासे । अमूर्त्ति ॥ १४ ॥ गुणथकि ॥ अवगाहनादान ॥१५॥ हवे काल द्रव्यथकि अनेक ॥१६॥ क्षेत्रथकि । अढिद्वीपप्रमाणे॥१७॥

कालथकि अनादिअनंत ॥१८॥ नावथकि । अवर्णे । अगंधे । अरसे । अफासे । अमूर्ति॥१९॥
गुणथकि वर्त्तनालक्षण ॥ २० ॥ एवं ॥ २० ॥ ने ॥ १० ॥ पूर्वे कह्या ते ॥ एवं ॥ ३० ॥ नेद
अरूपि अजीवना जाणवा ॥ हवे ॥५३०॥ नेदरूपि अजीवना कहेछे तेहमां । वर्ण ॥ ५ ॥
कालो ॥ १ ॥ निलो ॥ २ ॥ रातो ॥ ३ ॥ पिलो ॥ ४ ॥ धोलो ॥ ५ ॥ एकेका वर्णमाहि वीश
वीश नेद लाने ॥ ते ॥२॥ गंध ॥ ५ ॥ रस ॥ ५ ॥ संठाण ॥ ८ ॥ स्पर्श ॥ एव । विश पचा
सो ॥ हवे ॥२॥ गध ते । सुरनिगंध ॥ १ ॥ डुरनिगध ॥ २ ॥ एकेका गधमाहि त्रेविश त्रे-
विश नेद लाने ॥५॥ वर्ण ॥५॥ रस ॥ ५ ॥ संठाण ॥ ८ ॥ स्पर्श । एव ॥ २३ डुवेनालिश
नेद जाणवा ॥ हवे ॥५॥ रस ते ॥ तिखो ॥ १ ॥ कडुवो ॥ २ ॥ कसायलो ॥ ३ ॥ खाटो
॥ ४ ॥ मिठो ॥ ५ ॥ एकेका रसमां वीश वीश नेद लाने ॥ ५ ॥ वर्ण ॥ २ ॥ गध ॥ ५ ॥
संठाण ॥८॥ स्पर्श । एव । वीश पचा सो ॥ हवे ॥५॥ संठाण ॥ परिमंडल संठाण ॥ १ ॥
वटसंठाण ॥ २ ॥ त्रंश संठाण ॥३ ॥ चउरस संठाण ॥ ४ ॥ आयतसंठाण ॥ ५ ॥ एकेका
संठाणमां वीश वीश नेद लाने ॥५॥ वर्ण ॥२॥ गध ॥५॥ रस ॥८॥ स्पर्श । एव । वीश पचा

सो ॥ हवे ॥८॥ स्पर्श । खरखरो ॥१॥ सुंहालो ॥२॥ नारि ॥३॥ हलवो ॥४॥ टाढो ॥५॥ उन्हो ॥६॥ चोपड्यो ॥ ७ ॥ लुखो ॥ ८ ॥ एकेका स्पर्शमा । त्रेविश त्रेवीश नेद लाने ॥ ५ वर्ण ॥२॥ गंध ॥ ५ ॥ रस ॥ ५ ॥ संठाण ॥ ६ ॥ स्पर्श ॥ एवं ॥ २३ ॥ नेद लाने । खरख-रामां खरखरो ने सुंहालो वे वर्जवा ॥ एम वे स्पर्श वर्जवा ॥ एवं ॥ २३ अठा १८४ ॥ एवं सर्व मिलिने ॥५३०॥ नेदरूपि अजीवना कह्या ॥ एवं सर्व मिलिने ॥५६०॥ नेद । अजीवना जाणवा ॥ इति अजीवतत्व समाप्तं ॥ २ ॥ हवे नव नेदे पुण्य उपराजे ते कहे ने ॥ अन्नपुन्ने ॥१॥ पाणपुन्ने ॥२॥ लयणपुन्ने ॥३॥ शयणपुन्ने ॥ ४ ॥ वत्रपुन्ने ॥ ५ ॥ मनपुन्ने ॥ ६ ॥ वचन पुन्ने ॥७॥ कायपुन्ने ॥८॥ नमस्कार पुन्ने ॥९॥ ए ॥९॥ नेदे पुण्य उपराजे ॥ तेहना शुन फल ॥४२॥ नेदे जोगवे ॥ शातावेदनिय ॥१॥ उंच गोत्र ॥२॥ मनुष्यगति ॥३॥ मनुष्यानुपूर्वी ॥४॥ देवतानि गति ॥५॥ देवानुपूर्वी ॥६॥ पचेंद्रियनि जाति ॥७॥ उदारिक शरिर ॥८॥ वैक्रेय शरिर ॥९॥ अहारक शरिर ॥१०॥ तेजस शरिर ॥११॥ कार्मण शरिर ॥१२॥ उदारिकना अंग उपांग ॥१३॥ वैक्रेयना अंग उपांग ॥१४॥ आहारकना अंग उपांग ॥१५॥ वज्रऋषिन-

नाराचसंघयण ॥ १६ ॥ समचउरंशसंठाण ॥ १७ ॥ शुभवर्ण ॥ १८ ॥ शुभगंध ॥ १९ ॥ शुभरस ॥ २० ॥ शुभस्पर्श ॥ २१ ॥ अगुरु लघुनाम ॥ २२ ॥ पराघातनाम ॥ २३ ॥ उस्वास नाम ॥ २४ ॥ आतापनाम ॥ २५ ॥ उद्योतनाम ॥ २६ ॥ शुभचालवानि गति ॥ २७ ॥ निर्माणनाम ॥२८॥ त्रसनाम ॥२९॥ बादरनाम ॥३०॥ प्रजाप्तनाम ॥३१॥ प्रत्येकनाम ॥३२॥ स्थिरनाम ॥ ३३ ॥ शुभनाम ॥ ३४ ॥ सौभाग्यनाम ॥ ३५ ॥ सुस्वरनाम ॥ ३६ ॥ आदेय नाम ॥ ३७ ॥ जशोकीर्तिनाम ॥ ३८ ॥ देवतानुं आउष्य ॥३९॥ मनुष्यनु आउष्य ॥४०॥ तिर्यंचनुं आउष्य जुगलवत् ॥ ४१ ॥ तिर्थंकरनामकर्म ॥ ४२ ॥ एव ॥ ४२ ॥ भेद पुण्यना जाणवा इति पुण्यतत्वं समाप्तं ॥ ३ ॥ हवे ॥ १८ ॥ प्रकारे पाप उपराजे ते कहेछे ॥ प्राणा-तिपात ॥१॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥ मैथुन ॥४॥ परिग्रह ॥५॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥९॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥१३॥ पैशून्य ॥१४॥ परपरिवाद ॥ १५ ॥ रतिअरति ॥ १६ ॥ मायामोसो ॥ १७ ॥ मिथ्यादसणसल्ल ॥ एव ॥१८॥ हवे तेहना अशुभ फल ॥ ८२ ॥ प्रकारे भोगवे ते कहेछे ॥

सो ॥ हवे ॥८॥ स्पर्श । खरखरो ॥१॥ सुंहालो ॥२॥ नारि ॥३॥ हलवो ॥४॥ टाढो ॥५॥ उन्हो ॥६॥ चोपड्यो ॥७॥ लुखो ॥८॥ एकेका स्पर्शमां । त्रेविश त्रेवीश भेद लाभे ॥ ५ वर्ण ॥२॥ गंध ॥ ५ ॥ रस ॥ ५ ॥ संठाण ॥ ६ ॥ स्पर्श ॥ एवं ॥ २३ ॥ भेद लाभे । खरखरामां खरखरो ने सुंहालो बे वर्जवा ॥ एम बबे स्पर्श वर्जवा ॥ एवं ॥ २३ अठा १८४ ॥ एवं सर्व मिलिने ॥५३०॥ भेदरूपि अजीवना कह्या ॥ एव सर्व मिलिने ॥५६०॥ भेद । अजीवना जाणवा ॥ इति अजीवतत्वं समाप्तं ॥ २ ॥ हवे नव भेदे पुण्य उपराजे ते कहे छे ॥ अन्नपुन्ने ॥१॥ पाणपुन्ने ॥२॥ लयणपुन्ने ॥३॥ शयणपुन्ने ॥ ४ ॥ वत्थपुन्ने ॥ ५ ॥ मनपुन्ने ॥ ६ ॥ वचन पुन्ने ॥७॥ कायपुन्ने ॥८॥ नमस्कार पुन्ने ॥९॥ ए ॥९॥ भेदे पुण्य उपराजे ॥ तेहना शुभ फल ॥४२॥ भेदे भोगवे ॥ शातावेदनिय ॥१॥ उंच गोत्र ॥२॥ मनुष्यगति ॥३॥ मनुष्यानुपूर्वी ॥४॥ देवतानि गति ॥५॥ देवानुपूर्वी ॥६॥ पंचेंद्रियनि जाति ॥७॥ उदारिक शरिर ॥८॥ वैक्रेय शरिर ॥९॥ अहारक शरिर ॥१०॥ तेजस शरिर ॥११॥ कार्मण शरिर ॥१२॥ उदारिकना अंग उपांग ॥१३॥ वैक्रेयना अंग उपांग ॥१४॥ आहारकना अंग उपांग ॥१५॥ वज्ररिषभ-

नाराचसंघयण ॥ १६ ॥ समचउरंशसंठाण ॥ १७ ॥ शुभवर्ण ॥ १८ ॥ शुभगंध ॥ १९ ॥ शुभरस ॥ २० ॥ शुभस्पर्श ॥ २१ ॥ अगुरु लघुनाम ॥ २२ ॥ पराघातनाम ॥ २३ ॥ उस्वास नाम ॥ २४ ॥ आतापनाम ॥ २५ ॥ उद्योतनाम ॥ २६ ॥ शुभचालवानि गति ॥ २७ ॥ निर्माणनाम ॥२८॥ त्रसनाम ॥२९॥ बादरनाम ॥३०॥ प्रजाप्तनाम ॥३१॥ प्रत्येकनाम ॥३२॥ स्थिरनाम ॥ ३३ ॥ शुभनाम ॥ ३४ ॥ सौभाग्यनाम ॥ ३५ ॥ सुस्वरनाम ॥ ३६ ॥ आदेय नाम ॥ ३७ ॥ जशोकीर्तिनाम ॥ ३८ ॥ देवतानुं आउष्य ॥३९॥ मनुष्यनु आउष्य ॥४०॥ तिर्यंचनुं आउष्य जुगलवत् ॥ ४१ ॥ तिर्थंकरनामकर्म ॥ ४२ ॥ एवं ॥ ४२ ॥ भेद पुण्यना जाणवा इति पुण्यतत्वं समाप्तं ॥ ३ ॥ हवे ॥ १८ ॥ प्रकारे पाप उपराजे ते कहेछे ॥ प्राणातिपात ॥१॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥ मैथुन ॥४॥ परिग्रह ॥५॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥९॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥१३॥ पैशून्य ॥१४॥ परपरिवाद ॥ १५ ॥ रतिअरति ॥ १६ ॥ मायामोसो ॥ १७ ॥ मिथ्यादंसणसल्ल ॥ एवं ॥१८॥ हवे तेहना अशुभ फल ॥ ८२ ॥ प्रकारे नोगवे ते कहेछे ॥

मतिज्ञानावरणिय ॥१॥ श्रुतज्ञानावरणिय ॥ २ ॥ अवधिज्ञानावरणिय ॥ ३ ॥ मनपर्जवज्ञा-नावरणिय ॥ ४ ॥ केवलज्ञानावरणिय ॥ ५ ॥ दानांतराय ॥ ६ ॥ लाभांतराय ॥ ७ ॥ भोगांतराय ॥ ८ ॥ उपभोगांतराय ॥ ९ ॥ वीर्यांतराय ॥ १० ॥ निद्रा ॥ ११ ॥ निद्रा-निद्रा ॥ १२ ॥ प्रचला ॥ १३ ॥ प्रचलाप्रचला ॥ १४ ॥ थीणद्धिनिद्रा ॥१५॥ चक्षुदर्शना-वरणिय ॥ १६ ॥ अचक्षुदर्शनावरणिय ॥ १७ ॥ अवधिदर्शनावरणिय ॥ १८ ॥ केवलदर्श-नावरणिय ॥ १९ ॥ निचगोत्र ॥ २० ॥ अशातावेदनीय ॥ २१ ॥ मिथ्यात्वमोहनिय ॥२२॥ स्थावरपणुं ॥२३॥ सूक्ष्मपणुं ॥२४॥ अपजात्तपणुं ॥२५॥ साधारपणुं ॥२६॥ अस्थिरनाम ॥२७॥ अशुभनाम ॥ २८ ॥ दौर्भाग्यनाम ॥ २९ ॥ दुःस्वरनाम ॥ ३० ॥ अनादेयनाम ॥ ३१ ॥ अजशोकीर्तिनाम ॥ ३२ ॥ नरकगति ॥ ३३ ॥ नरकनुंआउखुं ॥ ३४ ॥ नरकानुपूर्वी ॥ ३५ ॥ अनंतानुबंधि क्रोध ॥ ३६ ॥ मान ॥ ३७ ॥ माया ॥ ३८ ॥ लोभ ॥ ३९ ॥ अपच्चखाणावरणिय ॥ क्रोध ॥ ४० ॥ मान ॥ ४१ ॥ माया ॥ ४२ ॥ लोभ ॥ ४३ ॥ पच्चखा-णावरणिय ॥ क्रोध ॥ ४४ ॥ मान ॥४५॥ माया ॥ ४६ ॥ लोभ ॥ ४७ ॥ संजलनो ॥ क्रोध

॥ ४८ ॥ मान ॥ ४९ ॥ माया ॥ ५० ॥ लोभ ॥५१॥ हास्य ॥५२ ॥ रति ॥ ५३ ॥ अरति ॥ ५४ ॥ भय ॥ ५५ ॥ शोक ॥ ५६ ॥ दुगंछा ॥ ५७ ॥ स्त्रीवेद ॥ ५८ ॥ पुरुषवेद ॥ ५९॥ नपुंसकवेद ॥ ६० ॥ तिर्यंचनी गति ॥६१॥ तिर्यंचनी अनुपूर्वी ॥ ६२ ॥ एकेंद्रियपणुं ॥६३॥ बेइंद्रियपणुं ॥ ६४ ॥ तेइंद्रियपणुं ॥ ६५ ॥ चउरिंद्रियपणु ॥६६॥ अशुभ चालवानि गति ॥६७॥ उपघातनामकर्म ॥६८॥ अशुभवर्ण ॥ ६९ ॥ अशुभगंध ॥ ७० ॥ अशुभरस ॥ ७१ ॥ अशुभस्पर्श ॥ ७२ ॥ रुषभनाराच संघयण ॥ ७३ ॥ नाराचसंघयण ॥ ७४ ॥ अर्द्धनाराचसंघयण ॥ ७५ ॥ किलकुसंघयण ॥ ७६ ॥ छेवट्ठसंघयण ॥ ७७ ॥ निगोहपरिमंडलसंठाण ॥ ७८ ॥ सादिसंठाण ॥ ७९ ॥ वामनसंठाण ॥ ८० ॥ कुब्जसंठाण ॥ ८१ ॥ हुंडसंठाण ॥ ८२ ॥ एवं ॥८३॥ भेद पापतत्त्वना जाणवा ॥ इति पापतत्त्व समाप्त ॥ ४ ॥ हवे आश्रवना सामान्य प्रकारे ॥२०॥ भेद कहे छे ॥ मिथ्यात्व ते आश्रव ॥ १ ॥ अव्रत ते आश्रव ॥ २ ॥ प्रमाद ते आश्रव ॥३॥ कषाय ते आश्रव ॥४॥ अशुभजोग ते आश्रव ॥ ५ ॥ प्राणातिपात ते आश्रव ॥ ६ ॥ मृषावाद ते आ० ॥७॥ अदत्तादान ते आ० ॥८॥ मैथुन ते आ० ॥ ९ ॥

परिग्रह ते आ० ॥१०॥ श्रोतेंद्रियअसंवरे ते आ०॥११॥ चक्षुइंद्रियअ०आ०॥१२॥ घ्राणेंद्रियअ०
आ० ॥१३॥ रसेंद्रियअ०आ० ॥१४॥ स्पर्शेंद्रियअ०आ० ॥१५॥ मनअ०आ० ॥ १६ ॥ वचन
अ०आ० ॥१७॥ कायअ०आ० ॥१८॥ भंडउपगरणउपधिजिमतिमलियेमुके ते आ० ॥१९॥
शुचिकुसग्ग करे ते आ० ॥ २० ॥ हवे विशेषे ॥ ४२ ॥ भेद कहेछे ॥ ५ ॥ आश्रव ॥ ५ ॥
इंद्रिय मोकलि मुके एवं ॥ १० ॥ ते ॥ ४ ॥ कषाय ॥ एवं ॥ १४ ॥ ते त्रण अशुभ जोग ।
एवं ॥ १७ ॥ ते ॥ २५ ॥ क्रिया ते ॥ कायिकी क्रिया ॥ १ ॥ अधिकरणकी क्रिया ॥ २ ॥
पाउसिया ॥ ३ ॥ पारितावणिया ॥ ४ ॥ पाणाइवाय ॥ ५ ॥ आरंभिया ॥ ६ ॥ परिग्ग-
हिया ॥ ७ ॥ मायावतिया ॥ ८ ॥ अपच्चखाणवतिया ॥ ९ ॥ मिछादंशणवतिया ॥ १० ॥
दिठीया ॥११॥ पुठिया ॥१२॥ पाडुचिया ॥ १३ ॥ सामतोवणिया ॥ १४ ॥ नेसथिया ॥१५॥
सहथिया ॥१६॥ अणवणिया ॥१७॥ विदारणिया ॥ १८ ॥ अणाभोगी ॥ १९ ॥ अणवकंख-
वतिया ॥ २० ॥ अनापउगी ॥ २१ ॥ सामुदाणी ॥ २२ ॥ पेजवतिया ॥ २३ ॥ दोसवतिया
॥ २४ ॥ इरियावहिया क्रिया ॥ २५ ॥ एवं ॥२५॥ ते ॥१७॥ बेतालीश भेद आश्रव तत्वना

जाणवा ॥ इति आश्रवतत्वं समाप्तं ॥५॥ हवेसंवरना सामान्य प्रकारे ॥२०॥ भेद कहेछे ॥ समकित ते संवर ॥१॥ व्रतपच्चखाण ते सं० ॥ २ ॥ अप्रमाद ते स० ॥ ३ ॥ अकषाय ते स० ॥४॥ शुभजोग ते सं० ॥५॥ जीवदया पालवी ते सं० ॥ ६ ॥ सत्यवचन बोलवुं ते स० ॥७॥ दत्तव्रत ग्रहण ते सं० ॥८॥ शियल पालवुं ते सं० ॥ ९ ॥ अपरिग्रह ते सं० ॥ १० ॥ इंद्रिय ॥ ५ ॥ जोग ॥ ३ ॥ ए ॥ ८ ॥ नुं संवरवुं ते स० । एवं ॥ १८ ॥ भंडउपगरणउपधि जतनायें लिये मुके ते सं० ॥१९॥ शुचिकुसग्ग न करे ते सं० ॥२०॥ हवे विशेष ॥५७॥ भेद कहेछे॥ इर्यासुमति ॥ १ ॥ भाषासुमति ॥२॥ एषणासुमति ॥ ३ ॥ आयाणभंडमत्तनिख्खेवणासुमति ॥४॥ उच्चारपासवणखेलजलसिंघाणपारिठावणीया सुमति ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ॥ सुमति ने ॥३॥ गुप्ति ते ॥ मनगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ ३ ॥ ए ८ प्रवचनमाता आदरवा ने ॥ २२ परिसह सहेवा ॥ ते कहेछे ॥ क्षुधानो परिसह ॥ १ ॥ तृषानो० ॥२॥ टाढनो० ॥ ३ ॥ तापनो० ॥ ४ ॥ दंशमंशनो० ॥ ५ ॥ अचेलनो० ॥ ६ ॥ अरतिनो० ॥ ७ ॥ स्त्रीनो० ॥ ८ ॥ चरियानो० ॥९॥ वेसवानो० ॥१०॥ सेजानो० ॥ ११ ॥ आक्रोश वचननो० ॥ १२ ॥ वधनो०

॥१३॥ जाचवानो० ॥ १४ ॥ अलाभनो० ॥ १५ ॥ रोगनो० ॥ १६ ॥ तृणस्पर्शनो० ॥ १७ ॥ मेलनो० ॥ १८ ॥ सत्कार पुरस्कारनो० ॥ १९ ॥ प्रज्ञानो० ॥२०॥ अज्ञाननो० ॥२१॥ दंशण परिसह ॥ २२ ॥ ए ॥ २२ ॥ भे ॥ ८ ॥ पूर्वे कह्या ते । एवं ॥ ३० ॥ खंति ॥ ३१ ॥ मुत्ति ॥ ३२ ॥ अज्जवे ॥ ३३ ॥ मद्दवे ॥ ३४ ॥ लाघवे ॥ ३५ ॥ सच्चे ॥३६॥ संजमे ॥ ३७ ॥ तवे ॥३८॥ चियाए ॥ ३९ ॥ बंभचेरवासे ॥४०॥ ए ॥ १० ॥ प्रकार जतिधर्म आराधवो ते ॥१२॥ भावना भाववी । तेहना नाम ॥ अनित्यभावना ॥ १ ॥ अशरणभा० ॥२॥ संसारभा० ॥३॥ एकत्वभा० ॥ ४ ॥ अन्यत्वभा० ॥५॥ अशुचिभा० ॥६॥ आश्रवभा० ॥ ७ ॥ संवरभा० ॥८॥ निर्जराभा० ॥ ९ ॥ लोकभा० ॥ १० ॥ बोधभा० ॥ ११ ॥ धर्मभा० ॥ १२ ॥ ए ॥ ४० ॥ ते ॥ १२ ॥ बावन । शामायकचारित्र ॥५३॥ छेदोपस्थापनिय० चा० ॥ ५४ ॥ परिहारविशुद्ध ॥५५॥ सुक्ष्मसंपराय० ॥ ५६ ॥ जथाख्यात० ॥ ५७ ॥ ए ॥ ५७ ॥ भेद संवरतत्वना जाणवा ॥ इति सवरतत्वं समाप्तं ॥६॥ हवे निर्जराना ॥१२॥ भेद कहे छे ॥ अनशन ॥१॥ ऊणोदरि ॥२॥ वृत्तिसंक्षेप ॥ ३ ॥ रसपरित्याग ॥४॥ कायक्लेश ॥५॥ पडिसंलिणया ॥६॥ ए ६ भेद बाह्य-

॥ हवे ब नेद अन्यंतरना कहेबे ॥ प्रायबित॥७॥विनय ॥८॥ वेयावच्च ॥९॥ सझाय
ज्यना कह्या ॥ हवे ब नेद अन्यंतरना कहेबे ॥ ध्यान ॥११॥ काउसग्ग ॥१२॥ एवं ॥१२॥ नेद निर्जरातत्त्वना कह्या ॥इति निर्जरातत्व
॥१०॥ ध्यान ॥११॥ काउसग्ग ॥१२॥ एवं ॥१२॥ नेद निर्जरातत्त्वना कह्या ॥इति निर्जरातत्व
समाप्तं ॥७॥ हवे बंधतत्त्वना ॥४॥ नेद कहेबे ॥ प्रकृतिबंध ॥१॥ स्थितिबंध॥२॥अनुनागबंध॥३॥
प्रदेशबंध ॥४॥ प्रकृतिबंध ते कर्मनो स्वनाव तथा परिणाम ॥१॥ स्थितिबंध ते जे कर्मनि
जेटलि स्थिति बे तेटलि ॥२॥ अनुनागबंध ते रस तिव्र मंद रसादि कर्मनो ॥३॥ प्रदेशबंध
ते कर्म पुजलना दल ॥ ४ ॥ ए ॥४॥ बंधनुं स्वरूप मोदकने दृष्टांते करी बतावेबे ॥ जिम
कोइ मोदक घणा प्रकारना द्रव्यने संजोगे निपनो ॥ वायुने तथा पीतने तथा श्लेष्मने जेणे
स्वरूपे करि हणे तेने स्वनाव कहिये ॥ १ ॥ तथा तेज मोदक । पक्ष । मास । त्रमास
त्रणमास चारमाससुधि ते रूपे करि रहे तेने स्थिति कहिये ॥ २ ॥ जिम वलि तेज मोदक
कोइ करुयो होय कोइ तीखो होय तेने रस कहिये ॥३॥ जीम वलि तेज मोदक कोइ अल्प
दलने परिमाणे निपनो । कोइ वलि बहु दलने परिमाणे निपनो ॥ एमज मोदकने विषे दलनु
परिमाण तेहने प्रदेशबंध कहिये ॥४॥ एणीपरे कर्मनो बंध ॥ ४ ॥ प्रकारे जाणवो ॥ इती

बंधनतत्वं समाप्तं ॥ ८ ॥ हवे मोक्षतत्व ते ॥ १५ ॥ भेदे सिद्ध थाय ते कहेछे ॥ तिर्थ सिद्धा ॥१ अतिर्थ सिद्धा ॥२॥ तिर्थंकर सिद्धा ॥३॥ अतिर्थंकर सिद्धा ॥४॥ ग्रहस्थालिंग सिद्धा॥५॥ अन्यालिग सिद्धा ॥६॥ स्वलिंग सिद्धा ॥७॥ स्त्रीलिग सिद्धा ॥८॥ पुरुषालिंग सिद्धा ॥ ९ ॥ नपुंसकलिंग सिद्धा ॥ १० ॥ स्वयंबुद्ध सिद्धा ॥ ११ ॥ प्रत्येकबुद्ध सिद्धा ॥ १२ ॥ बुद्धबोहि-सिद्धा ॥ १३ ॥ एक सिद्धा ॥ १४ ॥ अनेक सिद्धा ॥ १५ ॥ तथा ॥ ४ ॥ प्रकारे जीवमोक्ष जाय ते कहेछे ॥ ज्ञानेकरि ॥ १ ॥ दर्शनेकरि ॥ २ ॥ चारित्रेकरि ॥ ३ ॥ तपेकरि ॥ ४ ॥ तथा ॥ ९ ॥ द्वार मोक्षना कहेछे ॥ सत्पदरूपणा ते ॥ मोक्षगति पूर्वकाले हति हमणा पण छे । आगमिये काले हशे ते छति अस्ति छे । पण आकाशना फुलनि पेरे नास्ति नथि ॥१॥ द्रव्यप्रमाणे ते सिद्ध अनंता छे ॥ अभव्य जीवथि अनंतगुणा अधिक छे । वनस्पति वर्जिने॥२३॥ दंरुकथि सिद्धना जीव अनंतगुणा अधिक छे ॥२॥ क्षेत्रद्वार ते सिद्धशिला प्रमाणे छे ॥ ते। सिद्धशिला पिशतालिस लाख जोजननी लांबि पहोलि छे ॥ अने त्रिगुणि झाझेरि परिधि छे ॥ अने उंचपणे ॥ ३३३ ॥ धनूष ने ॥ ३२ ॥ आंगुलप्रमाणे ॥ एटला क्षेत्रमां सिद्ध रह्या

छे ॥३॥ स्पर्शना द्वार ते सिद्धक्षेत्रथि कांइक अधिकी सिद्धनिस्पर्शना छे ॥४॥ कालद्वार ते ॥ एक सिद्ध आश्रि सादिअनंत सर्व सिद्ध आश्रि अनादिअनंत ॥५॥ अंतरद्वार ते फरि सिद्धने संसारमां अवतरवुं नथि ॥ अने एक सिद्ध तिहां अनंता सिद्ध छे अने अनंता सिद्ध तिहां एक सिद्ध छे ॥ एटले सिद्ध सिद्धमां अंतर नथि ॥६॥ भागद्वार ते सघला जीवने सिद्धना जीव अनंतमे भागे छे । लोकने असंख्यातमे भागे छे ॥७॥ भावद्वार ते सिद्धमां क्षायकभाव ॥ केवलज्ञान । केवलदर्शन । क्षायकसमकित छे । अने परिणामिकभाव ते सिद्धपणां जाणवो ॥ ८ ॥ अल्प बहुत्व द्वार ते ॥ सर्वथि थोडा नपुंसक सिद्ध ॥ तेथि स्त्री सख्यातगुणि सिद्ध॥ तेथि पुरुष संख्यातगुणा सिद्ध ॥ एक समये नपुंसक ॥ १० ॥ सिद्ध थाय ॥ स्त्री ॥ २० ॥ सिद्ध थाय ॥ पुरुष ॥ १०८ ॥ सिद्ध थाय ॥ ए ॥ त्रसपणे ॥ १ ॥ बादरपणे ॥ २ ॥ सज्ञि पणे ॥३॥ वज्रऋषभनाराचसंघयणपणे ॥ ४ ॥ शुकलध्यानपणे ॥ ५ ॥ मनुष्यगति ॥ ६ ॥ क्षायकसमकित ॥७॥ जथाख्यातचारित्र ॥८॥ पण्डितवीर्य ॥ ए ॥ केवलज्ञान ॥ १० ॥ केवल-दर्शन ॥११॥ भव्य सिद्धिक ॥१२॥ परमशुकललेशी ॥१३॥ चरमशरीरि ॥१४॥ ए ॥१४॥ बोलनो

धणि होयते मोक्ष जाय ॥ जघन्य बे हाथनि अवघणावालो ॥ उत्कृष्टि पांचशे धनुषनि अवघेणावालो । जघन्य नव वरसनो ॥ उत्कृष्ट पूर्वक्रोडिना आयुषवालो। कर्मक्षयथिनो होय ते मोक्षमा जाय ॥ इति मोक्षतत्वं समाप्तं ॥ ए ॥ इति नव तत्वना बोल सपूर्ण ॥

॥ अथ श्री छकायना बोलनो थोकडो. ॥

अथश्री छकायना बोल लिख्यते ॥ पहेले बोले इंद्री थावरकाय ॥१॥ बीजे बोले बंभी थावरकाय ॥ ३ ॥ सपि थावरकाय ॥ ४ ॥ सुमति थावरकाय ॥ ५ ॥ पयावच्च थावरकाय ॥६॥ जंगमकाय ए छकायनां नाम कह्यां ॥ हवे गोत्र कहेछे ॥ पृथवी काय ॥ १ ॥ अपकाय ॥२॥ तेउकाय ॥ ३ ॥ वाउकाय ॥ ४ ॥ वनस्पतिकाय ॥ ५ ॥ त्रसकाय ॥ ६ ॥ हवे पृथ्वीकायना बे भेद ॥ सुक्ष्म अने बादर ॥ सुक्ष्म ते आखा लोकमा जरयाछे ॥ ते आपणी नजरे न आवे ॥ ज्ञानी जाणे देखे ॥ हवे बादरपृथ्वीकायनां नाम कहेछे ॥ पहेले बोले माटीने मीठानी जात ॥२॥ खमीने खारानी जात ॥३॥ कालमिट सरमीया पाहणा ने सिद्धानी जात ॥४॥ हिं

गलो ने हरुतालनी जात ॥५॥ गेरु ने गोपीचंदननी जात ॥६॥ रत्न पर वालानो जात ॥७॥ सोल जातिना रत्न आदि लेइने तेंतालीस जातनी पृथ्वीकायछे ॥ तेना एक ककरामां ॥ असंख्याता जीव । श्रीजगवंते कह्याछे ॥ ते जुवार ॥ तथा पीलु ॥ जेटली पृथ्वीकाय लइये ॥ तेमांथी ॥ एकेको जीव निकलीने । पारेवा जेवडी काया करे तो ॥ एक लाख जोजननो जंबुद्वीप छे॥ तेमां समाय नही ॥ तेना कुलबारलाख क्रोडछे ॥ तेनुं आउखुं ॥ जघन्य ॥ अंतर्मुहुर्त्तनु ॥ उत्कृष्टुं २२ हजार वर्षनुं ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥१॥ हवे अप्काय ते पाणी ॥ तेना वे जेद ॥ सुक्ष्म ॥ अने बादर ॥ सुक्ष्मते ॥ आखा लोकमां जर्यांछे ते आपणी नजरे न आवे ॥ बादर पाणीना नाम कहे छे ॥ पहेले बोले ॥ वरसादने कराना पाणी ॥ २ ॥ जाकल ने धुमरना पाणी ॥ ३ ॥ कुवा नदी तलावना पाणी ॥ ४ ॥ दरिया ने जरणुना पाणी ॥ ५ ॥ खारां । खाटां । पाणी ॥ ६ ॥ मीठां मोला पाणी ॥ ७ ॥ ए आदिलेइने घणी जातिनां पाणी छे ॥ तेना एक विंदुमां असंख्याता जीव श्रीजगवंते कह्याछे ॥ तेमांथी एकेको जीव नीकलीने ॥ सरसवना दाणा जेवडी ॥ काया करे तो एक

लाख जोजनना जंबुद्धिपमां समाय नही ॥ तेना कुल सात लाख क्रोम्हे ॥ तेनुं आउखुं जघन्य ॥ अंतर्मुहुर्ततनुं ॥ उत्कृष्टुं सातहजार वर्षनुं तेनी दया पालीये तो ॥ अनंता मोक्षनां सुख पामीये ॥१॥ हवे तेउ काय ते अग्नी तेना वे नेद । सुक्ष्म ने वादर ॥ सुक्ष्म ने आखा लोकमां नरयां ठे ॥ ते आपणी नजरे न आवे ॥ हवे वादर अग्नीनां नाम कहेठे ॥ पहेले वोले चूला ने जठीनी अग्नि ॥ २ ॥ धुमाम्ही तापणीनी अग्नि ॥३॥ चकमक ने वीजलीनी अग्नि ॥ ४ ॥ दीवाने उमाम्हानी अग्नि ॥ ५ ॥ लोढा धगधगता ने आरणीनी अग्नि ॥ ६ ॥ ए आदिलेइने घणी जातिनी अग्नि ठे ॥ तेना एक तणखामां ॥ असंख्याता जीव श्रीनगवंते कह्याठे ॥ तमांथी एकेको जीव नीकलीने । खसखसना दाणा जेवम्हो ॥ काया करे तो जंबुद्धिपमां समाय नहि । तेना कुल ॥ त्रण लाख क्रोम्हे ॥ तेनुं आउखुं । जघन्य ॥ अंतर्मुहुर्ततनुं ॥ उत्कृष्टुं ॥ त्रण अहोरात्रनुं तेनी दया पालीये तो ॥ अनंता मोक्षनां सुख पामीये॥२॥ हवे वाउकायना वे नेद । सुक्ष्म ने वादर ॥ सुक्ष्मते आखा लोकमां नरयांठे । ते आपणी नजरे न आवे ॥हवे वादर वायराना नाम कहेठे ॥ पहेले वोले उगमणो ने आथमणो वा ॥१॥

उतर ने दक्षीणनो वा ॥३॥ उंचो निचो ने त्रिछो वा ॥४॥ वतोलियो ने मन्डलीयो वा ॥५॥ गुंजवा ने सुधवा ॥६॥ एआदिलेइने घणी जातिनो वायरो छे ॥ ते सुकरवे करी हणायछे॥ उघाडे मोढे बोल्ये ॥ झापट नांखवे ॥ सुपडे सोवे झाटकवे ॥ कांतवे । विंझवे ॥ तालोटा वगाडवे ॥ विंझणे विंझवे ॥ हींचोले हींचकवे ॥ आदिलेइने घणी जातिना शस्त्रेकरी हणाय छे ॥ एकवार उघाडे मोढे बोल्ये ॥ असंख्याता जीव हणाय छे ॥ तेमाथी एकेको जीव निकलीने ॥ वडना बीज जेवडी काया करेतो ॥ जबुद्धिपमां समाय नहि ॥ तेना कुल सात लाख कोड छे ॥ तेनुं आउखुं । जघन्य । अंतर्मुहुर्तनु ॥ उतकृष्टुं ॥ त्रणहजार वर्षनुं ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षनां सुख पामीये ॥४॥ पांचमे बोले वनस्पतिकाय तेना बे भेद सुक्ष्म ॥ अने ॥ बादर ॥ सुक्ष्म ते आखा लोकमां भर्याछे ॥ तेआपणी नजरे न आवे । बादरवनस्पतिकायना बे भेद ॥ प्रत्येक अने साधारण प्रत्येक कोने कहीये । शरीर शरीर एकेको जीव होय ॥ तेने प्रत्येक कहीये ॥ अने एक शरीर अनंता जीव होय । तेने साधारण कहीये ॥ हवे प्रत्येकनां नाम कहेछे॥ पहेले बोले वृक्ष ने वेलानी जात॥१॥रिंगणी तलसी ने

लाख जोजनना जम्बुद्विपमां समाय नही ॥ तेना कुल सात लाख क्रोडने ॥ तेनुं आउखु जघन्य ॥ अंतर्मुहुर्तनुं ॥ उत्कृष्टुं सातहजार वर्षनुं तेनी दया पालीये तो ॥ अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥१॥ हवे तेउ काय ते अग्नी तेना बे भेद । सुक्ष्म ने बादर ॥ सुक्ष्म ने आखा लोकमां भरयां छे ॥ ते आपणी नजरे न आवे ॥ हवे बादर अग्नीना नाम कहेछे ॥ पहेले बोले चूला ने भठीनी अग्नि ॥ २ ॥ धुमाडी नापणीनी अग्नि ॥३॥ चकमक ने वीजलीनी अग्नि ॥ ४ ॥ दीवाने उमाडानी अग्नि ॥ ५ ॥ लोढा धगधगता ने अरणीनी अग्नि ॥ ६ ॥ ए आदिदेइने घणी जातिनी अग्नि छे ॥ तेना एक तणखामां ॥ असंख्याता जीव श्रीभगवंते कह्याछे ॥ तेमांथी एकेको जीव नीकलीने । खसखसना दाणा जेवडो ॥ काया करे तो जंबुद्विपमां समाय नहि । तेना कुल ॥ त्रण लाख क्रोडने ॥ तेनु आउखुं । जघन्य ॥ अंतर्मुहुर्तनुं ॥ उत्कृष्टुं ॥ त्रण अहोरात्रनु तेनी दया पालीये तो ॥ अनंता मोक्षनां सुख पामीये ॥३॥ हवे वाउकायना बे भेद । सुक्ष्म ने बादर ॥ सुक्ष्मते आखा लोकमां भर्याछे । ते आपणी नजरे न आवे ॥ हवे बादर वायराना नाम कहेछे ॥ पहेले बोले उगमणो ने आथमणो वा ॥१॥

उतर ने दक्षीणनो वा ॥३॥ उंचो निचो ने त्रिछो वा ॥४॥ वंतोलियो ने मन्डलीयो वा ॥५॥ गुंजवा ने सुधवा ॥६॥ एआदिलेइने घणी जातिनो वायरो छे ॥ ते सुकरवे करी हणायछे॥ उघाडे मोढे बोल्ये ॥ झापट नांखवे ॥ सुपडे सोवे झाटकवे ॥ कांतवे । विंझवे ॥ नालोटा वगाडवे ॥ विंझणे विंझवे ॥ हीचोले हीचकवे ॥ आदिलेइने घणी जातिना शस्त्रेकरी हणाय छे ॥ एकवार उघाडे मोढे बोल्ये ॥ असंख्याता जीव हणाय छे ॥ तेमाथी एकेको जीव निकलीने ॥ वडना बीज जेवडी काया करेतो ॥ जंबुद्धिपमां समाय नहि ॥ तेना कुल सात लाख कोड छे ॥ तेनुं आउखुं । जघन्य । अंतर्मुहुर्तनु ॥ उतकृष्टुं ॥ त्रणहजार वर्षनु ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षनां सुख पामीये ॥४॥ पांचमे बोले वनस्पतिकाय तेना बे भेद सुक्ष्म ॥ अने ॥ वादर ॥ सुक्ष्म ते आखा लोकमां भर्याछे ॥ तेआपणी नजरे न आवे । वादरवनस्पतिकायना बे भेद ॥ प्रत्येक अने साधारण प्रत्येक कोने कहीये । सरीरे सरीरे एकेको जीव होय ॥ तेने प्रत्येक कहीये ॥ अने एक सरीरे अनंता जीव होय । तेने साधारण कहीये ॥ हवे प्रत्येकनां नाम कहेछे ॥ पहेले बोले वृक्ष ने वेलानी जात॥१॥रिंगणी तलसी ने

गुलमनी जात ॥३॥ एरंडा आकडा धतुरानी जात ॥४॥ दाडम मेलडी ने केलानी जात ॥५॥ ओ-केवडो दाखडो ने तरणानी जात ॥ ६ ॥ फूल कमल ने नागरवेलनी जात ॥ ७ ॥ बोरडी केरडो ने कसेलानी जात ॥ ८ ॥ जुवार बाजरो मठ मकाईनी जात ॥ ९ ॥ तांजलजो मूंग मोथरी वालोर फलीनी जात ॥ १० ॥ ए आदि लेईने घणी जातिनी प्रत्येक वनस्पति छे ॥ तेमां नगवाने बे प्रकारना जीव कह्याछे॥सख्याता॥ अ-संख्याता तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीए. तेनुं आउखुं ज० अंत० उत्० दशहजार वर्षनुं॥हवे साधारण वनस्पतिना नाम कहेछे ॥पहेले बोले लीलफुल सेवालनी जात॥गाजर मूलानी जात ॥ कुंगली लसणनी जात ॥ आदुने गरमरनी जात ॥ रतालु पिंडालुनी जात ॥ कंटालो थोर खुरसाणी कुंवार सेलरानी जात ॥ मोथ लुणीनी जात ॥ उगता अंकुरा अने कुणी काकडीप्रमुखनी जात ॥ ए आदि लेईने घणी जातिनी साधारण वनस्पति छे ॥ एक कंद मुलना कडकामां अनंता जीव छे॥तेनु आउखुं जघन्य। उत्० अंतर्मुहूर्त तुं।तेहुना कुलरण्लाख कोडछे तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ हवे त्रसकायना चार भेद बे इंद्रीय

तेइंद्रीय चौरेंद्रीय पंचेंद्रीय हवे बेइंद्रीयना बे भेद। अप्रजाप्ताने प्रजाप्ता ॥बेइंद्रीय तेकोने क-
हीये जेनेकाया जीभ्या बेइंद्रीय होय तेने बेइंद्रीय कहीये तेनांनाम॥जलो॥किडा पोरा॥करमीया
सरमिया मामणमुंडा। अलसीया।लट।लाल । संख ।छीप । कोडा॥आदि लेइने घणी जातिना
बेइंद्रीय जीव छे॥ तेनांकुलसातलाखक्रोडछे ॥ तेनुं आउखुं जघन्य॥अंतर्मुहुर्तनु उत्कृष्टु ।बार
वर्षनुं ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये॥तेइंद्रीयना बे भेद। अप्रजाप्ता॥
ने प्रजाप्ता ॥तेइंद्रीय ते कोने कहीये ॥ काया मूख ने नासिका होय तेने। तेइंद्रीय कहिये
तेनां नाम ॥ जु । लीख । चांचड । मांकड । कीडी। कथुवा ।माटला। धनेडा । जूवा।ईतडी॥
गीगोडा ॥ घीमेल । गधैया । कानखजुरा॥संकोडा ॥ एआदि लेइने घणी जातिना ॥ तेइंद्रीय
जीव छे॥ तेना कुल ॥ आठलाख क्रोड छे॥तेनुं आउखु ॥ जघन्य । अंतर्मुहूर्तनुं ॥ उतकृष्टुं
। उंगणपंचास दिवसनुं॥ तेनी दया पालीये तो अनता मोक्षना सुख पामीये॥हवे चोरिंद्रीयना
बे भेद । ते अप्रजाप्ता । ने प्रजाप्ता ॥ चोइंद्रीय ते कोने कहीये॥ जेहने काया । मुख । नासिका
अने आंख । होय तेने चौइंद्रीय जीव कहीये । तेना नाम माखी मसला ॥ डांस । मछर ।

भमरा । तीड । पतंग ।करोलीया । कसारी । वीछी । खडमांकडी । बगा । धुमीया । कुद्दा ॥
एआदि लेइने घणी जातिना ॥ चौइंद्रीय जीव छे ॥ तेना कुल नवलाख कोड छे । तेनुं आउखुं।
जघन्य । अंतर्मुहुर्तनुं ॥ उत्कृष्टुं ॥ छमासनुं ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख
पामीये ॥ हवे पंचेंद्रीय ते कोने कहीये । जेने काया । मुख नासिका । आंख । कान । ए
प्रमाणे होय । तेने पंचेंद्रीय कहीये ॥ तेना बे भेद ॥ अप्रजाता । अने प्रजाता । तेनी ॥४॥
जाति ॥ नारकी । तिर्यंच । मनुष्य । देवता । तेमां ॥ १४ भेद नारकीना ॥४८ भेद तिर्यंचना
॥ ३०३ भेद मनुष्यना ॥ १९८ भेद देवताना ॥ वली तेमां देवताना चार भेद ॥ भवनपति ॥
वाणव्यंतर ॥ जोतिषी ॥ वैमानिक ॥ मनुष्यना चार भेद ॥ १५ ॥ कर्मभूमीना मनुष्य ॥
३० अकर्म भूमीना मनुष्य ॥ ५६ अंतरद्वीपना मनुष्य ॥ १४ स्थानकना समूर्छिम मनुष्य
॥ हवे नारकीने देवतानी स्थिती ॥ जघन्य दशहजार वर्षनी । उत्कृष्टी तेत्रीस साग-
रोपमनी ॥ तिर्यंचने मनुष्यनी स्थिती । जघन्य अंतर्मुहुर्तनी । उत्कृष्टी त्रण पल्योपमनी
तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ इतिश्री छकायना बोल संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री लघु दंडक. ॥

॥ ॐनमः सिद्धं ॥ अथश्री २४ दंडकना बोल लिख्यते ॥ गाथा ॥ सरीरोगाहण संघयण ॥ संठाणकसाय तहहुंतिसन्नाउ ॥ लेसिंदियसमुघाए । सन्निवेदेयपज्जती ॥ १ ॥ दिठिदंसणनाण अनाणे ॥ जोगुवउगेतहा किमाहारे ॥ उववायठिइसमुहाए । चवणगइ रागइच्चेव ॥२॥ ए बे गाथा सूत्रपाठे कही ॥ हवे अर्थ कहेछे ॥ सरीर कहेता सरीर पांच॥ उदारीक सरीर ॥१॥ वैक्रेय सरीर ॥२॥ आहारक सरीर ॥३॥ तेजस सरीर ॥४॥ कार्मण सरीर ॥५॥१॥ उगाहण कहेता । अवघेणा ॥ उदारिक सरीरनी अवघेणा जघन्य अगुलना असख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी एक हजार जोजन नी झाझेरी ॥ कमलनालोनानेन्याये ॥ वैक्रेय सरीरनिभवधारणि अवघेणा । जघन्य अंगुलनो असख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी पाचसे धनुषनी ॥ अने उत्तर वैक्रेय सरीरनी अवघेणा ॥ जघन्य अगुलनो सख्यातमो भाग॥ उत्कृष्टीलाख जोजननि झाझेरी ॥ आहारक सरीरनी अवघेणा जघन्य । मुंटा हाथनी ॥ उत्कृष्टी एक

जमरा । तीम । पतंग । करोलीया । कंसारी । वींछी । खममांकमी । वगा । धुमीया । फूदा ॥ एआदि लेइने घणी जातिना ॥ चौइंद्रीय जीव छे ॥ तेना कुल नवलाख कोमछे । तेनुंआउखुं जघन्य । अंतर्मुहुर्तनुं ॥ उत्कृष्टु ॥ छमासनुं ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ हवे पंचेंद्रीय ते कोने कहीये । जेने काया । मुख नासिका । आंख । कान । ए प्रमाणे होय । तेने पंचेंद्रीय कहीये ॥ तेना वे जेद ॥ अप्रजाता । अने प्रजाता । तेनी ॥४॥ जाति ॥ नारकी । तिर्यंच । मनुष्य । देवता । तेमां ॥ १४ जेद नारकीना ॥४० जेद तिर्यंचना ॥ ३०३ जेद मनुष्यना ॥ १ए० जेद देवताना ॥ वली तेमां देवताना चार जेद ॥ जवनपति ॥ वाणव्यंतर ॥ जोतिषी ॥ वैमानिक ॥ मनुष्यना चार जेद ॥ १५ ॥ कर्मजूमीना मनुष्य ॥ ३० अकर्म जूमीना मनुष्य ॥ ५६ अंतरद्वीपना मनुष्य ॥ १४ स्थानकना समूर्छीम मनुष्य ॥ हवे नारकीने देवतानी स्थती ॥ जघन्य दशहजार वर्षनी । उत्कृष्टी तेत्रीस सागरोपमनी ॥ तिर्यंचने मनुष्यनी स्थती । जघन्य अंतर्मुहूर्तनी । उत्कृष्टी त्रण पल्योपमनी तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ इतिश्री छकायना वोल सम्पूर्ण ॥

॥ अथ श्री लघु दंडक. ॥

॥ ॐनमः सिद्धं ॥ अथश्री २४ दंडकना बोल लिख्यते ॥ गाथा ॥ सरीरोगाहण संघयण ॥ संठाणकसाय तहहुतिसन्नाउं ॥ लेसिंदियसमुघाए । सन्निवेदेयपज्जत्ती ॥ १ ॥ दिठिदंसणनाण अनाणे ॥ जोगुवउगेतहाकिमाहारे ॥ उववायठिइसमुहाए । चवणगइरागइच्चेव ॥२॥ ए बे गाथा सूत्रपाठे कही ॥ हवे अर्थ कहेछे ॥ सरीर कहेता सरीर पाच॥ उदारीक सरीर ॥१॥ वैक्रेय सरीर ॥२॥ आहारक सरीर ॥३॥ तेजस सरीर ॥४॥ कार्मण सरीर ॥५॥ १ ॥ उगाहण कहेता । अवघेणा ॥ उदारिक सरीरनी अवघेणा जघन्य अगुलना असख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी एक हजार जोजन नी झाझेरी ॥ कमलनाभोभानेन्याये ॥ वैक्रेय सरीरनिभवधारणि अवघेणा । जघन्य अगुलनो असख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी पाचसे धनुषनी ॥ अने उत्तर वैक्रेय सरीरनी अवघेणा ॥ जघन्य अगुलनो सख्यातमो भाग॥ उत्कृष्टीलाख जोजननि झाझेरी ॥ आहारक सरीरनी अवघेणा जघन्य । मुंडा हाथनी ॥ उत्कृष्टी एक

हाथनी ॥ तेजस कार्मण सरीरनी अवघेणा जगन्य अंगुलनो असंख्यातमोभाग । उत्कृष्टी चौद राजलोक प्रमाणे ॥ केवल समुद्घातनी अपेक्षाये ॥ तथा पोतपोताना सरीर प्रमाणे जाणवी ॥ एम अवघेणा जाणवी ॥ २॥ संघयण कहेता संघयण ६ वज्ररुषभनाराचसंघयण ॥१॥ रुषभनाराचसंघयण ॥ २ ॥ नाराचसंघयण ॥ ३ ॥ अर्धनाराचसंघयण ॥ ४ ॥ किलकुसंघयण ॥५॥ छेवट्टसंघयण ॥ ६॥३ ॥ संठाण कहेता संठाण ६ समचउरंस संठाण ॥ १ ॥ निगोहपरिमंडल संठाण ॥२॥ सादि संठाण ॥३॥ वामन संठाण ॥ ४ ॥ कुबज संठाण॥५॥ हुंड संठाण ॥ ६ ॥ ४ ॥ कसाय कहेता कषाय च्यार ॥ ४ ॥ क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ॥ ४ ॥ ५ ॥ तहहुंति कहेता तिमज होय ॥ सणाउ कहेता संज्ञा च्यार ॥ आहारसंज्ञा ॥ १ ॥ भयसंज्ञा ॥ २ ॥ मैथुनसंज्ञा ॥ ३ ॥ परिग्रहसंज्ञा ॥ ४॥ ६ ॥ लेसा कहेतां लेस्या ६ ॥ कृष्णलेस्या ॥ १ ॥ नीललेस्या ॥ २ ॥ कापोतलेस्या ॥ ३ ॥ तेजुलेस्या ॥४॥ पद्मलेस्या ॥ ५ ॥ सुकललेस्या ॥६॥७ ॥ इंदिय कहेता। इंद्रिय पांच श्रोतेंद्रिय ॥ १ ॥ चक्षुइंद्रिय ॥ २ ॥ घाणेंद्रिय ॥३॥ रसेंद्रिय ॥ ४॥ फरसेंद्रिय ॥५॥८॥ समुघाए

कहेता ॥ समुद्घात सात । वेदनी ॥ १ ॥ कषाय ॥२॥ मारणांतिक ॥ ३ ॥ वैक्रेय ॥ ४ ॥
तैजस ॥ ५ ॥ आहारक ॥६॥ केवल ॥ ७॥९ ॥ सन्नी कहेता संज्ञी असंज्ञी। मन होय ते
संज्ञी । मन न होय ते असंज्ञी ॥१०॥ वेदेय कहेता वेद त्रण ॥ स्त्रीवेद ॥१॥ पुरुषवेद॥२॥
नपुंसकवेद ॥ ३॥११ ॥ पज्जति कहेतां पर्याप्ति छ आहारपर्याप्ति ॥ १ ॥ सरीरपर्याप्ति ॥ २॥
इंद्रीयपर्याप्ति ॥ ३ ॥ स्वासोस्वासपर्याप्ति ॥ ४ ॥ भाषापर्याप्ति ॥५॥ मनपर्याप्ति ॥ ६ ॥१२॥
दिठि कहेता दृष्टि ॥३॥ समकितदृष्टि ॥१॥ मिथ्यातदृष्टी ॥२॥ समामिथ्यातदृष्टी ॥ ३॥१३॥
दंसण कहेता दर्शनच्यार । चक्षुदर्शन ॥ १ ॥ अचक्षुदर्शन ॥२॥ अवधिदर्शन ॥३॥ केवल
दर्शन ॥ ४॥१४ ॥ नाण कहेता ज्ञान ॥५॥ मतिज्ञान ॥१॥ श्रुतज्ञान ॥२॥ अवधिज्ञान॥३॥
मनपर्यवज्ञान ॥४॥ केवलज्ञान ॥५॥१५॥ अनाणे कहेता ॥ अज्ञान त्रण । मतिअज्ञान ॥१॥
श्रुतअज्ञान ॥ २ ॥ विभंगज्ञान ॥ ३॥१६ ॥ जोग कहेता जोगपनर । च्यार मनना । च्यार
वचनना । सात कायाना ॥ हवे च्यार मनना कहे छे । सत्य मनजोग ॥ १ ॥ असत्यमन
जोग ॥ २ ॥ मिश्रमनजोग ॥ ३ ॥ व्यवहारमनजोग ॥४॥ हवे च्यार वचनना कहे छे ॥

सत्यवचनजोग ॥ १ ॥ असत्यवचनजोग ॥ २॥ मिश्रवचनजोग ॥ ३ ॥ व्यवहारवचनजोग ॥ ४ ॥ हवे सात कायाना कहेछे ॥ उदारिक ॥१॥ उदारिकनो मिश्र ॥ २ ॥ वैक्रेय ॥ ३ ॥ वैक्रेयनो मिश्र ॥ ४ ॥ आहारक ॥ ५ ॥ आहारकनो मिश्र ॥ ६ ॥ कार्मणकायजोग ॥ ७ ॥ एवं पनर जोग ॥ १७ ॥ उवयोग कहेता उपयोग वार ॥ पांच ज्ञान ॥ त्रणअज्ञान ॥ च्यार दर्शन ॥ एव बार ॥१८॥ तहाकिमाहारे कहेता ॥ तिमज अनुक्रमे आहार लीए ॥ जघन्य त्रण दिसनो ॥ उत्कृष्टो छ दिसनो ॥ त्रण दिस ते कइ ॥ उंची नीची ने त्रीछी॥ ए त्रण दिशनो लीए,॥ छदिस ते कइ ॥ पूर्व ॥१ ॥ पछिम ॥ २ ॥ उत्तर॥३॥दक्षण ॥ ४ ॥ उंची॥५॥ नीची ॥६॥ ए छ दिसनो आहार लीए ॥ तथा वलि त्रण प्रकारनो ।आहार । सचेत ॥अचेत ने मिश्र । उज ॥१॥ रोम ॥ २ ॥ कवल ॥ ३ ॥ ए त्रण प्रकारनो आहार ॥ १९॥ उववाय कहेता आवीने उपजे चोविस दंडक नो ते आगल कहेवासे ॥२०॥ ठिइ कहेता थिति जघन्य अंतर्मुहुर्त्तनी ॥ अने उत्कृष्टी तेत्रीस सागरोपमनी ॥ ते आगल कहेवासे ॥ २१ ॥ समुहाए कहेता । समोहियामरण ॥१॥ असमोहियामरण ॥ २ ॥ समोहियामरण ते केहने कहिये

कीडीनीलाग्नीपरे जीवना परदेसबुटाबुटा नीकले ॥ तेहने समोहिया मरण कहिये ॥ १॥ असमोहियामरण ते केहने कहिये बंदुकना नफाकानीपरे जीवना प्रदेश सामटा नीकले ॥ तेहने असमोहियामरण कहिय ॥ १॥२२॥ चवण कहेता चविने जाय जेटला दंडकमां ते आगल केहेवासे ॥२३॥ गइ कहेता गति पांच ॥ नरकनी गति तिर्यचनी गति ॥ मनुष्यनी गति । देवतानी गति । सिधनी गति । एहमां जे जावु ते गति ॥ अने आगइ कहेता जेमाथी। आववुं ते आगति च्यार ॥ नरकनी । तिर्यचनी ॥ मनुष्यनी ॥ देवतानी ॥ २४ ॥ चव कहेता निश्चे ए बे गाथानो । अर्थ कह्यो ॥ हवे प्राणदश ।पाच इंद्रीयना पाच प्राण ॥ श्रोतेंद्रीय॥१॥ चक्षु इंद्रीय ॥२॥ घ्राणेंद्रीय ॥३॥ रसइंद्रीय ॥४॥ फरसइंद्रीय ॥ ५ ॥ मनबल ॥६॥ वचनबल ॥ ७ ॥ कायबल ॥८॥ स्वासोस्वास ॥९॥ आउखु ए ॥ १० ॥ ए पचीस दुवार कह्या ॥२५॥ हवे चोविस दंडकना नाम कहेछे ॥१॥ पेहेलो नारकीनो दंडक ॥ ते सात नरकना नाम कहेछे ॥ पहेली घमा ॥१॥ वीजी वंसा ॥२॥ त्रीजि सीला ॥ ३ ॥ चोथी अजणा ॥ ४ ॥ पांचमी रिठा ॥५॥ छठी मघा ॥६॥ सातमी माघवइ ॥७॥ ए सात नरकना नाम कह्या ॥

हवे सातना गोत्र कहेछे । पहेली रतनप्रन्ना॥बीजी सकरप्रन्ना॥त्रीजी वालुप्रन्ना । चोथी पंकप्रन्ना ॥ पांचमी धुमप्रन्ना ॥ छठी तमप्रन्ना ॥ सातमी तमतमाप्रन्ना ॥ ए सात मलिने एक दंरूक थयो ॥१॥ हवे दश नवनपतिना दस दंरूक ॥ तेहना नाम कहेछे ॥ पेहेला असुरकुमार ॥ बीजा नागकुमार ॥ त्रीजा सोवनकूमार ॥ चोथा विजुकुमार ॥ पांचमा अग्निकुमार ॥ छठा दिपकुमार ॥ सातमा उदहिकुमार ॥ आठमा दिसाकुमार ॥ नौमा पवनकुमार ॥ दशमा थणितकुमार ॥ एवं अगियार दंरूक थया ॥११॥ हवे पांच थावरना पांच दंरूक कहेछे ॥ इंदिथावरकाय ॥ वंनीथावरकाय ॥ सपीथावरकाय ॥ सुमतिथावरकाय ॥ पयात्रचथावरकाय॥ ए नाम कह्या ॥ हवे गोत्र कहेछे प्रथवीकाय ॥ अपकाय ॥ तेउकाय ॥ वाउकाय ॥ वणसइ काय एवं सोल दंरूक थया ॥ १६ ॥ हवे त्रण विगलेंद्रीयना त्रण दंरूक कहेछे ॥ बेइंद्रीय । तेरिंद्रीय ॥ चउरिंद्रीय॥एवं उगणीस दंरूक थया॥१ण॥ हवे विसमो तिर्यंच पचेंद्रीयनो दंरूक कहेछे ॥ तिर्यंच पंचेंद्रीयना पांच नेद ॥ जलचर ॥ थलचर ॥ उरपर ॥ नुजपर। खेचर । हवे जलचर ते केहने कहिये ॥ जे जलमां चाले तेहने जलचर कहिये ॥ तेहना अनेक नेद ॥ मछ.

कह्य गाहा । मगर सुसुमार प्रमुख ॥१॥ हवे थलचर ते केहने कहिए ॥ जे थल पृथ्वी ए चाले ॥ तेहने थलचर कहिये ॥ तेहना च्यार भेद ॥ एकखुरा दुखुरा । गंभीपया ॥सणपया ॥ एकखुरा ते घोमा खर प्रमुख ॥ दुखुरा ते गाय भेंस प्रमुख ॥ गभीपया ते सुंहाला पग ॥ सोनीनी अहिरण ने घाटे पग होय ते हाथी गेंमा प्रमुख ॥ सणपया ते नोहोराला जीव ॥ ते सिंह वाघ चित्रा कुतरा बिलामा प्रमुख ॥ २ ॥ उरपर ते केहने कहिये । हृदयाभर चाले ते सर्पनी जात ॥ तेहना बे भेद ॥ एक फेण मांभे ने ॥ एक फेण न मांभे ॥ ३ ॥ भुजपर ते केहने कहिये । भुजाए तथा हृदयाभर चाले ते भुजपर ॥ तेहना अनेक भेद । नोल कोल काकीमा । गोह । उंदर ॥ खीसकोली प्रमुख ॥ ४ ॥ खेचर ते केहने कहीये ॥ जे आकाशे चाले ते पंखीनी जाति ॥ ते पंखीना च्यार भेद ।चरमपखी १ ।रोमपखी २ । विततपखी ३ । समुगपंखी ४ ॥ चरमपंखी ते चामझानी पाख ॥ ते ढापा ॥ वागुल प्रमुख ॥ १ ॥ रोमपखी ते रोमरायनी पांख ॥ ते सुमा चरकला पारेवा प्रमुख ॥२॥ ए बे पखी अढी द्वीप माहे अने बाहिर छे ॥ वितत पंखी ते जेहनी पांख पोहोली रहे ते वितत पखी कहिए ॥ ३ ॥ समुग

पंखी. ते फाबफानीपेरे बीफीरहे पांख जेहनी ते समुग पंखी॥ए वे पंखी अढी द्विप बाहारे ज छे॥ ए पांच तिर्यंच पचेंद्री ते. पांच समुर्छिम ने पांच गर्भज जाणवा ए विसमो तिर्यंच पचेंद्रिनो दंमक थयो ॥ २० ॥ हवे एकविसमो मनुष्य पचेंद्रीयनो दंमक कहेछे ॥ ते मनुष्य पचेंद्रीना च्यार भेद ॥ पनर कर्मभुमि ना मनुष्य ॥ १ ॥ त्रीस अकर्मभुमि ना मनुष्य ॥ २ ॥ छपन्न अंतर द्वीप ना मनुष्य ॥ ३ ॥ चउद थानकना समुर्छिम मनुष्य ॥ ४ ॥ ते एकसो एक क्षेत्रना गरभज मनुष्य अपर्यासा॥ ने एकसो एक पर्यासा एवं २०२ ने एक सो एक क्षेत्रना समुर्छिम मनुष्य अपर्यासा। एवं त्रणसें त्रण भेदनो एकविसमो मनुष्यनो दंमक थयो ॥ २१ ॥ हवे बाविसमो वाणव्यंतर नो दंमक कहेछे ॥ तेहनी सोल जाति । पिशाच ॥१॥ भूत ॥२॥ जक्ष ॥ ३ ॥ राक्षस ॥ ४ ॥ किनर ॥ ५ ॥ किंपूरुष ॥ ६ ॥ महोरग ॥ ७ ॥ गंधर्व ॥ ८ ॥ आणपनी ॥ ए ॥ पाणपनी ॥ १० ॥ इसीवाइ ॥ ११ ॥ भूइवाइ ॥ १२ ॥ कंदिय ॥ १३ ॥ महाकंदिय ॥ १४ ॥ कोहंम ॥ १५ ॥ पयंगदेव ॥ १६ ॥ इति बाविसमो वाणव्यंतर नो दंमक संपूर्ण ॥ २२ ॥ हवे त्रेविसमो जोतीषी नो दंमक कहेछे ॥ तेहनी दस जाति चंद्रमा ॥ १ ॥

सूर्य ॥ २ ॥ ग्रह ॥३॥ नक्षत्र ॥ ४ ॥ तारा ॥ ५ ॥ ए पांच चल ते अढिद्वीप मध्ये छे ॥ अने पांच स्थिर ते अढिद्वीप बाहीर छे ॥ एवं दस जात ॥ बे चंद्रमाने बे सूर्य जंबूद्वीप मध्ये छे॥ च्यार चंद्रमा च्यार सूर्य लवण समुद्र मध्ये छे ॥ बार चंद्रमा बार सूर्य धातकीखंड मध्ये छे॥ बेतालिस चंद्रमा । बेतालिस सूर्य कालोदधि समुद्र मध्ये छे ॥ बहुत्तेर चंद्रमा ॥ बहुत्तेर सूर्य पुष्करार्द्ध द्विप मध्ये छे ॥ एवं सर्व मलीने मनुष्य क्षेत्रमां । एकसो बत्रीस चद्रमा ॥ एकसो बत्रीस सूर्य ॥ परिवार सहित चल छे ॥ परिवार ते जिहां एक चद्रमा एक सूर्य तिहां अठासी ग्रह ॥ अठाविस नक्षत्र ॥ छासठहजार नवसे पच्योतेर कोडा कोडी तारा छे ॥ एव सर्व चंद्रमा सूर्यनो परिवार गणवो॥असख्याता चद्रमा असंख्याता सूर्य परिवार सहित मनुष्यक्षेत्र बाहेर असंख्याता द्विपसमुद्र मांहि स्थिर छे॥ एवं दस जातनो त्रेविसमो ज्योतिषी नो दण्डक थयो ॥ २३ ॥ हवे चोविसमो वैमानिक नो दण्डक कहे छे ॥ तेहना छविस भेद छे ॥ बार देवलोक ॥ नव ग्रीवेयक ॥ पाच अनुत्तर विमान । एवं छविस । हवे तेहना नाम कहे छे ॥ सुधर्म ॥१॥ इसान ॥२॥ सनतकुमार ॥ ३ ॥ माहेंद्र ॥ ४ ॥ ब्रह्मलोक ॥ ५ ॥ लनक ॥ ६ ॥

महासुक्र ॥ ७ ॥ सहसार ॥ ८ ॥ आणत ॥ ए ॥ प्राणत ॥ १० ॥ आरण ॥ ११ ॥ अचुय ॥ १२ ॥ ए बार देवलोक ना नाम कह्या ॥ हवे नवग्रैवेयक ना नाम कहेछे ॥ ज्नदे ॥ १ ॥ सुज्नदे ॥ २ ॥ सुजाए ॥ ३ ॥ सुमाणसे ॥ ४ ॥ प्रीयदंसणे ॥ ५ ॥ सुदंसणे ॥ ६ ॥ आमोहे ॥७॥ सुपम्हिबधे ॥ ८ ॥ जसोधरे ॥ ए ॥ ए नव ग्रैवेयक ना नाम कह्या ॥ हवे पांच अनुत्तर विमान ना नाम कहे छे । विजय ॥ १ ॥ विजयंत ॥२॥ जयंत ॥ ३ ॥ अपराजित ॥ ४ ॥ सर्वार्थ सिद्ध ॥ ५ ॥ ए पांच अनुत्तर विमान ना नाम कह्या । ए छविस ज्ञेदनो वैमानीक नो दंमक थयो ॥ २४ ॥ हवे पनर परमाधामी ना नाम कहेछे । अंब ॥ १ ॥ अंबरस ॥ २ ॥ साम ॥ ३ ॥ सबल ॥४॥ रुद्र ॥५॥ वैरुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महाकाल ॥ ८ ॥ असी-पत्र ॥ए॥ धनुष ॥ १० ॥ कुंज्न ॥ ११ ॥ वालु ॥ १२ ॥ वेतरणी ॥ १३ ॥ खरस्वर ॥ १४ ॥ महाघोष ॥१५॥ ए पनर परमाधामी ते असुरकुमार मां ज्नव्या । हवे दस जातिना जंज्नका तेहना नाम कहेछे ॥ आणजंज्नका ॥ १ ॥ पाणजंज्नका ॥ २ ॥ लयणजंज्नका ॥ ३ ॥ सयण जंज्नका ॥ ४ ॥ वत्थजंज्नका ॥ ५ ॥ पुष्पजंज्नका ॥ ६ ॥ फलजंज्नका ॥ ७ ॥ वीयजंज्नका

॥ ८ ॥ विजुजंनका ॥ ए ॥ अवीयतजंनका ॥ १० ॥ ए दस जातिना जंनका ते वाण व्यंतरमा नल्या ॥ ३ किल्विषीना नाम ॥ त्रण पलिया ॥ १ ॥ त्रण सागरिया ॥ २ ॥ तेर सागरिया ॥ ३ ॥ ए त्रणकिलविषी देवलोक अंतरनिवासी माटे विमानीक मा नल्या । नव लोकांतिकना नाम कहेछे ॥ सारस्वत ॥ १ ॥ आदित्य ॥ २ ॥ विन्ही ॥ ३ ॥ वरुण ॥ ४ ॥ गर्दतोया ॥ ५ ॥ तोसीया ॥ ६ ॥ अवावाहा ॥ ७ ॥ अगीचा ॥ ८ ॥ रिठा ॥ ए ॥ ए नव लोकांतिक वंनलोकवासी माटे उत्तम वेमानिकमा नल्या ॥ इति चोविस दंरुकना नाम कह्या ॥२४॥ हवे सात कोरमी बोहोतेर लाख नवनपतिना नवन छे । चोरासी लाख नरकावासा छे । असंख्याता वाणव्यंतरना नगर छे॥ असंख्याता जोतिषीना विमान छे ॥ असंख्याती राज्यधानी द्वीपा जोतिषीना छे । चोरासी लाख सताणु हजार त्रेवीस विमान वेमानिकना छे ॥ संख्याता वास मनुष्यना छे। सेष दंरुक नवना असंख्याता असंख्याता वास छे ॥ ते सर्व वर्णव अन्य सिद्धांतादिकथि जाणवो ॥ २४ ॥ हवे सिद्धसिलाना बार नाम कहेछे ॥ इसितिवा ॥ १ ॥ इसिपप्नारातिवा ॥ २ ॥ तणुतिवा ॥ ३ ॥ तणुतणुतिवा ॥ ४ ॥

सिधितिवा ॥ ५ ॥ सिद्धालएतिवा ॥ ६ ॥ मुत्तितिवा ॥ ७ ॥ मुत्तालएतिवा ॥ ८ ॥ लोयग्गेतिवा ॥ ए ॥ लोगथुभियातिवा ॥ १० ॥ लोगपडिवोहेतिवा ॥ ११ ॥ सवपाणभुयजीवसत्तसुहावहेतिवा ॥ १२ ॥ ए वार मोक्षना नाम कह्या ॥ ए नामद्वार किंचित्मात्र संपूर्णं ॥ १ ॥ हवे चोविस द्वार ते चोविस दंडक उपरे उतारवा ते कहे छे ॥ पेहलो नारकीनो दंडक ॥ ते मांहे सरीर त्रण ॥ वैक्रेय ॥ तेजस ॥ कार्मण० ॥ अवघेणा भवधारणि सरीरनी ज० अंगु० असं० ॥ उ० पांचसे धनुषनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय सरीरनी ॥ ज० अंगु० संख्या० ॥ उ० हजार धनुषनी ॥ पेहेली नरके भवधारणी ज० अंगु० असं० ॥ उ० पोणा आठ धनुष ने छ आंगुलनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या० ॥ उ० साढापनर धनुष ने वार अंगुलनी ॥ वीजी नरके ज० अंगु० असं० ॥ उ० साढापनर धनुष ने वार अंगुलनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या० ॥ उ० सवाएकत्रिस धनुषनी ॥ त्रीजि नरके ज० अंगु० असं० ॥ उ० सवाएकत्रिस धनुषनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या० ॥ उ० साडावासठ धनुषनी । चोथी नरके ज० अंगु० असं० ॥ उ० साडावासठ धनुषनी ॥ अने

उत्तरवैक्रेय करे तो । ज० अंगु० संख्या० ॥ उ० सवासो धनुषनी ॥ पाचमी नरके ज० अंगु० असं० ॥ उ० सवासो धनुषनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अंगु० सख्या० ॥ उ० अढीसे धनुषनी ॥ छठि नरकेज० अंगु० अस० उ० अढिसे धनुषनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या० उ० पांचसे धनुषनी ॥ सातमी नरके ज० अंगु० अस ॥ उ० पाचसे धनुषनी ॥ अने उत्तर वैक्रेय करे तो ज० अंगु० सख्या ॥ उ० हजार धनुषनी । मध्यम क०॥ नारकीअसंघेणी ॥ संठाण एक हुंडसंठाण ॥ कषाय च्यार । क्रोध मान माया ने लोभ ॥ पण नारकीने क्रोध घणो ॥ संज्ञा च्यार आहारसंज्ञा । भयसंज्ञा । मैथुनसंज्ञा । परिग्रहसंज्ञा । पण नारकीने भय घणो । लेस्या नारकीने त्रण समुचे ॥ पेहेली ने बीजी नरके एक कापुत लेस्या॥ त्रीजी नरके बे लेस्या ॥ कापुत घणी अने नील थोडी ॥ चोथी नरके एक नील लेस्या ॥ पाचमी नरके बे लेस्या नील घणी अने कृष्ण थोडी ॥ छठी नरके एकली कृष्ण लेस्या ॥ सातमी नरके महाकृष्ण लेस्या ॥ इंद्रीय पांच । श्रोतेंद्रिय ॥१॥ चक्षुइंद्रीय ॥२॥ घ्राणइंद्रीय ॥३॥ रसइंद्रीय ॥४॥ फरसइंद्रीय ॥ ५ ॥ समुद्घात च्यार ॥ वेदनी कषाय मारणांतिक वैक्रेय॥

सनि कहेता पेहेली नरके संज्ञी असंज्ञी वे होय ॥ वीजीथी मांमी सातमी नरक सुधी एकला संज्ञी छे ॥ वेद एक नपुंसकवेद ॥ ५ पर्या लाजे ते जाषा मन जेला वांधे । दृष्टी त्रण ॥ समकीतदृष्टी ॥ मिथ्यातदृष्टी॥समा मिथ्यादृष्टी ॥ दर्शण त्रण ॥ चक्षुदर्शन॥अचक्षुदर्शन । अवधिदर्शन॥ ज्ञान त्रण । मतिज्ञान । श्रुतज्ञान ॥ अवधिज्ञान ॥ अज्ञान त्रण । मतिअज्ञान ॥ श्रुतअज्ञान। विजंग अज्ञान ॥ जोग इग्यार ॥ च्यार मनना । च्यार वचनना । त्रण कायाना ॥ ते वैक्रेय वैक्रेयनो मिश्र ने कार्मणकाय जोग ॥ एवं इग्यार जोग ॥ उपयोग नव ॥ त्रण ज्ञान त्रण अज्ञान । त्रण दर्शन एवं नव ॥ तहा तेमज आहार लेतो जघन्य उत्कृष्टो छ दिसनो । आहार ले ॥ ते वे प्रकारनो ॥ उज आहार ने रोम आहार ॥ तेपण असुन्न ते अचेत ॥ उववाय ते आवीने उपजे पहेलीनर्के वे दंमकना ते मनुष्य गर्नज ॥ ने तिर्यंचगर्नजाने समुर्छिम ॥ ए वे दंमकना आविने उपजे अने वीजीथी मांमीने सातमी सुधी गर्नजतिर्यंच ने गर्नज मनुष्यना आवी उपजे । स्थिति पहेली नरके जघन्य दस हजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी एक सागरनी ॥ वीजी नरके ज० एक सागरनी ॥ उ० त्रण सागरनी त्रीजी नरके ज० त्रणसागरनी ॥

उ० सात सागरनी ॥ चोथी नरके ज० सात सागरनी उ० दस सागरनी ॥ पांचमी नरके ज० दस सागरनी ॥ उ० सतर सागरनी ॥ छठी नरके ज० सतर सागरनी । उ० बावीस सागरनी ॥ सातमी नरके ज० बावीस सागरनी ॥ उ० तेत्रीस सागरनी ॥ समोहिया मरण ने असमोहिया मरण । बे मरण छे । चवण ते नारकी चविने पेहेलीथी छठी सुधिना बे दंडकमां जाय मनुष्यने तिर्यंचमां ॥ अने सातमी नरकनो एक दंडकमां ते तिर्यंचमां जाय ॥ गइ कहेतां । पेहेलीथी मांडी छठी सुधिना नारकी मरीने बेगतीमां जाय ते ॥ मनुष्यने तिर्यंचमां जाय ॥ आवे पण बेगतिनो ॥ मनुष्य ने तिर्यंचनो सातमी नरकना नारकी बे गतिमांथी आवे मनुष्य ने तिर्यंचना ने जाय एक तिर्यंचनिगतिमां ॥ प्राणदस लाते॥जोग त्रण मन वचन ने कायाना । ए त्रण ॥ ए प्रथम दंडक नारकीनो सपूर्ण ॥ १ ॥ हवे दस जवनपतिना दस दंडक कहे छे ॥ तेहमां सरीर त्रण ॥ वैक्रेय ॥ तेजस ॥ कार्मण ॥ अवगेणा जवनपतिनी ॥ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो जाग ॥ उत्कृष्टी सात हाथनी । अने उत्तर वैक्रेय करे तो जघन्य अंगुलनो सख्यातमो जाग ॥ उत्कृष्टीलाख जोजननी । सघेण नथी ।

संठाण एक समचउरंस संठाण ॥ कषाय च्यारे पण देवताने लोभ घणो ॥ संज्ञाच्यारे पण देवताने परिग्रह संज्ञा घणी । लेस्या च्यार कृष्णलेस्या । नीललेस्या । कापुतलेस्या ॥ तेजुलेस्या । इंद्री पांच छे ॥ समुद्घात पांच ॥ वेदनी कषाय मारणांतिक वैक्रेय ने तेजस संज्ञी असंज्ञी बे जाणवा ॥ वेद बे स्त्री ने पुरुष । प्रजा ५ भाषामन भेला बांधे ॥ द्रष्टी त्रण ॥ दर्शण त्रण ॥ केवल दर्शन एक नही ॥ ज्ञान त्रण ॥ मति ज्ञान श्रुत ज्ञानने अवधि ज्ञान ॥ अज्ञान त्रण ॥ मतिअज्ञान । श्रुतअज्ञान ॥ विभंगअज्ञान ॥ जोग इग्यार ॥ च्यार मनना । च्यार वचनना त्रण कायाना । वैक्रेय वैक्रेयनो मिश्र ॥ कार्मण कायजोग । एवं इग्यार ॥ उपयोग नव ॥ त्रण ज्ञान ॥ त्रण अज्ञान ॥ त्रण दर्शन ॥ एवं नव ॥ तहा तिमज आहार ले॥ जघन्य ने उत्कृष्टो छ दिसनो आहार ले । वली बे प्रकारे आहार ले । उजआहार ने रोम आहार ॥ ते पण सुभ ने अचेत आहार ॥ उववाय ते आवीने उपजे बे दंडकनो ॥ मनुष्यने तिर्यंचनो॥ स्थिति भवनपतिमां दक्षण दिसना। असुरकुमारनी। ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० एक सागरनी ॥ तेहनी ॥ देवीनी ज० दस हजार वरसनी। उ० साढा त्रण पल्योपमनी ॥

तेहना नवनी कायना देवतानी । ज० दस हजारवरसनी । उ० दोढ पल्योपमनी ॥ तेहनी देवीनी ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० पोणा पल्यनी ॥ उत्तर दिसना असुरकुमारनी स्थिति ॥ ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० एक सागर जाझेरानी ॥ तेहनी देवीनी ज० दश हजार वर्षनी । उ० साझा च्यार पल्योपमनी ॥ तेहना नवनिकायना देवतानी ज० दसहजार वरसनी । उ० वे पल्योपम देसे उंणी ॥ तेहनी देवीनी ज० दस हजार वरसनी । उ० एक पल्योपम देसे उंणीनी ॥ समोहिया मरण अने असमोहिया मरण ॥ ए वे मरण लाभे । चवण ते चविने पांच दंडकमां जाय ॥ पृथ्वी ॥ पाणी ॥ वनस्पति ॥ मनुष्य ने तिर्यंच ए पांचमां जाय ॥ गइकहे० । मरिने वे गतिमां जाय मनुष्यने तिर्यंचमां ॥ आगइ ने आवे पण वेगतिनो ॥ मनुष्यने तिर्यंचनो ॥ प्राण दस लाभे । जोग त्रण ॥ इति दस भवनपतिना दस दंडक संपूर्ण ॥ ११ ॥ हवे पांचस्थावरना पांचदंडक कहेछे पृथ्वी ॥ १ ॥ पाणी ॥२ ॥ तेउ ॥३॥ वनस्पति ॥४॥ ए च्यार ने सरीर त्रण ॥ उदारिक ॥ तेजस ने कार्मण ॥ अने वायराने सरीर च्यार । उदारिक । वैक्रय । तेजस ने कार्मण ॥ अववेणा पृथ्वी पाणि तेउ

वाउ ए च्यारेनी ॥ जघन्य ने उत्कृष्टी अंगुलनो असंख्यातमो नाग ॥ अने वनस्पतिनी जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो नाग ॥ उत्कृष्टी हजार जोजननी झाझेरी कमल प्रमुखनी ॥ संघेण एक छेवट्ठु ॥ संठाण एक हुंरू । पांचे ना संठाण कहेछे ॥ प्रथवीनुं संठाण मसुरनी दाल तथा चंद्रमाने आकारे ॥ १ ॥ पाणीनुं संठाण पाणीना परपोटाने आकारे ॥ २ ॥ तेउनुं संठाण सोयना नाराने आकारे ॥३॥ वायरानुं संठाण धजापताकाने आकारे ॥ ४ ॥ वनस्पतिनुं संठाणनाना प्रकारनुं ॥ ५ ॥ कषाय च्यारे ॥ संज्ञा च्यारे ॥ लेस्या पृथवी पाणी वनस्पीत ने अपर्याप्ता वेला च्यार पेहेली ॥ अने पांचे ने लेस्या त्रण पेहेली ॥ इंद्री एक कायानी । समुद्घात पृथवी पाणी तेउ वनस्पीत ने ॥ ३ ॥ वेदनी कषायमारणांतिक ॥ अने वायराने समुद्घात च्यार वैक्रेयनी वधी ॥ संज्ञी ते पांचे स्थावर असंज्ञी ॥ वेद एक नपुंसक ॥ पर्या च्यार ॥ आहार पर्या ॥ सरीरपर्या ॥ इंद्रीपर्या ॥ स्वासो स्वासपर्या ॥ द्रष्टीएकमिथ्यात ॥ दर्शन एक अचक्षुदर्शन । ज्ञान नथी । अज्ञान बे । मतीअज्ञान ॥ श्रुत अज्ञान । जोग पृथ्वी पाणी तेउ वनस्पति ने त्रण ॥ उदारीक ॥१॥ उदारिकनो मिश्र ॥ २ ॥

कार्मण कायजोग ॥३॥ अने वायराने पांच ते ॥ वैक्रेय ॥ वैक्रेयनो मिश्र ॥ ए बे वध्या । उपयोग त्रण ॥ बे अज्ञान ॥ एक अचक्षु दर्शन ॥ एवं त्रण । तहा तिमज आहार ले ज० त्रण दिसनो उ० ठ दिसनो ॥ ते वलि बे प्रकारनो उंज १ ने रोम २ ॥ कवलवर्जिने ॥ तथा ३ प्रकारनो ते सचेत ॥ अचेतने मिश्र ॥ उववाय ते आवीने उपजे । पृथ्वी पाणीने वनस्पतिमां ॥ त्रेविस दंडकना एक नारकी वरजीने ॥ अने तेउ वाउमां दस दंडकना आवीने उपजे ॥ पांच स्थावर ॥ त्रण विगलेंद्री ॥ मनुष्यने तिर्यंच ॥ एव दसना ॥ स्थिति पृथ्वीनी ज० अतर्मुहु-र्त्तनी । उ० बाविस हजार वरसनी ॥ १ ॥ पाणीनी ज० अतर्मुहुर्त्तनी । उ० सात हजार वरसनी ॥ २ ॥ तेउनी ज० अंतर्मुहुर्त्तनी उ० त्रण अहोरात्रीनी ॥ ३ ॥ वायरानी । ज० अंतर्मुहुर्त्तनी ॥ उ० त्रण हजार वरसनी ॥ ४ ॥ वनस्पतिनी ज० । अतर्मुहुर्त्तनी ॥ उ० दस हजार वर्षनी ॥५॥ समोहियामरण अने असमोहियामरण । ए बे मरण छे ॥ चवण ते चविने ॥ पृथ्वी पाणी ने वनस्पति ॥ दस दंडकमां जाय ॥ पाच स्थावर त्रण विगलेंडि ॥ मनुष्य ने तिर्य-चमां जाय । अने तेउ वाउ नव दंडकमां जाय ॥ पाच स्थावर त्रण विगलेंडीने तिर्यंच ए

नव ॥ गइ कं० ते मरीने पृथ्वी पाणी ने वनस्पति वे गतिमां जाय मनुष्य ने तिर्यंचमां ॥ अने तेउ वाउ एकगतिमां जाय तिर्यंचमां ॥ आगइ ते आवे पृथ्वी पाणी ने वनस्पतिमां त्रण गतिनो आवे ॥ देवता मनुष्यने तिर्यंचनो ॥ अने तेउ वाउमां वेगतिनो आवे । मनुष्य ने तिर्यंचनो । प्राण पांचे ने च्यार ॥ एकेंद्रिपणुं ॥ १ ॥ कायबल ॥ २ ॥ स्वासोस्वास ॥ ३ ॥ आउखु ॥ ४ ॥ जोग एक कायजोग ॥ इति पांच स्थावरना पांच दंडक सपूर्ण ॥ १६ ॥ हवे त्रण विगलेंद्रियना ३ दंडक कहेछे वेइंद्रि ॥ तेरंद्री ॥ चोरिंद्रीमां सरीर त्रण ॥ उदारिक । तेजस । कार्मण । अवघेणा वेइंद्रीनी ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ उ० वार जोजननी ॥ तेरिंद्रीनी ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ उ० त्रण गाउनी ॥ चउरिंद्रीनी ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग । उ० च्यार गाउनी ॥ संघेण एक छेवट्ठु ॥ संठाण एक हुंड ॥ कषाय च्यारे ॥ संज्ञा च्यारे ॥ लेस्या त्रण पेहेली ॥ इंद्री वेरिंद्रीने ॥ वे ॥ काया ॥१॥ जिभ ॥ २ ॥ तेरिंद्रीने इंद्री त्रण । नासिकावधी ॥ चउरिंद्रीने इंद्रीचार॥ आंख वधि॥ समुद्घात त्रण वेदनी कषायने मारणांतिक ए त्रण ॥ संज्ञी के० ते असंज्ञी ॥ वेद एक नपुंसक ॥

पर्या पांच मन नही ॥ द्रष्टी बे ॥ समकित द्रष्टीने मिथ्यातद्रष्टी ॥ दर्शन बेइंद्री तेइंद्रीने एक अचक्षूदर्शन ॥ चउरिंद्रीने बे दर्शन ॥ चक्षूदर्शन ने । अचक्षूदर्शन ॥ ज्ञान । बे मतिज्ञान ने । श्रुतज्ञान ॥ अज्ञान बे मतिअज्ञान । श्रुतअज्ञान ॥ जोग च्यार उदारिक ॥१॥ उदारिकनो मिश्र ॥ २ ॥ कार्मणकाय जोग ॥ ३ ॥ व्यवहार वचन ॥ ४ ॥ उपयोग बेइंद्री तेइंद्रीने पांच ॥ बे ज्ञान बे अज्ञान । एक अचक्षूदर्शन ए पांच ॥ चउरिंद्रीने उपयोग छ ॥ बे ज्ञान ॥ बे अज्ञान । बे दर्शन ए छ । तहां कहेता तिमज आहार ले ॥ जघन्य अने उत्कृष्टो छदिसनो ॥ तथा त्रण प्रकारनो आहार ले । उंज ॥१॥ रोम ॥२॥ ने कवल ॥३॥ उववाय ते आवीने उपजे दस दंडकना । पांच स्थावर त्रण विगलेंद्री मनुष्यने तिर्यंच ॥ ए दस ॥ स्थिति बेरिंद्रीनी जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी उत्कृष्टी बार वरसनी ॥ तेइंद्रीनी जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी । उत्कृष्टी उंगण पचास दिवसनी । चउरिंद्रीनी जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी ॥ उत्कृष्टी छ महिनानी ॥ समोहिया मरण । अने असमोहिया मरण बे छे ॥ चवण ते चविने जाय दस दंडकमां ॥ पांच स्थावर त्रण विगलेंद्री ॥ मनुष्य ने तिर्यंचमां जाय । गइ ते मरीने बेगतिमां जाय ॥

मनुष्य ने त्रिजंचमां ॥ आगइ ते आवे पण बेगतिनो मनुष्यने त्रिजंचनो ॥ प्राण बेरिंद्री ने छ प्राण । बेइंद्रीना वे प्राण ॥ कायबल ॥ स्वासोस्वास ॥ आउखू । वचन । ए छ । तेरिंद्री ने सात प्राण । ते नासिका वधी । चउरिंद्रीने आठप्राण आंख वधी ॥ जोग बे ॥ वचनजोग ने । कायजोग ॥ इति त्रण विगलेंद्रीना त्रण दंरुक संपूर्ण ॥ १ए ॥ हवे विसमो तिर्यंच पंचेंद्रीनो दंरुक कहेछे । हवे पांचे समुर्छिमने सरीर त्रण ॥ उदारिक ॥ तेजस ॥ ने कार्मण ॥ अने गर्नजने च्यार सरीर वैक्रेय वध्युं ॥ अवघेणा पांचेनी कहे छे ॥ हवे जलचर समुर्छिम ने गर्नजनी । ज० अंगु० असं० ॥ उ० हजार जोजननी ॥ थलचर समुर्छिमनी ज० अंगु० असं ॥ उ० । प्रत्येक गाउनि ॥ गर्नजनी ज० अंगु० असं० ॥ उ० छ गाउनी । उरपर सर्प समुर्छिमनी ज० अंगु० असं० ॥ उ० प्रत्येक जोजननी ॥ अने गर्नजनी ज० अंगु० असं० ॥ उ० हजार जोजननी ॥ नुजपर समुर्छिमनी । ज० अंगु० असं० ॥ उ० प्रत्येक धनुषनी । गर्नजनी । ज० अंगु० असं० ॥ उ० प्रत्येक गाउनी ॥ खेचर समूर्छिमने गर्नजनी ज० अंगु० असं० । उ० प्रत्येक धनुषनी ॥ उत्तर वैक्रेय करे तो ॥ ज० अंगु० संख्या० । उ० नवसें

जोजननी ॥ संघेण समुर्छिमने एक छेवट्ठ ॥ गर्ज्जजने छ संघेण । संठाणसमुर्छिमने । एक हुंड । गर्ज्जजने छ संठाण ॥ कषाय च्यारे पण त्रिजंचने माया घणी ॥ संज्ञा च्यारे पण त्रिजंचने आहार संज्ञा घणी ॥ लेस्या समुर्छिमने त्रण पेहेली । गर्ज्जज ने छ लेस्या ॥ इंद्री पांचे छे ॥ समुद्घात समुर्छिमने त्रण ॥ वेदनी कषाय ने मारणांतिक अने गर्ज्जज ने समुद्घात पांच वेदनी कषाय मारणांतिक वैक्रेय ने तेजस ॥ समुर्छिम असंज्ञी ॥ गर्ज्जजसंज्ञी ॥ समुर्छिममां वेद एक नपुंसक ॥ गर्ज्जजने त्रण वेद ॥ पर्यासमुर्छिमने पांच मन नही ॥ अने गर्ज्जजने पर्या छ ॥ द्रष्टी समुर्छिमने वे ॥ समकितने मिथ्यात ॥ गर्ज्जजने त्रण द्रष्टी ॥ दर्शन समुर्छिमने वे चक्षूदर्शनने । अचक्षूदर्शन ॥ गर्ज्जजने त्रण दर्शन ॥ ज्ञानसमुर्छिमने वे मतिज्ञान॥श्रुतज्ञान। गर्ज्जजने त्रण ज्ञान॥अज्ञानसमुर्छिमने वे । मति अज्ञान ने श्रुतअज्ञान॥ गर्ज्जजने त्रण अज्ञान ॥ जोग समुर्छिमने च्यार ॥ उदारिकना वे ॥ कार्मण ३ । व्यवहार वचन ४ ॥ गर्ज्जजने तेर जोग आहारकना वे नही ॥ उपयोगसमुर्छिमने छ । वे ज्ञान वे अज्ञान वे दर्शन॥ गर्ज्जजने नव उपयोग ॥ त्रण ज्ञान ॥ त्रण अज्ञान ॥ त्रण दर्शन । तिमज ॥ आहार ले ॥ जघन्य

उत्कृष्टो ठ दिसनो आहार ले ॥ तथा त्रण प्रकारे आहार ले । उंज रोमने कवल आहार ले ते पण सचेत अचेतने मिश्र ॥ उववाय ते । आवीने उपजे ॥ समुर्छिममां दस दंरूकना ॥ पांच स्थावर त्रण विगलेंद्री ॥ मनुष्यने त्रिजंच ॥ गर्न्नजमां चोविसे दंरूकना आविने उपजे । स्थिति जलचर समुर्छिमने गर्न्नजनी । ज० अंत० । उ० पूर्व क्रोरूनी । थलचर समुर्छिमनी ज० अंत० ॥ उ० चोरासी हजार वर्षनी । अने गर्न्नजनी ज० अंत० ॥ उ० त्रण पल्योपमनी ॥ उरपर सर्प समुर्छिमनी ज० अंत० । उ० त्रेपन हजार वरसनी ॥ अने गर्न्नजनी ज० अंत० ॥ उ० पूर्वक्रोरूनी ॥ नुजपर समुर्छिमनी । ज० अंत० ॥ उ० वेतालिस हजार वरसनी अने गर्न्नजनी ज० अंत० । उ० पूर्व क्रोरूनी ॥ खेचर समुर्छिमनी ज० अंत० उ० बोहोतेर हजार वरसनी ॥ अने गर्न्नजनी ज० अंत० उ० पल्योपमनो असंख्यातमो नाग । समोहियामरण ने असमोहियामरण ॥ ए बे मरण ठे ॥ चवण के० चवीने ॥ समुर्छिम जाय तो बाविस दंरूकमां । जोतिषीने विमानीकमां जाय नही ॥ अने गर्न्नज चोविसे दंरूकमां जाय । गइ ते० समुर्छिम ॥ अने गर्न्नज मरीने च्यार गतिमां

जाय । आगइ ते आवे समुर्छिममां बे गतिनो । मनुष्य ने तिर्यंचनो ॥ अने गर्भजमां च्यारे गतिनो आवे ॥ प्राण समुर्छिमनें नव । मन नही । अने गर्भजने प्राण दशे लाभे ॥ जोग समुर्छिमने बे ॥ कायजोग ने वचनजोग ॥ अने गर्भजने त्रण जोग ॥ मन वचन ने काय-जोग ॥ इति विसमो तिर्यंचपंचेंद्रीनो दंडक संपूर्ण ॥२०॥ हवे एकविसमो मनुष्यनो दंडक कहेछे ॥ तेमां समुर्छिम मनुष्यमां शरीर त्रण । उदारिक तेजस ने कार्मण । जुगलीयामां सरीर त्रण तेहीज ॥ कर्मभुमि मनुष्यमां सरीर पांच लाभे ॥ अवघेणा समुर्छिमनि जघन्य ने उत्कृष्टी अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ अने गर्भज मनुष्यनी भरत ऐरवतमां आरानी परे जाणवी ॥ पेहेले आरे बेसता त्रण गाउनी ॥ उतरता बे गाउनी ॥ बीजे आरे बेसता बे गाउनी ॥ उतरता एक गाउनी ॥ त्रीजे आरे बेसता एक गाउनी ॥ उतरतां पांचसे धनुषनी । चोथे आरे बेसता पांचसे धनुषनी ॥ उतरतां सात हाथनी ॥ पांचमे आरे बेसता सात हाथनी ॥ उतरतां एक हाथनी ॥ छठे आरे बेसतां एक हाथनी ॥ उतरता मुंढा हाथनी ॥ पछे चडतां अवला सवली जाणवी ॥ ५ महाविदेहमां पांचसें । धनुषनी ॥ उत्तर

वैक्रेय करे तो ॥ ज० अंगु० संख्या० ॥ उ० लाख जोजन जाझेरी ॥ हेमवय इरणवयमां ज० अंगु० असं० ॥ उ० एक गाउनी ॥ हरिवास रमकवासमां ॥ ज० अंगु० असं० ॥ उ० बे गाउनी । देवकुरु उत्तरकुरुमां ज० । अंगु० असं० । उ० त्रण गाउनी ॥ हवे छपन्न अंतर द्वीपामां ज० अंगु० असं० ॥ उ० आठसें धनुषनी ॥ संघयण ॥ समुर्छिम ने एक छेवट्ठ ॥ जुगलियाने एक वज्रऋषभनाराचसंघयण ॥ पन्नर कर्मभुमिना गर्भज मनुष्यने छ संघयण ॥ संठाण समुर्छिमने एक हुंरु ॥ जुगलियाने । एक समचउरंस ॥ कर्मभुमिना गर्भज मनुष्यने छ संठाण । कषाय च्यारे पण मनुष्यने मानघणुं ॥ संज्ञा च्यारे पण मनुष्यने मैथुन संज्ञा घणी ॥ लेस्यासमुर्छिमने त्रण पेहेली ॥ जुगलीयाने लेस्या च्यार पेहेली ॥ गर्भज ने छ लेस्या । इंद्री पांचे ॥ समुद्घात समुर्छिमने त्रण ॥ वेदनी कषाय ने मारणांतिक ॥ जुगलियाने समुद्घात त्रण तेहीज ॥ कर्मभुमीना गर्भज मनुष्यने ॥ सात समुद्घात ॥ समुर्छिम असंज्ञी ॥ गर्भज संज्ञी ॥ वेद समुर्छिमने एक नपुंसक ॥ जुगलियामां वेद बे ॥ स्त्री ने पुरुष । कर्मभुमिना गर्भज मनुष्यमां त्रण वेद ॥ स्त्री पुरुष ने नपुंसक ॥ पर्या समुर्छिमने

च्यार ॥ जाषाने मन नथी॥ गर्नजने ब पर्या ॥ दृष्टी समुर्छिमने एक मिथ्यात ॥ दस अकर्म-
ज़ुमीमां बे दृष्टी ॥ समकित ने मिथ्यात ॥ वीस अकर्मजु ..ने बपन्न अंतरधीपामां ॥ एक
मिथ्यात दृष्टी ॥ कर्मजुमिना मनुष्यमां त्रणे दृष्टी ॥ दर्शन समुर्छिम अने जूगलीयाने ॥
बे । चक्षुदर्शन ने अचक्षुदर्शन । गर्नजने दर्शन च्यारे लाने । दसअकर्मजुमीमां ज्ञान
बे ॥ अने वीसअकर्म ज़ूमी ने बपन्न अंतर द्वीपा ने समुर्छिममां नथी ॥ गर्नजने
ज्ञान पांच । अज्ञान समुर्छिमने बे मति अज्ञानने श्रुतअज्ञान । गर्नजने त्रण ।
जोग समुर्छिमने त्रण । जदारिकना वे ने १ कार्मणकायजोग ए त्रण ॥ जूगलीयाने
जोग ॥ ११ ते मनना ॥ ४ ॥ वचनना ॥ ४ ॥ जदारिकना ॥ २ ॥ कार्मण ॥ १ ॥ एवं
जोग ॥ ११ ॥ गर्नजने पनर जोग ॥ दश अकर्मज़ूमी ते पाच देवकुरु पांच उत्तरकुरु ए
दशमा ॥ जपयोग ६ ॥ ते बे ज्ञान ॥ २ ॥ अज्ञान ॥ २ ॥ दर्शन ए ॥ ६ ॥ अने वीस अकर्म-
ज़ूमी ॥ ५६ ॥ अंतरद्वीपामां ने समुर्छिमने च्यार ॥ बे अज्ञान बे दर्शन । गर्नजने बार
जपयोग ॥ निमज आहार छे तो । जघन्यने जत्कृष्टो ब दिसनो ॥ तथा त्रण प्रकारे आहार

ले उज रोमने कवल । ते पण सचेत अचेतने मिश्र ॥ उववाय ते आवीने उपजे । समु-छिममां आठ दंरुकना ॥ पृथ्वी पाणी वनस्पति त्रण विगलेंडी ॥ मनुष्यने तिर्यंच ॥ ए आठनो ॥ जुगलीयामां २ दंरुकनो ते मनुष्य ने तिर्यंचनो ॥ गर्नज मनुष्यमां बाविस दंरु-कना उपजे ते तेउ वाउना नही ॥ स्थिति समुछिमनी जघन्यने उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्त्तनी ॥ गर्नजनी आरानी परे जाणवी ॥ पेहेले आरे बेसतां त्रण पल्योपमनी । उतरतां बे पल्यो-पमनी ॥ बीजे आरे बेसतां बे पल्योपमनी ॥ उतरतां एक पल्योपमनी ॥ त्रीजे आरे बेसतां एक पल्योपमनी ॥ उतरतां पूर्व क्रोरुनी ॥ चोथे आरे बेसतां पूर्व क्रोरुनी ॥ उतरतां सो वरस जाजेरानी । पांचमे आरे बेसतां सो वरस जाजेरानी । उतरते आरे विस वरसनी ॥ छठे आरे बेसतां वीस वरसनी । उतरते आरे सोल वरसनी ॥ एम चरुतां उतरतां अवला सवली जाणवी । हिमवय इरणवयमां एक पल्योपमनी ॥ हरिवास रमकवासमां । बे पल्योपमनी ॥ देवकुरू उतरकुरूमां त्रण पल्योपमनी । छपन्न अंतरद्वीपामां । पल्योपमनो । असंख्यातमो नाग । ५ महाविदेहमां पूर्व क्रोरुनी ॥ समोहिया ने असमोहिया ए बे मरण छे ॥ चवण

ते चवीने समुर्छिम दस दंडकमां जाय ॥ पांच स्थावर ने त्रण विगलेंद्री । मनुष्य ने तिर्यंच ॥ एवं दस ॥ जुगलीया एक देवगतिमां जाय॥ गर्भज चोविसे दंडकमां जाय ॥ गइ ते मरीने समुर्छिम बे गतिमां मनुष्य ने तिर्यंचमां जाय ॥ गर्भज मनुष्य पांच गतिमां जाय ॥ आगइ ते समुर्छिमने जुगलीयामां आवे तो बे गतिनो । मनुष्य ने तिर्यंचनो ॥ गर्भजमां च्यार गतिनो आवे ॥ प्राण समुर्छिमने आठ भाषा ने मन नही ॥ गर्भजने दस प्राण ॥ जोगसमुर्छिमने एक कायानो ॥ गर्भजने त्रण जोग ॥ इति एकविसमो मनुष्यनो दंडक सपूर्ण ॥२१॥ हवे बाविसमो वाणव्यंतरनो दंडक ॥ तेमां सरीर त्रण ॥ वैक्रेय ॥ तेजस ने कार्मण ॥ अवघेणा ज० अंगु० असं० उ० सात हाथनी ॥ अने उत्तर वैक्रेय करे तो ज० अगु० सख्या० । उ० लाख जोजननी ॥ संघयण नथी । सठाण एक समचउरस ॥ कषाय च्यारे पण देवताने लोभ घणो । संज्ञा च्यारे पण देवताने ॥ परिग्रह संज्ञा घणी ॥ लेस्या च्यार पेहेली । इंद्री पांचे । समुद्घात पांच । आहारकने केवल नही ॥ संज्ञी असंज्ञी बे ॥ वेद बे ॥ स्त्रीने पुरुष ॥ पर्या ५ भाषा मन भेलाबांधे । दृष्टी त्रण ॥ दर्शन त्रण । ज्ञान त्रण । अज्ञान त्रण॥

जोग अगीयार ॥ च्यार मनना च्यार वचनना ॥ त्रण कायाना ते वैक्रेय॥ वैक्रेयनो मिश्र॥ कार्मण कायजोग ॥ एवं अगीयार । उपयोग नव त्रण ज्ञान त्रण अज्ञान । त्रण दर्शन ॥ एवं नव ॥ तेमज आहार ले तो जघन्य ने उत्कृष्टो ठ दिसनो ॥ तथा बे प्रकारे उज ने रोम ते पण सुज्ञ ते पण अचेत आहार । उववाय ते आवीने उपजे बे दंडकना ॥ मनुष्यने तिर्यंचना । स्थिति वाणव्यंतरनी । ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० एक पल्योपमनी ॥ तेहनी देवीनी ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० अरध पल्योपमनी ॥ समोहिया ने असमोहिया ए बे मरण छे ॥ चवण ते चविने जाय पांच दंडकमां ॥ पृथ्वी पाणी ने वनस्पति मनुष्य ने तिर्यंच ए पांच ॥ गइ ते मरीने बे गतिमां जाय ॥ मनुष्य ने तिर्यंचमां ॥ आगइ ते आवे पण बेगतिना मनुष्य ने तिर्यंचना ॥ प्राण दस ॥ जोग त्रण । मन वचन ने कायाना ॥ इति बाविसमो वाणव्यंतरनो दंडक संपूर्ण ॥२२॥ हवे त्रेविसमो जोतिषीनो दंडक तेहमां सरीर त्रण ॥ वैक्रेय तेजस । ने कार्मण । अवघेणा ज० अंगु० असं० उ० सातहाथनी अने उत्तर वैक्रेय करे तो ॥ ज० अंगु० संख्या० उ० । लाख जोजननी ॥ संघयण नथी ॥ संठाण एक

समचउरस । कषाय च्यारे ॥ संज्ञा च्यारे लेस्या एक तेजु । इन्द्री पांचे ॥ समुद्घात पांच आहारकने केवल नही । संज्ञी छे ॥ वेद वे । पर्या ५ नाषा मन नेला बांधे ॥ दृष्टी त्रण ॥ दर्शण त्रण । ज्ञान त्रण ॥ अज्ञान त्रण ॥ जोग अगीयार । च्यार मनना च्यार वचनना त्रण कायाना ते वैक्रेय । वैक्रेयनो मिश्र ने कार्मण कायजोग ॥ एवं अगीयार ॥ उपयोग नव । त्रण ज्ञान ॥ त्रण अज्ञान । त्रण दर्शन ॥ एवं नव ॥ तिमज आहार ले तो जघन्य ने उत्कृष्टो छदिसनो ॥ तथा वे प्रकारे ॥ उंज ने रोम ते पण सुन ने अचेत आहार ॥ उववाय ते आविने उपजे ॥ वे दंमकना ॥ मनुष्य ने तिर्यंचना । स्थिति चंद्रमाना देवतानी ज० पा पल्यनी । उ० एक पल ने लाख वरसनी ॥ तेहनी देवीनी ज० पा पल्यनी ॥ उ० अरध पल्य ने पचास हजार वरसनी ॥ सूर्यना देवतानी ज० पा पल्यनी ॥ उ० एक पल्य ने हजार वरसनी ॥ तेहनी देवीनी ज० पा पल्यनी ॥ उ० अरध पल्य ने पांचसे वरसनी ॥ ग्रहनादेवतानी ज० पा पल्यनी ॥ उ० एक पल्यनी ॥ तेहनी देवीनी ज० पा पल्यनी उ० अरध पल्यनी ॥ नक्षत्रना देवतानी । ज० पा पल्यनी ॥ उ० अरध पल्यनी ॥ तेहनी देवीनी ॥

ज० पल्यनो आठमो नाग ॥ उ० पा.पल्यनी ॥ तारानादेवतानी ज० पल्यनो आठमो नाग। उ० पा.पल्यनी ॥ तेहनी देवीनी ॥ ज० पल्यनो आठमो नाग ॥ उ० पल्यनो आठमो नाग फ़ाफ़ेरी ॥ समोहिया ने असमोहिया ए वे मरण छे ॥ चवण ते चविने जाय। पांच दंमकमां। पृथ्वी पाणी वनस्पति मनुष्य ने तिर्यंचमां ॥ गइ ते मरीने वे गतिमां जाय ॥ मनुष्य ने तिर्यंचमां । आगइ ते मनुष्य ने तिर्यंचनो आवे ॥ प्राण दस ॥ जोग त्रण ॥ इति त्रेविसमो ज्योतिषीनो दंमक संपूर्ण ॥२३॥ हवे चोविसमो वैमानिकनो दंमक ॥ तेहमां सरीर त्रण ॥ वैक्रेय तेजस ने कार्मण ॥ अवघेणा सुधर्म इशान ए वे देवलोके ज० अंगु० असं० ॥ उ० सात हाथनी। त्रीजे चोथे देवलोके छ हाथनी ॥ पांचमे छठे देवलोके पांच हाथनी ॥ सातमे आठमे देवलोके च्यार हाथनी ॥ नवमे दशमे इग्यारमे । बारमे दे० । त्रण हाथनी ॥ नव ग्रैवेयकें वे हाथनी ॥ च्यार अनुत्तर विमानमां एक हाथनी ॥ सर्वार्थसीद्धमां मुंढा हाथनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो। बार देवलोक सुधी ज० अंगु० संख्या० ॥ उत्कृष्टी लाख जोजननी ॥ संघयण नथी ॥ संठाण एक समचउरंस ॥ कषाय च्यारे पण लोन घणो ॥ संज्ञा चारे पण

परिग्रहसंज्ञा घणी । लेस्या पेहेले बीजे देवलोके एक तेजु लेस्या । त्रीजे चोथे पांचमे एक पदम लेस्या । छठाथी मांडी नव ग्रैवेयकमां ॥ एक सुकल लेस्या । अने पांच अनुत्तर विमानमां १ परमसुकल लेस्या ॥ इन्द्री पांचे ॥ समुद्घात बार देवलोकमां पांच ॥ आहारक ने केवल नही ॥ नव ग्रैवेयक ने पांच अनुत्तर विमानमां त्रण ॥ वेदनी कषाय ने मारणांतिक ॥ संज्ञी एकला छे ॥ वेद पेहेले बीजे देवलोके बे स्त्रीवेद । पुरुष वेद ॥ त्रीजाथी ते सर्वार्थसीद्ध लगे एक पुरुष वेद ॥ पर्या ५ भाषा मन भेला बांधे ॥ दृष्टी बार देवलोकमां त्रण दृष्टी ॥ नव ग्रैवेयकमां बे दृष्टी समकित ने मिथ्यात ॥ पांच अनुत्तर विमानमां एक दृष्टी समकित ॥ बार देवलोक ने नव ग्रैवेयकमां त्रण ज्ञान त्रण अज्ञान त्रण दर्शन ॥ पांच अनुत्तर विमानमां अज्ञान नथी । जोग अगीयार च्यार मनना च्यार वचनना त्रण कायाना ते वैक्रेय वैक्रेयनो मिश्र ने कार्मण कायजोग ॥ एवं अगीयार ॥ उपयोग बार देवलोक ने नव ग्रैवेयकमां नव ॥ त्रण ज्ञान ॥ त्रण अज्ञान ॥ त्रण दर्शन एव नव ॥ पांच अनुत्तर विमानमा छ उपयोग ॥ त्रण ज्ञान ॥ त्रण दर्शन ए छ ॥ तिमज आहार ले तो जघन्य ने ॥ उत्कृष्टो

छ दिसनो तथा बे प्रकारे उज ने रोम ते पण अचेत ने सुत्त आहार ॥ उववाय ते आवीने उपजे पेहेला देवलोकथी मांमीने आठमा देवलोक सुधी बे दंमकना मनुष्य ने तिर्यंचना । अने नवमेथी ते सर्वार्थसिद्ध लगे एक मनुष्यनो आवे ॥ स्थिति पेहेले देवलोके जघन्य एक पल्यनी ॥ उत्कृष्टी बे सागरनी ॥ तेहनी परिग्रहीत देवीनी ज० एक पल्यनी । उ० सात पल्यनी ॥ अने अपरिग्रहीत देवीनी ॥ ज० एक पल्यनी । उ० पचास पल्यनी ॥ बीजे देवलोके ज० एक पल्यनी जाजेरी ॥ उ० बे सा० जाजेरी ॥ तेहनी परिग्रहीत देवीनी ज० एक पल्यनी जाजेरी । उ० नव पल्यनी ॥ अने अपरिग्रहीत देवीनी ज० एक पल्यनी जाजेरी ॥ उ० पंचावन पल्यनी ॥ त्रीजे देवलोके ज० बे सा० ॥ उ० सात सा० तिहां देवी नथी पण तेमावी जाय ॥ चोथे देवलोके ज० बे सा० जाजेरी ॥ उ० सात सा० जाजेरी ॥ पांचमे देवलोके ज० सात सा० ॥ उ० दस सा० ॥ छठे देवलोके ज० दस सा० उ० चउद० सा० ॥ सातमे देवलोके ज० चउद० सा० उ० सतर० सा० ॥ आठमे देवलोके ज० सतर० सा० ॥ उ० अढार सा० ॥ नवमे देवलोके । ज० अढार सा० । उ० उगणीस०

सा० ॥ दसमे देवलोके ज० उंगणीस सा० । उ० वीस सा० ॥ अग्यारमे देवलोके ज० वीस सा० ॥ उ० एकविस सा० ॥ बारमे देवलोके ज० एकविस सा० । उ० बाविस सा० ॥ प्रथम ग्रैवेयके ज० बाविस सा० । उ० त्रेविस सा० ॥ बीजी ग्रैवेयके ज० त्रेविस सा० उ० चोविस सा० । त्रीजी ग्रैवेयके ज० चोविस सा० ॥ उ० पचीस सा० चोथी ग्रैवेयके ज० पचीस सा० । उ० छविस सा० । पांचमी ग्रैवेयके ज० छविस सा० । उ० सत्याविस सा० ॥ छठि ग्रैवेयके ज० सताविस सा० उ० अठाविस सा० ॥ सातमी ग्रैवेयके ज० अठाविस सा० । उ० उंगणत्रिस सा० ॥ आठमी ग्रैवेयके ज० उंगणत्रिस सा० । उ० त्रिस सा० । नवमी ग्रैवेयके ज० त्रीस सा० नी । उ० एकत्रिस सा० । च्यार अनुत्तरविमानमां ज० एकत्रीस सा० । उ० तेत्रिस सा० ॥ सर्वार्थसिद्धमा ज० ने उ० तेत्रीस सा० । समोहिया ने असमोहिया ए बे मरण लाभे । चवण ते चविने पेहेला बीजा देवलोकना देवता पांच दंडकमा जाय । पृथ्वी पाणी वनस्पति मनुष्य ने तिर्यंच ए पाच ॥ त्रीजाथी ते आठमा देवलोकना देवता बे दंडकमां जाय मनुष्य ने तिर्जचमा ॥ नवमेथी मांडीने सर्वार्थसीद्धलगना देवता ।

एक दंमकमां जाय मनुष्यमां ॥ गइ ते मरीने पेहेलाथी मांमीने आठमा देवलोकना देवता बे गतिमां जाय । अने नवमाथी मांमीने सर्वार्थसिद्ध सुधिना एक मनुष्यनी गतिमां जाय ॥ आगइ ते पेहेलाथी मांमीने आठमां देवलोक लगे बे गतिनो आवे । मनुष्य ने त्रिजंचनो । अने नवमाथी मांमीने सर्वार्थसिद्ध लगे एक मनुष्य नो आवे ॥ प्राण दस ॥ जोग त्रण ॥ इतिश्री चोविसमो वैमानिकनो दंमक संपूर्ण ॥ २४ ॥ हवे सिद्धनो द्वार कहेछे । सीद्धने सरीर नथी ॥ अवघेणा सीद्धनी अरूपि जीवना प्रदेशना घननी । ज० एक हाथने आठ अंगुलनी । मध्यम च्यार हाथ ने सोल अंगुलनी । अने उत्कृष्टी त्रणसें तेत्रीस धनुष ने । बत्रीस अंगुलनी ॥ सिद्धने संघयण नथी ॥ सिद्धने संठाण नथी । सिद्धने कषाय नथी । सिद्धने संज्ञा नथी । सिद्धने लेस्या नथी ॥ सिद्धने इंद्रीय नथी ॥ सिद्धने समुद्घात नथी । सिद्धसंज्ञी असंज्ञी नथी ॥ सिद्धने वेद नथी ॥ सिद्धने प्रजा नथी ॥ सिद्ध समकितदृष्टी छे ॥ सिद्धने एक केवल दर्शन छे ॥ सिद्धने एक केवल ज्ञान छे ॥ सिद्धने अज्ञान नथी ॥ सिद्धने जोग नथी । सिद्धने उपयोग बे छे ॥ केवलज्ञान । केवल दर्शन ॥ सिद्धने आहार नथी ॥ उववाय

ते आवीने उपजे । एक दंकक ते मनुष्यनो । सिद्धनी स्थितिनो छेहो नथी ॥ सिद्धने मरण नथी ॥ सिद्धने चववूं नथी ॥ गइ ते मरीने सिद्धने कोइ गतिमां जावुं नथी । आगइ ते सिद्धमां एक मनुष्यनो आवे ॥ सिद्धने प्राण नथी । पण नाव प्राण बे छे केवल ज्ञान ने केवल दर्शन । सिद्धने जोग नथी ॥ इति सिद्धनो द्वार इतिश्री लघुदंककना बोल संपूर्ण

॥ अथ श्री गतागतना बोल. ॥

पहेलीनर्के आगत ॥ २५ नेदनि ते ॥ १५ ॥ कर्मनूमी ॥ ५ सन्नीतिर्यंच ने ॥ ॥ ५ ॥ असंज्ञीतिर्यंच ॥ ए ॥ २५ ॥ ना प्रजाप्तानि ॥ गत ॥ ४० नेदनि ते ॥ १५ ॥ कर्मनूमी ने ॥ ५ ॥ संज्ञीतिर्यंच । ए ॥ २० ॥ ना अप्रजाप्ता । ने प्रजाप्तानि ॥ १ ॥ त्रिजी नर्के आगत ॥ २० नेदनि ते ॥ ५ ॥ असंज्ञीतिर्यंचना प्रजाप्ता वर्ज्या । गत ॥ ४० ॥ नि पूर्ववत् ॥ २ ॥ त्रिजीनर्के आगत ॥ १ए ॥ नेदनि ते । पूर्वे ॥ २० ॥ कह्या तेहमांथि ॥ १ नूजपर वर्ज्या । गत ॥ ४० ॥ नि पूर्ववत् ॥ ३ ॥ चोथी नर्के आगत १७ नेदनि । ते ।

पूर्वे १९ कह्या तेहमांथि ॥ १ खेचर वर्ज्या । गत ४० नि पूर्ववत् ॥ ४ ॥ पांचमी नर्के आगत १७ भेदनि ते । पूर्वे १८ कह्या तेहमांथि ॥ १ थलचर वर्ज्या ॥ गत ४० नि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ छठी नर्के आगत ॥ १६ ॥ भेदनि ते ॥ १७ ॥ पूर्वे कह्या तेहमां थि ॥ १ उरपर वर्ज्या ॥ गत ॥ ४० ॥ नि पूर्ववत् ॥ ६ ॥ सातमी नर्के आगत १६ भेदनि ते ॥१५॥ कर्मभूमी ने ॥ १ जलचरमछ ॥ ए १६ ना प्रजाप्ता तेमां स्त्री वर्जीने । गत ॥ १० भेदनि ते ॥ ५ संज्ञीतिर्यंचना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्तानि ॥ ७ ॥ दश भवनपति ॥ १५ ॥ पर्माधामी ॥ १६ ॥ वाणव्यंतर ॥ १० ॥ जंभका । ए ॥ ५१ जातिना देवलामां ॥ आगत १११ भेद-नि ते ॥ १०१ क्षेत्रना संज्ञीमनुष्य ॥ ५ संज्ञीतिर्यंच ॥ ५ असंज्ञीतिर्यंच । ए १११ ना प्रजाप्तानि । गत ४६ नि ते ॥ १५ कर्मभूमी ॥ ५ संज्ञीतिर्यंच ए ॥ २० ॥ ने पृथ्वी ॥ १ ॥ पाणि ॥ २ ॥ वनस्पति ॥ ३ ॥ ए ॥ २३ ॥ ना अप्र० ने प्रजाप्तानि ॥८॥ दस ज्योतषी ने पहिला देवलोकमां ॥ आगत ॥ ५० भेदनि ते ॥ १५ कर्मभूमी ॥ ५ संज्ञी तिर्यंच ने ३० अकर्मभूमी । ए ५० ना प्रजाप्तानि । गत ॥ ४६ नि पूर्ववत् ॥ ए ॥ विजा देवलोकमां आगत

४० भेदनि ॥ ते पूर्वे ५० भेद कह्या तेहमांथि ॥ ५ हेमवय ने ॥ ५ एरणवय । ए १० ना प्र-
जाप्ता वर्ज्या । गत ॥ ४६ ॥ नि पूर्ववत् ॥ १० ॥ पहिला किल्बिषीमां आगत ॥ ३० भेदनि
ते । पूर्वे ४० कह्या ॥ तेहमांथि ॥ ५ हरिवास ॥ ५ रमक वास । ए १० प्रजाप्ता वर्ज्या । गत
४६ नि पूर्ववत् ॥ ११ ॥ त्रिजा देवलोकथि आठमा देवलोकसुधि ॥ ६ देवलोक ॥ ए लोकांतिक
॥ ३ किल्बिषी । ए १७ जातिना देवतामां आगत ॥ २० भेदनि ते ॥ १५ कर्मभूमी ॥ ५
संज्ञीतिर्यंच । ए २० ना प्रजाप्तानि ॥ गत ४० नि ते पनर कर्मभूमी पांच संज्ञीतिर्यंच
ए वीशना अप्र० प्रजा० एवं ४० ॥ १२ ॥ नवमा देवलोकथि ते सर्वार्थसिद्धलगे ४ देवलोक
॥ ए ग्रैवेयक ॥ ५ अनुत्तर विमान ॥ ए १८ मां आगत ॥ १५ कर्मभूमीना प्रजाप्तानि ।
गत ३० नि ते पनर कर्मभूमीना अप्र० प्रजा० एवं ३० ॥ १३ ॥ पृथ्वि ॥१॥ पाणि ॥ २ ॥
वनस्पति ॥३॥ ए ३ मां आगत ॥ २४३ भेदनि ते ॥ १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता
॥१५॥ कर्मभूमीना अप्र० ने प्रजाप्ता । एवं ॥ १३१ ने ॥ ४८ भेदतिर्यंचना । गत १७९ नी
लट ने ॥ ६४ भेद देवताना ते ॥ १० भवनपति ॥ १५ परमाधामी ॥ १६ वाणव्यंतर ॥ १०

जंनका ॥ १० ज्योतषी । एवं ६१ ने ॥ २ देवलोक ॥ एक किल्विषी ॥ एवं ॥ ६४ ना प्रजासानि ॥ एवं २४३ नि ॥ गत १७ए लटनि ॥ १४ ॥ तेउ ॥ १ ॥ वाउ ॥ २ ॥ ए २ मां आगत ॥१७ए लटनि ॥ गत ॥४० नेदतिर्यंचनी ॥ १५॥ त्रण विगलेंद्रियमां आगत ॥ १७ए लटनि । गत पण १७ए लटनि ॥ १६ ॥ असंज्ञीतिर्यंचमां आगत ॥ १७ए लटनी ॥ गत ॥ ३एए५ नेदनि ते ॥ ५६ अंतरद्वीपा ने ॥ ५१ जातिना देवता । ते ॥ १० नवनपति ॥ १५ परमाधामी ॥ १६ वाणव्यंतर ॥ १० जंनका ए ॥ ५१ जातिना देवता ॥ एवं सर्व मिलि १०७ नेद थया अने ॥ १ पहिली नर्क ॥ एवं ॥ १०० ना अप्र० ने प्रजासा एवं २१६ अने १७ए लट । सर्वमिली ॥ ३एए५ नेदनि ॥ १७ ॥ संज्ञीतिर्यंचमां आगत ॥ २६७ नेदनि ॥ ते ०१ नेद देवताना । ते एए मांहिथि ॥ ४ देवलोक ॥ ए ग्रैवेयक ॥ ५ अनुत्तरविमान । ए ॥ १० वर्ज्या ने १७ए लट । एवं सर्व मिलि ॥ २६० ने ७ नर्कना प्रजासा ॥ एवं ॥ २६७ नि ॥ पांचे त्रीयंचनी गत जुदी जुदी कहे वे ॥ जलचरनी ५२७ नी ते ५६३ मांहिथि नवमा देवलोकथी सर्वार्थ सिद्ध सुधि ॥ ए १० ना अप्र० ने प्रजा० एवं ३६ वर्ज्या ॥ शेष ५२७

रह्या ॥ थलचरनी गत ॥ ५२१ नी ते ५२७ मांहिथी ॥ पांचमी १ छठी २ सातमी ३ ॥ ए
त्रण नर्कना अप्र० प्रजा० ए छ वर्ज्या ॥ शेष ५२१ रह्या ॥ उरपरनी गत ५२३ नी ते ॥
५२७ मांहिथि छठी १ सातमी २ ए बे नर्कना अप्र० प्रजा० ए च्यार वर्ज्या शेष ५२३ रह्या ॥
भुजपरनी गत ५१७ नी ते त्रीजी १ चोथी २ पांचमी ३ छठी ४ सातमी ५ ए पांचना
अप्र० प्रजा० ए दस वर्ज्या शेष ५१७ रह्या ॥ खेचरनी गत ५१९ नी ते ५२७ मांहिथि
चोथी १ पांचमी २ छठी ३ सातमी ४ ए च्यारना अप्र० प्रजा० ए आठ वर्ज्या शेष ५१९ रह्या ॥
॥ १८ ॥ समुर्छिम मनुष्यमां आगत १७१ नेदनि ते ॥ १७९ लटमांथि ॥ ८ तेउ वाउना
वर्ज्या । शेष १७१ नि । गत ॥ १७९ लटनि ॥ १९ ॥ सञ्ज्ञीमनुष्यनि आगत २७६ ने-
दनि ॥ ते १७९ लटमांहिथि तेउ वाउना ८ वर्ज्या । शेष १७१ रह्या अने ॥ ९९ जातिना
देवताना प्रजाप्ता एवं ॥ २७० ॥ ने ६ नर्कना प्रजाप्ता ॥ सर्व मिली २७६ नि । गत । ५६३
नेदनि ॥ २० ॥ ३० अकर्मनूमीमां आगत २० नेदनि ते ॥ १५ कर्मनूमी ॥ ५ सञ्ज्ञीतिर्यच ।
ए ॥ २० ना प्रजाप्तानि ॥ गत जुदी जुदी कहे छे ॥ ५ देवकुरु ॥ ५ उत्तरकुरुनि गत ॥ १२८ ॥

भेदनि ते ॥ १० भवनपति ॥ १५ परमाधामी ॥ १६ वाणव्यंतर ॥ १० जंभका ॥ १० ज्योतषी
॥ २ देवलोक । पहेलो । बिजो ने ॥ १ किल्विषी । ए ॥ ६४ जातिना देवता । अप्र० । प्र-
जा० ॥ एवं ॥ १२७ नि ॥ ५ हरिवास ॥ ५ रमकवास नि गत ॥ १२६ ॥ नि ते पुर्वे १२७
भेद कह्या । तेमांहीथि पहेला किल्विषीना अप्रजा० । प्रजा० । ए ॥ २ भेद वर्ज्या ॥ ५ हेमवय
॥ ५ एरणवयनि गत ॥ १२४ भेदनि । ते पूर्वे १२६ भेद कह्या तेह्मांथि विजा देवलोकना
अप्र० । प्रजा० । ए ॥ २ भेद वर्ज्या ॥ २१ ॥ छपन्न अंतरद्विपमां आगत ॥ २५ ॥ भेदनि ते
॥ १५ कर्मभूमी ॥ ५ संज्ञीतिर्यंच ॥ ५ असंज्ञीतिर्यंच ए ॥ २५ ना प्रजाप्तानि । गत १०२ भे-
दनि ते ॥ १० भवनपति ॥ १५ परमाधामी ॥ १६ वाणव्यंतर ॥ १० जंभका । एवं ॥ ५१ ना
अप्र० । प्रजाप्ता । सर्व मिली १०२ भेद ॥ २२ ॥ इति ॥ २४ दंडकनि गता गत समासं ॥
तिर्थंकरदेवमां आगत ॥ ३७ भेदनि ते ॥ १२ देवलोक ॥ ए लोकांतिक ॥ ए ग्रैवेयक ॥
५ अनुत्तरविमान ने ॥ पहेली ३ नरक ॥ एवं ॥ ३७ प्रजाप्तानि ॥ गत मोक्षनि ॥ २३ ॥
चक्रवर्तीमां आगत ॥ ७२ भेदनि ते ॥ एए जातिना देवतामांहिथि ॥ १५ परमाधामी ॥

३ किल्बिषी । ९ १८ वर्ज्या । शेष ॥ ८१ ॥ रह्या ने १ पहेली नरक एवं ८२ भेदनि ॥ गत
संसार त्यागे तो देव तथा मोक्षनी अने चक्रवर्तिपणे मरे तो चौद भेदनी ते
७ नरकना अप्र० ने प्रजाप्तानि एवं चौद ॥ २४ ॥ बलदेवमां आगत ॥ ८३ भेदनि ते ॥ ८२
पूर्वे कह्या ते । ने ॥ १ ॥ बीजी नरक वधि । एवं ॥ ८३ नि । गत ॥ ७० भेदनि ते ॥ १२
देवलोक ॥ ९ लोकांतिक ९ ग्रैवेयक ॥ ५ अनुत्तरविमान । एवं ३५ ना अप्र० प्रजाप्तानि एवं
७० ॥२५॥ वासुदेवमां आगत ॥ ३२ भेदनि ते ॥ १२ देवलोक ॥ ९ लोकांतिक ॥ ९ ग्रैवेयक ।
९ ३० ने पहेली २ नरक । एवं ३२ नि । गत १४ भेदनि ॥ ७ नरकना अप्र० ॥ प्रजाप्तानि ॥२६॥
केवलीमां आगत ॥ १०८ भेदनि ते ॥ ९९ भेदना देवता मांहिथि ॥ १५ परमाधार्मी ने ॥ ३
किल्बिषी । ९ १८ वर्ज्या । शेष ८१ रह्या ने ॥ १५ कर्मभूमी ॥ ५ संज्ञी तिर्यंच एवं १०१ ॥ ने ४
नरक पहेली ने ॥ पृथ्वी १ पाणी २ वनस्पति ३ ॥ एवं १०८ नि । गत मोक्षनि ॥ ७७ ॥
साधुमां आगत २७५ भेदनि ते ॥ १७९ नि लटमांहीथि तेउ वाउना ८ वर्ज्या शेष ॥ १७१
रह्या ने ॥ ९९ जातिना देवता अने ॥ ५ नरक ॥ एवं ॥ २७५ नि ॥ गत ॥ ७० ॥ भेदनि ।

ते ॥ १२ देवलोक ॥ ए लोकांतिक ॥ ए ग्रैवेयक ॥ ५ अनुत्तरविमान । एवं ॥ ३५ ना अप्र०॥ प्रजाप्त । गवं ॥ ७० नी ॥ २० ॥ श्रावकमां आगत ॥ २७६ ॥ नेदनि । ते । पूर्वे २७५ कह्या ते । अने ॥ १ छठी नर्कवधि । ए २७६ नि ॥ गत ४२ नेदनि ते ॥ १२ देवलोक ने ॥ ए लोकांतिक । ए २१ ना अप्र० । प्रजाप्तानि ॥२ए॥ समदृष्टिमां आगत ॥ ३६३ नेदनि ते ॥ एए जाति देवताना प्रजाप्त ॥ १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्त ॥ १०१ संज्ञी मनुष्यना प्रजाप्त ॥ १५ कर्मनूमीना अप्रजाप्त ॥ ७ नरकना प्रजाप्त । अने ४० ॥ तिर्यंचमांहि थि तेउ वाउना ० वर्ज्या । शेष ४० रह्या ते । एवं सर्व थइने ॥ ३६३ नि ॥ गत २२२ नि ते ॥ ०१ जातिना देवता ते एए मांहीथि १५ परमाधामि ने ३ किल्बिषि ए १० नेद वर्ज्या ॥ ने १५ कर्मनूमी ॥ ५ संज्ञी तिर्यंच ने ६ नरक । एवं ॥ १०७ ना अप्र० । प्रजाप्ता वसें चउद अने ॥ ३ विगलेंद्रिना । अप्र० । अने ॥ ५ असंज्ञीतिर्यंचना अप्र० । एवं २२२ नि० ॥ ३० ॥ मिथ्यातिमां आगत ॥ ३७१ नेदनि ते । पूर्वे ॥ ३६३ कह्यां तेहमां तेउ वाउना ॥ ० ॥ वध्या ॥ गत ५५३ नेदनि ते ५६३ नेदमांहीथि ॥ ५ अनुत्तर विमानना अप्र० ने प्रजाप्त । ए ॥ १० वर्ज्या ॥ शेष ५५३

नि ॥३१॥ स्त्रीवेद ॥ १ ॥ पुरुषवेद ॥ २ ॥ ए ॥ बेमां आगत ३७१ ज्ञेदनि ते मिथ्यातिनी परे । गतपुरुषनि ५६३ नि । स्त्रीवेदनि ॥ ५६१ नि ते सातमी नरकना २ ज्ञेद वर्ज्या ॥ ३२ ॥ नपुंसकवेदमां आगत ॥ २०५ ज्ञेदनि ते ॥ एए जाति देवताना प्रजाप्ता ॥ १७ए नि लट ॥७॥ नारकी । ए ॥ २०५ ॥ नि ॥ गत ॥ ५६३ ॥ ज्ञेदनि ॥ ३३ ॥ नारकी देवता अपर्याप्ता मरे नहि माटे अपर्याप्ता मरती वखते गणवा नहि ॥ इति गतागतना बोल संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री गुणस्थानद्वार. ॥

गाथा ॥ नाम१ लखगुण२ ठिइ३ ॥ किरिया४ सत्ता५ बंध ६ वेदेय७ उदय० उदिरणाएचेव ॥ निज्जरा १० ज्ञाव ११ कारणा १२ ॥१॥ परिसह १३ मग्ग १४ आयाय १५ ॥ जीवाय ज्ञेदे १६ जोग १७ उवि-उग १०॥ लेस्सा १ए चरण २० सम्मत्तं २१ ॥ अप्पाबहुच्च २२ गुणठाणेहि ॥२॥ ए द्वार २२ नी गाथा २ कहि । हवे पहेलो नामद्वार कहे छे ॥ पहेलुं मिथ्यात्व गुणठाणु ॥ १ ॥ बिजुं सास्वा-दान गु० ॥ २ ॥ त्रिजुं समामिथ्यात्व गु० ॥ ३ ॥ चोथु अविरति सम्यक्त्वदृष्टि गु० ॥ ४ ॥

पांचमुं देशविरति गु० ॥ ५ ॥ छठुं प्रमत्तसंजति गु० ॥ ६ ॥ सातमुं अप्रमत्तसंजति गु० ॥ ७ ॥ आठमुं नियट्टिबादर गु० ॥ ८ ॥ नवमुं अनियट्टिबादर गु० ॥ ९ ॥ दशमुं सुक्ष्मसंपराय गु० ॥ १० ॥ इग्यारमुं उपशांतमोह गु० ॥ ११ ॥ बारमुं क्षिणमोह गु० ॥ १२ ॥ तेरमुं सजोगि केवलि गु० ॥ १३ ॥ चउदमुं अजोगि केवलि गुणठाणुं । ए नामद्वार समासं हवे लक्षणगुणद्वार कहे छे ॥ पहेला मिथ्यात्व गुणठाणाना लक्षण कहेछे ॥ श्रीवीतरागनि वाणिथि उंधुं । अधिक । विपरीत शर्द्दहे परुपे फरसे तेहने मिथ्यात्व कहिये । उंछि परुपणा ते केहने कहिये । जिम कोइ कहे जे जीव अंगुठा मात्र छे । तंदुल मात्र छे ॥ शामा मात्र छे दीपक मात्र छे तेहने उंछि परुपणा कहिये ॥१॥ अधिकी परुपणा ते केहने कहिये ॥ एक जीव सर्व लोक ब्रह्मांड मात्रमां व्यापि रह्यो छे । तेहने अधिकी परुपणा कहिये ॥२॥ विपरीत परुपणा ते केहने कहिये ॥ कोइ कहे जे पंच भूत थकि आत्मा उपनो छे ॥ अने एहने विनाशे जीव पण विणशे छे ॥ ते जड छे। ते थकि चैतन्य उपजे विणशे। इम कहे तेहने विपरीत परुपणा कहिये ॥ ३ ॥ ए मीथ्यात्व इम नव पदार्थनुं विपरीतपणुं सरदहे परुपे फरसे

तेहने मीथ्यात्व कहिये॥ अने जैनमार्गे आतमा अकृतिम अखंड अविनाशी नित्य छे । शरिर मात्र व्यापक छे ॥ तिवारे गौतम स्वामि । हाथ जोडि मान मोडी वंदणा नमस्कार करीने श्रीभगवंतने पूछता हवा । स्वामिनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो ॥ तिवारे श्रीभगवंते कह्युं जे । जीवरूप दडि ने । कर्मरुप ॥ गेडिये करि ॥ ४ गति ॥ २४ दंडक ८४ लाख जीवाजोनि मांहि वारंवार परिभ्रमण करे पण संसारनो पार पामे नहि ॥ १ ॥ हवे बिजा गुणठाणाना लक्षण कहे छे ॥ जिम कोइ पुरुष खिरखांडनुं भोजन जम्यो निवारपछि वमन कर्युं ॥ तिवारे कोइक पुरुषे पुछयुं भाइ कांइ स्वाद रह्यो । तिवारे कहे जे थोडो स्वाद रह्यो । ते समान समकित अने वम्यो ते समान मिथ्यात्व ॥ १ ॥ बिजो दृष्टांत कहेछे । जेहवो घंटानो नाद पहेलो गहेर गंभीर । पछि रणको रहि गयो ॥ गहेर गंभीर समान समकित ने रणको रहि गयो ते समान मिथ्यात्व ॥ २ ॥ हवे त्रिजो दृष्टांत आंबानो । जीवरूप आंबो ने प्रणामरूप डाल । समकितरूप फल । ते मोहरूप वायरे करि॥ प्रणामरूप डालथि । समकितरूप फल त्रुटयुं । मिथ्यात्वरूप धरतीये आवि पाडयु नथि

विचमां छे॥ तिहांसुधि सास्वादान समकित कहिये॥ अने जीवारे धरतीये आवि पड्युं। तिवारे मिथ्यात्व ॥३॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडि मान मोडि श्रीभगवंतने पुछता हवा। स्वामिनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो॥ तिवारे श्रीभगवंत कहेछे। कृष्णपक्षी हतो ते शुक्लपक्षी थयो॥ अर्द्ध पुद्गल संसार भोगववो रह्यो। जिम कोइ पुरुषने माथे लाख क्रोडनुं देणुं हतुं ते परदेश जइने कमाइ आव्यो देणुं देतां एक अधेलिनुं देणुं रह्युं तेहनुं व्याज थयुं। तेटलो संसार भोगववो रह्यो। सास्वादान समकित पांचवार आवे ॥२॥ हवे त्रिजा गुणठाणानां लक्षण कहे छे॥ त्रिजुं मिश्रगुणठाणुं। ते बे वस्तु मिलिने मिश्र श्रीखंडनो दृष्टांत॥ श्रीखंड जिम खाटो ने मिठो। मिठास समान समकित ने खटास समान मिथ्यात्व॥ ते जिनमार्ग पण रुडो जाणे तथा अन्य मार्ग पण रुडो जाणे जिम कोइक नगर बाहिर साधु महापुरुष पधारयाछे॥ तेहने श्रावक वांदवा जायछे॥ तेहवामां मिश्रदृष्टिवालो मित्र मिल्यो॥ तिणे पुछयुं जे किहां जाओछो॥ तिवारे श्रावक कहे जे। साधु महा पुरुषने वांदवा जइयेछे। तिवारे मिश्रदृष्टिवालो कहे॥ एहने वांदे सुं थाय॥ तिवारे

श्रावक कहे जे महालाभ थाय ॥ तिवारे कहे जे हुं पण वांदवा आवु । इम कहिने मिश्रगुणठाणावाले ॥ वांदवाने पग उपाड्यो ॥ तेहवामां बिजो महामिथ्यात्वी मित्र मिल्यो ॥ तेणे पुछ्युं के स्याभणि जावछो । तिवारे मिश्रगुणठाणावालो कहे जे । साधु महापुरुषने वांदवा जइये छै ॥ तिवारे महामिथ्याति कहे जे । एहने वांदे सुं थाय । ए तो मेला घेला छे ॥ इम कहिने भोलवि नांख्यो पाछो वेगो ॥ तिवारे साधुज्ञानिने श्रावके वांदिने पुछ्युं जे स्वामि वांदवा पग उपाड्यो तेहने सुं गुण निपनो । तिवारे ज्ञानिगुरु कहेछे । जे काला अरुद सरिखो हतो ते ॥ छफिदाल सरिखो थयो । कृष्णपक्षी टलिने शुक्लपक्षी थयो ॥ अनादि कालनो उलटो हतो ते सुलटो थयो । समकित सन्मुख थयो पण पग भरवा समरथ नहि ॥ तिवारे गौतम स्वामि हाथ जोडी मान मोडि वंदणा नमस्कार करिने श्रीभगवनने पुछता हवा । स्वामिनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो । तिवारे श्रीभगवन कहेछे ते ॥ जीव ४ गती ॥ २४ ॥ दंडकमां भमिने पण देशे उणो अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तनमां उत्कृष्टो ममारनो पार पामसे ॥ ३ ॥ चोथुं अविरतिसम्यक्त्व दृष्टिगुणठाणु तेहना सुं लक्षण ॥ ७ प्रकृति ने

क्षयोपशमावे। अनंतानुबंधि क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ सम्यक्त्वमोहनीय ॥ ५ ॥ मिथ्यात्वमोहनीय ॥६॥ मिश्रमोहनीय ॥ ७ ॥ ए ७ प्रकृतिने कांइक उदय आवे तेहने क्षय करे ॥ अने सत्तामां दल छे तेहने उपशमावे तेहने क्षयोपशमसम्यक्त्व कहिये ॥ ते सम्यक्त्व असंख्याति वार आवे ॥ अने ७ प्रकृतिना दलने सर्वथा उपशमावे ढांके तेहने उपशमसम्यक्त्व कहिये। ते समकित पांच वार आवे ॥ अने ७ प्रकृतिना दलने सर्वथा क्षय करे तिवारे क्षायकसमकित कहिये ॥ ते सम्यक्त्व १ वार आवे ॥ चोथे गुणठाणे आव्यो थको जीवादिक पदार्थ ॥ द्रव्यथकि १ क्षेत्रथकि २ कालथकि ३ भावथकि ४ नोकारसी आदि छमासी तप जाणे सरदहे परुपे पण फरसि शके नहि ॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडि मान मोडि श्रीभगवंतने पुछता हवा ॥ स्वामिनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो ॥ तिवारे श्रीभगवंत कहे ॥ गौतम ते जीव समकितव्यवहारपणे शुद्ध प्रवर्तता ॥ ते जीव जघन्य त्रीजे भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टो पंदर भवे मोक्ष जाय ॥ वेदक समकित एकवार आवे ॥ एक समयनि स्थिती छे। पूर्वे जो आयुष नो बंध पड्यो न होय तो ॥ ७ ॥ बो-

लमां बंध पाम्भे नहि ॥ नरकनुं आयुष ॥ १ ॥ नवनपतिनुं आयुष ॥ २ ॥ तिर्यचनु आयुष ॥ ३ ॥ वाणव्यंतरनुं आयुष ॥ ४ ॥ ज्योतिषीनुं आयुष ॥ ५ ॥ स्त्रीवेद ॥ ६ ॥ नपुसकवेद ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ बोलमां आयुषनो बंध पाम्भे नहि ॥ ते जीव ॥ ७ ॥ आचार समकितना आराधि । चतुर्विधसंघनि वाछलका परमहर्ष नक्तिन्नर थको जघन्य पहेले देवलोके उपजे ॥ उत्० । बारमे देवलोके जपजे । पन्नवणानि शाखे ॥ पूर्व कर्मने उदये करिने व्रत पच्चखाण करि न शके । पण अनेक वरसनि श्रमणोपाशकनि प्रवर्ज्यानो पालक कहिये॥ दशाश्रुतस्कंधे श्रावक कह्याछे ते माटे ॥ दर्शन श्रावकने अविरय समदृष्टी कहिये ॥ ४ ॥ पांचमुं देशविरतिगुणठाणुं तेहना सुं लक्षण । इग्यार प्रकृतिने क्षयोपशमावे । ते ॥ ७ पूर्वे कहि ते । अने अप्रत्याख्यानी क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥२॥ माया ॥ ३ ॥ लोन ॥ ४ ॥ ए ॥ ११ प्रकृतिने क्षय करे तो क्षायकसमकित कहिये ॥ अने ११ प्रकृ० ढांके उपशमावे तो उपशम समकित कहिये । अने ११ प्रकृतिने कांइक ढांके कांइक क्षय करे तेहने क्षयोपशम समकित कहिये ॥ पांचमे गुणठाणे आव्यो थको जीवादिक पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि नावथि नो-

क्षयोपशमावे । अनंतानुवंधि क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ सम्यक्त्व-मोहनीय ॥ ५ ॥ मिथ्यात्वमोहनीय ॥६॥ मिश्रमोहनीय ॥ ७ ॥ ए ७ प्रकृतिने कांइक उदय आवे तेहने क्षय करे ॥ अने सत्तामां दल छे तेहने उपशमावे तेहने क्षयोपशमसम्यक्त्व कहिये ॥ ते सम्यक्त्व असंख्याति वार आवे ॥ अने ७ प्रकृतिना दलने सर्वथा उपशमावे ढांके तेहने उपशमसम्यक्त्व कहिये । ते समकित पांच वार आवे ॥ अने ७ प्रकृतिना दलने सर्वथा क्षय करे तिवारे क्षायकसमकित कहिये ॥ ते सम्यक्त्व १ वार आवे ॥ चोथे गुणठाणे आव्यो थको जीवादिक पदार्थ ॥ द्रव्यथकि १ क्षेत्रथकि २ कालथकि ३ भावथकि ४ नोकारसी आदि छमासी तप जाणे सरदहे परुपे पण फरसि शके नहि ॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडि मान मोडि श्रीभगवंतने पुछता हवा ॥ स्वामिनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो ॥ तिवारे श्रीभगवंत कहे ॥ गौतम ते जीव समकितव्यवहारपणे शुद्ध प्रवर्तता ॥ ते जीव जघन्य त्रीजे भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टो पंदर भवे मोक्ष जाय ॥ वेदक समकित एकवार आवे ॥ एक समयनि स्थिती छे । पूर्वे जो आयुष नो वंध पड्यो न होय तो ॥ ७ ॥ वो-

लमां बंध पामे नहि ॥ नरकनुं आयुष ॥ १ ॥ नवनपतिनुं आयुष ॥ २ ॥ तिर्यचनु आ-
युष ॥ ३ ॥ वाणव्यंतरनुं आयुष ॥ ४ ॥ ज्योतिषीनुं आयुष ॥ ५ ॥ स्त्रीवेद ॥ ६ ॥ नपु-
सकवेद ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ बोलमां आयुषनो बंध पामे नहि ॥ ते जीव ॥ ८ ॥ आचार
समकितना आराधि । चतुर्विधसंघनि वाछलका परमहर्ष नक्तिजर थको जघन्य पहेले देव-
लोके उपजे ॥ उत्० । बारमे देवलोके उपजे । पन्नवणानि शाखे ॥ पूर्व कर्मने उदये करिने
व्रत पच्चखाण करि न शके । पण अनेक वरसनि श्रमणोपाशकनि प्रवर्ज्यानो पालक कहिये॥
दशाश्रुतस्कंधे श्रावक कह्याछे ते माटे ॥ दर्शन श्रावकने अविरय समदृष्टी कहिये ॥ ४ ॥
पांचमुं देशविरतिगुणठाणुं तेहना सुं लक्षण । ग्यार प्रकृतिने क्षयोपशमावे । ते ॥ ७ प्रथ्व
कहि ते । अने अप्रत्याख्यानी क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥२॥ माया ॥ ३ ॥ लोन ॥ ४ ॥ एव ॥
११ प्रकृतिने क्षय करे तो क्षायकसमकित कहिये ॥ अने ११ प्रकृ० क्षाके उपशमावे तो उपशम
समकित कहिये । अने ११ प्रकृतिने कांइक क्षाके कांइक क्षय करे तेहने क्षयोपशम समकित
कहिये ॥ पांचमे गुणठाणे आव्यो थको जीवादिक पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि नावथि नो-

कारसी आदि देइने छमासीतप जाणे सरदहे परूपे शक्तिप्रमाणे फरसे। एक पच्चखाणथि मांफिने ॥१२ व्रत ॥११ श्रावकनि पफिमां आदरे जावत् संलेखणासुधि अनशन करि आराधे तिवारे गौतमस्वामी हाथ जोफि मान मोफि श्रीज्ञगवंतने पुछताहवा। ते जीवने सुं गुण निपनो। तिवारे श्रीज्ञगवंते कह्युं॥ ज० त्रिजे ज्ञवे मोक्ष जाय॥उ०॥१५ ज्ञवे मोक्ष जाय॥ज० पहिले देवलोके उपजे॥ उत्० १२ मे देवलोके उपजे। तेने साधुना व्रतनि अपेक्षाये देशविरति कहिये॥ पण परिणामथि अव्रतनि क्रिया उतरि गइ छे॥ अल्पइछा॥ अल्प आरंज्ञ॥ अल्प परिग्रही॥ सुशिल। सुव्रति॥ धर्मिष्ट। धर्मव्रति। कल्पउग्रविहारी। महासंवेगविहारी॥ उदासी॥ वैराग्यवंत॥ एकांतआर्य॥ सम्यगमार्गी॥ सुसाधु। सुपात्र॥ उत्तम। क्रियावादि। आस्तिक्य। आराधक। जैनमार्गप्रज्ञावक॥ अरिहंतना शिष्य वर्णव्याछे। गीतार्थ जाणेछे॥ सिद्धांतनि शाख छे। श्रावकपणुं। एक ज्ञवमां प्रत्येक हजारवार आवे॥ ५॥ छठुं प्रमत-संजतिगुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण॥ १५ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ते ११ प्रकृति पुर्वे कहि ते अने पच्चखाणावरणीय क्रोध॥१॥ मान॥२॥ माया॥ ३॥ लोज्ञ॥४॥ एवं॥ १५ प्रकृतिने

क्षयकरे तो क्षायिकसमकित कहिये। अने १५ प्रकृतिने ढांके तो उपशमसमकित कहिये॥ अने कांइ ढांके ने कांइ क्षय करे तो क्षयोपशमसमकित कहिये ॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडि मान मोडि श्रीजगवंतने पुछता हवा। ते जीवने सुं गुण निपनो। तवारे श्रीजगवंते कह्युं जे। ते जीव द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि जावथि जीवादिक नव पदार्थने तथा नोकारसीआदि छमासि तप जाणे सरदहे परूपे फरसे ॥ साधुपणुं एक जवमां नवसेवार आवे। ते जीव जघन्य त्रिजे जवे मोक्ष जाय॥ उत्० १५ जवे मोक्ष जाय ॥ आराधीक जीव। जघ० पहिले देवलोके उपजे। उत्०। अनुत्तर विमाने उपजे॥१७ जेदे संजम निर्मल पाले॥ १२ जेदे तपस्या करे पण जोग चपल। कषाय चपल ॥ वचन चपल दृष्टि चपलताना अंशछे। तेणे करिने यद्यपि उत्तम अप्रमादिथका रहेछे। तोपण प्रमाद रहेछे माटे प्रमादपणे करि॥ तथा कृष्णादिक लेश्या॥अशुन्न जोग॥कोइक काले प्रणति प्रणमेछे माटे ॥ कषाय प्रकृष्टमत्त थइ जायछे तेहने प्रमत्त सजति-गुणठाणुं कहिये ॥ ६ ॥ सातमुं अप्रमत्त संजतिगुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण। पांच प्रमाद छांडे तिवारे सातमे गुणठाणे आवे। ते ॥ ५ प्रमादना नाम ॥ मद विसय कसाया। निद्रा विगहा

पचमा ज्ञाणया । एए पच पमाया । जोवापकंति संसारे ॥१॥ ए ॥ ५ ॥ प्रमाद टाले अने १६ प्रकृतिने उपशमावे ॥ १५ ॥ पूर्वे कहि ते अने संजलनो क्रोध । एवं १६ ॥ प्रकृतिने क्षयोप शमावे ॥ तेहने सुं गुण निपनो । ते जीव जीवादि पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि ज्ञावथि तथा नोकारसि आदि देइने छमासी तप ध्यान जुगतपणे जाणे सरदहे परुपे फरसे । त जीव जघन्य० । तेज ज्ञवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टो त्रिजे ज्ञवे मोक्ष जाय ॥ गति तो प्राये कल्पातीतनि थाय ॥ ध्यानने विषे ॥ अनुष्टानने विषे । अप्रमत्त उद्यत थका रहेछे । तथा शुक्ल लेश्यापणेज करिने नथि प्रमत्त कषाय जेहने तेहने अप्रमत्त संजतिगुणठाणुं कहिये ॥७॥आठमुं नियट्टि बादरगुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण ॥ १७ प्रकृति ने क्षयोपशमावे ॥ १६ पूर्वे कहि ते । अने संजलनो मान । ए ॥१७॥ प्रकृति ने क्षयोपशमावे । तिवारे गौतमस्वामी । हाथ जोडि मान मोडि । श्रीज्ञगवंतने पुछता हवा । स्वामीनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो । तिवारे श्रीज्ञगवंते कह्युं ॥ परिणामधारा । अपूर्व करण ॥ जे कोइ काले जीवने कोइ दिने आव्युं नथि । ते श्रेणि जुगत जीवादिक पदार्थ । द्रव्यथि । क्षेत्रथि कालथि ज्ञावथि । नोकारसी

आदि दश छमासी तप जाणे। सरदहे परुपे फरसे। ते जीव । जघन्य। तेज नवे मोक्ष जाय ॥ उत्० । त्रिजे नवे मोक्ष जाय। इहांथि श्रेणि ॥२ करे। उपशमश्रेणि॥१॥ ने क्षपक श्रेणि ॥२॥ उपशम श्रेणिवालो जीव ते मोहनीय कर्मनि प्रकृतिना दलने उपशमावतो इग्यारमा गुणठाणा सुधिजाय॥पडिवाइ पण थाय। हायमान परिणामपण परिणमे॥ अने क्षपकश्रेणिवालो जीव ते। मोहनीय कर्मनि प्रकृतिना दलने खपावतो शुरू मुलमाथि निर्जरा करतो। नवमे दशमे गुणठाणे थइने वारमे गुणठाणे जाय। अपडिवाइज होय। वर्द्धमान परिणाम परिणमे।हवे नियट्टिवादरनो अर्थ ते निवर्त्योछे वादर कषायथि। वादर संपराय क्रियाथि श्रेणि करवे। अन्यतर परिणामे। अध्यवसाय स्थिरथते वादर चपलताथि निर्वृत्योछे । माटे नियट्टिवादरगुणठाणु कहिये । तथा विजुं नाम । अपूर्व करणगुणठाणुं पण कहिये ॥ सामाटे जे ॥ कोइ काले जीवे पुर्वे श्रेणि करि नहति। अने ए गुणठाणे पहिलुंज करण ते ॥ पडितवीर्यनु आवरण क्षयकरणरूप करणपरिणामधारा वर्द्धनरूप श्रेणि करे॥ तेहने अपूर्वकरण गुणठाणु कहियें॥८॥ हवे नवमुं अनियट्टिवादरगुणठाणु तेहनु सु लक्षण ॥ एकविश प्रकृतिने क्षयोपशमावे ते ॥२०

८

प्रकृति पुर्वे कहि ते अने संजलनि माया ॥ १ ॥ स्त्रीवेद ॥ २ ॥ पुरुषवेद ॥ ३ ॥ नपुसक वेद ॥ ४ ॥ एवं ॥ २१ ॥ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोमी मान मोमी श्रीजगवंतने पुठता हवा । स्वामिनाथ ने जीवने सुं गुण निपनो ॥ तिवारे जगवने कह्युं । ने जीव जीवादिक पदार्थ तथा नोकारसी आदि देइने ठमासी तप ॥ इव्यथि क्षेत्रथि कालथि जावथि निर्विकार अमायी ॥ विषयनिरवंठापणे । जाणे सरदहे पऋपे फरसे ते जीव ॥ जघन्य तेज नवे मोक्षजाय । उत्० । त्रीजे नवे मोक्ष जाय ॥ हवे अनियट्टि वादर ते । सर्वथा प्रकारे निवर्त्यो नथि अश मात्र हजि वादरसंपरायक्रिया रहि ठे माटे अनियट्टिवादर गुणठाणुं कहिये ॥ तथा आठमा नवमा गुणठाणाना शब्दार्थ घणा गंजिर ठे ॥ ते अन्य पंचसंग्रहादिक ग्रंथ तथा सिद्धांतथि समजवा ॥ ए ॥ दशमुं सूक्ष्म संपरायगुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण ॥ २७ प्रकृति ने क्षयोपशमावे ॥ २१ प्रकृति पूर्वे कहि ते अने । हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ जय ॥ ४ ॥ शोक ॥ ५ ॥ डुगंठा ॥ ६ ॥ एव॥ २७ प्रकृति ने क्षयो-पशमावे ॥ तिवार गौतमस्वामि हाथ जोमि मान मोमि ॥ श्रीजगवंतने पुठता हवा स्वामि

नाथ । ते जीवने सुं गुण निपनो । तिवारे नगवंते कह्युं । ते जीव ॥ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि नावथि जीवादिक पदार्थ तथा नोकारसी आदी देईने ठमासी तप निरनिलाप निर्वंठक निर्वंदकतापणे निराशी अव्यामोह अविभ्रमपणे जाणे सरदहे परूपे फरसे ते जीव। जघन्य० तेज नवे मोक्ष जाय। उत्० । त्रीजे नवे मोक्ष जाय ॥ सूक्ष्म योरिक लगारेक पातलीसी सपराय-क्रिया रहि ठे तेहने सुक्ष्मसपराय गुणठाणुं कहिये ॥ १० ॥ इग्यारमु उपशानमोहगुणठाणु तेहनु सुं लक्षण ॥ २८ प्रकृति ने उपशमावे ते २७ प्रकृति पूर्वे कहि ते । अने संजलनो लोन ॥ १ ॥ एवं ॥ २८ ॥ मोहनीय कर्मनि प्रकृतिने उपशमावे सर्वथा ढाके । नस्म नाखि प्रठन्न अग्निवत् । तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडि मान मोडि श्रीनगवतन पुठता हवा। स्वामिनाथ ते जीवने सु गुण निपनो। तिवारे श्रीनगवते कह्यु । ते जीव जीवादिक पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि नावथि नोकारसी आदि देइने ठमासी तप वीतराग नावे जथाख्यात चारित्रपणे ॥ जाणे सरदहे परूपे फरसे । एहवामा जो काल करे तो । अनुत्तर वीमानमा जाय पछि मनुष्य थइ मोक्ष जाय। अने जो सूक्ष्म लोननो उदय थाय तो कषाय अग्नि प्रकटे

पछि पडे दशमांथि पडे तो पहिला गुणठाणासुधि जाय । पण इग्यारमेथि चढवुं तो नथि । उपशांत ते उपशम्यो छे मोह सर्वथा जले करि अग्नि उलठ्यानिपरे टाल्यो नहि ढांक्योछे माटे उपशांतमोह गुणठाणुं कहिये ॥११॥ बारमुं क्षीणमोह गुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण जे ॥ २७ प्रकृति ने सर्वथा खपावे । क्षपकश्रेणि । क्षायकभाव । क्षायक समकित ॥ क्षायकजथाख्यातचारित्र ॥ करणसत्य । जोगसत्य । भावसत्य अमायी अकषायी वीतरागी । भावनिर्ग्रंथ । संपूर्ण संवुड ॥ संपूर्ण भावितात्मा ॥ महातपस्वी । महासुशिल । अमोही । अविकारी । महाज्ञानी ॥ महाध्यानी ॥ वर्द्धमान परिणामी । अपडिवाइ थइ अंतर्मुहुर्त्त रहे । ए गुणठाणे काल करवो नथि । पुनर्भव छे नहि । छेहले समये पांच ज्ञानावरणिय ॥ नव दर्शनावरणिय ॥ पंचविध अंतरायक्षयकरणोद्यमकरि ॥ तेरमा गुणठाणाने पहिले समये क्षयकरि । केवल ज्योति प्रकटे माटे क्षीणतेक्षयकर्योछे मोहसर्वथाजेगुणठाणे तेहने क्षीणमोह गुणठाणुं कहिये ॥१२॥ तेरमुं सजोगी केवलि गुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण । दश बोल सहित तेरमे गुणठाणे विचरे ॥ सजोगी ॥१॥ सशरिरी ॥ २ ॥ सलेशी ॥ ३ ॥ शुक्ललेशी ॥ ४ ॥ जथाख्यातचारित्र ॥ ५ ॥

क्षायकसमकित ॥६॥ पंडितवीर्य ॥ ७ ॥ शुकलध्यान ॥ ८ ॥ केवलज्ञान ॥ ए ॥ केवलदर्शन ॥ १० ॥ ए ॥ १० ॥ बोलसहित ॥ जघन्य । अंतर्मुहुर्त्त । उत्० । देशेउणी पुर्वक्रोडिसुधि ॥ विचरे घणा जीवने तारि प्रतिबोधि निहाल करिने ॥ बिजा त्रिजा शुकलध्यानना पायाने ध्याइने चउदमे जाय ॥ सजोगी ते शुभ मन वचन कायाना जोगसहित छे वाहाज्य चलोप करण छे । गमनागमनादिक चेष्टा शुभ सहित छे । केवलज्ञान केवलदर्शन । उपयोग समयांतर । अविछिन्नपणे शुरू प्रणमे माटे सजोगि केवलिगुणठाणुं कहिये ॥१३॥ हवे चउदमु अजोगी केवली गुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण । शुक्लध्याननो चोथो पायो समुछिन्नक्रिय अनतर अप्रतिपाती । अनिवृतिध्याता मनजोग रुंधि वचनजोग रुंधि कायजोग रुंधि आन प्राण निरोध करि रूपातीत परमशुकलध्यान ध्याता ॥ ७ ॥ बोलसहित विचरे । तरमे ॥२०॥ बोल कह्या तेहमांथि । सजोगी ॥ १ ॥ सलेशी ॥ २ ॥ शुकल लेशी ॥ ३ ॥ ए त्रण वर्जीने शेष ॥ ७॥ बोलसहित सकल गिरीनो राजा मेरु तेहनि परे । अडोल । अचल । स्थिर अवस्थाने पामे शैलेशी पणे रहि पंचलघु अक्षर उच्चार प्रमाण काल रहि ॥ शेष वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥

नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ कर्म क्षीण करिने मुक्तिपद पामे ॥ शरिर उदारिक। तेजस कार्मण। सर्वथा छांमिने समश्रेणि रुजुगति अन्य आकाशप्रदेशने अवगाहतो अणफरसतो। एक समय मात्रमां। उर्द्धगति। अविग्रहगतिये तिहां जाय। एरमबीज बंधन मुक्तवत्। निर्लेप तुंबिवत्। कोदंम मुक्तबाणवत्॥ इंधनवह्निमुक्तधुम्रवत्। तिहांसिद्धक्षेत्र जइ साकारोपयोगे सिद्ध थाय। बुद्ध थाय॥ पारांगत थाय। परंपरगत थाय। सकल कार्य अर्थसाधि॥ कृतकृतार्थ। निष्ठितार्थ। अतुल शुखसागर निर्मग्न॥ सादिअनंत भागे सिद्ध थाय॥ ए सिद्धपदनो भावस्मरण॥ चिंतन मनन कदा काले मुजने होशे। सो घटि पल धन्य सफल होशे॥ हवे अजोगी ते। जोगरहित केवलसहित विचरे॥ तेहने अजोगी केवली गुणठाणुं कहिये॥ १४॥ इति लक्षण गुणद्वार बीजो संपूर्ण॥ २॥ हवे त्रिजो स्थितिद्वार कहेछे॥ पहिला गुणठाणानि स्थिति ३ प्रकारनि छे॥ अणादिया अपज्जवसिया ते जे मिथ्यात्वनि आदि नथि ने अंतपण नथि ते अभव्यजीव ना मिथ्यात्व आश्रि॥ १॥ अणादिया सपज्जवसिया ते जे मिथ्यात्वनि आदि नथि पण अंत छे ते भव्यजीवना मिथ्यात्व आश्रि॥ २॥

सादियासपज्जवसिया ते जे मिथ्यात्वनि आदि पण छे ने अंत पण छे ते पडिवाइ समदृष्टीना मिथ्यात्वआश्रि ॥ तेहनी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त्त ॥ उत्० अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन देशे उणी पछि अवश्य समकित पामिने मोक्ष जाय ॥ ३ ॥ १ ॥ बिजा गुणठाणानि स्थिति । जघ० ॥ १ ॥ समय । उत्० ॥ ६ आवलिकाने ७ समयनि ॥ २ ॥ त्रिजा गुणठाणानि स्थिति । ज० । उ० अंतर्मुहूर्त्तनी ॥ ३ ॥ चोथागुणठाणानि स्थिति ज० ।अंतर्मुहूर्त्त । उ० ॥ ६६ सागरोपम झाझेरानि ते २२ सागरोपमनि स्थितिये ३ वार बारमे देवलोके उपजे । त्रण पूर्वक्रोडि अधिक मनुष्यना भव आश्रि जाणवि ॥ तथा बेवार अनुत्तर विमानमा ३३ सागरोपमनि स्थितिये उपजे ॥ ३३ छासठ सागरोपम ने पूर्वक्रोडि ३ अधिक मनुष्यना भव आश्रि जाणवि ॥ ४ ॥ पांचमा छठा तेरमा गुणठाणानि स्थिति ज० अंत० उ० देशेउणि ने साडाआठ वर्षे उणि पूर्वक्रोडनि ॥ सातमाथि ने इग्यारमा गु० सुधि ज० ॥ १ समय० ॥ उ० अंत० । बारमां गु० । स्थिति ज० । उ० । अंत० ॥ चउदमा गुणठाणानि स्थिति पांच ह्रस्व अक्षर अ । इ । उ । ऋ । ऌ । बोलवा प्रमाणे जाणवि । इति त्रिजां स्थितिद्वार समाप्त ॥ ३ ॥

हवे चोथो क्रियाद्वार कहेछे । पहिले ने त्रिजे गुणठाणे ॥ २४॥ क्रिया लाभे । इरियावहिया क्रिया वर्जिने ॥ बिजे । चोथेगु० ॥ २३ क्रिया लाभे इरियावहिया ॥ १ ॥ ने मिथ्यात्वनि ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥ पांचमे गु० ॥ २२ क्रिया लाभे मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अविरति ॥ २ ॥ इरियावहिया ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ वर्जिने ॥ छठे गुणठाणे ॥ २ ॥ क्रिया । आरंभिया ॥ १ ॥ मायावत्तिया ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ लाभे । सातमे गुणठाणेथी ते दशमा गुणठाणा सुधी ॥ १ ॥ मायावत्तिया क्रिया लाभे ॥ इग्यारमे बारमे तेरमे गुणठाणे ॥ १ ॥ इरियावहिया क्रिया लाभे । चउदमे गुण० कोइ क्रिया लाभे नहि ॥ इति ४ थो ॥ क्रियाद्वार समाप्तं ॥ ४ ॥ हवे पांचमो सत्ताद्वार कहेछे ॥ पहिलागुणठाणाथिते इग्यारमा गुणठाणा सुधि । आठ कर्मनि सत्ता । बारमे ॥ ७ ॥ कर्मनि सत्ता १ मोहनियकर्म वर्जिने ॥ तेरमे चउदमे गुण० ॥४॥ कर्मनि सत्ता । वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥ इति पांचमो सत्ताद्वार समाप्तं ॥ ५ ॥ हवे छठो बंधद्वार कहेछे ॥ पहिला गुणठाणाथि ते सातमा गुणठाणासुधि त्रिजुं गुणठाणुं वर्जिने ॥ ८ कर्म बांधे । अने जो ॥ ७ बांधे तो आयुष वर्जिने । त्रिजे आठमे न-

वमे गु० ॥ ७ ॥ कर्म बांधे आयुष वर्जिने ॥ दशमे गुण० ॥ ६ कर्म बांधे । आयुष ॥ १ ॥ ने मोहनीय । ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥ इग्यारमे बारमे तेरमे गुण० ॥ १ सातावेदनीय बांधे ॥ चउदमे गुण० । अबंध० ॥ इति ६ ठो ॥ बंधद्वार समाप्तं ॥ ६ ॥ हवे ॥७ मो वेद द्वारने ॥८ मो उदयद्वार भेला कहेछे ॥ पहिला गुणठाणाथि ते दशमा गुणठाणासुधि ॥ ८ कर्म वेदे ने ॥ ८ नो उदय इग्यारमे बारमे ॥ ७ कर्म वेदे ने ॥ ७ नो उदय मोहनीय वर्जिने ॥ तेरमे चउदमे ॥ ४ ॥ कर्म वेदे ने ॥ ४ नो उदय ॥ वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥ इति ॥ ७ मो वेदने ८ मो उदयद्वार समाप्तं ॥ ७ ॥ ८ ॥ हवे नवमो उदीरणाद्वार कहेछे । पहिला गुणठाणाथि मांडिने ॥ ७ मा गुणठाणासुधि ॥ ८ कर्मनि उदीरणा । तथा नी करेतो आयुष वर्जिने ॥ आठमे नवमे गुणठाणे ॥ ७ कर्मनि उदीरणा ने आयुष वर्जिने । तथा ६ नि करे तो । आयुष ॥१॥ मोहनीय ॥२॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने । दशमे ॥ ६ नि उदी-रणा करे ॥ आयुष ॥१॥ मोहनीय ॥२॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने । अने ५ नि करे तो । आयुष ॥ १ ॥ मोहनीय ॥ २ ॥ वेदनीय ॥ ३ ॥ ए ३ वर्जिने ॥ इग्यारमे बारमे गु० ५ नि उदीरणा ॥

आयुष ॥ १ ॥ मोहनीय ॥२॥ वेदनीय । ए ३ वर्जिने । तथा २ नि करे तो । नाम ॥१॥ गोत्र ॥२॥ ए २ नि॥तेरमे गुणठाणे ॥ २ कर्मनि उदीरणा ॥ नाम ॥१॥ गोत्र ॥२॥ ए २ नि॥ चउदमे गुण० उदीरणा करे नहि ॥ इति ॥ ए ॥ मो उदीरणाद्वार समासं ॥ ए ॥ चेत्रक० निश्चे ॥ हवे ॥ १० मो निर्जराद्वार कहेछे ॥ पहिलाथि ते ११ मा गुणठाणा सुधि ॥ ८ कर्म नि निर्जरा ॥ बारमे ॥ ७ कर्मनि निर्जरा मोहनीय वर्जिने ॥ तेरमे चउदमे ४ कर्मनि निर्जरा। वेदनीय ॥१॥ आयुष ॥२॥ नाम ॥३॥ गोत्र ॥ ४ ॥ ए ४ नि । इति ॥ १० मो निर्जराद्वार समासं ॥ १० ॥ हवे इग्यारमो जावद्वार कहे छे ॥ उदयजाव ॥ १ ॥ उपशमजाव ॥ २ ॥ क्षायकजाव ॥ ३ ॥ क्षयोपशमजाव ॥ ४ ॥ परिणामिकजाव ॥ ५ ॥ संनिवाइजाव ॥ ६ ॥ पहिले ने त्रिजे गुणठाणे ॥ ३ जाव । उदय ॥ १ ॥ क्षयोपशम ॥ २ ॥ परिणामिक ॥ ३ ॥ विजे गु० चोथे गु० पांचमे गु० छठे गु० सातमे गु० आठमेथि ते इग्यारमा गुणठाणा सुधि उपशम श्रेणिवालाने ॥ ४ जाव उदय ॥ १ ॥ उपशम ॥ २ ॥ क्षयोपशम ॥ ३ ॥ परिणा-मिक ॥ ४ ॥ तथा कोइक उपशमने ठेकाणे क्षायकपण कहेछे ॥ अने ८ मांथि मांकिने

वारमा सुधि क्षपकश्रेणि वालाने ॥ ४ नाव उदय ॥ १ ॥ क्षयोपशम ॥ २॥ क्षायक ॥ ३ ॥
परिणामिक ॥४॥ तेरमे चउदमे गु० ॥ ३ नाव । उदय ॥ १ ॥ क्षायक ॥ २ ॥ परिणामिक
॥ ३ ॥ सिद्धमां ॥ २ नाव । क्षायक ॥ १ ॥ परिणामिक ॥ २ ॥ इति ११ मो नावद्वार
समासं ॥ हवे ॥ १२ मो कारणद्वार कहे छे ॥ कारण ॥ ५ कर्मबंधना ॥ मिथ्यात्व ॥ १ ॥
अविरति ॥ २ ॥ प्रमाद ॥ ३ ॥ कषाय ॥ ४ ॥ जोग ॥ ५ ॥ पहिले । त्रिजे गु० ॥ ५ कारण
लाने ॥ बीजे चोथे ॥ ४ कारण लाने ॥ मिथ्यात्व वर्जिने । पांचमे छठे गुण० ॥ ३
कारण लाने ॥ मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अविरति ॥ २ ॥ ए ॥ २ वर्जिने ॥ सातमेथि ने दशमा
गुणठाणासुधि ॥ २ कारण लाने ॥ कषाय ॥ १ ॥ जोग ॥ २ ॥ ए ॥ २ लाने ॥ इग्यारमे
वारमे तेरमे १ कारण लाने ते ॥ जोग १ ॥ चउदमे कोइ कारण नथि । इति १२ मो
कारणद्वार समासं ॥१२॥ हवे १३ मो परिसहद्वार कहे छे ॥ पहिलाथि ने चोथा गुणठाणा
सुधि यद्यपि परिसह २२ लाने पण दुःखरूप छे । निर्जरारूप प्रणमे नहि ॥ पांचमाथि
ते ए मा गुणठाणासुधि २२ परिसह लाने ॥ एक समये २० वेदे । टाढना निद्रा तापनो

नहि॥ तापनो तिहां टाढनो नहि॥चालवानो तिहां वेसवानो नहि ॥ वेसवानो तिहां चालवानो नहि ॥ दशमे इग्यारमे वारमे ॥१४॥ परिसह लाभे॥आठ जे मोहनीय कर्मने उदये हता ते वर्ज्या ॥ ते कहे छे ॥ अचेलनो ॥ १ ॥ अरतिनो ॥ २ ॥ स्त्रीनो ॥ ३ ॥ वेशवानो ॥ ४ ॥ आक्रोशनो ॥ ५ ॥ मेलनो ॥ ६ ॥ सत्कार पुरस्कारनो ॥७॥ ए ॥ चारित्र मोहनीय कर्मने उदय हता ते ॥ ने ८ मो दंशण परिसह दर्शन मोहनीयने उदय हतो ते ॥ ए ८ वर्जिने शेष ॥१४ रह्या ते मांहिला एक समये ॥१२ वेदे॥टाढनो तिहां तापनो नहि । तापनो तिहां टाढनो नहि ॥चालवानो तिहां स्थानकनो नहि । स्थानकनो तिहां चालवानो नहि॥तेरमे चउदमे गुणठाणे ॥ ११ परिसह लाभे ॥ पूर्वे ॥ १४ कह्या तेहमांथि ॥ प्रज्ञानो ॥ १ ॥ अज्ञाननो ॥ २ ॥ ए २ ज्ञानावरणिय कर्मने उदय हता ते ॥ अने ॥१अलाभनो अंतराय कर्मने उदय हतो ते । ए ३ वर्जिने शेष ११ रह्या ॥ ते मांहिला ॥ १ समये ए वेदे ॥ टाढनो तिहां तापनो नहि । तापनो तिहां टाढनो नहि । चालवानो तिहां स्थानकनो नहि । स्थानकनो तिहां चालवानो नहि ॥ इति १३ मो परिसहद्वार समाप्तं ॥ १३ ॥ हवे ॥ १४ मो मार्गणाद्वार

कहेछे ॥ पहेले गूणठाणे मार्गणा ॥ ४ ॥ त्रीजे चोथे पांचमे सातमे जाय ॥ बिजे गूण०
मार्गणा ॥ १ ॥ पडे तो पहेले आवे पण चडवुं नथि ॥ त्रिजे मार्गणा ॥ ४ ॥ पडे तो पहेले
आवे । अने चडे तो चोथे पांचमे अने सातमे जाय ॥ चोथे मार्गणा ॥ ५ पडे तो पहेले
बिजे त्रिजे आवे । अने चडे तो पांचमे सातमे जाय ॥ पांचमे मार्गणा ॥ ५ पडे तो पहेले
बिजे त्रिजे चोथे आवे । अने चडे तो सातमे जाय ॥ छठे मार्गणा ॥ ६ पडे तो पहेले
बिजे त्रिजे चोथे पांचमे आवे । अने चडे तो सातमे जाय ॥ सातमे मार्गणा ॥ ३ पडेतो
छठे चोथे आवे । अने चडे तो ८ मे जाय ॥ आठमे मार्गणा ॥ ३ पडे तो सातमे चोथे
आवे । चडे तो नवमे जाय ॥ नवमे मार्गणा ॥ ३ पडे तो आठमे चोथे आवे ॥ अने चडे तो
दशमे जाय ॥ दशमे मार्गणा ॥ ४ पडे तो नवमे चोथे आवे । चडे तो इग्यारमे बारमे
जाय ॥ इग्यारमे मार्गणा ॥ २ काल करे तो अनुंत्तर विमाने जाय ॥ पडे तो दशमाथी
पहेलासुधि आवे । चडवुं नथि ॥ बारमे मार्गणा ॥ १ तेरमे जाय ॥ पडवु नथि तेरमे
मार्गणा १ ॥ चौदमे जाय । पडवुं नथि । चउदमे मार्गणा एके नथि मोक्ष जाय । इति

मार्गणाद्वार १४ मो समाप्तं ॥ १४ ॥ हवे पनरमो आत्माद्वार कहेछे ॥ आत्मा ८ ॥ द्रव्य आत्मा ॥ १ ॥ कषायआत्मा ॥ २ ॥ योगआत्मा ॥ ३ ॥ उपयोगआत्मा ॥४॥ ज्ञानआत्मा ॥ ५ ॥ दर्शनआत्मा ॥ ६ ॥ चारित्रआत्मा ॥ ७ ॥ वीर्यआत्मा एवं ८ ॥ पहेलेत्रिजे गुण० ६ आत्मा । ज्ञान ने चारित्र ए २ वर्जिने विजे चोथे गुण० ॥ ७ आत्मा चारित्र वर्जिने ॥ पांचमे गुणठाणे पण ॥ ७ आत्मा देशथि चारित्र छे ॥ छठेथि दशमा गुणठाणासुधि ॥ ८ आत्मा। इग्यारमे बारमे तेरमे गु० ॥ ७ आत्मा कषाय वर्जिने ॥ चउदमे गु० ६ आत्मा कषाय ने जोग वर्जिने । सिद्धमां ॥ ४ आत्मा । ज्ञानआत्मा ॥ १ ॥ दर्शनआत्मा ॥ २ ॥ द्रव्य आत्मा ॥ ३ ॥ उपयोगआत्मा ॥ ४ ॥ इति १५ मो आत्माद्वार समाप्तं ॥१५॥ हवे १६ मो जीवभेदद्वार कहेछे । पहेले गुणठाणे ॥ १४ भेद लाभे ॥ विजे गुण० ६ भेद लाभे ॥ बेइंद्रिय ॥१॥ तेइंद्रिय ॥ २ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ३ ॥ असंज्ञितिर्यंचपंचेंद्रिय ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ ना अपर्जाप्ता ने संज्ञी पंचेंद्रियनो अपर्जाप्तो ने पर्जाप्तो ॥ ए ६ ॥ त्रिजे गुण० ॥ १ संज्ञी पंचेंद्रियनो पर्जाप्तो लाभे । चोथे गुणठाणे ॥ २ भेद लाभे । संज्ञी पंचेंद्रियनो अपर्जाप्तो ने पर्जाप्तो ॥ ए २ ॥

पांचमांथि ते १४मा गुणठाणासुधि १ संज्ञि पंचेन्द्रियनो पर्जाप्तो लाभे ॥ इति १६ मो जीवभेद द्वार समाप्तं ॥ १६॥ हवे १७मो जोगद्वार कहेछे ॥ पहेले बिजे ने चोथे गुणठाणे जोग ॥१३॥ लाभे बे आहारकना वर्जिने ॥ त्रिजे गुण० १० जोग लाभे ते ४ मनना ॥ ४ वचनना ॥ १ उदारिकनो ॥ १ वैक्रेयनो । ए ॥ १० लाभे ॥ पांचमे गुणठाणे ॥ १२ जोग ॥ आहारकना ॥ २ ने एक कार्मणनो ए ३ ॥ वर्जीने १२ ॥ लाभे ॥ छठे गुण० ॥ १४ जोग लाभे ॥ १ कार्मणनो वार्जिने । सातमे गुण० ॥ ११ जोग ते ४ मनना ॥ ४ वचनना ॥ १ उदारिकनो ॥ १ वैक्रेयनो ॥ १ आहारकनो । एवं ११ ॥ आठमांथि मांडिने १२ नां गुणठाणासुधि जोग ॥ ए लाभे ते ४ मनना ॥ ४ वचनना ने ॥ १ उदारिकनो । ए ए ॥ तेरमे गुणठाणे जोग ॥ ७ लाभे ॥ बे मनना बे वचनना । ए ४ ने उदारिकनो १ ॥ उदारिकनो मिश्र २ ॥ कार्मणकायजोग ३ ॥ एवं ७ ॥ चौदमे गुण० जोग नथि । इति ॥ १७ मो जोगद्वार समाप्तं ॥ १७ ॥ हवे १८ मो उपयोगद्वार कहेछे ॥ पहेले ने त्रिजे गुणठाणे ६ ॥ उपयोग लाभे ॥ ३ अज्ञानने ३ दर्शन । एवं ६ बिजे चोथे पांचमे गुण० ६ उपयोग लाभे ॥ ३ ज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ एवं ६ ॥ छठाथि ते बारमा गुण-

ठाणासुधि उपयोग ७ ॥ लाभे ते ४ ज्ञान ने ३ दर्शन। एवं ७ ॥ तेरमे चौदमे गुणठाणे तथा सिद्धमां ॥ २ उपयोग। केवल ज्ञान ॥ १ ने। केवलदर्शन २ ॥ इति १८ मो उपयोगद्वार समाप्तं ॥ १८ ॥ हवे १९ मो लेशाद्वार कहेछे ॥ पहेलाथि ते छठा गुणठाणासुधि ॥ ६ लेशालाभे ॥ सातमे गुण० उपलि ॥ ३ लेशा लाभे। आठमेथि मांडीने बारमा गुणठाणासुधि ॥ १ शुकल लेशा लाभे ॥ तेरमे गुणठाणे ॥ १ परमशुकललेशा लाभे। चौदमे गुण० लेशा नथि। इति १९ मो लेशाद्वार समाप्तं ॥१९॥ हवे २० मो चारित्रद्वार कहेछे। पहेलाथि ते चोथा गुणठाणासुधि कोई चारित्र नथि। पांचमे गुणठाणे देशथि सामायक चारित्र छे। छठे सातमे गुणठाणे ॥ ३ चारित्र लाभे। सामायक चारित्र ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीयचारित्र ॥२॥ परिहार विशुद्धचारित्र ॥३॥ ए ३ लाभे। आठमे नवमे गुणठाणे ॥ २ चारित्र लाभे। सामायक ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय ॥ २ ॥ दशमे गुण० १ सुक्ष्मसंपरायचारित्र लाभे ॥ इग्यारमेथि ते चौदमा गुणठाणासुधि १ जथाख्यातचारित्र लाभे ॥ इति २० मो चारित्रद्वार समाप्तं ॥ २०॥ हवे २१ मो समकितद्वार कहेछे। पहेले ने त्रिजे गुणठाणे समकित नथि ॥ बिजे गुण० १

सास्वादान समकित लाभे ॥ चोथेथि ते सातमा गुणठाणासुधि ॥४ समकित लाभे । उपशम ॥ १ ॥ क्षयोपशम ॥ २ ॥ वेदक ॥ ३ ॥ क्षायकसमकित ॥ ४॥ आठमे नवमे गुण-ठाणे ॥ ३ ॥ समकित लाभे । उपशम ॥ १ ॥ क्षयोपशम ॥ २ ॥ क्षायक ॥ ३ ॥ दशमे इग्यारमे गुणठाणे ॥ २ समकित लाभे । उपशम ॥ १ ॥ क्षायक ॥ २ ॥ बारमे तेरमे चौदमे गुणठाणे तथा सिद्धमां ॥ १ क्षायकसमकित लाभे ॥ इति २१ मो समकितद्वार समाप्तं ॥२१॥ हवे २२ मो अल्पबहुत्वद्वार कहेछे ॥ सर्वथि थोडा इग्यारमा गुणठाणावाला एक समये उप-शमश्रेणिवाला ५४ जीव लाभे माटे ॥१॥ तेथि बारमा गुणठाणावाला सख्यातगुणा एक समये क्षपकश्रेणिवाला एकसो ने आठ जीव लाभे माटे ॥२॥ तेथि आठमा नवमा दशमा गुणठाणावाला संख्यातगुणा ॥ जघन्य बसे ॥ उत्० नवसे लाभे माटे ॥ ३ ॥ तेथि तेरमा गुणठाणावाला संखेजगुणा ॥ जघ० बे क्रोडि ॥ उत्० नव क्रोडि लाभे माटे ॥ ४ ॥ तेथि सातमां गुणठाणावाला संख्यातगुणा । जघ० । बसे क्रोडि । उत्० । नवसे क्रोडि लाभे माटे ॥५॥ तेथि छठां गुणठाणावाला संख्यातगुणा । जघ० बे हजार क्रोडि । उत्० ।नव हजार

कोम्नि लाजे माटे ॥६॥ तेथि पांचमां गुणठाणावाला असंख्यातगुणा । तिर्यंच श्रावक नव्या माटे ॥७॥ तेथि बिजा गुणठाणावाला असंख्यातगुणा ४ गतिमा लाजे माटे ॥ ८ ॥ तेथि त्रिजा गुणठाणावाला असंख्यातगुणा४ गतिमां विशेष ठे माटे ॥९॥ तेथी चोथा गुणठाणा वाला असंख्यातगुणा घणि स्थिति ठे माटे॥१०॥तेथि चौदमां गुणठाणावाला ने सिद्धनग-वंतजि अनंतगुणा ॥११॥ तेथि पहेला गुणठाणावाला अनंतगुणा एकेंद्रिय प्रमुख सर्व मिथ्या-दृष्टि ठे माटे ॥१२॥ इति २२ मो अल्पबहुत्वद्वार समाप्तं ॥ २२ ॥ इतिगुणठाणाना २२ द्वार समाप्तं ॥ हवे नाव ६ कहेठे ॥ उदयन्नाव ॥१॥ उपशम नाव ॥ २ ॥ क्षायकन्नाव ॥ ३ ॥ क्षयोपशमन्नाव ॥ ४ ॥ परिणामिकन्नाव ॥ ५ ॥ सन्निवाइन्नाव ॥ ६ ॥ हवे उदयन्नावनाना ॥२॥ नेद ॥ जीवउदयनिष्पन्न ॥ १ ॥ ने अजीवउदयनिष्पन्न ॥ २ ॥ जीवउदयनिष्पन्नना ॥ ३३ बोल पामे ॥ ४ ॥ गति ॥ ६ ॥ काय ॥ ६ ॥ लेश्या ॥ ४ ॥ कषाय ॥.३ ॥ वेद । एवं ॥ २३ ने मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अज्ञान ॥ २ ॥ अविरति ॥ ३ ॥ असंज्ञिपणुं ॥ ४ ॥ आहारकपणुं ॥ ५ ॥ ठद्मस्थपणुं ॥ ६ ॥ शजोगिपणुं ॥ ७ ॥ संसार परियट्टणा ॥८॥ असिद्ध ॥९॥ अकेवलि ॥१०॥

एवं ॥ ३३ ॥ हवे अजीव उदयनिष्पन्नना ३० बोल पामे ॥ ५ ॥ वर्ण ॥ २ ॥ गंध ॥ ५ ॥ रस ॥ ८ ॥ स्पर्श ॥ ५ ॥ शरीर ॥ ५ ॥ शरीरना व्यापार । एवं ॥ ३० ॥ एवं उन्नय मलिने ॥ ३३ ॥ ने ॥ ३० ॥ त्रेशठ नेद उदयनावना कह्या ॥ १ ॥ हवे उपशमनावे ॥ ११ बोल छे । च्यार कषायनो उपशम ॥ ४ ॥ रागनो उपशम ॥ ५ ॥ द्वेषनो उपशम ॥ ६ ॥ दर्शनमोहनीयनो उपशम ॥ ७ ॥ चारित्रमोहनियनो उपशम ॥ ८ ॥ एवं ॥ ८ मोहनियनि प्रकृति ॥ अने उवस मिया दंशणलद्धि ते समकित ॥ ९ ॥ उवसमियाचरित्तलद्धि ॥ १० ॥ उवसमियाअकषायछउमछवीतरागलद्धि ॥ ११ ॥ एवं ॥ ११ ॥ हवे क्षायक नावे ३७ बोल छे ॥ ५ ज्ञानावरणिय ॥ ९ दर्शनावरणिय ॥ २ ॥ वेदनीयनि ॥ १ ॥ रागनि ॥ १ ॥ द्वेषनि ॥ ४ कषायनि ॥ १ दर्शनमोहनीयनि ॥ १ चारित्रमोहनीयनि ॥ ४ आयुषनि ॥ २ नामनि २ ॥ गोत्रनि ५ अतरायनि । एवं ३७ ॥ प्रकृतिने क्षय करे तेहने क्षायकनाव कहिये । ते ९ बोल पामे ॥ क्षायकसमकित ॥ १ ॥ क्षायकजथाख्यातचारित्र ॥ २ ॥ केवलज्ञान ॥ ३ ॥ केवलदर्शन ॥ ४ ॥ अने क्षायकदानादिलब्धि ५ ॥ एवं ९ बोल ॥ ३ ॥ हवे क्षयोपशमनावे ॥ ३० बोल छे ॥ ४ ज्ञान

प्रथमना ॥३अज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ ३ दृष्टि ॥४ चारित्र प्रथमना ॥१चरित्ताचरित्त ते श्रावकपणु पामे ॥ १ आचार्यगणिनि पदवी ॥ १ चौद पूर्व ज्ञाननी प्राप्ति ॥ ५ इंद्रिय नि लब्धि ॥ ५ दानादिलब्धि । एवं सर्व मिली ॥ ३० बोल ॥४॥ हवे परिणामिक भावनाना २ भेद । सादिपरिणामिक ॥ १ ॥ अनादिपरिणामिक ॥ २ ॥ सादि विणशे ॥ अनादि विणशे नहि । सादिपरिणामिकना अनेक भेद छे । जुनी सुरा मदिरा जुनो गोल तंदुल ए आदि ७२ बोल भगवतीनि शाखे छे ॥ अनादिपरिणामिकभावना १० ॥ बोल ॥ धर्मास्तिकाय ॥ १ ॥ अधर्मास्तिकाय ॥ २ ॥ आकाशास्तीकाय ॥ ३ ॥ पुद्गलास्तिकाय ॥ ४ ॥ जीवास्तिकाय ॥ ५ ॥ काल ॥ ६ ॥ लोक ॥ ७ ॥ अलोक ॥ ८ ॥ भव्य ॥ ९ ॥ अभव्य ॥ १० ॥ एवं १० ॥ ५ ॥ हवेसन्निवाइभावना २६ भांगा ॥ १० ॥ द्विकसंजोगीना १० ॥ त्रिकसंजोगीना ॥ ५ चोकसंजोगीना ॥ १ पंचसंजोगिनो । एवं २६ भांगा । एहनो विचार श्रीअनुयोगद्वार सिद्धांतथि जाणवो ॥ ६ ॥ हवे ॥ १४ गुणठाणा उपर ॥ १० क्षेपकद्वार उतारेछे । तेहमां प्रथम हेतुद्वार कहेछे ॥ २५ कषाय ॥ १५ जोग ॥ एवं ४० ने ॥ ६ काय ॥ ५ इंद्रिय ॥ १ मन ॥ ए १२ अव्रत । एवं ५२ ने ५

मिथ्यात्व । एवं ५७ हेतु ॥ पहेले गुणठाणे ॥ ५५ हेतु ते आहारकना २ वर्जिने ॥ १ ॥ विजे
गु० ५० हेतु ते ५५ मांथि ५ मिथ्यात्व टल्या ॥२॥ त्रिजे गु० ४३ हेतु ते ५७ मांथि अनंता-
नुवंधि ४ ॥ उदारिकनो मिश्र १ वैक्रेयनो मिश्र २ ॥ आहारकना २ मिथ्यात्व ५ एवं १४
वर्ज्या ॥ शेष ४३ ॥ ३ ॥ चोथे गु० ४६ हेतु ते पूर्वे कह्या ४३ ते अने उदारिकनो मिश्र १॥ वैक्रे-
यनो मिश्र २ ॥ कार्मण कायजोग ३ ॥ ए ३ वध्या ॥ सर्व मलिने ४६ ॥ ४ ॥ पांचमे गुण-
ठाणे ४० हेतु ते पूर्वे ४६ कह्या तेहमांथि अप्रत्याख्यानी नि चोकडि ४ ॥ त्रशकायनोअव्रत १ ॥
कार्मणकायजोग १ ॥ एवं ६ घटया ॥ शेष ४० हेतु ॥ ५ ॥ छठे गुण० २७ हेतु पूर्वे ४० कह्या
तेहमांथि प्रत्याख्यानावरणियनि चोकडि ४ ॥ पांच स्थावरनो अव्रत ५॥ इंद्रिय ५ नो अव्रत
॥ ५ ॥ ने एक मननो अव्रत ॥ १ ॥ एवं १५ वर्ज्या ॥ शेष २५ रह्या ने ॥ आहारकना २ ॥
वध्या । एवं सर्व मलि २७ हेतु ॥६॥ सातमे गुण० २४ हेतु ते पूर्वे २७ कह्या तेहमांथि ॥
उदारिकमिश्र १ ॥ वैक्रेयमिश्र २ ॥ आहारकमिश्र । ए ३ वर्ज्या । शेष २४ हेतु ॥७॥ आठमे
गुण० २२ हेतु ते पूर्वे २४ कह्या तेहमांथि । वैक्रेयनो १ ॥ आहारकनो २ ॥ ए २ वर्ज्या । शेष

२२ हेतु ॥७॥ नवमे गुण० १६ हेतु ते पूर्वे २२ कह्या तेहमांथि । हाश्य १ ॥ रति २ ॥ अरति ३ ॥ त्नय ४ ॥ शोक ५ ॥ डुगंछा ६ ॥ ए छ वर्ज्या । शेष १६ हेतु ॥ए॥ दशमे गुण० १० हेतु ते ॥ ए जोग ने ॥ १ संजलनो लोत्न । एवं १० हेतु ॥ १० ॥ इग्यारमे बारमे गुण० ॥ए हेतु ते ए जोग जाणवा ॥ ११ ॥ १२ ॥ तेरमे गुण० ७ हेतु ते ७ जोग जाणवा ॥ १३ ॥ चौदमे गुण० हेतु नथि ॥१४॥ इति पहिलो हेतुद्वार समाप्तं ॥१॥ हवे बीजो दंरुक द्वार कहेछे । पहिले गुण० २४ दंरुक । बिजे गुण० १ए दंरुक ते ५ स्थावरना वर्ज्या । त्रिजे चोथे गुण० १६ दंरुक ते ३ विकलेंड्रिय वर्ज्या । पांचमे गुण० २ दंरुक संज्ञिमनुष्य १ संज्ञितिर्यंच ॥ २ ॥ ए २ ॥ छगाथि ते चौदमा गुणगा० सुधि १ मनुष्यनो दंरुक । इति २ दंरुकद्वार समाप्तं ॥ २ ॥ हवे त्रिजो जीवाजोनिद्वार कहेछे । पहेले गुण० ८४ लाख जीवा जोनि ॥ बिजे गुण० ३२ लाख ते एकेंड्रियनि वर्जि ॥ त्रिजे चोथे गुण० २६ लाख जीवा जोनि ॥ पांचमे गुण० ॥१७ लाख जीवा जोनि । छगाथि ते १४ मा गुणगाणासुधि १४ लाख जीवा जोनि । इति त्रिजो जोनिद्वार समाप्तं ॥ ३ ॥ हवे ४ थो अंतरद्वार कहेछे । पहिले गुण० जघ० अंतरमुहूर्त्तउत्० ६६

सागर जाझेरानुं अथवा १३२ सागर जाझेरानुं ते ६७ सागर चौथे गुण० रहे ॥ अंत०त्रीजे गु०
रहि पाछो चौथे गुण० ६६ सागर रहि मिथ्यात्वे आवे ॥बीजाथि मांडिने इग्यारमा गुणठा-
णासुधि ज० अंत०अथवा पल्यनो असंख्यातमो भाग ते एटला काल विना उपसम श्रेणीकरि
ने पडे नहीं उत्त० अर्द्धपुद्गल देशे ऊणुं । बारमे तेरमे ने चौदमे गुण० आंतरुं नथि । ए एक
जीवआश्रि इति ४ अंतरद्वार समाप्तं ॥४॥ हवे ५ मो ध्यानद्वार कहेछे पहेले बिजे त्रिजे गुण०
२ ध्यान पहेला॥चोथे पांचमे गुण० ३ ध्यान पहेला॥ छठे गुण० २ ध्यान आर्त्त १ ने धर्म ध्यान
॥२॥ सातमे गुण० १ धर्मध्यान० । आठमेथि मांडिने चौदमा गुण० १ शुक्लध्यान । इति ५
मो ध्यानद्वार समाप्तं ॥ ५ ॥ हवे छठो फरसनाद्वार कहेछे । पहेलुं गुणठाणु १४ राजलोक
स्पर्शे ॥ बिजुं गुण० हेठुं पंकगवनथि ते ६ ठि नरक लगे फरसे तथा उंचुं अधोगाम विजयथि
ते ए ग्रैवेयकसुधि फरसे ॥२॥ त्रिजुं गुण० लोकनो असंख्यातमो भाग फरसे॥३॥ चोथुं गुण०
अधोगाम विजयथि १२मा देवलोकसुधि फरसे अथवा पंकगवनथि छठी नरकसुधी फरसे ॥४॥
पांचमु गुण० पण इमज अधोगाम विजयथि १२ मा देवलोक सुधि फरसे ॥ ५ ॥ छठाथि

ते इग्यारमा गुणठाणावाला अघोगाम विजयथि ५ अनुत्तर विमानसुधि फरसे ॥ बारमुं गुण० लोकनो असंख्यातमो नाग फरसे । तेरमुं गुण० सर्व लोक फरसे । चौदमुं गुण० लोकनो असंख्यातमो नाग फरसे ॥ इति ६ ठो फरसनाद्वार समाप्तं ॥ ६ ॥ हवे तिर्थंकर गोत्र ४ गुणठाणे बांधे ॥ चोथे पांचमे छठे ने सातमे ॥ ए ४ गुणठाणे बांधे । शेष गुणठाणे न बांधे ॥ तिर्थंकर देव ए गुणठाणा फरसे ते । ४ । ६ । ७ । ८ । ए । १० । १२ । १३ ॥ १४ ॥ ए ए फरसे इति ७ मो द्वार समाप्तं ॥ ७ ॥ गुणठाणा १४ मां । १ । ४ । ५ । ६ । १३ । ए ५ शास्वता । शेष ए गुण० अशास्वता । इति आठमो द्वार समाप्तं ॥८॥ गुणठाणा १४ मा । १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ए ७ गुण० ६ संघयण । आठमाथि ते १४ मा गुणठाणा सुधि एकवज्रऋषभ नाराचसंघयण । इति ए मो द्वार समाप्तं ॥ ए ॥ आर्याजी ॥ १ ॥ अवेदि ॥ २ ॥ परिहारविशुद्धचारित्रवंत ॥ ३ ॥ पुलाक लब्धिवंत ॥ ४ ॥ अप्रमादि साधु ॥ ५ ॥ चौद पुर्वी साधु ॥ ६॥ आहारकशरीरि ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ नुं कोइ देवता साहारणकरि शके नहि । इति १० मो द्वार समाप्तं ॥१०॥ इति १० क्षेपक द्वार समाप्तं इति गुणठाणाद्वार समाप्तं॥

॥ अथ श्री महोटो बासठियो. ॥

गाथा ॥ जीव १ गइ २ इंदिय ३ काए ४ ॥ जोग ५ वेय ६ कसाय ७ लेस्सा ८ सम्मत्तं ९ नाण १० दंसण ११ संजय १२ उवउंग १३ आहारे १४ ॥१॥ नासग १५ परित्त १६ पज्जती १७ सुहूम १८ सन्नि १९ नवह्नि २० चरिमेय २१॥जीवेयखेत्ते वंधे । पुग्गलए महादंरूएचेव ॥ २ ॥ उपली २ गाथानो अर्थ विस्तारी कहे छे ॥

१ समुच्चय जीवमां जीवना नेद १४ ॥ गुणठाणा ॥१४॥ जोग ॥१५॥ उपयोग ॥१२॥ लेश्या ॥६॥ इति प्रथम द्वार ॥ १ नरक गतिमां जीवना नेद ३ । संज्ञीनो अप्र० १ ने प्रजाप्तो ॥ २ । असंज्ञी पहेली नरकनो अप्र० ।३॥ गुण० ४ प्रथम । जोग । ११ । ते ४ मनना ४ वचनना १ वैक्रेय । वैक्रेयनो मिश्र ।१। कार्मणकायजोग । एवं ११ । उपयोग॥९॥ ३ ज्ञान ।३। अज्ञान ३ दर्शन लेश्या ३ प्रथमनी

२ तिर्यचनि गतिमां जीवना नेद १४॥ गुण० ५ ॥ प्रथमना ॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उप० ९ ॥३ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्शन ॥ लेश्या ६ ॥

३ तिर्यंचणीमां जीवना भेद २ संज्ञीनो अप्र० ने प्रजाप्तो गुण० ५ प्रथमना ॥जोग१३॥उ-प० ए॥ ज्ञान ३ अज्ञान३ दर्श० ३ ॥लेशा ६

४ मनुष्यनि गतिमां जीवना भेद ३ संज्ञीनो अप्र० ने प्रजाप्तो ॥ २ ॥ समुर्छिम मनुष्य असंज्ञीनो अप्र०॥ ३॥ ए ३॥ गुण० १४। जोग० १५ ॥ उप० १२। लेशा ६ ॥

५ मनुष्यणीमां जीवना भेद २ संज्ञीना ॥ गुण० १४। जोग १३ आहारकना २ वार्जिने ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥

६ देवतानि गतिमां जीवना भेद ३ संज्ञीनो अप्र० १ ने प्रजाप्तो २ असंज्ञीनो अप्र०३॥ गुण० ४ पहिला ॥ जोग ११।४ मनना ४ ॥ वचनना। २ वैक्रेयना ॥ १ कार्मणनो ॥ एवं ११ ॥ उप० ए लेशा ६ ॥

७ देवांगनामां जीवना भेद २ संज्ञीनो अप्र-जाप्तो १॥ ने प्रजाप्तो २॥ गुण० ४ प्रथमना॥ जोग ११। ४ मनना ४ वचनना ॥२ वैक्रे-यना ने १ कार्मणनो ॥ एवं ११॥ उपयोग ए॥ लेशा ४ प्रथमनी

८ सिद्धगतिमां जीवना भेद नथि॥ गुणठा-णा नथि ॥जोग नथि॥उपयो० २ केवल-ज्ञान १॥ केवलदर्शन २। लेशा नथि ॥ एहनो अल्पबहुत्व॥सर्वथि थोडा मनुष्य-

णी १ ॥ तेहथि मनुष्य समुर्छिम नेलवता असंख्यातगुणा२॥तेहथीनारकिअसंख्यातगुणा ३॥तेहथि तिर्यंचणी असंख्यातगुणि ४ ॥ तेहथि देवता असंख्यातगुणा५॥ तेहथिदेवीसंख्यातगुणि ६॥तेहथि सिद्धजगवंत अनंतगुणा ७ । तेहथि तिर्यंच वनस्पति नेलवतां अनंतगुणा ७ ॥ इति बिजो द्वार ॥

ए सइंदियामांजीवनानेद १४ ॥ गुण० १२ प्रथमना ॥ जोग १५ उपयोग १०॥ केवलज्ञान१केवलदर्शन२ ए २ वर्जीने॥ लेशा ६॥ एकेंड्रियमां जीवना नेद ४॥ सूक्ष्म एकेंड्रियनो अप्रजासो १ ने प्रजासो २॥ वादरएकेंड्रियनो अप्रजासो ३ ने प्रजासो ४ ॥ गुण० १ प्रथमनुं ॥ जोग ५ उदारिक १ उदारिकनो मिश्र २ वैक्रेय३वैक्रेयनो मिश्र ४ कार्मणकायजोग ५ ॥ उपयोग ३ ॥ वे अज्ञान ने ॥ १ अचक्षु दर्शन॥ लेशा ४॥

५ बेइंड्रिय १ तेइंड्रिय २ चउरिंड्रिय ए ३ मा ॥जीवना नेद २ पोतपोतानो अप्रजासो १ ने प्रजासो २ ॥ गुण० २ पहेला । जोग४॥ २ उदारिकना ॥१ कार्मणनो ॥ ने ॥ १ व्यवहार वचननो । एवं ४॥ उपयोग बेइंड्रिय तेइंड्रियमां ५ । २ ज्ञान ॥ २ अज्ञान ॥ ने ॥

१ अचक्षुदर्शन एवं ५॥अने चउरिंद्रियमां
६ ते १ चक्षुदर्शन वध्युं एवं ६ ॥ लेशा३॥
६ पंचेंद्रियमां जीवना नेद ४ ॥ संज्ञिनो
अप्रजास्तो १ ने प्रजास्तो २ असंज्ञीनो
अप्रजास्तो ३ ने प्रजास्तो ४ एवं ४॥ गुण० १२
प्रथमना॥ जोग१५॥उपयोग१०केवलज्ञान
१ केवलदर्शन २ ए २ वर्ज्या ॥ लेशा ६ ॥
७ आणिंदियामां जीवनोन्नेद १ संज्ञिनो प्रजा-
स्तो ॥ गुणठाणा २ तेरमुं ने चउदमुं ॥ जो-
ग ७ । २ मनना ते सत्य मन १ व्यव-
हार मन २ बे वचनना ते सत्यवचन
१ व्यवहारवचन २ एवं ४ ॥अने उदा-
रिकनो ५ उदारिकनो मिश्र ६ कार्मण-
कायजोग ए ७ ॥ उपयोग २॥ केवलज्ञान
१ केवलदर्शन २ । लेशा १ शुकल ॥ एह-
नोअल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा पंचेंद्रिया
१ । तेहथिचउरिंद्रिया विशेषाहिया २
। तेहथि तेइंद्रिया विशेषाहिया ३ तेह-
थि बेइंद्रिया विशेषाहिया ४ । तेहथि
आणिंदिया अनंतगुणा ५ । तेहथि एकें-
द्रिया अनंतगुणा ६ ॥ तेहथि सइंद्रिया
विशेषाहिया ७ ॥ इति त्रिजोद्धार समाप्तं.
१ सकायामां जीवनान्नेद १४ ॥ गुण० १४ ॥
जोग १५ ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥

४ पृथ्वीकाय १ अपकाय २ वनस्पतिकाय ३ ॥ ए ३ मां जीवना नेद ४। गुण० १। जोग ३ ॥ उप० ३ । लेशा ४ ॥

६ तेउकाय १ वाउकाय २ ॥ ए २ मां जीवना नेद ४ ॥ गुण० १ ॥ जोग तेउमां ३ ने ॥ वाउमां ५ ते २ वैक्रेयना वध्या ॥ उप० ३ ॥ लेशा ३ ॥

७ त्रशकायमां जीवना नेद १० ते ४ एकेंद्रियना वर्ज्या ॥ गुण० १४ ॥ जोग १५ ॥ उपयोग १२ ॥ लेशा ६ ॥

८ अकायामां जीवना नेद नथि गुण० नथि । जोग नथि उप० २ लेशा नथि एहनो अल्प बहुत्व । सर्वथी थोमा त्रसकाया १ । तेहथि तेउकाया असंख्यातगुणा २ । तेहथि पृथ्वीकाया विशेषाहिया ३ ॥ तेहथि अपकाया विशेषाहिया ४ ॥ तेहथि वाउकाया विशेषाहिया ५ ॥ तेहथि अकाया अनंतगुणा ६ ॥ तेहथि वनस्पतिकाया अनंतगुणा ७ ॥ तेहथि सकाया विशेषाहिया ८ ॥ इति चोथो द्वार ॥

१ सजोगीमां जीवना नेद १४ गुण० १३ उपल्या बे नही ॥ जोग १५ ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥

२ मनजोगीमां जीवनो नेद १ ॥ संज्ञीनो प्रजातो ॥ गुण० १३ जोग १४ एक कार्मणनो वर्जिने ॥ उपयोग १२ ॥ लेशा ६ ॥

३ वचनजोगीमां जीवना नेद ॥ ५ ॥ बेइंड्रिय १ तेइंड्रिय २ चउरिंड्रिय ३ असंज्ञीपंचेंड्रिय ४ संज्ञिपंचेंड्रिय ५ ए ५ ना प्रजाप्ता ॥ गुण० १३ जोग १४ कार्मण वर्जिने ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥

४ कायजोगीमां जीवनानेद १४ ॥ गुण० १३॥ जोग १५ उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥

५ अजोगीमां जीवनो नेद १ संज्ञीनो प्रजातो ॥ गुणठाणुं ॥१॥ चौदमुं ॥ जोग नहि । उपयोग २ केवल ज्ञान ने केवल दर्शन ॥ लेशा नथि ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा मन जोगी १ ॥ तेहथि वचन जोगी असंख्यातगुणा २ ॥ तेहथि अजोगी अनंतगुणा ३ ॥ तेहथि कायजोगी अनंतगुणा ४॥तेहथी सजोगी विशेषाहिया ५ ॥ इति पांचमो द्वार ॥

१ सवेदीमां जीवना नेद १४ गुण० ए प्रथमना ॥ जोग १५।उ० १० केवलज्ञान ने केवलदर्शन ए बे वर्जिने ॥ लेशा ६ ॥

२ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद २ ए २ मां । जीवना नेद २ संज्ञीना ॥ गुण० ए ॥ जोग

पुरुषवेदमां १५ ॥ अने स्त्रीवेदमां १३ ते आहारकना वे वर्जिने ॥ उप० १०॥लेशा ६

४ नपुंसकवेदमां जीवना भेद १४ । गुण० ए ॥ जोग १५ ॥ उपयोग १० केवलज्ञान १ केवलदर्शनवर्जिने ॥ लेशा ६ ॥

५ अवेदीमां जीवनो भेद१ संज्ञीनो प्रजाप्तो॥ गुण० ६ नवमाथि ते १४ मां सुधि॥जोग ११ । ४ मनना ४ वचनना ने २ उदारिकना ॥ १ कार्मणनो एवं ॥११॥ उपयोग ए। ३ अज्ञान वर्जिने॥लेशा १ शुकल ॥ एहनो अल्पबहुत्व॥सर्वथि थोडा पूरुषवेदी ॥१॥ तेहथि स्त्रीवेदी संख्यातगुणी २ ॥ तेहथि अवेदी अनंतगुणा३॥तेहथि नपुंसकवेदी अनंतगुणा ४ ॥ तेहथि सवेदी विशेषाहिया ५ ॥ इति छठो द्वार ॥

१ सकषायीमां जीवना भेद १४ ॥ गुण० १० प्रथमना ॥जोग १५॥ उपयोग १०॥ केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ वर्जिने ॥ लेशा ६ ॥

४ क्रोध १ मान २ माया ३ ए ३ मां जीवनाभेद १४॥ गुण ए॥ जोग १५ ॥ उपयोग १० ॥ लेशा ६ ॥

५ लोभकषायीमां जीवना भेद १४ ॥ गुणठाणा १० पहेला ॥ जोग १५ ॥ उपयोग १० ॥ लेशा ६ ॥

३ अकषायीमां जीवनो जेद ॥ १ । संज्ञीनो प्रजाप्तो ॥ गुण० ४ उपरना ॥जोग ११ । ४ मनना ॥ ४ वचनना ॥ २ उदारिकना ॥२ कार्मणनो । एवं ११। उपयोग ए । ५ ज्ञान ४ दर्शन । एवं ए॥लेशा ६। एहनो अल्प-बहुत्व सर्वथि थोमा अकषायी १॥तेहथि मानकसायी अनंतगुणा २॥ तेहथि कोह-कषायी विशेषाहिया ३ तेहथिमायाक-षायी विशेषाहिया ४ ॥ तेहथि लोजक-षायी विशेषाहिया ५ तेहथि सकषायी विशेषाहिया ६ इति सातमो द्वार ॥

१ सलेशीमा जीवना जेद १४ ॥ गुण० १३॥ जोग १५ । उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥

४ कृष्ण १ निल २ कापुत ३ ए ३ लेशामां ॥ जीवना जेद १४ ॥ गुणठाणा ६ प्रथमना॥ जोग १५॥उपयोग १० बे केवलना वर्ज्या । लेशा पोतपोतानि ॥

५ तेजु०लेशामां जीवना जेद ३ संज्ञिनो अप्रजाप्तो १ ॥ प्रजाप्तो २ ॥ बादर एकेंद्रियनो अप्रजाप्तो ३ ॥ गुण० ७ प्रथमना॥जोग १५ उपयोग १० ॥ लेशा १ तेजु ॥

६ पद्मलेशामां जीवना जेद २ संज्ञिना ॥ गुण० ७ प्रथमना ॥ जोग १५ उपयोग १० लेशा १ पद्म ॥

७ शुकललेशीमां जीवना ज्ञेद २ ॥ संज्ञिना गुण० १३ प्रथमना । जोग १५ ॥ उपयोग १२ ॥ लेशा १ शुकल ॥

८ अलेशीमां जीवनो ज्ञेद १ संज्ञिनो प्रजासो ॥ गुण० १ चौदमुं ॥ जोग नथि ॥ उपयोग २ ॥ केवल ज्ञान १ ने केवलदर्शन २ ॥ लेशा नथि ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा शुकल लेशी १ ॥ तेहथि पद्मलेशी संख्यातगूणा २ ॥ तेहथि तेजुलेशी संख्यातगुणा ३ ॥ तेहथि अलेशी अनंत गुणा ४ ॥ तेहथि कापुतलेशी अनंतगुणा ५ ॥ तेहथि निललेशी वीशेषाहिया ६ ॥ तेहथि कृष्णलेशी विशेषाहिया ७ ॥ तेहथि सलेशी विशेषाहिया ८ ॥ इति ८ मो द्वार ॥

१ समुचय सम्यत्कदृष्टिमां जीवना ज्ञेद ६ ॥ बेइंद्रिय १ ॥ तेइंद्रिय २ ॥ चउरिंद्रिय ३ ॥ असंज्ञीपंचेंद्रिय ४ ॥ ए ४ ना अप्रजासा ॥ अने संज्ञीपंचेंद्रियनो अप्रजासो ॥ नेप्रजासो एवं ६ ॥ गुण० १२ पहेलुं त्रिजुं वरजीने ॥ जोग १५ ॥ उपयोग ए ॥ ३ अज्ञान वर्जिने ॥ लेशा ६ ॥

२ सास्वादान सम्यत्कदृष्टिमां जीवना ज्ञेद ६ ॥ गुण० बिजुं ॥ जोग ॥ १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उपयोग ६ ॥ ३ ज्ञान ४ ३

दर्शन ॥ लेशा ६ ॥

४ उपशम सम्यक्त्वदृष्टिमा जीवना भेद २ संज्ञीना ॥ गुण० ७ चोथाथि ११ मां सुधि ॥ जोग १५ उपयोग ७ ॥ ४ ज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ लेशा ६ ॥

५ क्षयोपशम ने वेदकसम्यक्तदृष्टिमां जीवना भेद २ संज्ञीना ॥ गुण० क्षयोपशम सम्यक्तदृष्टिमां ४ थी नवमांसुधि॥अने वेदकमां ४ थी सातमांसुधि जोग१५ उप०७ लेशा ६

६ क्षायक सम्य०जीवना भेद २ संज्ञीना ॥ गुण०११॥चोथाथि ते१४ मां सुधि॥जोग१५ उपयो[illegible] ६ ॥

७ मिथ्यात्व दृष्टिमां जीवना भेद १४ गुण० १ प्रथम ॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उपयोग ६ । ३ अज्ञान॥३दर्शन ॥ लेशा ६ ॥

८ समामिथ्यात्व दृष्टिमां ॥ जीवनो भेद १ संज्ञिनोप्रजाप्तो ॥ गुण० १ त्रिजुं ॥ जोग १०। ४मनना ॥ ४ वचनना १ उदारिकनो ॥ १ कार्मणनो । एवं १० ॥ उप० ६ लेशा६॥

एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोडासास्वादान समकिति १ तेहथि उपसम समकिति संख्यातगुणा २॥ तेहथि मिश्रदृष्टी संख्यातगुणा ३ ॥ तेहथि क्षयोपशम समकितिअसंख्यातगुणा४॥तेहथिवेदकसम-

किति संख्यातगूणा५॥तेहथि क्षायकसम-
किति अनंतगूणा ६॥ तेहथि समुचयसम-
किति विशेषाहिया ७ तेहथि मिथ्यात्व-
दृष्टि अनंतगूणा इति ए मो द्वार ॥

१ समुचयज्ञानिमां जीवना नेद ६॥ बेइंद्रिय
१। तेइंद्रिय २। चउरिंद्रिय ३। असंज्ञीपं-
चेंद्रिय ४।ए४ना अप्रजाप्ता ॥ ने प्रजाप्ता॥
एवं ६॥गुण०१२ पहेलुं त्रिजुं वर्जिने ॥जोग
१५॥उपयोग ए॥५ ज्ञानने ४दर्शन॥लेशा ६

३ मतिज्ञानी १ श्रुतज्ञानीमां २ जीवना नेद
६ ॥ गुण० १० पहेलुं त्रिजुं तेरमुं चौदमुं
वर्जिने ॥ जोग १५॥ उप० ७॥लेशा ६ ॥

४ अवधिज्ञानीमां॥जीवना नेद २। संज्ञीना॥
गुण१०॥ जोग १५॥उपयोग० ७ लेशा० ६ ॥

५ मनपर्यवज्ञानीमां जीवनो नेद १ सञीनो
प्रजाप्तो ॥ गुण०७। उठाथि बारमांसुधि ॥
जोग१४ कार्मणनो वर्जिने॥उप० ७॥ लेशा६

६ केवलज्ञानीमां जीवनो नेद १ संज्ञिनो
प्रजाप्तो ॥ गुण० २ तेरमुं ने १४ मुं ॥ जोग
७ ॥ उपयोग २ ॥ लेशा १ परम शुक्ल ॥

७ अज्ञानीमां जीवना नेद १४। गुण २ पहेलु
ने त्रिजुं ॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जिने॥
उप० ६।३ अज्ञान ३ दर्शन ॥ लेशा ६ ॥

ए मतिश्रुत अज्ञानीमां जीवना नेद १४ ॥

गूण० २ पहेलुं ने त्रिजुं॥ जोग १३॥ उप-
योग० ६ ॥ लेश्या० ६ ॥

१० विभंग अज्ञानीमां जीवना भेद २ संज्ञी
ना॥ गूण० २ पहेलुं ने त्रिजुं॥ जोग १३॥
उप० ६॥ लेश्या० ६॥ एहनो अल्पबहुत्व॥
सर्वथि थोडा मनपर्यवज्ञानी १॥ तेहथि
अवधिज्ञानी असंख्यात गूणा २॥तेहथि
मतिज्ञानी ने श्रुतज्ञानी माहोमांहि तुल्य
ने विशेषाहिया४॥तेहथि विभंग अज्ञानी
असंख्यात गूणा ५। तेहथि केवलज्ञानी
अनंतगुणा ६॥ तेहथि ज्ञानी विशेषाहिया
७॥ तेहथि मति श्रुतअज्ञानी माहोमां-
हितुल्यने अनंतगूणा ए॥ तेहथि अज्ञानी
विशेषाहिया ॥ १० ॥इति १० मो द्वार ॥

१ चक्षुदर्शनीमां जीवना भेद ६॥ चउरिंद्रि
य १॥ असंज्ञि पंचेंद्रिय २॥ संज्ञी पंचेंद्रिय
३॥ ए ३ ना अप्रजाप्ताने प्रजाप्ता॥ गुण०
१२ प्रथमना॥ जोग १४ कार्मणनोवर्जीने॥
उप० १० केवलना २ वर्ज्या ॥ लेश्या ६ ॥

२ अचक्षुदर्शनीमां जीवना भेद १४ गूण०
१२। जोग १५ उप० १० लेश्या ६॥

३ अवधिदर्शनीमां जीवना भेद २ ॥गूण०
१२। जोग १५ उप० १० लेश्या ६ ॥

४ केवलदर्शनीमां जीवनो भेद॥१॥गूण० २

तेरमुं चौदमुं । जोग ७ उप० २ ॥ लेशा १ ॥ एहनो अल्पबहुत ॥सर्वथि थोका अवधि दर्शनी १ ॥ तेह थि चक्षुदर्शनी असंख्या- तगूणा २ ॥ तेह थि केवलदर्शनी अनंत गूणा ३॥ तेह थि अचक्षुदर्शनी अनंतगूणा ४ ॥ इति ११ मो द्वार ॥

१ संजतिमां जीवनो भेद१संज्ञीनो प्रजासो॥ गूण०एठठा थि ते १४सा सुधि॥जोग १५॥ उप० ए । ३ अज्ञानवर्जिने ॥लेशा० ६ ॥

३ सामायक १ छेदोपस्थापनीय २ ए वे चारित्रमां जीवनो भेद १ संज्ञिनो प्रजा- सो ॥ गूण० ४ ठठाथी ए मां सुधि ॥ जो- ग १४ कार्मणनो वर्जिने ॥ उपयो ७ । ४ ज्ञान ने ३ दर्शन एवं ७ ॥ लेशा० ६ ॥

४ परिहार विशुद्धचारित्रमां जीवनोभेद सं- ज्ञी प्र०१॥ गूण० २ ठठुं ने सातमुं ॥जोगए। ४ मनना ४ वचनना ॥ने॥१॥ उदारिकनो ॥ एवं ए ॥ उप० ७ ॥ लेशा० ३ उपलि॥

५ सुक्ष्मसंपरायचारित्रमां जीवनो भेद १ संज्ञीनो प्र० ॥ गुण० १ दशमु ॥ जोग ए ॥ उपयोग ७ ॥ लेशा १ शुक्ल ॥

६ यथाख्यातचारित्रमां जीवनो भेद१सङ्गी- नो प्र०॥गुण०४ उपला॥ जोग११।४मनना ४ वचनना १ उदारिकना ने१कार्मणनो॥

उप०ए। ३ अज्ञान वर्जिने ॥ लेशा० १॥
७ संजतासंजतिमां जीवनो नेद १ संज्ञीनो प्र०गुण०१पांचमुं॥जोग१२ आहारकना २ ने१ कार्मणनोवर्जिने॥ उपयोग ६। ३ज्ञानने। ३ दर्शन। लेशा ६॥
८ असंजतिमां जीवना नेद १४। गुण० ४ प्रथमना॥जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उप०ए। ३ ज्ञान ॥ ३ अज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ लेशा ६ ॥
ए नोसंजतिनोअसंजतिनोसंजतासंजतिमां जीवनो नेद नथी ॥ गुण० नथी ॥ जोग नथि॥ ने। उप० २ ॥ लेशा नथि॥ एह

नो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा सुक्ष्म संपरायचारित्रिया १ ॥ तेहथि परिहारविशुद्धचारित्रिया संख्यात गुणा २॥ तेहथि यथाख्यातचारित्रिया संख्यातगुणा ३ ॥ तेहथि छेदोपस्थापनीयचारित्रिया संख्यातगुणा ४॥ तेहथि सामायकचारित्रिया संख्यातगुणा ५॥ तेहथि संजति विशेषाहिया ६ ॥ तेहथि संजतासंजति असंख्यातगुणा ७ ॥ तेहथि नोसंजति ॥ नोअसंजति नोसंजातासंजति ॥ अनंतगुणा ८ ॥ तेहथि असंजति वनस्पति नेळवतां अनंतगुणाए॥इति १२ मो द्वार

१ सागरोवउत्तामां जीवना नेद १४। गुण० १४। जोग १५। उप० १२। लेशा ६

२ अणागारोवउत्तामां जीवना नेद १४ ॥ गुण० १३ दशमुं वर्जिने ॥ जोग १५ ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोका अणागारोवउत्ता १ ॥ तेहथि सागारोवउत्ता संख्यातगुणा २ इति १३ मो द्वार ॥

१ आहारकमां जीवना नेद १४ ॥ गुण० १३ पहेला ॥ जोग १४ कार्मणनो वर्जिने ॥ उप० १२ ॥ लेशा० ६ ॥

२ अणाहारकमां ॥ जीवना नेद ८॥ सात अप्रजाप्ता ने १ संज्ञिनो प्रजाप्तो। एवं ८ ॥ गुण० ५ पहिलुं बिजुं चोथुं तेरमुं ने चौदमुं ए ५ ॥ जोग १ कार्मणनो ॥ उपयोग १० ॥ मनपर्यवज्ञान १ ने चक्षु दर्शन २ ए २ वर्जिने ॥ लेशा ६ ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोका अणाहारक १ ॥ तेहथि आहारक असंख्यातगुणा २ ॥ इति १४ मो द्वार ॥

१ नासगामां जीवना नेद ५ ॥ बेइंद्रिय १। तेइंद्रिय २। चउरिंद्रिय ३। असन्नीपंचेंद्रिय ४। संज्ञीपचेंद्रिय ५। ए ५ ना प्रजाप्ता॥ गुण० १३ प्रथमना॥ जोग १४ कार्म-

णनो वर्जिने ॥ उपयोग १२ ॥ लेशा ६ ॥
२ अन्नासकामां जीवना नेद १० ॥ ते १४ मांथि। बेइंद्रिय १ तेइंद्रिय २ चउरिंद्रिय ३ असंज्ञी पंचेंद्रिय ४ ए ४ वर्ज्या ॥ गुण० ५ ते पहिलुं १ बिजुं २ चोथुं ३ तेरमुं ४ चौदमुं ५ ॥ ए ५ ॥ जोग ५॥ २ उदारिकना २ वैक्रेयना । ने । १ । कार्मणनो ॥ उप० । ११ ते ॥ मनपर्यव-ज्ञान नहि ॥ लेशा ६ ॥ एहनो अल्प-बहुत्व ॥ सर्वथि थोमा नासका १ ॥ तेहथि अन्नासका अनंतगुणा २ ॥ इति १५ मो द्वार ॥

१ परीत संसारिमां जीवना नेद १४॥ गुण० १४ ॥ जोग १५ ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६
२ अपरीत संसारीमां जीवना नेद १४ ॥ गुण० १ ॥ पहलुं । जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उप० ६ ॥ अज्ञान ३ ॥ दर्शन ३ ॥ लेशा ६ ॥
३ नोपरितनो अपरीतमां जीवना नेद न-थी गुण० नथी॥ जोग नथि ॥ उप० २ केवलज्ञान केवलदर्शन ॥ लेशा नथि ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा परी-त १ ॥ तेहथि नोपरीतनो अपरीत अ-नंत गुणा २ ॥ तेहथि ॥ अपरीत अ-

नंतगुणा ३ ॥ इति १६ मो द्वार ॥
१ प्रजाताामां जीवना भेद ७ ॥ गुण० १४॥
जोग १५ । उप० १२ । लेशा । ६ ॥
२ अप्रजातामां जीवनाभेद ७ ॥ गुण० ३।
ते । पहेलुं ॥ विजुं । ने चोथु ॥ जोग
५ ॥ ते । २ उदारिकना ॥ २ वैक्रेयना
ने १ ॥ कार्मणनो ॥ उप० ए ॥ ३ ज्ञान
॥ ३ अज्ञान ३ दर्शन ॥ एवं ए ॥ लेशा६॥
३ नोप्रजाता नोअप्रजातामां । जीवना भेद
नथी ॥ गुण० नथी ॥ जोग नथी। उप० २
केवलज्ञानने केवलदर्शन ॥ लेशा नथि ॥
एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोडाना प्र-

जाताना अप्रजाता १ ॥ तेहथि अप्र-
जाता अनतगुणा २ ॥ तेहथि प्रजाता
संख्यात गुणा ३ ॥ इति १७ मो द्वार ॥
१ सुक्ष्ममां जीवना भेद ७ ॥ सुक्ष्म एके-
न्द्रियनो अप्रजातो १ ने प्रजातो २ ॥
गुण० १ प्रथमनु ॥ जोग ३ ते उदारिकना
ने । १ । कार्मणनो । उप० ३ ते अज्ञा-
न ॥२॥ अचक्षुदर्शन ॥ ए ३ ॥ लेशा३॥
२ वादरमा जीवना भेद १७ ॥ ते ७ सुक्ष्म
नावर्ज्या । गुण० १४। जोग १५ ॥ उप०
योग १२ ॥ लेशा ६ ॥
३ नोसुक्ष्मनोवादरमां जीवना भेद नथी ॥

गुण० नथी जोग० नथि ॥ उप० २ ॥ लेशा नथी॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा-नो सुक्ष्मनोबादर १ ॥ तेहथी बादर अ-नंतगुणा २ ॥ तेहथिसुक्ष्म असंख्यात-गुणा ३ ॥ इति १७ मो द्वार ॥

१ संज्ञीमां जीवना भेद २ ॥ गुण० १२ पहेला ॥ जोग १५ ॥ उप० १० केवल-ना २ वर्ज्या ॥ लेशा ६ ॥

२ असंज्ञीमां जीवना भेद १२ ते २ संज्ञीना वर्ज्या ॥ गुण० २ प्रथमना ॥ जोग ६। २ उदारिकना ॥ २ वैक्रेयना ॥ १ कार्मणनो ॥ १ ॥ व्यवहारवचननो ॥ एवं ६। २ उपयोग ६॥ ज्ञान ॥ २ अज्ञान ॥ २ दर्शन ॥ एवं ६ ॥ लेशा ४ प्रथमनी ॥

३ नोसंज्ञीनोअसंज्ञीमां जीवनो भेद १ ॥ संज्ञीनोप्रजात्तो ॥ गुण० २ तेरमुं चौ-दमुं ॥ जोग ७॥ उपयोग २॥ लेशा १ परम शुक्ल ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा संज्ञी १ ॥ तेहथी नोसंज्ञी नोअसंज्ञी अनंत गुणा २ ॥ तेहथि असंज्ञी अनंत गुणा ३ ॥ इति १९ मो द्वार ॥

१ भव्यमां जीवनाभेद १४। गुण० १४ ॥ जोग ॥ १५ ॥ उप० १२। लेशा ६ ॥

२ अन्नव्यमां जीवना न्नेद १४ गुण० १ प्रथमनुं ॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उप० ६ ॥ लेशा० ६ ॥

३ नोन्नव्यनोअन्नव्यमां जीवना न्नेद नथी ॥ गुण० नथी ॥ जोग नथि ॥ उपयोग २ । लेशा नथि ॥

एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोरा अन्नव्य १ ॥ तेहथि नोन्नव्यनोअन्नव्य अनंतगुणा २ ॥ तेहथि न्नव्य अनंतगुणा ३ ॥ इति २० मो द्वार ॥

१ चरममां जीवना न्नेद १४ गुण० १४ ॥ जोग १५ ॥ उप० १२ । लेशा ६ ॥

२ अचरममां जीवना न्नेद १४ ॥ गुण० १ प्रथमनुं ॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उप० ए ॥ लेशा ६ ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोरा अचरम १ ॥ तेहथि चरम अनंत गुणा २ ॥ इति २१ मो द्वार ॥

१ समुच्चयकेवलीमां जीवना न्नेद २ मनीना ॥ गुण० ११ ॥ उपल्या ॥ जोग १२ ॥ उप० ए । ३ अज्ञान वर्जिने ॥ लेशा ६ ॥

२ वीतरागिमां जीवनो न्नेद १ ॥ गुण० ४ उपल्या जोग ११ ॥ उप० ए ॥लेशा १॥

३ जुगलियामां जिवना भेद २। संज्ञीना ॥ गुण० २ पहेलुं ने चोथुं ॥ जोग ११ ते। ४ मनना । ४ वचना । २ उदारिकना । १ कार्मणनो ॥ एवं ११ ॥ उप० ६ बे ज्ञान । बे अज्ञान । बे दर्शन । एवं ६ ॥ लेशा ४ प्रथमनी ॥

४ असंज्ञीतिर्यंच पंचेंद्रियमां जीवना भेद २। गुण० २ प्रथमना ॥ जोग ४ ते ॥ २ उदारिकना ॥ १ कार्मणनो । ने १ व्यवहार वचननो ॥ एवं ४ ॥ उपयोग ६ ते २ ज्ञान । २ अज्ञान । २ दर्शन ॥ एवं ६ ॥ लेशा ३ प्रथमनी ॥

५ समुर्छिम मनुष्यमां जीवनो भेद १ अप्र० ॥ गुण० १ पहेलुं ॥ जोग ३ । ते ॥ २ उदारिकना । ने । १ कार्मणनो ॥ एवं ३॥ उपयोग ३ । ते बे अज्ञान। ने १ अचक्षुदर्शन । एवं ३ ॥ लेशा ३ प्रथमनी ॥

एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथिथोमा जुगलीया १ ॥ तेहथि समुर्छिम मनुष्य असंख्यातगुणा २ ॥ तेहथि असंज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रिया असंख्यातगुणा तेह थि वीतरागी अनंतगुणा ४ ॥ तेहथि समुच्चय केवली विशेषाहिया ५ ॥ द्वार २२

१ उदारिकशरिरमां जीवना भेद १४ ॥

गुण० १४ ॥ जोग १५ ॥ उप० १२ ॥
लेशा ६ ॥

२ वैक्रेयशरिरमां जीवना भेद ४ ॥ ते ॥ २ संज्ञीना । ने । १ असंज्ञी तिर्यचनो अप्रजासो । अने । १ बादर वाउकायनो प्रजासो । एवं ॥४॥ गुण०७ प्रथमना जोग १२ । ते । २ आहारकना ने १ । कार्मणनो । ए ३ वर्ज्या ॥ उप० १० ते २ केवलना वर्ज्या ॥ लेशा ६ ॥

३ आहारकशरिरमां जीवनो भेद १ संज्ञी नो प्रजासो ॥ गुण० २ छठुं ने सातमुं ॥ जोग १२ ते । २ वैक्रेयना । ने । १ कार्मणनो । ए ३ वर्ज्या ॥ उप० ७ ते ४ ज्ञान ने ३ दर्शन ॥ लेशा ६ ॥

५ तेजसकार्मणशरिरमां जीवना भेद १४॥ गुण० १४ ॥ जोग ॥ १५ उपयोग १२॥ लेशा ॥ ६ ॥

एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोडा आहारकशरीरि १ ॥ तेहथि वैक्रेय शरीरि असंख्यातगुणा २॥ तेहथि उदारिक शरीरि असंख्यातगुणा ३॥ तेहथि तेजस कार्मण शरीरि माहोमाहि तुल्य ने अनंतगुणा ५ ॥

॥ इति महोटो बासठियो समाप्तं ॥

॥ अथ श्री अठाणुं बोलनो बासठियो. ॥

१ सर्वथी थोडा गर्भज मनुष्य
२ मनुष्यणी संख्यातगुणी
३ बादर तेउकाया प्रजाप्ता असं०
४ अनुत्तर विमानना देवता असं०
५ उपली त्रिकना देवता संख्यातगुणा
६ मझमत्रिकना देवता संख्यातगुणा
७ नीचली त्रिकना देवता संख्यातगुणा
८ बारमा देवलोकना देवता सं०
९ इग्यारमा देवलोकना देवता सं०
१० दसमा देवलोकना देवता सं०
११ नवमा देवलोकना देवता सं०
१२ सातमी नरकना नारकी असंख्यात०
१३ छठी नरकना नारकी असंख्यात०
१४ आठमा देवलोकना देवता अ०
१५ सातमा देवलोकना देवता अ०
१६ पांचमी नरकना नारकी असंख्यात०
१७ छठा देवलोकना देवता असं०
१८ चोथी नरकना नारकी असं०
१९ पांचमा देवलोकना देवता असं०
२० त्रिजी नरकना नारकी असं०

२१ चोथा देवलोकना देवता असं०
२२ त्रिजा देवलोकना देवता असं०
२३ बीजी नरकनां नारकी असं०
२४ समुर्छिम मनुष्य असंख्यातगुणा०
२५ बीजा देवलोकना देवता असं०
२६ बीजा देवलोकनी देवी संख्यात०
२७ पहेला देवलोकना देवता संख्यात०
२८ पहेला देवलोकनी देवी संख्यात०
२९ भवनपति देवता असंख्यातगुणा
३० भवनपतिनी देवी संख्यातगुणी
३१ पहेली नरकना नारकी असं०
३२ खेचर पुरुष असंख्यातगुणा
३३ खेचरनी स्त्री संख्यातगुणी
३४ थलचर पुरुष संख्यातगुणा
३५ थलचरनी स्त्री संख्यातगुणी
३६ जलचर पुरुष संख्यातगुणा
३७ जलचरनी स्त्री संख्यातगुणी
३८ व्यंतर देवता संख्यातगुणा
३९ व्यंतरनी देवी संख्यातगुणी
४० जोतिषी देवता संख्यातगुणा
४१ जोतिषीनी देवी संख्यातगुणी
४२ खेचर नपुंसक संख्यातगुणा
४३ थलचर नपुंसक संख्यातगुणा
४४ जलचर नपुसक संख्यातगुणा

४५ चउरिंद्रिय प्रजाप्ता संख्यातगुणा
४६ पंचेंद्रीय प्रजाप्ता विसेषाहीया
४७ बेंद्रिय प्रजाप्ता विसेषाहीया
४८ तेंद्रीय प्रजाप्ता विसेषाहीया
४९ पंचेंद्रीय अप्रजाप्ता असंख्यातगुणा
५० चउरिंद्रीय अप्रजाप्ता विसेषाहीया
५१ तेंइंद्रीय अप्रजाप्ता विसेषाहीया
५२ बेंद्रीय अप्रजाप्ता विसेषाहीया
५३ बादर प्रत्येक शरीरि वनस्पति प्रजा-
प्ता असंख्यातगुणा
५४ बादर निगोदीया प्रजाप्ता असं०
५५ बादर पृथ्वी काया प्रजाप्ता अ०
५६ बादर अपकाया प्रजाप्ता असं०
५७ बादर वाउकाया प्रजाप्ता असं०
५८ बादर तेउ काया अप्रजाप्ता अ०
५९ बादर प्रत्येक शरीरि वनस्पति०
अप्रजाप्ता असंख्यातगुणा
६० बादर निगोदीया अप्रजाप्ता अ०
६१ बादर पृथ्वी अप्रजाप्ता असं०
६२ बादर अपकाया अप्रजाप्ता अ०
६३ बादर वाउकाया अप्रजाप्ता असं०
६४ सुक्ष्म तेउकाया अप्रजाप्ता असं०
६५ सुक्ष्म पृथ्वी अप्रजाप्ता विसे०
६६ सुक्ष्म अपकाया अप्रजाप्ता विसेषा०

६७ सुक्ष्म वाउकाया अप्रजाप्ता विसेषाही०
६८ सुक्ष्म तेउकाया प्रजाप्ता संख्यातगुणा०
६९ सुक्ष्म पृथ्वीकाया प्रजाप्ता विसेषाही०
७० सुक्ष्म अपकाया पर्याप्ता विसेषाहीया
७१ सुक्ष्म वाउकाया पर्याप्ता विसेषाहीया
७२ सुक्ष्म निगोदीया अपर्याप्ता अ०
७३ सुक्ष्म निगोदीया प्रजाप्ता सं०
७४ अभव्य अनंतगुणा
७५ पडिवाइ समद्रष्टी अनंतगुणा
७६ सिद्धभगवंतजी अनंतगुणा
७७ बादर वनस्पति प्रजाप्ता अनंत०
७८ बादर प्रजाप्ता विसेषाहीया

७९ बादर वनस्पति अपर्याप्ता असं०
८० बादर अप्रजाप्ता विसेषाहीया
८१ समुचय बादर विसेषाहीया
८२ सुक्ष्म वनस्पति अपर्याप्ता असं०
८३ सुक्ष्म अपर्याप्ता विसेषाहीया
८४ सुक्ष्म वनस्पति पर्याप्ता संख्यात०
८५ सुक्ष्म पर्याप्ता विसेषाहीया
८६ समुचय सुक्ष्म विसेषाहिया
८७ भव्य सिद्धीया विसेषाहीया
८८ निगोदीया जीव विसेषाहीया
८९ वनस्पति जीव विसेषाहीया
९० एकेन्द्रीया जीव विसेषाहीया

९१ तिर्यंच जीव विसेषाहीया
९२ मिथ्यादृष्टी जीव वीसेषाहीया
९३ अवरति जीव विसेषाहीया
९४ सकसाया जीव वीसेषाहीया
९५ छद्मस्त जीव विसेषाहीया
९६ सजोगी जीव विसेषाहीया
९७ संसारीक जीव विसेषाहीया
९८ सर्व जीव विसेषाहीया

॥ इतिश्री अठाणुं बोलनो अल्प बहुत्व संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री छ आराना बोल. ॥

दसक्रोड़ा क्रोड़ि सागरोपमना छआरा जाणवा । तेहमां पहेलो आरो ॥ ४ ॥ क्रोड़ाक्रोड़ि सागरोपमनो जाणवो । ए आरो सुसम सुसमनामा जाणवो । एकलुं सुखमां सुख जाणवुं ॥ ए आराने विषे ३ गाउनुं देहमान । अने ३ पल्योपमनुं आउखुं । उत्तरते आरे २ गाउनुं देहमान अने २ पल्योपमनुं आउखुं जाणवुं ॥ ए आरे बसे छपन पांसली। उतरते आरे एकसो अठाविस पांसली जाणवी ॥ ए आराने विषे ॥ १ ॥ वज्र ऋषन-

नाराच संघयण ने ॥ १ ॥ समचउरस संठाण जाणवुं ॥ स्त्री पुरुषना रूप सोभाग्य । घणा । दिपे । ए आराने विषे अठम भक्ते आहारनी इछा उपजे। तेवारे शरीर प्रमाणे आहार करे। धरतिनी सरसाइ साकर सरखी जाणवी । उतरते आरे खांड सरखि जाणवि । ए आराने विषे ॥ १० ॥ दश प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछीत सुख पहोचाडे । ते कल्पवृक्षनां नाम गाथा । कहे छे मतं गायभिंगा तुडियंगा । दिव जोइ चित्तगा । चित्तरसा मणवेगा । गिहगारा अणियगणाउ ॥ १ ॥ ए गाथा सूत्र पाठे कही तेनो अर्थ कहे छे ॥ मतंगाय कहेता । मिठा मधुरा रसना कल्पवृक्ष थइ आवे ॥ १ ॥ भिंगा कहेता। रत्नजडाव भाजनना कल्पवृक्ष थइ आवे ॥ २ ॥ तुडियंगा कहेता ॥ ४ए ॥ उगणपचास जातिनां वाजिंत्रना । क० थ० ॥ ३ ॥ दिव कहेता । रत्नजडाव दीवीउना क० ॥ ४ ॥ जोइ कहेता। सूर्यनी जोतिना क० ॥ ५ ॥ चित्तगा कहेता । चित्रामणसहित फूलनी मालाना क० ॥६॥ चितरसा क० चितने गमे तेवा रसवति भोजनना । क० ॥ ७ ॥ मणवेगा क० । रत्नजडाव आभरणना । क० ॥ ८ ॥ गिहगारा क० । बेतालीस भोमिया अवासना । क० ॥ए॥ अनिय-

गणांठ क० ॥ रत्नजमाव नाकने वायरेतमे एहवा वस्त्रना। क० १०। ए १०। प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछित सुख आपे। ए आराने विषे छेक थाकता जुगलना आउखा आमा ६ मास रहे। तेवारे जुगल परन्नवनुं आउखुं बांधे। तेवारे जुगलीणी एक जोमलुं प्रसवे। ते छोरुनी प्रतिपालना ४ए दिन करे। जुगलजुगलीणी ने क्षण मात्रनो विजोग न पमे। एकने छीक ने एकने बगासुं आवे मरिने देवता थाय। एहना शरीरनो निहरण देवता करे। गति तो १ देवनी जाणवी ॥ ए आराने विषे जुगलीया ने वेर विरोध इर्षा झेहेर नही॥इति पहेलो आरो संपूर्ण ॥ १ ॥ हवे पहेलो आरो उतरीने। बीजो आरो बेठो। तेवारे अनंता वर्ण गंध रस स्फर्सना पर्यव ॥ अनंता अनंता हीणा थया। ए आरो ३ त्रण क्रोमाक्रोम सागरोपमनो। सूसमनामे जाणवो। एकलुं सुख जाणवुं। ए आराने विषे २ बे गाउनुं देहमान अने २ पल्योपमनुं आउखुं। उत्तरते आरे ॥ १ एक गाउनुं देहमान ने एक पल्योपमनुं आउखुं। ए आराने विषे वज्ररूषन्न नाराच संघयण ॥ समचउरंस संठाण ॥ ए आरे ॥ १२८॥ एकसो अठावीस पांसली॥ उतरते आरे ६४ पासली जाणवि। ए आरे छठ न्नक्ते आहारनी ईछा उपजे॥

तेवारे शरीर प्रमाणे आहार करे। धरतिनि सरसाई खांड सरखि । उतरते आरे गोल सरखि जाणवी। ए आरे १० प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछीत सूख पोचाडे।छेक थाकतां।जूगलना आउखा आडा ॥ छ मास रहे। तेवारे जुगल परभवनुं आउखुं बांधे। तेवारे जूगलिणी एक जोडलुं प्रसवे। छोरुनी प्रतिपालण ॥६४ दिन करे। जुगल जुगलीणीने। क्षण मात्रनो विजोग न पडे। एकने छीक ने एकने बगासूं आवे। मरिने देवता थाय। एना शरीरनुं निहरण देवता करे॥ गति १ देवतानि जाणवि। इति बिजो आरो संपूर्णं ॥ हवे बीजो आरो उतरीने। त्रिजो आरो बेठो तिवारे। अनंता वर्ण गंध रस स्फर्सना पर्यव अनंताहीणा थया। ए आरो ॥ बे कोडाकोड सागरोपमनो जाणवो। ए आरो सूखम दुखम नामा जाणवो। सुख घणुं ने दुख थोडुं जाणवुं ॥ ए आराने विषे एक गाउनुं देहमान ने ॥ १ एक पल्योपमनुं आउखुं जाणवुं ॥ उत्तरते आरे ५०० पांचसें धनुषनुं देहमान ने कोड पूर्वनुं आउखुं जाणवु। ए आराने विषे वज्रऋषभनाराच संघयण। ने समचउरंस संठाण जाणवुं। ए आराने विषे ॥ ६४ चोसठ पांसली जाणवी। उत्तरते आरे ३२ बत्रिस पांसली जाणवि। ए आराने विषे चोथ नक्ते

आहारनी इछा उपजे ॥ तिवारे शरीर प्रमाणे आहार करे। धरतिनि सरसाइ गोल सरखि जाणवि ॥ उतरते आरे थोमेरी जाणवि ॥ ए आरे दस प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछीत सूख पहोंचाडे। छेक थाकतां जूगलना आउखा आडा छ मास रहे। तेवारे जूगल परन्नवनुं आउखुं बांधे। तेवारे जूगलिणी एक जोडलुं प्रसवे ॥ ते छोरुनी प्रतिपालणा ७ए दिन करे। जूगल जूगलिणीने क्षणमात्रनो विजोग न पडे। एकने छीक ने एकने बगासूं आवे तेवारे मरीने देवता थाय। एहना शरीरनो निहरण देवता करे। ए ३ आरा जूगलना जाणवा एकलो जूगल धर्म जाणवो। ए आराने विषे। जरा रोग कुरुप नहि प्रतिपूर्ण अंग उपांग विषय सुख न्नोगवे ते दान पुन्यना फल जाणवा ॥ ए आराने विषे छेक थाकता चोरासि लाख पूर्व त्रण वर्ष नें साडा आठ महीना बाकी रह्या। तेवारे सर्वार्थसिध महाविमान थकी तेत्रीस सागरो-पमनुं आउखुं न्नोगवीने चविने। वनिता नगरी। नान्नी कुलगर राजापिता। मरुदेवी मातानी कुंखे ऋषन्न देवस्वामी उपना। सवानव मासे जन्म्या ॥ प्रथम ऋषन्ननु स्वप्न देखि ऋषन्नदेव नाम दिधुं। ऋषन्नदेव स्वामीये जूगला धर्म निवारीने। असि मसि कसि

आदि देईने ७२ बोतेर कला सिखवि । अनुकंपा निमिते ॥ २० विस लाख पूर्वलगे कुवरपणे रह्या ॥ ६३ त्रेसठ लाख पूर्वलगे राज्य भोगव्युं । भरतने राज्य आपिने । चार हजार पुरुष संघाते संजम लिधो । एक लाख पूर्व लगे संजम पाल्यो ॥ केवल पामिने । अष्टापद पर्वत उपरे । पद्मासने बेसीने । दसहजार साधु संघाते स्वामि निर्वाण पधार्या । ते स्वामिना ६ कल्याणिक थया । पेहेले कल्याणीके उत्तरासाढा नक्षत्रमां सर्वार्थसिध विमान थकी चविने मातानि कुंखे उपना ॥ १ ॥ बीजे क० उ० जन्म्या ॥ २ ॥ त्रीजे क० उ० राज्य बेठा ॥ ३ ॥ चोथे क० उ० संजम लिधो ॥ ४ ॥ पांचमे क० उ० केवलज्ञान उपनुं ॥ ५ ॥ ए ५ ने ६ ठुं क० अभीच नक्षत्रमां मोक्ष पधार्या । ए ६ ॥ ए आराने विषे गति पांच जाणवि मोक्षवधी । इति त्रीजो आरो संपूर्ण ॥३॥ हवे त्रीजो आरो उतरीने चोथो आरो बेठो । तेवारे अनंता वर्ण गंध रस स्फर्सना पर्यवहीणा थया । ए आरो १ कोडाकोड सागरोपममां बेतालीस हजार वर्ष उणो जाणवो । ए आरो दुसम सूसम नामे जाणवो । दुख घणु ने सूख थोडुं जाणवुं । ए आराने विषे ५०० पांचसे धनुषनुं देहमान ने । कोड पूर्वनु आउखुं ॥ उत्कृष्टे

आरे सात हाथनुं देहमान ने सो वर्ष झाझेरानुं आउखुं ॥ ए आराने विषे ७ संघयण ने ६ संठाण जाणवा। ए आराने विषे ३२ बत्रिस पांसलि उतरते आरे १६ सोल पांसली जाणवी। ए आराने विषे दिन दिन प्रते आहारनि इछा उपजे। तेवारे ३२ कवळनो आहार करे। धरतिनि सरसाइ सारेरि ॥ उतरते आरे थोमेरी जाणवि। ए आरो ठेक थाकतां पंच्योतेर वर्ष ने साढाआठ महिना बाकी रह्या ॥ तेवारे दशमा देवलोकथि वीस सागरोपमनुं आवखूं ज्ञोगविने चविने। माहणकुंड गाम नगरने विषे। ऋषभदत्त ब्राह्मणने घेर देवानंदाजीनी कुंखे। महाविरस्वामी उपना ॥ तिहां स्वामी साढीब्यासी रात रह्या। त्यासिमी राते शक्रेंद्रनो आसन चल्यो। तेवारे शक्रेंद्रे उपयोग मुकीने जोयुं प्रभुने नीछुक कुले उपना दीठा अनंते काले अठेरु थयुं। तेवारे हरण गमेषी देवताने कह्युं। जे जाओ जइने महाविरस्वामिनो गर्भ साहरो। साहरीने क्षत्रीकुंड गाम नगरने विषे। सिद्धार्थ राजाने घेर। त्रिसला देवी क्षत्रियाणीनी कुंखे मुको। अने त्रिसलादेवि राणीनी कुंखे। पुत्रिपणे गर्भ छे ते देवानंदाजीनी कुंखे मुको ॥ तेवारे हरणगमेषी देवता तेहतप्रमाण करी। तेज वेलाए आव्यो। आविने जग-

वंतने वंदणा नमस्कार करीने कह्युं जे स्वामी रुडुं जाणजो हुं तमारो गर्भ साहरुं छुं । ते वारे माता देवानंदाजीने अवस्थापिनी निद्रा मुकिने नात्निथि गर्भ साहरीने त्रिसलादेवीजीनी कुखे मुक्यां तिहां स्वामि सर्वे थईने सवानव मासे जन्म्या । त्रिस वर्ष घरमां रह्या । एकाकी पणे संयम लिधो । संयम लेईने साडाबार वर्ष ने एक पखवाडिया सुधि । आकरा तप जप ज्ञान ध्यान करिने । स्वामि केवलज्ञान केवलदर्शन पाम्या । वहोतेर वर्षनुं आउखुं भोगविने । चोथा आराना ३ वर्ष ने साडा आठ महिना बाकी रह्या । तेवारे महाविरस्वामि निर्वाण पधार्या । ते स्वामिना ६ कल्याणिक थया । तेमां ५ कल्याणिक तो उतराफाल्गुनी नक्षत्रमां थया । ते चवण क० ॥ १ ॥ गर्भ साहारण क० ॥ २॥ जन्म क० ॥ ३ ॥ दिक्षा क० ॥ ४ ॥ केवलज्ञान क० ॥ ५ ॥ ए पांचने । स्वांति नक्षत्रमा निर्वाण पधार्या ॥ ६ ॥ ए आराने विषे गति ५ जाणवि ॥ महाविरस्वामि निर्वाण पधार्या तेज वखते गौतमस्वामिने केवलज्ञान उपनुं । ने ते १२ बार वर्ष केवल प्रवर्जा पालिने निर्वाण पधार्या । तेहज वेलाए सुधर्मास्वामिने केवल ज्ञान उपनुं । ते ॥ ८ आठ वर्ष सुधि केवल

प्रवर्जा पालिने निर्वाण पधार्या । तेहज वेलाए जंबुस्वामिने केवलज्ञान उपनुं ॥ ते ॥ ४४ ॥ चुमालिस वर्ष सूधि केवल प्रवर्जा पालिने नीर्वाण पधार्या । महाविरस्वामि पछी । भर्त-क्षेत्रमां ॥ ६४ चोसठ वर्ष सुधि केवल ज्ञान रह्युं । चोथा आरानो जन्मेलो होय ते पांचमा आरामां मोक्ष जाय। पांचमा आरानो जन्मेलो पांचमा आरामां मोक्ष जाय नही। जंबुस्वामि मोक्ष पहोंता पछी ॥ १० ॥ दश बोल वीछेद गया ते । परम अवधि ज्ञान ॥ १ ॥ मनपर्यव ज्ञान ॥ २ ॥ केवलज्ञान ॥ ३ ॥ परिहारविसुध चारित्र ॥ ४ ॥ सुक्ष्म संपराय चारित्र ॥५॥ जथाख्यात चारित्र ॥६॥ पूलाक लब्धी ॥ ७ ॥ क्षायक समकीत ॥ ८ ॥ आहरक शरिर ॥९॥ जिनकल्पी साधु ॥ १० ॥ ए ॥ १० ॥ बोल इति चोथो आरो संपूर्ण ॥४॥ हवे चोथो आरो उतरीने पांचमो आरो बेठो । तेवारे अनंता वर्ण गंध रस फर्सना पर्यव हीणा थया । ए आरो दुसमनामा एकलुं दुख जाणवुं । ए आरो २१ हजार वर्षनो जाणवो । ए आराने विषे । ७ हाथनुं देह मान ने १ सो वर्ष ऊाझेरानुं आउखुं । उतरते आरे ॥ १ ॥ हाथनुं देहमान नें २० वर्षनुं आउखुं ॥ ए आराने विषे ॥ ६ ॥ संघयण ने । ६ संठाण जाणवा।

उतरते आरे १ छेवटुं संघयण ने ॥ १ ॥ हुंड संठाण जाणवुं । ए आराने विषे ॥ १६ ॥ सोल पांसली ॥ उतरते आरे ॥ ८ आठ पांसलिजाणवि । ए आराने विषे । दिन दिन प्रते आहारनि ईछा उपजे । तेवारे शरीर प्रमाणे आहार करे । धरतिनी सरसाइ । कांइक सारेरि जाणवि । उतरते आरे कुंभारना निभाभानी ठार सरखि जाणवी । हवे पांचमा आरानां लक्षण ३२ कहेछे मोटा नगर ते गामडा सरिखा थाशे ॥ १ ॥ गाम ते मसाण सरिखा थासे ॥ २ ॥ भला कुलनां छोरु ते दास दासीपणा करशे ॥ ३ ॥ प्रधान ते लालचि थाशे ॥ ४ ॥ राजा ते जम डंड सरिखा थाशे ॥ ५ ॥ भला कुलनी स्त्री ते लजा रहित थाशे ॥ ६ ॥ रुडा कुलनी स्त्री वेस्या सरिखि थाशे ॥ ७ ॥ पोताना पुत्र पोताने छंदे चालशे ॥ ८ ॥ शिष्य गुरुना अपवाद बोलशे ॥ ९ ॥ दुर्जन लोक सुखि थाशे ॥ १० ॥ सजन लोक दुखि थाशे ॥ ११ ॥ दुर्भिक्ष दुकाल घणा पडशे ॥ १२ ॥ उंदर सर्पादीकनी दाढ घणी थाशे ॥ १३ ॥ ब्राह्मण अर्थना लोभी थाशे ॥ १४ ॥ हिंसा धर्मना परूपक घणा थाशे ॥ १५ ॥ एक धर्मनां घणा भेद थाशे ॥ १६ ॥ मिथ्याति देवता घणा पूजाशे ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वि लोक घणा थाशे ॥ १८ ॥ माणसने देवदर्शन दुर्ल-

न थाशे ॥ १ए ॥ विद्याधरनी विद्याना प्रनाव थोमा थाशे ॥ २० ॥ गो रस डुध दहिमां सरसाइ थोमी हरशे ॥ २१ ॥ वलद प्रमुखनां वल आठखा थोमां थाशे ॥ २२ ॥ साधु साध्विने मास कल्प तथा चोमासां कर्यां जेवां खेत्र थोमां थाशे ॥ २३ ॥ श्रावकनि ११ पमिमा ॥ साधुनी १२ पमिमा विछेद जाशे ॥ २४ ॥ गुरु शिष्यने नणावशे नहि ॥ २५ ॥ शिष्य अविनित कलहकारी थाशे ॥ २६ ॥ अधर्मकारि ऊगमाकारी कुमाणस घणा थाशे ॥ सुमाणस थोमा थाशे ॥ २७ ॥ आचार्य आप आपणा गठनी परंपरा सामाचारि जूदि जूदि प्रवर्तावसे । तथा मूढ मूर्ख जनने मोहने मिथ्यात्व पासमां पामशे ॥ उत् सूत्र नाखशे आप आपणी प्रसंसामां राचसे निंदक कुबुद्धि होशे ॥ २७ ॥ सरल नडिक न्याइ प्रमाणिक माणस थोमा थाशे ॥ २ए ॥ म्लेछनां राज घणा थाशे ॥ ३० ॥ हिंडु राजा अल्प रुधिया थोमा थाशे ॥ ३१ ॥ मोटा कुलना राजा थाशे ते निच काम करशे । अन्याय अधर्म कुविसनमां घणा राचसे ॥ ३२ ए ॥ ३२ ॥ लक्षण जाणवां । ए आराने विषे धातु सर्वे विछेद जाशे । लोढानी धातु रहेशे चामकानी मोहरो चालशे । जेने घेर सवाशेर कांसु रहेशे ते धनवंत कहेवाशे

। ए आराने विषे॥ १ एक उपवास करशे ते मास खमण सरिखो थाशे॥ ए आराने विषे ज्ञान तथा सूत्र सर्वे विछेद जाशे। तेमां दसवैकालिकना ॥ अध्ययन ॥ ४ ॥ पहेला रहेशे। ते उपरे ॥४॥ जीव एका अवतारि थाशे। तेनां नाम। दुपसह नामा साधु ॥ १ ॥ फल्गुणि नामा साध्वि ॥ २ ॥ नागील श्रावक ॥ ३ ॥ नागश्रि श्राविका ॥ ४ ॥ ते आषाढ सुद १५ पूनमने दिने शक्रेंद्रनुं आसन चलसे। तेवारे शक्रेंद्र उपयोग मुकि जोसे जे आज पांचमो आरो उतरीने काले छठो आरो बेससे। तेवारे शक्रेंद्र आवशे। ते ॥ ४ ॥ जीवने कहेसे जे काले छठो आरो बेससे। माटे आलवो पडिकमो निसलथाउ। ते ४ जीव सर्व जीवने खमाविने संथारो करशे। ते वारे संवर्तक वायरो थाशे। तेणे करिने पहाड। पर्वत। गढ कोठा वाव कुवा सरोवर सर्वे वीसराल थाशे ॥ वैताढ पर्वत १ गंगा २ सिंधु ३ ऋषभकुट ४ लवण समुद्र निखाडी ए ५ वर्जिने शेष सर्व स्थानक त्रुटी पडशे॥ ते ४ जीव समाधि प्रणामे काल करीने देवलोकमां जाशे तेवारे ४ बोल-विछेद जाशे पेहले पोहरे। जैन धर्म विछेद जसे ॥ १ ॥ बीजे पोहरे ॥ ३६३ ॥ पाखंडि मिथ्यातिनो धर्म विछेद जाशे ॥ २ ॥ त्रीजे पोहरे राज नीति

विछेद जाशे ॥३॥ चोथे पोहरे बादर अग्नि विछेद जाशे ॥४॥ ए आरे बेसता गति ॥५॥ जाणवी उतरता ४ गति ते मोक्ष अटकी इति पांचमो आरो संपूर्ण ॥हवे पांचमो आरो उतरीने छठो आरो बेससे । तेवारे अनंता वर्ण गंध रस स्फर्सना पर्यव हीणा थसे । ए आरो २१ एकवीस हजार वर्षनो जाणवो । ए आरो दुसम दुसमनामा एकलुं दुःखमां दुःख जाणवुं । ए आरे ॥ १ एक हाथनुं देहमान ने २० वर्षनुं आउखुं । उतरते आरे मूंढा हाथनी काया ने १६ सोल वर्षनुं आउखुं जाणवुं । ए आराने विषे १ छेवट्ठुं संघयण ने हुंरू संठाण जाणवुं । उतरते आरे पण एमज जाणवुं । ए आराने विषे ॥ ८ आठ पांसली ॥ उतरते आरे ॥ ४ चार पांसली जाणवी ॥ ए आराने विषे । ६ वर्षनी स्त्री गर्भ धरशे । ते काला कुदर्शनी रोगी ने रिसाल नखने मोवाला घणा एहवा छोकरा घणा जणशे । ते कुतरीनी पेरे परीवार नेलो फेरवशे । ए आराने विषे गंगा सिंधु नदि रहेशे ॥ तेमां ७२ बील छे ॥ तेमां त्रण त्रण माल छे । तेमां मनुष्य त्रीयंच पंखी बीज मात्र रहेशे ॥ गंगा सिंधुनो साढीबासठ जोजननो पट छे ॥ तेमां रथना चिला प्रमाणे पहोलुं ने गाडानि धुरि बूरू एटलुं उंडुं पाणि रहेशे । तेहमां मछ कछ घणा थाशे । ते

७२ बीलनां मनुष्य सांझे ने प्रभाते । मठ कठ काढीने वेलुमां नारसे । सूर्य घणो तपसे टाढ घणी पडशे। तेणे करी सीऊ वाइ रहेशे। तेहनो आहार करशे। तेना हाडका चांमडा तिर्यंच चाटीने रहेशे ॥ मानवीना माथानि तुंबलीमां पाणी लाविने पिशे । एणिपरे २१ एकविस हजार वर्ष पुरा करसे। पांचमा आराना प्राणी नवकार रहित समकित रहित व्रत पच्च-खाण रहित हशे ते एहवा छठा आराने विषे आविने अवतरशे । माटे एहवुं जाणिने जे जीव जैन धर्म करशे ते जीव सुखी थाशे ॥ इति छ आराना बोल संपुर्ण ॥

॥ अथ श्री चोविस जिनांतरा. ॥

अढार कोडाकोडि सागरने आंतरे ॥ पेहेला श्री आदिनाथ तिर्थंकर थया ॥ विनिता नगरीने विषे ॥ नाभी राजा पिता । मरुदेवा राणी माता ॥ हेमवर्णे ॥ वृषभ लंछन । पांचसे धनुषनुं देहमान । चोरासी लाख पूर्वनुं आउखु ॥ वीस लाख पूर्व कुंवर पणे रह्या । त्रेसठ लाख पूर्वनुं राज्य पाल्युं ॥ एक लाख पूर्वनी प्रव्रज्यां पाली ।

प्रवर्ज्या लीधा पछि एक हजार वरसे। केवल ज्ञान उपनुं। साधु। साधवी। श्रावक। श्रावीकारूप। चतुर्विध संघतिर्थ थापीने। द्वादशांगी गणीनी पेटी आपीने ॥ त्रीजा आराना। त्रण वरसने साडाआठ महिना। छेक थाकता बाकी रह्या ॥ तेवारे महा वद तेरसने दहाडे। दस हजार साधु संघाते अष्टापद पर्वत उपरे स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या॥१॥ पहेला श्री आदीनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि। पचास लाख कोडि सागरने आंतरे ॥ बीजा अजितनाथ तिर्थंकर थया। अयोध्या नगरीने विषे। जीत सत्रुराजा पिता ॥ विजयादेवी राणी माता ॥ हेमवर्णे ॥ गज कहेतां हस्तिनुं लंछन ॥ साडाचारसें धनुषनुं देहमान ॥ बहोतेर लाख पूर्वनुं आउखुं ॥ तेमां अढार लाख पूर्व कुंवरपणे रह्या। त्रेपन लाख पूर्वनुं राज पाल्युं। एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछी बार वरसे केवल-ज्ञान उपनुं। साधु साधवी। श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापीने। द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने ॥ एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्षने विषे पहोंता ॥ २ ॥ हवे बीजा अजितनाथ तिर्थंकर मोक्ष पहोंता पछि ॥ त्रीस लाख कोडि सागरने आंतरे। त्रीजा संभव-

नाथ तिर्थंकर थया ॥ सावथीं नगरीने विषे जीतार्थ राजा पिता ॥ सेन्यादेवी राणी माता ॥ हेमवर्णे ॥ अस्व कहेतां घोमानुं लंछन । चारसे धनुषनुं देहमान । साठ लाख पूर्वनुं आयुष्य पत्तर लाख पूर्व कुंवरपणे रह्या । चुमालीस लाख पूर्वनुं राज पाल्युं ॥ एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछि । चौद वर्षे केवल ज्ञान उपनुं । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप । चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने । एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ३ ॥ त्रीजा संजवनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोता पछि । दस लाख कोफि सागरोपमने आंतरे । चोथा अजीनंदन तिर्थकर थया । विनीता नगरीनेविषे । संवर राजा पिता । सीधार्था राणी माता । हेमवर्णे ॥ वानरनुं लंछन । साका त्रणसें धनुषनुं देहमान । पचास लाख पूर्वनुं आयुष्य ॥ तेमां साका वार लाख पूर्व कुंवरपणे रह्या । साकी छत्रीस लाख पूर्वनुं राज पाल्युं । एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछि अढार वर्षे केवल ज्ञान उपनुं । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापी ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने एक हजार साधु संघाते स्वामी निरवाण

मोक्षने विषे पोहोंता ॥४॥ हवे चोथा अभीनंदन तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछि ॥ नव लाख कोडि सागरने आंतरे। पांचमा सुमत्तिनाथ तिर्थंकर थया कुसलपुरी नगरीने विषे। मेघरथ राजा पिता। सुमंगला देवी राणी माता। हेमवर्णे। क्रोंच पंखीनुं लंछन। त्रणसें धनुषनुं देहमान। चालीस लाख पूर्वनुं आयुष। तेमां दश लाख पूर्व कुंवरपणे रह्या ॥ ओगणत्रीस लाख पूर्वनुं राज पाल्युं। एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली। प्रवर्ज्या लीधा पछि। वीस वर्षे केवल ज्ञान उपनुं। साधुसाधवी। श्रावक श्रावीकारूप ॥ चतुर्विध संघतिर्थ थापीने। द्वादशांगी गणीनि पेटि आपिने एक हजार साधु संघाते स्वामी नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥५॥ पांचमा सुमतिनाथ तिर्थंकर निरवाण मोक्ष पोहोंता पछि। नेवुं हजार कोडि सागरने आंतरे। छठा पद्म प्रभ तिर्थंकर थया। कोसंबी नगरीने वीषे। धर राजा पिता॥ सुसिमा देवी राणी माता। राते वर्णे। पद्म कमलनुं लंछन। अढीसो धनुषनुं देहमान। त्रीश लाख पूर्वनुं आयुष॥ साडासात लाख पूर्व कुंवरपणे रह्या। साडीएकविस लाख पूर्वनुं राज पाल्युं ॥ एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली। प्रवर्ज्या लीधा पछी। छठे महीने केवल ज्ञान उपनुं। साधु साधवी।

श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने। त्रोंहोंतेर साधु संघाते स्वामी नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ६ ॥ छठा पद्म प्रभ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि ॥ नव हजार कोडि सागरने आंतरे । सातमा सुपार्श्वनाथ तिर्थंकर थया ॥ वाणारसी नगरीने विषे। पइठ राजा पिता। पृथ्वि देवि राणी माता। हेमवर्णे ॥ साथीयानुं लंछन । बसे धनुषनुं देहमान । विस लाख पूर्वनुं आयूष ॥ तेमां पांच लाख पूर्व कुंवरपणे रह्या ॥ चौद लाख पूर्वनुं राज पाल्युं। एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली। प्रवर्ज्या लीधा पछि॥ नव मासे केवल ज्ञान उपनुं॥ साधु साधवी। श्रावक श्राविकारुप चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने । पांचसे साधु संघाते स्वामी नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ७ ॥ सातमा सुपार्श्वनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछे। नवसें कोडि सागरनें आंतरे। आठमा चंद्रप्रभ तिर्थंकर थया। चंदनपुरी नगरीने विषे। महासेन राजा पिता ॥ लखमणादेवी राणी माता॥उज्वल वर्णे। चंद्रमानुं लंछन। दोढसो धनुष्यनुं देहमान। दशलाख पूर्वनुं आयूष तेहमां अढीलाख पूर्व कुंवरपणे रह्या। साडाछ लाख पूर्वनुं राज पाल्युं । एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधा

पछि छठे महिने केवल ज्ञान उपनुं। साधु साधवी श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापी ने। द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने। एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ८॥ हवे आठमा श्री चंद्रप्रभ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि। नेवुं कोडि सागरने आंतरे॥ नवमां श्री सुविधीनाथ तिर्थंकर थया। काकंदी नगरीनें विषे॥ सुग्रीव राजा पिता। रामादेवि राणी माता। उज्वल वर्णे। मघर मछनुं लंछन॥ सो धनुष्यनु देहमान॥ बे लाख पूर्वनुं आउखुं तेमां अर्ध लाख पूर्व कुंवरपणें रह्या। अर्ध लाख पूर्वनुं राज पाल्युं॥ एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली। प्रवर्ज्या लीधा पछि। चार महीने केवल ज्ञान उपनुं॥ साधु साधवी श्रावक श्रावीका रुप चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने॥ द्वादशांगी गणीनी। पेटी आपीने एक हजार साधु संगाते। स्वामी निर्वाण मोक्षने विषे पधार्या॥ ९॥ हवे नवमा सुविधीनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि॥ नव कोडिसागरने आंतरे॥ दशमा श्री सितलनाथ तिर्थंकर थया। भदलपुर नगरीने विषे द्रढरथ राजा पिता। नंदा देवी राणी माता॥ हेम वर्णे॥ श्रीवछ साथीयानुं लंछन॥ नेवुं धनुष्यनुं देहमान। एक लाख पूर्वनुं

आउखुं। तेमां पा लाख पुर्व कुंवरपणे रह्या। अर्ध लाख पूर्वनुं राज पाल्युं ॥ पा लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली॥ प्रवर्ज्या लीधा पछे। त्रण मासे केवल ज्ञान उपनुं। साधु साधवी। श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापी द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने। एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥१०॥ हवे दशमा सितलनाथ तिर्थंकर। निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि॥ एक कोडि सागर तेमां ॥१००॥ सागर। छासठ लाख छविस हजार वरसने उणे-आंतरे॥ इग्यारमा श्रेयांसनाथ तिर्थंकर थया। सिहपुरी नगरीने विषे। विश्नु राजा पिता॥ विश्नु देवी राणी माता। हेम वर्णे। गेंडानु लंछन॥ एसी धनुष्यनुं देहमान। चोरासी लाख वर्षनुं आयूष॥ तेमां॥ २१ लाख वरस कुवरपणे रह्या॥ ४२ लाख वरसनुं राज पाल्युं ॥ २१ लाख वरसनी प्रवर्ज्या पाली॥ प्रवर्ज्या लीधा पछि छ मासे केवल ज्ञान उपनुं। साधु साधवी। श्रावक श्रावीका रूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने। एक हजार साधु संघाते निर्वाण मोक्षने विषे पोहोता ॥ १ ॥ हवे इग्यारमा श्रेयांसनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोता पछी ॥ ५४ सागरने आंतरे॥ बारमां श्री वासुपूज्य तिर्थंकर थया चंपापुरी नगरीने विषे। वसुपुज्य राजा

पिता । जया देवी राणी माता। राते वर्णे। भेंसानुं लंछन। सिंतेर धनुष्यनुं । देहमान बोहोतेर लाख वर्षनुं आयुष ॥ तेमां अढार लाख वरस कुंवरपणे रह्या । चोपन लाख वरसनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछि एक मासे केवल ज्ञान उपनुं। साधु साधवी। श्रावक श्रावीका रूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापी ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने । छसें साधु संघाते स्वामी नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १२ ॥ हवे बारमा वासुपुज्य तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि त्रीस सागरने आंतरे ॥ तेरमा श्री वीमलनाथ तिर्थंकर थया। कंपीलपूर नगरने विषे ॥ कृतवर्म राजा पिता ॥ सामा देवि राणी माता ॥ हेम वर्णे॥ वराह के० सुवरनुं लंछन ॥ साठ धनुष्यनुं देहमाना॥ ६० लाख वर्षनु आउखुं पनर लाख वरस कुंवरपणें रह्या ॥ त्रीस लाख वरसनुं राज्य पाल्युं ॥ १५ ॥ लाख वरसनी प्रवर्ज्या पाली। प्रवर्ज्या लीधा पछि ॥ बे महीने केवल ज्ञान उपनुं । साधु साधवी। श्रावक श्रावीकारूप। चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने ॥ ६०० साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पोहोंता ॥ १३ ॥ हवे तेरमां विमलनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछी ए सागरने आंतरे ॥ चौदमां अनंत-

नाथ तिर्थंकर थया ॥ अयोध्या नगरीने विषे ॥ संघेसन राजा पिता । सुजसा देवी राणी माता । हेम वर्णे ॥ सकरानुं लंछन अने पचास धनुष्यनुं देहमान ॥ ३० ॥ लाख वरसनुं आयुष । तेमां साडासात लाख वरस कुंवरपणे रह्या । पन्नर लाख वरसनुं राज पाळ्युं । साडासात लाख वरसनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधा पछि ॥ ३ महीने केवलज्ञान उपनुं ॥ साधु साधवी । श्रावक श्राविकारुप चतुर्विध संघ तिर्थ थापी द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने । सातसे साधु संघाते स्वामी नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १४ ॥ हवे चौदसा अंनतनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि ॥ चार सागरने आंतरे ॥ पंदरमा धर्मनाथ तिर्थंकर थया ॥ रत्नपुरी नगरीने वीषे ॥ भानु राजा पीता ॥ सुवृता देवी राणी माता । हेम वर्णे ॥ वज्रनुं लंछन । पिस्तालिस धनुष्यनु देहमान ॥ दस लाख वर्षनुं आउखु ॥ तेमां अढी लाख वर्ष कुंवरपणे रह्या ॥ साडा ५ लाख वरसनुं राज पाळ्यु ॥ एक लाख वर्षनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछी बे महिने केवल ज्ञान पाम्यां । साधु साधवी ॥ श्रावक श्रावीका रूप ॥ चतुर्विध संघतिर्थ थापीने ॥ द्वादसांगी गणीनि पेटी आपिने ॥ आठसे साधु सघाते

स्वामी नीर्वाण मोक्षने विषे पधार्या ॥ १५ ॥ हवे पन्नरमां धर्मनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछी ॥ त्रण सागर तेमां पोणा पल्यने उणे आंतरे ॥ सोलमा श्री शांतिनाथ तिर्थंकर थया ॥ हस्तीनापूर नगरने विषे ॥ विश्वसेन राजा पीता ॥अचिरा देवी राणी माता ॥ हेम वर्णे ॥ मृगनुं लंछन ॥ चालीस धनुष्यनुं देहमान । एक लाख वर्षनुं आउखुं ॥ तेमां पा लाख वर्ष कुंवरपणे रह्या ॥ पा लाख वरसनुं राज पाल्युं ॥ पा लाख वर्षनि चक्रवतीनि पदवी भोगवी ॥ पा लाख वरसनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछी ॥ एक महीने केवल ज्ञान उपनुं । साधु साधवी श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापीने ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने ॥ नवसें साधु संघाते स्वामी नीर्वाण मोक्षने विषे पधार्या ॥ १६ ॥ हवे सोलमां शांतिनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछी ॥ अर्द्ध पल्यने आंतरे ॥ सतरमां श्री कुंथुनाथ तिर्थंकर थया ॥ गजपुर नगरीने वीषे ॥ सुर राजा पीता ॥ सुरा देवी राणी माता ॥ हेम वर्णे ॥ छगल कहेता बोकडानुं लंछन ॥ पांत्रीस धनुषनुं देहमान ॥ पंचाणुं हजार वरसनुं आउखुं ॥ तेमां पोणी चोवीस हजार वरस कुंवरपणे रह्या ॥ पोणी चोवीस हजार वरसनुं राज

पाल्युं॥ पोणी चोवीस हजार वरस चक्रवृत्तिनी पदवी जोगवी ॥ पोणी चोवीस हजार वरसनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लिधा पछि सोल महीने केवलज्ञान उपन्युं॥ साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापिने ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपिने ॥ एक हजार साधु संघाते। स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १७ ॥ हवे सतरमा कुंथुनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछी ॥ पा पल्यमांथी एक कोडने १ हजार वर्षने उणे आंतरे॥ १८ मां श्री अर-नाथ तिर्थंकर थया ॥ नागपुर नगरीने विषे॥ सुदर्सण राजा पिता ॥ देवकी देवी राणी माता॥ हिम वर्णे ॥ नंदावत साथीयानुं लंछन ॥ त्रीस धनुषनुं देहमान ॥ चोरासी हजार वरसनुं आउखुं ॥ तेमां २१ हजार वरस कुंवरपणे रह्या ॥ २१ हजार वर्षनुं राज पाल्युं ॥ २१ हजार वर्षनी चक्रवृत्तीनी पदवी पाली ॥ २१ हजार वर्षनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछी ॥ त्रण वर्षे केवलज्ञान उपन्युं ॥ साधु साधवी । श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । द्वादसांगी गणीनी पेटी आपिने ॥ एक हजार साधु संघाते स्वामी ॥ नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १८ ॥ हवे अढारमा अरनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोता पछी। एक कोडने एक हजार

वरसने आंतरे ॥ १९ मां मल्लीनाथ तिर्थंकर थया ॥ मिथिला नगरीने विषे ॥ कुंभ राजा पिता ॥ प्रभावति राणी माता ॥ निल वर्णे ॥ कलसानुं लंछन ॥ पचविस धनुषनुं देहमान ॥ पंचावन हजार वर्षनुं आउखुं ॥ तेमां सो वरस तो कुंवरी पणे रह्या ॥ बाकी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधापछि त्रीजे पोहोरे केवलज्ञान उपन्युं ॥ साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारुप चतुर्विध सघतिर्थ स्थापिने द्वादसांगी गणीनी पेटी आपिने ॥ पांचसें साधु ॥ अने पांचसें साधवी संघाते ॥ स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १९ ॥ हवे उगणीसमां मल्लिनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछी ॥ ५४ चोपन लाख वरसने आंतरे ॥ २० मां मुनिसुव्रत तिर्थंकर थया ॥ राजग्रही नगरीने विषे ॥ सुमित्र राजा पीता ॥ पद्मावति राणी माता ॥ साम वर्णे ॥ काछबानुं लंछन ॥ विस धनुषनुं देहमान ॥ त्रीस हजार वर्षनुं आउखुं ॥ तेमां साडासात हजार वरस कुंवर पणे रह्या ॥ पनर हजार वर्षनुं राज पाल्युं । साडासात हजार वर्षनी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधा पछी ॥ इग्यार महीने केवलज्ञान उपन्युं । साधु साधवी । श्रावक श्राविकारुप चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । द्वादसांगी गणीनी पेटी आपिने ॥ एक हजार साधु संघाते ॥ स्वामी निर्वाण

मोक्ष पधार्या ॥२०॥ हवे वीसमां मुनि सुव्रत तिर्थंकर मोक्ष पहोंता पछी छ लाख वर्षने आंतरे २१ मां नमिनाथ तीर्थंकर थया ॥ मथुरा नगरीने विषे । विजय राजा पिता ॥ विपुलादेवी राणी माता ॥ हेम वर्णें ॥ निलोत्पल कमलनुं लंछन । पनर धनुषनुं देहमान ॥ दस हजार वर्षनुं आउखुं ॥ अढि हजार वर्ष कुवरपणे रह्या ॥ साढा छ हजार वर्षनुं राज पाल्युं ॥ एक हजार वर्षनी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधा पछि ॥ नव महीने केवलज्ञान उपन्युं ॥ साधु साधवी० एक हजार साधु संघाते ॥ स्वामी निर्वाण मोक्षने विषे पधार्या ॥ २१ ॥ हवे एकवीसमां नमीनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोता पछी । पांच लाख वर्षने आंतरे ॥ २२ मां नेमनाथ तिर्थंकर थया । सोरीपुर नगरीने विषे । समुद्र विजय राजा पीता ॥ सीवा देवी राणी माता ॥ साम वर्णे । संखनुं लंछन ॥ दस धनुषनुं देहमान ॥ एक हजार वर्षनुं आउखुं ॥ तेमां त्रणसे वर्ष कुंवरपणे रह्या ॥ सातसें वर्षनी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधा पछी चोपन दहाडे केवलज्ञान उपन्युं ॥ साधु० ॥ पांचसें ने छत्रीस साधु संघाते ॥ स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ २२ ॥ हवे बावीसमां नेमनाथ तिर्थकर मोक्ष पोहोता पछी ॥ पोणी चोरासी हजार वर्षने आं-

तर ॥ २३ मा पार्श्वनाथ तिर्थंकर थया ॥ वणारसी नगरीने विषे ॥ अश्वसेन राजा पिता ॥ वामादेवी राणी माता ॥ निल वर्णे ॥ सर्पनुं लंछन ॥ नव हाथनुं देहमान ॥ सो वर्षनुं आउखुं ॥ तेमां ३० वर्ष कुंवरपणे रह्या सितेर वर्षनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लिधा पछि चोरासी दहाडे केवलज्ञान उपन्युं ॥ साधु० एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ २३ ॥ हवे त्रेवीसमां श्रीपार्श्वनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछी ॥ अढिसें वर्षने आंतरे ॥ चोवीसमा श्रीमहावीर तिर्थंकर थया ॥ क्षत्रीकुंड ग्राम नगरने विषे ॥ सिद्धार्थ राजा पिता ॥ त्रिसलादेवी राणी माता ॥ हेम वर्णे ॥ सिंहनुं लंछन ॥ सात हाथनुं देहमान ॥ बोहोतेर वर्षनुं आउखुं ॥ तेमां ॥ ३० वर्ष कुंवरपणे रह्या ॥ ४२ बेतालिस वर्षनी प्रवर्जा पाली ॥ प्रवर्जा लिधा पछी ॥ साडाबार वर्ष ने पन्नर दहाडे केवलज्ञान उपन्युं । साधु साधवी । श्रावक श्रावीका रूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापिने ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपिने ॥ कारतक वद अमावास्यानी रात्रे लौकिक पक्षे आसो वद अमावास्यानी रात्रे पावापुरी नगरीने विषे । चोथा आराना त्रण वर्ष ने साडाआठ महीना बाकी रह्या ॥ त्यारे

स्वामीनाथ एकाकिपणे ॥ बे दीवसनुं अणसण करी निर्वाण मोक्षने विषे पहोंता ॥ २४ ॥ पहेला तिर्थकर श्री रुषभदेव स्वामी ॥ अने चोविसमां तिर्थंकर श्री महाविरस्वामी ए बेहू वचे । एक कोडाकोड सागरोपम झाझेरुं ॥ तेहमां ४२ बेंतालिस हजार वर्ष उणानुं आंतरुं जाणवूं ॥ इति श्रीचोविस तिर्थकरनां आंतरा संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री कर्मप्रकृतिना बोल. ॥

पहेलुं ज्ञानावरणीय कर्म ते आंखना पाटा समान ॥ १ ॥ बिजुं दर्शनावरणीय कर्म ते राजाना पोळिया समान ॥ २ ॥ त्रिजुं वेदनीय कर्म ते मध तथा अफिणे खरड्या खड्ग समान ॥ ३ ॥ चोथुं मोहनीय कर्म ते मदिरापान समान ॥ ४ ॥ पांचमुं आयूष कर्म तें हेड समान ॥ ५ ॥ छठुं नाम कर्म ते चितारा समान ॥ ६ ॥ सातमुं गोत्र कर्म ते कुंभारना चाकडा समान ॥ ॥ आठमुं अंतराय कर्म ते राजाना भंडारी समान ॥ ८ ॥ ज्ञानावरणीय कर्में अनंत ज्ञान गुण ढांक्यो छे ॥ १ ॥ दर्शना वरणीय कर्में अनंत दर्शन

गुण ढांक्यो छे ॥ २ ॥ वेदनीय कर्मे अनंत अव्याबाध आत्मिक सुख रोक्युं छे ॥ ३ ॥ मो-हनीय कर्मे क्षायक समकित गुण रोक्यो छे ॥ ४ ॥ आयुष कर्मे अक्षय स्थिति गुण रो-क्यो छे ॥ ५ ॥ नाम कर्मे अमूर्ति गुण रोक्यो छे ॥ ६ ॥ गोत्र कर्मे अगुरु लघु गुण रोक्यो छे ॥ ७ ॥ अंतराय कर्मे अनंत आत्मिकशक्ति गुण रोक्यो छे ॥ ८ ॥ ज्ञानावरणीय कर्म ते ६ प्रकारे बांधे ॥ पहेले बोले नाणपडिणीयाए ते ज्ञानीना वांका बोले ॥ १ ॥ बिजे बोले नाणनिन्हवणयाए ते ज्ञानिनो उपकार ओलवे ॥ २ ॥ त्रिजे बोले नाणआसायणाए ते ज्ञा-निनि आशातना करे ॥ ३ ॥ चोथे बोले नाणअंतराएण ते ज्ञाननि अंतराय पाडावे ॥ ४ ॥ पांचमे बोले नाणपउसेणं ते ज्ञानि उपर द्वेष करे ॥ ५ ॥ छठे बोले नाणाविसंवायणा जो-गेणं ते ज्ञानि साथे खोटा झगडा विखवाद करे ॥ ६ ॥ ए छ प्रकारे बांधे ते ॥ पांच तथा १० प्रकारे जोगवे ॥ ते पांच किया ते कहे छे । मति ज्ञानावरणीय ॥ १ ॥ श्रुत ज्ञानावरणीय ॥ २ ॥ अवधि ज्ञाना वरणीय ॥ ३ ॥ मनपर्यव ज्ञानावरणीय ॥ ४ ॥ केवल ज्ञानावरणीय ॥५॥ ए ५ ज्ञान प्रगट थावा दे नहि ॥ तथा १० प्रकारे जोगवे ते कहे छे ॥ सोया वरणे ॥१॥ सोय वि-

न्नाणा वरणे ॥२॥ नेत्ता वरणे ॥ ३ ॥ नेत्त विनाणा वरणे ॥४॥ घाणा वरणे ॥ ५ ॥ घाण विन्नाणा वरणे ॥ ६ ॥ रसा वरणे ॥ ७ ॥ रस विन्नाणा वरणे ॥ ८ ॥ फासा वरणे ॥९॥ फास विन्नाणा वरणे १० ए १० ॥ प्रकारे नोगवे । हवे ज्ञानावरणीय कर्मनि स्थिति ॥ जघ० अंतर्मुहुर्त्तेनि । उत्० त्रिश कोमाकोमि सागरोपमनी । अने अबाधा काल करे तो । त्रण हजार वरसनि स्थिति ॥१॥ हवे दर्शना वरणीय कर्म ॥ ६ प्रकारे बांधे ते कहे ठे ॥ पहेले बोले दंशण पमिणीयाए ॥ १ ॥ दंशण निन्हवणयाए ॥२॥ दंशण आसायणाए ॥३॥ दंशण अंतराएणं ॥४॥ दंशण पउसेणं ॥५॥ दंशण विसंवायणा जोगेणं ॥६॥ ए ॥ ६ प्रकारे बांधे ते ॥९॥ प्रकारे नोगवे ते कहे ठे ॥ चक्षु दर्शना वरणीय ॥१॥ अचक्षु दर्शना वरणीय ॥२॥ अवधि दर्शना वरणीय ॥३॥ केवल दर्शना वरणीय ॥४॥ निद्रा ॥५॥ निद्रा निद्रा ॥६॥ प्रचला ॥७॥ प्रचला प्रचला ॥८॥ थिणद्धिनिद्रा ॥९॥ ए ए प्रकारे नोगवे ॥ दर्शना वरणीय कर्मनि स्थिति जघ० अतमुहुर्त्तनि । उत्० ३० कोमाकोमि सागरोपमनि । अने अबाधा काल करे तो स्थिति त्रण हजार वरसनि ॥ ॥ २ ॥ त्रिजुं वेदनीय कर्म तेहना २ नेद ॥ सातावेदनीय ॥ १ ॥ असाता वेदनीय ॥ २ ॥

तेहमां सात्तावेदनीय दश प्रकारे बांधे ते कहे छे ॥ पाणाणु कंपयाए ॥ १ ॥ नुयाणु कंपयाए ॥२॥ जीवाणु कंपयाए ॥ ३ ॥ सत्ताणु कंपयाए ॥ ४ ॥ बहुणं पाणाणं नुयाणं जीवाणं सत्ताणं अडुख-णयाए ॥ ५ ॥ असोयणयाए ॥६॥ अजुरणयाए ॥७॥ अतिप्पणयाए ॥८॥ अपिटणयाए ॥९॥ अपरियावणयाए ॥ १० ॥ ए १० ॥ प्रकारे बांधे ते ८ प्रकारे नोगवे। मणुणा सद्दा ॥१॥ मणुणा रुवा ॥२॥ मणुणा गंधा ॥३॥ मणुणा रसा ॥ ४ ॥ मणुणा फासा ॥५॥ मणसुहया ॥६॥ वयसुहया ॥७॥ कायसुहया ॥८॥ ए ८ प्रकारे नोगवे। हवे एहनी स्थिति । जघ० ॥ २ समयनि उत्० ॥ १५ कोमाकोम सागरोपमनि। अबाधा काल करे तो । जघ० अंतर्मुहुर्त्तनि । उत्० दोढ हजार वरसनी स्थिति। हवे असाता वेदनीय ॥ १२ प्रकारे बांधे ते कहे छे । परडुखणयाए ॥ १ ॥ परसोयणयाए ॥ २ ॥ परजुरणयाए ॥ ३ ॥ परतिप्पणयाए ॥ ४ ॥ परपिटणयाए ॥ ५ ॥ पर परियावणयाए ॥ ६ ॥ बहुणं पाणाणं नुयाणं जीवाणं सत्ताणं डुखणयाए ॥ ७ ॥ सोयणयाए ॥ ८ ॥ जुरणयाए ॥ ९ ॥ तिप्पणयाए ॥ १० ॥ पिटणयाए ॥ ११ ॥ परियावणयाए ॥ ए ॥ १२ प्रकारे बांधे ते ॥ ८ प्रकारे नोगवे। अमणुणा सद्दा ॥ १ ॥ अमणुणा रुवा ॥ २ ॥ अमणुणा

गंधा ॥ ३ ॥ अमणुणा रसा ॥ ४ ॥ अमणुणा फासा ॥ ५ ॥ मणदुहया ॥ ६ ॥ वयदुहया ॥ ७ ॥ कायदुहया ॥ ८ ॥ ए ॥ ८ प्रकारे जोगवे । हवे एहनि स्थिति ॥ जघ० ॥ १ सागरना ॥ ७ जाग करिये एहवा ॥ ३ जाग एक पल्य ने असंख्यातमे जागे ऊणानि ॥ उत्० । त्रिश कोमाकोमि सागरोपमनि । एहनो अबाधा काल ॥ ३ हजार वरसनो ॥ ३ ॥ हवे चोथुं मोहनीय कर्म ते ७ प्रकारे बांधे ॥ तिव्वकोहे ॥१॥ तिव्वमाणे ॥२॥ तिव्वमायाए ॥३॥ तिव्वलोहे ॥४॥ तिव्वदंसण मोहणिज्जे ॥ ५ ॥ तिव्वचरित्त मोहणिज्जे ॥ ६ ॥ ए ६ प्रकारे बांधे ते २८ प्रकारे जोगवे । अनंतानुवंधि क्रोध ते पर्वतनि राइ समान ॥१॥ अनंतानुवंधि मान ते पथरना स्तंज समान ॥ २ ॥ अनंतानुवंधि माया ते वांशनि गांठ समान ॥ ३ ॥ अनंतानुवंधि लोज ते किरमजना रंग समान ॥४॥ ए ॥४ गति करे नरकनि । स्थिति करे जावजीवनि । घात करे समकितनि ॥ ४ ॥ अप्रत्याख्यानी क्रोध ते तलावना खोट समान ॥ १ ॥ अप्रत्याख्यानी मान ते हामकाना स्तंज समान ॥ २ ॥ अप्रत्याख्यानी माया ते घेटाना शृंग समान ॥ ३ ॥ अप्रत्याख्यानी लोज ते नगरनि खालना कादव समान ॥४॥ ए चारे गति करे तिर्यंचनि । स्थिति करे वरस एकनि ।

वात करे देश वृतीनी ॥८॥ पचखाणावरणीय क्रोध ते वेलुनि लिटि समान॥१॥ पचखाणावरणीय मान ते लाकडाना स्तंभ समान ॥२॥ पंचखाणावरणीय माया ते गोमुत्रिका समान॥ ३ ॥ पच-खाणा वरणीय लोभ ते गाडाना खंजन समान ॥४॥ ए चारे गति करे मनुष्यनि ॥ स्थिति करे च्यार मासनि । घात करे सर्व वृतीनि ॥१२॥ संज्वलनो क्रोध ते पाणिनि लिटि समान ॥१॥ सं-ज्वलनो मानते नेत्रना स्तंभ समान ॥२॥ संज्वलनी माया ते वांसनि छोइ समान ॥३॥ संज्व-लनो लोभ ते । पतंग तथा हलिद्रना रंग समान ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ गति करे देवतानि । स्थिति करे पनर दिननि । घात करे केवल ज्ञाननि ॥१६॥ ए १६ कषाय । हवे ॥ए नो कषाय कहेछे। हास्य ॥ १७ ॥ रति ॥ १८ ॥ अरति ॥ १९ ॥ भय ॥ २० ॥ शोग ॥ २१ ॥ दुगंछा ॥ २२ ॥ स्त्री वेद ॥ २३ ॥ पुरुष वेद ॥ २४ ॥ नपुंसक वेद ॥ २५ ॥ ए चारित्र मोहनीयनी २५ प्रकृति ॥ हवे दंसण मोहनीयनि ॥ ३ प्रकृति कहे छे । समकित मोहनीय १ ॥ मिथ्यात्व मोहनीय २॥ समामिथ्यात्व मोहनीय ३ ॥ ए ३ दर्शन मोहनीयनि । एवं सर्व मलि ॥ २८ प्रकृति । हवे एहनि स्थिति जघ० अंतर्मुहुर्त्तनी । उत्० ॥ ७० कोडाकोडि सागरोपमनी । अबाधा काल

करे तो । जघ० अंतर्मुहुर्त्तनी । उत्० ॥७ हजार वरसनि ॥ ४ ॥ हवे पांचमुं आयुष कर्म ।
सोल प्रकारे वांधे । तेहमांहि । नारकिनुं आयुष ॥ ४ प्रकारे बांधे ते महारंजयाए ॥ १ ॥
महापरिग्गहियाए ॥२॥ कुणिमाहारेणं ॥ ३ ॥ पंचिदियवहेणं ॥ ४ ॥ तिर्यंचनुं आयुष ॥४
प्रकारे बांधे ॥ माइलयाए ॥१॥ नियडिलयाए ॥२॥ अलियवयणेणं ॥३॥ कुडतोले कुडमाणे॥४॥
मनुष्यनुं आयुष ॥४ प्रकारे बांधे । पगइजद्दयाए ॥१॥ पगइविणीयाए ॥२॥ साणुकोसयाए ॥३॥
अमछरियाए ॥ ४ ॥ देवतानुं आयुष ॥४ प्रकारे बांधे । सराग संजमेणं ॥१॥ संजमा संजमेणं
॥ २ ॥ वालतवोकमेणं ॥ ३ ॥ अकाम निजराए ॥४॥ ए १६ प्रकारे बांधे । ते ॥४ प्रकारे जो-
गवे । नारकि देवतानुं आयुष ॥जघ० ॥ १० हजार वर्ष ने अंतर्मुहुर्त अधिकनुं ॥॥ उत्० ॥३३
सागर ने पूर्व कोडिनो त्रिजो जाग अधिक ॥ मनुष्य ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ ए २ नुं आयुष ॥
जघ० अंतर्मुहूर्तनुं । उत्० ॥ ३ पल्यने पूर्व कोडिनो त्रिजो जाग अधिक ॥ ५ ॥ हवे छठुं नाम-
कर्म तेहना २ जेद ॥ शुज नाम ॥१ ॥ अशुज नाम ॥ २ ॥ तेमां शुज नाम कर्म ॥ ४ प्रकारे
बांधे ॥ कायुजुयाए ॥ १ ॥ जासुजुयाए ॥२॥ जावुजुयाए ॥३॥ अविसंवायणा जोगेणं ॥४॥

ते ॥ १४ प्रकारे जोगवे। इठा सद्दा १ इठा रुवा २ इठा गंधा ३ इठा रसा ४ इठा फासा ॥५॥ इठा गइ ॥ ६ ॥ इठा ठीइ ॥७॥ इठा लावणे ॥८॥ इठा जसोकित्ती ॥९॥ इठा उठाण कम्मबलवीरियपुरिसाकारपरक्कमे ॥१०॥ इठ सरया ॥११॥ कंत सरया ॥ १२ ॥ पियसरया ॥ १३॥ मणुण्ण सरया ॥१४॥ ए ॥ १४ प्रकारे जोगवे ॥ अशुभ नाम कर्म ॥ ४ प्रकारे बांधे॥ कायअणुजुयाए ॥१॥ भासाणुजुयाए ॥ २ ॥ भावाणुजुयाए ॥३ ॥ विसंवायणा जोगेणं ॥ ४ ॥ ते ॥ १४ प्रकारे जोगवे। अणिठा सद्दा ॥ १ ॥ अणिठा रुवा ॥ २ ॥ अणिठा गंधा ॥ ३ ॥ अणिठा रसा ॥ ४ ॥ अणिठा फासा ॥ ५ ॥ अणिठा गइ ॥ ६ ॥ अणिठा ठिइ ॥ ७ ॥ अणिठे लावणे ॥ ८ ॥ अणिठा जसोकित्ति ॥९॥ अणिठा उठाण कम्मबलवीरिय पुरिसाकारपरक्कमे ॥१०॥ हिण सरया ॥११॥ दिण सरया ॥१२॥ अणिठ सरया ॥१३॥ अकंत सरया ॥ १४॥ए॥ १४ प्रकारे जोगवे ॥ हवे नाम कर्मनि ॥९३ प्रकृति कहे छे॥ नरक गति ॥ १ ॥ तिर्यंच गति ॥२॥ मनुष्य गति ॥३॥ देव गति ॥४॥ एकेंद्रिय जाति ॥५॥ बेइंद्रिय जाति ॥६॥ तेइंद्रिय जाति ॥७॥ चउरिंद्रिय जाति ॥८॥ पंचेंद्रिय जाति ॥९॥ उदारिक सरिर ॥१०॥

वैक्रेय शरिर ॥ ११ ॥ आहारक शरिर ॥ १२ ॥ तेजस शरिर ॥ १३ ॥ कार्मण शरिर ॥
॥१४॥ उदारिक अंगोपांग ॥ १५ ॥ वैक्रेय अंगोपांग ॥१६॥ आहारक अंगोपांग ॥१७॥ उदा-
रिक बंधन ॥१८॥ वैक्रेय बंधन ॥ १९ ॥ आहारक बंधन ॥ २० ॥ तेजस बंधन ॥२१॥ कार्मण
बंधन ॥२२॥ उदारिक संघातन ॥ २३ ॥ वैक्रेय संघातन ॥२४॥ आहारक संघातन ॥ २५ ॥
तेजस संघातन ॥२६॥ कार्मण संघातन ॥२७॥ वज्र ऋषभ नाराच संघयण ॥२८॥ ऋषभ ना-
राच संघयण ॥ २९ ॥ नाराच संघयण ॥३०॥ अर्द्ध नाराच संघयण ॥३१॥ किलकु संघयण
॥३२॥ छेवट्ठ संघयण ॥३३॥ समचौरश संठाण ॥ ३४ ॥ निगोह परिमंडल संठाण ॥ ३५ ॥
सादि संठाण ॥३६॥ वामन संठाण ॥ ३७ ॥ कुज संठाण ॥ ३८ ॥ हुंरु संठाण ॥ ३९ ॥ कालो
वर्ण ॥ ४० ॥ निलो वर्ण ॥४१॥ रातो वर्ण ॥ ४२ ॥ पिलो वर्ण ॥ ४३ ॥ धोलो वर्ण ॥ ४४ ॥
सुरभि गंध ॥४५॥ दुरभि गंध ॥ ४६ ॥ तिखो रस ॥४७॥ करूवो रस ॥४८॥ कसायलो रस
॥४९॥ खाटो रस ॥५०॥ मिठो रस ॥ ५१ ॥ खरखरो स्पर्श ॥ ५२ ॥ सुंहालो स्पर्स ॥ ५३ ॥
भारे स्पर्स ॥ ५४ ॥ हलुवो स्पर्स ॥५५॥ टाढो स्पर्स ॥ ५६ ॥ उन्हो स्पर्स ॥ ५७ ॥ चोपरूयो

स्पर्स ॥५८॥ लुखो स्पर्स ॥ ५९ ॥ नरकानुं पूर्वी ॥ ६० ॥ तिर्यचानुं पूर्वी ॥ ६१ ॥ मनुष्यानुं पूर्वी ॥६२॥ देवतानुं पूर्वी ॥६३॥ शुभ विहाय गति ॥६४॥ अशुभ विहाय गति ॥६५॥ ९ ॥ ६५ पिंड प्रकृति थइ । पराघात नाम ॥६६॥ उस्वास नाम ॥६७॥ अगुरु लघु नाम ॥६८॥ आताप नाम ॥६९॥ उद्योत नाम ॥७०॥ उपघात नाम ॥७१॥ तिर्थंकर नाम ॥७२॥ निर्माण नाम ॥७३॥ त्रश नाम ॥७४॥ बादर नाम ॥७५॥ प्रत्येक नाम ॥७६॥ पर्याप्त नाम ॥ ७७ ॥ स्थिर नाम ॥७८॥ शुभ नाम ॥७९॥ सौभाग्य नाम ॥८०॥ सुस्वर नाम ॥८१॥ आदेय नाम ॥८२॥ जशो कीर्ति नाम ॥८३॥ स्थावर नाम ॥८४॥ सुक्ष्म नाम ॥ ८५ ॥ साधारण नाम ॥ ८६ ॥ अप्रजाप्त नाम ॥८७॥ अस्थिर नाम ॥८८ ॥ अशुभ नाम ॥ ८९ ॥ दौर्भाग्य नाम ॥ ९० ॥ डुःस्वर नाम ॥९१॥ अनादेय नाम ॥९२॥ अजशो कीर्ति नाम ॥९३॥ ९ ॥ ९३ प्रकृति थइ ॥ तेह्मां ॥ १० बंधननि अधिक भेलवतां ॥ १०३ प्रकृति पण ग्रंथवाळा कहे छे अथवा नाम कर्म नि ॥ ४२ पण खरि । गति ॥ १ ॥ जाति ॥ २ ॥ शरीर ॥ ३ ॥ अंगोपांग ॥४॥ बंधन ॥ ५ ॥ संघातन ॥ ६ ॥ वर्ण ॥ ७ ॥ गंध ॥ ८ ॥ रस ॥ ९ ॥ स्पर्स ॥ १० ॥ संघयण ॥ ११ ॥ संठा-

ण ॥१२॥ अनुपूर्वी ॥ १३ ॥ विहाय गति ॥ १४ ॥ ए ॥ १४ अने प्रत्येक प्रकृति ८ ॥ त्रशनो दशको १० ॥ स्थावरनो दशको १० ॥ एवं ४२ थइ । तथा विस्तारे चौदनि ६५ तथा प्रत्येक प्रकृति ८ ॥ त्रशनो दशको १० ॥ स्थावरनो दशको १० ॥ एवं विस्तारे ए३ प्रकृति थइ ॥ नामकर्मनि स्थिति । जघन्य । आठ मुहुर्त्तनि । उत्० । विश कोडाकोडि सागरोपमनि ॥ अबाधा काल करे तो ॥ २ हजार वरसनो ॥६॥ हवे गोत्र कर्मना २॥ भेद ॥ उंच गोत्र ॥१॥ निच गोत्र ॥२॥ तेहमां उंच गोत्र ॥ ८ प्रकारे बांधे ॥ जाइ अमदेणं ॥१॥ कुल अमदेणं ॥२॥ बल अमदेणं ॥३॥ रुव अमदेणं ॥४॥ तव अमदेणं ॥५॥ सूय अमदेणं ॥६॥ लाभ अमदेणं ॥७॥ इस्सरिय अमदेणं ॥८॥ ए आठ मद अणकरवे करि उंच गोत्र बांधे । ते ॥८ प्रकारे भोगवे ॥ जाइ विसिठिया ॥१॥ कुल विसिठिया ॥२॥ बल विसिठिया ॥३॥ रुव विसिठिया ॥४॥ तव विसिठिया ॥५॥ सूय विसिठिया ॥६॥ लाभ विसिठिया ॥७॥ इस्सरिय विसिठिया ॥ ८ ॥ ए ॥ ८ प्रकारे भोगवे ॥ १ ॥ हवे निच गोत्र ॥ ८ प्रकारे बांधे ते । जाइ मएणं ॥ १ ॥ कुल मएणं ॥ २ ॥ बल मएणं ॥ ३ ॥ रुप मएणं ॥४॥ तप मएणं ॥ ५ ॥ सूय मएणं ॥ ६ ॥ लाभ मएणं ॥ ७ ॥

इस्सरिय मएणं ॥८॥ ए ८ मद करवे करि निच गोत्र बांधे । ते ॥ ८ प्रकारे भोगवे ॥ जाइ विहिणया ॥ १ ॥ कुलविहिणया ॥ २ ॥ बलविहिणया ॥ ३ ॥ रुपविहिणया ॥४॥ तपविहिणया ॥५॥ सूयविहिणया ॥ ६ ॥ लाभविहिणया ॥ ७ ॥ इस्सरिय विहिणया ॥ ए ॥ ८ ॥ गोत्र कर्मनि स्थिति । जघ० ॥ ८ मुहुर्त्तनि ॥ उत्० । विश क्रोडाक्रोडि सागरोपमनि ॥ अबाधा काल करे तो बे हजार वर्षनो ॥ ७ ॥ हवे ८ मुं । अंतराय कर्म । पांच प्रकारे बांधे ॥ दानांतराय ॥ १ ॥ लाभांतराय ॥ २ ॥ भोगांतराय ॥ ३ ॥ उवभोगांतराय ॥ ४ ॥ वीर्यांतराय ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ अंतराय पाडवे करि अंतराय कर्म बांधे । ते पांच प्रकारे भोगवे ॥ दानांतराय ॥ १ ॥ लाभांतराय ॥ २ ॥ भोगांतराय ॥ ३ ॥ उवभोगांतराय ॥ ४ ॥ वीर्यांतराय ॥ ५ ॥ ए ५ ॥ पामे नहि । ए अंतराय कर्मनि स्थिति ॥ जघन्य । अंतर्मुहुर्त्तनि । उत्० । त्रिश क्रोडाक्रोडि सागरोपमनि ॥ अबाधा काल करे तो ॥ ३ हजार वर्षनो ॥८॥ बांध्यानि ॥ ८५ प्रकृति ॥ ज्ञानावरणीयनि ॥ ६ ॥ दर्शनावरणीयनि ॥ ६ ॥ वेदनीयनि ॥ २२ ॥ मोहनीयनि ॥ ६ ॥ आयुषनि ॥ १६ ॥ नामनि ॥ ८ ॥ गोत्रनि ॥ १६ ॥ अंतरायनि ॥ ५ ॥ एवं

सर्व मलि ॥८५॥ प्रकृति बाध्यानि जाणवि ॥ जोगव्यानि ९३ प्रकृति ते ज्ञानावरणीयनि
॥१०॥ दर्शनावरणीयनि ॥९॥ वेदनीयनि ॥१६॥ मोहनीयनि ॥५॥ ते सम्मत्तवेयणिज्जो ॥१॥
मिछत्त वेयणिज्जो ॥२॥ सम्मामिछत्त वेयणिज्जो ॥३॥ कसाय वेयणिज्जो ॥४॥ नोकसाय वेयणिज्जो
॥५॥ए५॥ आयुषनि ॥४॥ नामनि ॥२८॥ गोत्रनि ॥१६॥ अंतरायनि ॥५॥ ए सर्व मली
॥९३॥ प्रकृति जोगव्यानि जाणवी॥ अथवा ॥१४८॥ प्रकारे पण जोगवे ते ॥पांच ज्ञाना-
वरणीयनि ॥ दर्शना वरणीयनि ॥९॥ वेदनीयनि ॥२॥ मोहनीयनि ॥२८॥ आयुषनि ॥४॥
नाम कर्मनि ॥९३॥ गोत्र कर्मनि ॥२॥ अंतरायनि ॥५॥ एवं सर्व मलिने ॥१४८॥ प्रकृति जा-
णवि तथा बंधन नामकर्मनि ॥१०॥ प्रकृति ग्रंथांतरे कहि छे ते जेलवतां ॥१५८॥ प्रकृति पण
थाय॥ अथवा मुल प्रकृति ॥८॥ तेहनि उत्तर प्रकृति ॥३१॥ ज्ञाना वरणीयनी ॥५॥ दर्शना-
वरणीयनि ॥९॥ वेदनीयनि ॥२॥ मोहनीयनि ॥२॥ आयुषनि ॥४॥ नामनि ॥२॥ गोत्रनि
॥२॥ अंतरायनि ॥५॥ एवं ॥ ३१ प्रकृति थाय तेहनो विस्तार॥ १४८ कर्म प्रकृति जाणवि।
ए बोल सिद्धांत प्रमाणे छे ॥ इति कर्म प्रकृतिना बोल समाप्तं ॥

इस्सरिय मएणं ॥८॥ ए ८ मद करवे करि निच गोत्र बांधे । ते ॥ ८ प्रकारे भोगवे ॥ जाइ विहिणया ॥ १ ॥ कुलविहिणया ॥ २ ॥ बलविहिणया ॥ ३ ॥ रूपविहिणया ॥४॥ तपविहिणया ॥५॥ सूयविहिणया ॥ ६ ॥ लाभविहिणया ॥ ७ ॥ इस्सरिय विहिणया ॥ ए ॥ ८ ॥ गोत्र कर्मनि स्थिति । जघ० ॥ ८ मुहुर्त्तनि ॥ उत्० । विश कोडाकोडि सागरोपमनि ॥ अबाधा काल करे तो बे हजार वर्षनो ॥ ७ ॥ हवे ८ मुं । अंतराय कर्म । पांच प्रकारे बांधे ॥ दानांतराय ॥ १ ॥ लाभांतराय ॥ २ ॥ भोगांतराय ॥ ३ ॥ उवभोगांतराय ॥ ४ ॥ वीर्यांतराय ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ अंतराय पाडवे करि अंतराय कर्म बांधे । ते पांच प्रकारे भोगवे ॥ दानांतराय ॥ १ ॥ लाभांतराय ॥ २ ॥ भोगांतराय ॥ ३ ॥ उवभोगांतराय ॥ ४ ॥ वीर्यांतराय ॥ ५ ॥ ए ५ ॥ पामे नहि । ए अंतराय कर्मनि स्थिति ॥ जघन्य । अंतर्मुहुर्त्तनि । उत्० । त्रिश कोडाकोडि सागरोपमनि ॥ अबाधा काल करे तो ॥ ३ हजार वर्षनो ॥८॥ बांध्यानि ॥ ७५ प्रकृति ॥ ज्ञानावरणीयनि ॥ ६ ॥ दर्शनावरणीयनि ॥ ६ ॥ वेदनीयनि ॥ २२ ॥ मोहनीयनि ॥ ६ ॥ आयुषनि ॥ १६ ॥ नामनि ॥ ८ ॥ गोत्रनि ॥ १६ ॥ अंतरायनि ॥ ५ ॥ एवं

सर्व मलि ॥८५॥ प्रकृति बाध्यानि जाणवि ॥ भोगव्यानि ९३ प्रकृति ते ज्ञानावरणीयनि
॥१०॥ दर्शनावरणीयनि ॥९॥ वेदनीयनि ॥१६॥ मोहनीयनि ॥५॥ ते सम्मत्तवेयणिज्जो ॥१॥
मिछत्त वेयणिज्जो ॥२॥ सम्मामिछत्त वेयणिज्जो ॥३॥ कसाय वेयणिज्जो ॥४॥ नोकसाय वेयणिज्जो
॥५॥ ९५॥ आयुषनि ॥४॥ नामनि ॥२८॥ गोत्रनि ॥१६॥ अंतरायनि ॥५॥ ए सर्व मली
॥९३॥ प्रकृति भोगव्यानि जाणवी॥ अथवा ॥१४८॥ प्रकारे पण भोगवे ते ॥पांच ज्ञाना-
वरणीयनि ॥ दर्शना वरणीयनि ॥९॥ वेदनीयनि ॥२॥ मोहनीयनि ॥२८॥ आयुषनि ॥४॥
नाम कर्मनि ॥९३॥ गोत्र कर्मनि ॥२॥ अंतरायनि ॥५॥ एवं सर्व मलिने ॥१४८॥ प्रकृति जा-
णवि तथा बंधन नामकर्मनि ॥१०॥ प्रकृति ग्रंथांतरे कहि छे ते भेलवतां ॥१५८॥ प्रकृति पण
थाय॥ अथवा मुल प्रकृति ॥८॥ तेहनि उत्तर प्रकृति ॥३१॥ ज्ञाना वरणीयनी ॥५॥ दर्शना-
वरणीयनि ॥९॥ वेदनीयनि ॥२॥ मोहनीयनि ॥२॥ आयुषनि ॥४॥ नामनि ॥२॥ गोत्रनि
॥२॥ अंतरायनि ॥५॥ एवं ॥ ३१ प्रकृति थाय तेहनो विस्तार ॥ १४८ कर्म प्रकृति जाणवि।
ए बोल सिद्धांत प्रमाणे छे ॥ इति कर्म प्रकृतिना बोल समाप्तं ॥

॥ अथ श्री धर्म ध्यान ॥

उववाई सूत्रपाठ—सेकिंतं ॥ धम्मेझाणे १ ॥ चउविहेचउपमयारेपन्नते ॥ तंजहा ॥ आणाविजए ॥१॥ अवायविजए ॥२॥ विवागविजए ॥३॥ संठाणविजए ॥४॥ धम्मस्सणंझाणस्स चत्तारिलरकणा पन्नत्ता ॥ तंजहा ॥ आणारुइ ॥१॥ निसग्गरुइ ॥२॥ सूतरुइ ॥३॥ उवएसरुइ ॥४॥ धम्मस्सणंझाणस्स ॥ चत्तारि आलंबणापन्नता ॥ तंजहा ॥ वायणा ॥१॥ पुछणा ॥२॥ परियट्टणा ॥ ॥३॥ धम्म कहा ॥४॥ धम्मस्सणंझाणस्स ॥ चत्तारिअणुप्पेहा पन्नता ॥ तंजहा ॥ एगत्ताणुप्पेहा ॥ १ ॥ अणिच्चाणुप्पेहा ॥ २ ॥ असरणाणुप्पेहा ॥ ३ ॥ संसाराणुप्पेहा ॥ ४ ॥ ए सूत्र पाठ कह्यो ॥ हवे सूत्रनो अर्थ कहे छे ॥ धर्म ध्यानना चार भेद ॥ ते मांहि पहेला भेदनो अर्थ कहे छे ॥ आणाविजए कहेता वीतरागनी आज्ञानो विचार चींतववो ॥ ते । वीतरागनी आज्ञा जे समकित सहित बार व्रत ॥ श्रावकनी इग्यार पडिमा ॥ पंच महाव्रत । भीखुनीबार पडिमा शुभ ध्यान ॥ शुभ योग ॥ ज्ञान दर्सण चारित्र तप ॥ छकायनी रक्षा ॥ ए ॥ वीतरागनी आज्ञा

आराधवी॥तिहां समय मात्रनो प्रमाद न करवो ॥चतुर्विध तीर्थनां गुण कीर्तन करवां ॥ ए धर्म ध्याननो पहेलो जेद कह्यो॥१॥हवे धर्म ध्याननो बीजो जेद कहे ठे ॥ अवायविजए कहेतां संसारमांहि जीव जेह थकि डुःख पामे ठे तेहनो विचार चीतववो ॥ तेहनो। ए विचार ॥ मिथ्यात्व ॥ अव्रत ॥ प्रमाद ॥ कषाय ॥ असुजयोग ॥ तथा अढार पाप स्थानक ॥ ठकायनी हिंसा । एह डुखना कारण जाणी ॥ एहवो आश्रव मार्ग ठांमीने॥संवर मार्ग आदरवो ॥ जेहथी जीव डुःख न पामे॥ए धर्म ध्याननो बीजो जेद कह्यो॥२॥हवे धर्म ध्याननो त्रीजो जेद कहे ठे॥विवागविजए ॥ कहेतां ॥ जीव जे सुख डुःख जोगवे ठे ॥ ते स्याथकी तेहनो विचार चिंतववो ॥ तेहनो एह विचार ॥ जीवे जेहवे रसे करि पूर्वे ॥ जेहवा शुजाशुज ज्ञाना वरणीयादिक कर्म उपार्ज्यां ठे ॥ ते शुजाशुज कर्मना उदयथी जीव तेहवां सुख डुःख अनुजवे ठे ॥ ते अनुजवता थका ॥ कोइ उपर राग द्वेष न आणीये॥समता जाव आणीए॥मन वचन कायाना शुज योग सहित श्री जैनधर्मने विषे प्रवर्तिये॥ जेम निराबाध परम सुख पामीए॥ ए धर्मध्याननो त्रीजो जेद कह्यो ॥ ३ ॥ हवे धर्म ध्याननो चोथो जेद कहे ठे ॥ संठाणविजए कहेता ॥ त्रण लोकना आकारनु स्वरूप

चिंतवीए॥ तेनुं ए स्वरुप॥ ए लोक सुपइठकने आकारे छे॥ जीव अजीवे संपूर्ण जर्यो छे॥ असंख्यात जोजननी कोमाकोमि प्रमाणे त्रीगो लोक छे॥ तिहां असंख्याता द्वीप समुद्र छे॥ तथा असंख्याता वाणव्यंतरना नगर छे॥ तथा असंख्याता ज्योतिषीना विमान छे॥ तथा असंख्याती ज्योतिषीनी राजधानी छे। तीहां अढी द्वीप मांहि तिर्थंकर जघन्य २०॥ उत्कृष्टा एकसो सितेर होय॥ तथा केवळी जघन्य वे कोमि॥ उत्कृष्टा नव कोमि तथा माधु जघन्य वे हजार कोमि॥ उत्कृष्टा नव हजार कोमि॥ तेहने वंदामि॥ नमंसामि॥ सक्कारेमि॥ संमाणेमि॥ कल्लाणं॥ मंगलं॥ देवयं॥ चेइयं॥ पजुवासामि॥ तथा त्रिण लोकमांहि॥ असंख्याता श्रावक श्राविका छे॥ तेहना गुणग्राम करिये॥ ते त्रिण लोक थकी असंख्यात गुणो अधिको उर्द्ध लोक छे॥ तिहां बार देव लोक॥ नव ग्रैवेयक पांच अनुत्तर विमान सर्व थइने॥ चोरासी लाख सत्ताणु हजार त्रेवीस विमान छे॥ तथा ते उपर सिद्ध सिला छे॥ तिहां सिद्ध जगवंत बिराजे छे॥ तेहने वंदामि॥ जाव पजुवासामि॥ ते उर्द्ध लोकथी कांइक विशेषे अधिक अधो लोक छे॥ तिहां चोरासी लाख नरकावासा छे॥ सात कोमि व्होंतेर लाख जवन-

पतिना जवन छे॥एहवा त्रण लोकनां सर्व स्थानक समकित रहित करणी विना सर्व जीवे अनंती वार जन्म मरणे करी फरसी मूक्या छे॥एम जाणी समकित सहित श्रुत अने चारित्र धर्मनी आराधना करीये॥जेम अजरामर पद पामीये॥ए धर्म ध्याननो चोथो जेद कह्यो ॥४॥ हवे धर्म ध्यानना ४ लक्षण॥तेमां धर्म ध्याननुं पहेलुं लक्षण कहे छे ॥ आणारुइ कहेतां वीतरागनी आज्ञा अंगीकार करवानी रुचि उपजे तेहने आणारुइ कहिये॥ए धर्म ध्याननुं पहेलुं लक्षण कह्युं ॥१॥ हवे धर्म ध्याननुं बीजुं लक्षण कहे छे ॥ निसर्गरुइ कहेतां ॥ जीवने स्वजावेज तथा जाति स्मरणादिक ज्ञाने करी श्रुत सहित चारित्र धर्म करवानी रुचि उपजे॥ तेहने निसर्ग रुचि कहिये॥ए धर्म ध्याननुं बीजुं लक्षण कह्युं॥हवे धर्म ध्याननुं त्रीजूं लक्षण कहे छे ॥ सूत्तरुइ कहेतां॥सूत्रना बे जेद॥अंग पविठ ॥१॥ अने अंग बाहिर ॥२॥ अंग पविठ ते आचारांगादि १२ अंग ॥ तेमां ॥११ अंग ॥कालिक॥अने बारमुं अग दृष्टिवाद ॥ते। उत्कालिक १ अंग बाहिरनां २ जेद॥आवश्यक १ अने ॥ आवश्यक व्यतिरिक्त ॥ आवश्यक ते सामायकादिक ठ अध्ययन ते उत् कालिक॥ तथा उत्तराध्ययनादिक कालिक

चिंतवीए॥ तेनुं ए स्वरुप॥ ए लोक सुपइठकने आकारे छे॥ जीव अजीवे संपूर्ण नर्यो छे॥ असंख्यात जोजननी कोमाकोमि प्रमाणे त्रीजो लोक छे॥ तिहां असंख्याता द्वीप समुद्र छे॥ तथा असंख्याता वाणव्यंतरना नगर छे॥ तथा असंख्याता ज्योतिषीना विमान छे॥ तथा असंख्याती ज्योतिषीनी राजधानी छे। तीहां अढी द्वीप मांहि तिर्थंकर जघन्य २०॥ उत्कृष्टा एकसो सितेर होय॥ तथा केवळी जघन्य बे कोमि॥ उत्कृष्टा नव कोमि तथा साधु जघन्य बे हजार कोमि॥ उत्कृष्टा नव हजार कोमि॥ तेहने वंदामि॥ नमंसामि॥ सक्कारेमि॥ समाणेमि॥ कल्लाणं॥ मंगलं॥ देवयं॥ चेइयं॥ पजुवासामि॥ तथा त्रिछा लोकमांहि॥ असंख्याता श्रावक श्राविका छे॥ तेहना गुणग्राम करिये॥ ते त्रिछा लोक थकी असंख्यात गुणो अधिको उर्ध्व लोक छे॥ तिहां बार देव लोक॥ नव ग्रैवेयक पांच अनुत्तर विमान सर्व थइने॥ चोरासी लाख सत्ताणु हजार त्रेवीस विमान छे॥ तथा ते उपर सिद्ध सिला छे॥ तिहां सिद्ध नगवंत बिराजे छे॥ तेहने वंदामि॥ जाव पजुवासामि॥ ते उर्ध्व लोकथी कांइक विशेषे अधिक अधो लोक छे॥ तिहां चोरासी लाख नरकावासा छे॥ सात कोमि ब्होंतेर लाख नवन-

पतिना नवन छे॥एहवा त्रण लोकनां सर्व स्थानक समकित रहित करणी विना सर्व जीवे अनंती वार जन्म मरणे करी फरसी मूक्या छे॥एम जाणी समकित सहित श्रुत अने चारित्र धर्मनी आराधना करीये ॥ जेम अजरामर पद पामीये ॥ ए धर्म ध्याननो चोथो नेद कह्यो ॥४॥ हवे धर्म ध्यानना ४ लक्षण ॥ तेमां धर्म ध्याननुं पहेलुं लक्षण कहे छे ॥ आणारुइ कहेतां वीतरागनी आज्ञा अंगीकार करवानी रुचि उपजे तेहने आणारुइ कहिये ॥ ए धर्म ध्याननुं पहेलुं लक्षण कह्युं ॥ १ ॥ हवे धर्म ध्याननुं बीजुं लक्षण कहे छे ॥ निसर्गरुइ कहेतां ॥ जीवने स्वनावेज तथा जाति स्मरणादिक ज्ञाने करी श्रुत सहित चारित्र धर्म करवानी रुचि उपजे ॥ तेहने निसर्ग रुचि कहिये ॥ ए धर्म ध्याननुं बीजुं लक्षण कह्युं ॥ हवे धर्म ध्याननुं त्रीजूं लक्षण कहे छे ॥ सूत्तरुइ कहेतां ॥ सूत्रना वे नेद ॥ अंग पविठ ॥ १ ॥ अने अंग वाहिर ॥ २ ॥ अंग पविठ ते आचारांगादि १२ अंग ॥ तेमां ॥ ११ अंग ॥ कालिक ॥ अने बारमुं अंग दृष्टिवाद ॥ ते। उत्कालिक १ अंग वाहिरनां २ नेद ॥ आवश्यक १ अने ॥ आवश्यक व्यतिरिक्त ॥ आवश्यक ते सामायकादिक ६ अध्ययन ते उत् कालिक ॥ तथा उत्तराध्ययनादिक कालिक

सूत्र ॥ तथा उववाइ प्रमुख उत्कालिक सूत्र सांजलवा. तथा जणवानी रुचि उपजे॥ तेहने सूत्र रुचि कहिए ॥ ए धर्म ध्याननुं त्रिजुं लक्षण कह्युं ॥ ३ ॥ हवे धर्म ध्याननुं चोथुं लक्षण कहे छे उवएसरुइ ॥ उवएसरुई. कहेतां अज्ञाने करी उपार्ज्यां कर्म ॥ ते ज्ञाने करी खपावीए ॥ ज्ञाने करी नवा कर्म न बांधीए । मिथ्याते करी उपार्ज्यां कर्म ते समकिते करी खपावीए ॥ समकिते करी नवा कर्म न बांधीए ॥२॥ अव्रते करी उपार्ज्यां कर्म ते व्रते करी खपावीए ॥ व्रते करी नवा कर्म न बांधीए॥३॥प्रमादे करी उपार्ज्यां कर्म ते अप्रमादे करी खपावीए॥अप्रमादे करी नवा कर्म न बांधीए ॥४॥ कषाये करी उपार्ज्यां कर्म ते कषायने अणकरवे करीने खपावीए । कषायने अणकरवे करीने नवा कर्म न बांधीए ॥५॥असुभ योगे करी उपार्ज्यां कर्म ते सुभ योगे करी खपावीए ॥ शुभ योगे करी नवा कर्म न बांधीए॥६॥पांच इंद्रीयना स्वादरुप आश्रवे करी उपार्ज्यां कर्म ते तपरूप संवरे करी खपावीए ॥ तपरुप संवरे करी नवा कर्म न बांधीए ॥ माटे अज्ञानादिक आश्रव मार्ग छांडीने ज्ञानादिक संवर मार्ग आदरवो ॥ एहवो तीर्थंकरनो उपदेश सांजलवानी रुचि उपजे ॥ तेहने उपदेश रुचि कहीए ॥ तथा उगाढ रुचि पण कहीए॥ए धर्म ध्याननुं चोथुं लक्षण

कह्युं ॥ ४। । हवे धर्म ध्यानना चार आलंबन कहे छे ॥ वायणा ॥१॥ पूछणा ॥ २ ॥ परियट्टणा ॥ ३ ॥ धर्म कथा ॥४॥ हवे धर्म ध्याननुं पहेलुं आलंबन कहे छे॥ वायणा ते केहने कहिए॥ विनय सहित ज्ञान तथा निर्जराने अर्थे ॥ सूत्रना अर्थना जाण गुर्वादिक समीपे सूत्र तथा अर्थनी वांचणी लेवी ॥ तेहने वायणा कहीए ॥ए धर्म ध्याननुं पहेलुं आलंबनकह्युं ॥ १ ॥ हवे धर्म ध्याननूं बीजूं आलंबन कहे छे ॥ पूछणा ते केहने कहिए ॥ अपूर्वज्ञान पामवाने अर्थे ॥ तथा जैनमत दीपाववाने अर्थे ॥ तथा संदेह निवारवाने अर्थे ॥ तथा परनी परीक्षा लेवाने अर्थे यथा योग्य विनय सहित गुर्वादिकने प्रश्न पूछीए ॥ तेहने पूछणा कहिए ॥ ए धर्म ध्याननुं बीजूं आलंबन कह्युं ॥ २ ॥ हवे धर्म ध्याननुं त्रीजूं आलंबन कहे छे ॥ परियट्टणा ते केहने कहिए ॥ पूर्वे जे जिनभाषित सूत्र अर्थ भण्या छे ॥ ते असखलित करवाने अर्थे ॥ तथा निर्जराने अर्थे सुद्ध उपयोग सहित सुद्ध सूत्र अर्थनी वारंवार सझाय करे तेहने परियट्टणा कहिए ॥ ए धर्मध्याननूं त्रीजुं आलंबन कह्युं ॥ ३ ॥ हवे धर्मध्याननूं चोथुं आलंबन कहे छे ॥ धर्मकथा ते केहने कहिए ॥ वीतरागे जे भाव जेहवा परूप्या छे ॥ ते भाव पोते

तेहवा लहीने ग्रहीने विशेषे निश्चय करीने शंका कंखा वितिगिछा रहित पणे पोतानी निर्जराने अर्थे परना उपगारने अर्थे सभा मध्ये ते भाव तेहवा परुपीए तेहने धर्मकथा कहीए ॥ एहवी धर्मकथा कहेता थकां अने सांभलीने सरद्दहता थकां॥त बंने वीतरागनी आज्ञाना आराधक होय ॥ ते धर्मकथा संवररूपीउं वृक्ष सेवीए ॥ जेम मनवंछित सुखपामीए॥ ते संवररुपीउं वृक्ष वखाणीए छइए ॥ ते संवररूपीउं वृक्ष केहवो छे ॥ विशुद्ध समकितरुप मूल छे जेहनुं ॥१॥ धीर्यरूप कंद छे जेहनो ॥२॥ विनयरुप वेदिका छे जेहनी ॥३॥ तीर्थंकर तथा चार तीर्थना गुण कीर्तन रुप खंध छे जेहनो ॥४॥ पांच महाव्रतरुप मोटी शाखा छे जेहनी ॥५॥ पचीस भावनारुप त्वचा छे जेहनी ॥६॥ शुभ ध्यानने शुभ योगरूप प्रधान पल्लव पत्र छे जेहनां ॥ ७ ॥ गुणरुप फूल छे जेहनां ॥ ८ ॥ सीयलरुप सुगंध वासना छे जेहनी ॥ ए ॥ आश्रवरहीत फल छे जेहनां ॥१०॥ मोक्षरूप प्रधान बीज छे जेहनुं ॥११॥ मेरु गिरिना शिखर उपरे जेम चूलिका बिराजे छे तेम समकितीना हृदयमां संवररुपिउं वृक्ष बीराजे छे ॥ १२ ॥ एहवा संवररुप वृक्षनी शीतल छांया जेहनें परिणमे तेहना भवोभवना पाप टळे ॥ ने ते परम अतुल सुख पामे इत्यादिक ॥४॥

प्रकारनी कथा अदेवणी ॥ १ ॥ विदेवणी ॥ २ ॥ संवेगणी ॥ ३ ॥ निर्वेगणी ॥४॥ ए चार कथा विस्तारपणे कहे तेहने धर्मकथा कहीए ॥ ए धर्मध्याननुं चोथुं आलंबन कह्युं ॥ ४ ॥ अदेवणी प्रमुख ४ कथानो विस्तार ॥ चोथे ठाणे उद्देशे बीजे सूत्र ५८ मां मध्ये छे ॥ हवे धर्मध्याननी चार अणुप्पेहा कहे छे ॥ अणुप्पेहा ते केहने कहिए ॥ जीवद्रव्य अने अजीवद्रव्य तेहनो स्वन्नाव स्वरूप जाणवाने अर्थे सूत्रना अर्थ विस्तारे चीतवीए ॥ तेहने अणुप्पेहा कहिए ॥ हवे धर्मध्याननी पहेली अणुप्पेहा कहेछे ॥ एकच्चाणुप्पेहा ते केहने कहिए ॥ जीव असंख्यात प्रदेसी अरुपी सदा स उपयोगी ते ॥ चैतन्यरूप एहवो एक माहरो आत्मा निश्चय नये छे ॥ तेम सर्व आत्मा निश्चय नये एहवाज छे ॥ अने व्यवहार नये एहवो आत्मा अनादि कालनो ते अचैतन जरू वर्णादि २० रूप सहित पुद्गलनो संयोगी थको ॥ त्रस ने स्थावर रूप लेइने अनेक नृत्यकार नटुयानीपरे अनेक रूप ॥ अनेक ठांदे प्रवर्ते छे ॥ ते त्रसनो त्रसरूपे प्रवर्त्ते तो जघन्य अंतर्मुहुर्त्त उत्कृष्टो वे हजार सागर जाजेरा सुधी रहे ॥ अने स्थावरनो स्थावरपणे प्रवर्त्ते तो जघन्य अंतर्मुहुर्त्त उत्कृष्टो अनंती उत्सर्पणी अवसर्पणी ॥

कालथी क्षेत्रथी अनंता लोक प्रमाण अलोकना आकाश प्रदेश ॥ तेटला काल चक्र ॥ उत्सर्पणी अवसर्पणी जाणवी ॥ तेहना असंख्याता पुद्गल परावर्त्तन थाय ॥ अंगुलने असंख्यातमे भागे आकास प्रदेश आवे ॥ तेटला असंख्याता पुद्गल परावर्त्तन थाय ॥ स्थावर मध्ये पुद्गल लइ खेल्यो ॥ ए व्यवहार नयथी जीव जाणीए ॥१॥ वली त्रस स्थावर मध्ये रह्यो थको स्त्री पुरुष नपुंसक वेदे पुद्गलने संयोगे खेल्यो ॥ प्रवर्त्यो ॥ अनेक रूप नवा लाव्यो ॥ तिहां स्त्रीपुरुषना रूप कोंण कोंण रीतना करी लाव्यो ते कहे छे ॥ कोइक प्रस्तावे देव देवीपणे ॥ तिहां देवीपणे भवनपत्यादिक इसान देव लोक सुधी इंद्रनी इंद्राणी सुरूपवंती अपसरा थई ॥ जघन्य १० हजार वरस उत्कृष्टा ५५ पल्योपम देवांगनाने रूपे अनंतिवार जीव खेल्यो ॥ पुरुष मध्ये देवतापणे भवनपत्यादिक जाव नवमां नव ग्रैवेयक सुधी महर्धिक देव ॥ महा शक्तिवंत इंद्रादिक लोकपाळ प्रमुखपणे रूपवंत देदीप्यमान वंछित भोग संयोग पणे प्रवर्त्यो ॥ जघन्य ॥१०॥ हजार वर्ष उत्कृष्टा ३१ सागरोपम एम अनंतीवार भोगी थयो ॥ इंद्रमहाराजे एक भवमांहि ७ पल्योपमनी देवी बाविस क्रोडाक्रोड पंचासी लाख क्रोड एकोतेर हजार क्रोड चारसे

अठ्यावीस कोरू सतावन लाख चौद हजार बसे अठ्यासी उपर पांच पल्यनी ए ए-
टली देवि जोगवी तोपण तृप्ति न पाम्यो ॥ मनुष्य मध्ये स्त्रीवेद पुरुषवेद देव कुरु उत्तर-
कुरु मध्ये युगल युगलणी थयो ॥ तिहां महा मनोहर रुप मनवंछित सुख जोगव्यां ॥
दस प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछित सुख लिधां ॥ स्त्री पुरुषने क्षिण मात्रनो वियोग न परूे
॥ ३ पल्योपम निरंतर सुख विलस्यां ॥ हरिवास रमकवास मध्ये २ पल्योपम ॥ हे-
मवय क्षेत्र एरणवय क्षेत्र मध्ये १ पल्य ॥ छपन अंतरदीपा मध्ये पल्योपमनो असंख्यात-
मो जाग ॥ युगल युगलणी पणे अनंती वार ॥ स्त्री वेद पुरुष वेदनां रुप लेइ खेल्यो
पण आत्मा तृप्ति न पाम्यो ॥ वली चक्रवर्तिने घरे स्त्री रत्नपणे लक्ष्मी सरिखा रुप अनं-
तीवार ॥ स्त्री वेद पुरुष वेदना रुप जीव लेइ खेल्यो ॥ पण तृप्ति न पाम्यो ॥ वासुदेव मंरूलीक
राजा ॥ प्रधान व्यवहारीयाने घरे ॥ स्त्री वेद ॥ मनोज्ञ सुख वंछित जोग ॥ दीर्घ पूर्वकोरू-
दिकनां आउखा पणे प्रवर्त्यों ॥ वलि तेहज जीव मनुष्य मध्ये कुरुपवान दुर्नागी निच कुल ॥
दरीद्री जर्त्तार ॥ स्त्री पण अलछरुप दुर्जागिणी पणे जीव नटवापणे प्रवर्त्यों ॥ तोहि मनुष्य-

गणे स्त्री पुरुषनो अवतार पूरो न थयो ॥ वली तीर्यंच पंचेंद्रीय जलचरादि ५ मध्ये स्त्री वेदे पुरुष वेदे प्रवर्त्यों ॥ वली ते जीव सात नरक ॥ पांच एकेंद्रीय ॥ त्रण विकलेंद्रीय तथा असंज्ञी तिर्यंच मनुष्य मध्ये नियमां नपुंसक वेद होय अने संज्ञी तिर्यंच मनुष्य मध्ये पण नपुंसक होय ते सर्वे नपुंसक वेदे जीव प्रवर्त्यों ॥ परमार्थे लागठ स्त्री वेदे प्रवर्त्यों ते उत्कृष्टा एकसो दस पल्य अने प्रथक पूर्व क्रोड सुधी स्त्री वेदे खेल्यो ॥ जघन्य आउखा जोगव्या आश्री अंतर्मुहुर्त्त ॥ पुरुष वेदे उत्कृष्टो पृथक् सो सागर जाझेरा सुधी पुरुष वेद मध्ये खेल्यो ॥ जघन्य आउखा जोगव्या आश्री अंतर्मुहुर्त्त ॥ नपुंसक वेदे उत्कृष्टो अनंता कालचक्र ॥ असंख्याता पुद्गल परावर्त्तन सुधी नपुंसक वेदे खेल्यो ॥ जघन्य आउखा जोगव्या आश्री अंतर्मुहुर्त्त ॥ जिहां गयो तिहां एकलो पुद्गलने संयोगे अनेक रुप परावर्त्तन कीधां ए सर्व व्यवहार नय जीवने विषे जाणवो ॥ एवा प्रवर्त्तननो मिटावणहार ते श्री जैन धर्मने विषे शुद्ध सद्दहणा सहित शुद्ध उद्यम पराक्रमनुं फोरववुं ॥ एहवा शुद्ध जैनमते करी आत्मानुं साधन थाय ॥ ते वारे सिद्धपणुं पामे ॥ तत्र एकलोज निश्चय

नय आत्मा जाणवो ॥ ते माटे शुद्ध व्यवहारे प्रवर्त्ते ॥ अशुद्ध व्यवहार मटाडे ॥ तेवारे सिद्ध होय एहवो माहरो एक आत्मा छे ॥ जे जणी अपर परिवार ते स्वार्थ रूपी छे ॥ अने पउगसा १ मीससा २ वीससा ३ पुद्गल ते वर्ण पर्यवे करी जे जेहवे स्वभावे छे ॥ ते तेहवे स्वभावे न रहे ते पण असास्वता ते माटे एक माहरो पोतानो आत्मा पोताना कार्यनो साधक सास्वतो जाणीने पोताना आत्मानुं साधन करीये ॥ ए धर्म ध्याननी पहेलो अणुप्पेहा कही ॥ हवे धर्मध्याननी बीजी अणुप्पेहा कहे छे ॥ अणी चाणुप्पेहा ते केहने कहिये रूपी पुद्गलने अनेक प्रकारे यतना करिए ॥ तोपण अनित्य ॥ नित्य एक श्री जैनधर्म परम सुखदायक पोताना आत्माने ॥ ते माटे आत्मा नित्य जाणीने समकितादिक संवरे करि पुष्टो करीये ॥ ए धर्म ध्याननी बीजी अणुप्पेहा कही ॥ २ ॥ हवे धर्म ध्याननी त्रीजी अणुप्पेहा कहे छे ॥ असरणाणुप्पेहा ते केहने कहिये आ भवने विषे अने परभव पहोंचतां जीवने एक समकित पूर्वक जैन धर्म विना जन्म जरा मरणना दुख निवारवा बीजो कोइ सरण समर्थ नथी ॥ एम जाणी श्री जैन धर्मनुं सरण करीये ॥

जेम परम सुख उपजे ॥ ए धर्मध्याननी त्रीजी अणुप्पेहा कही ॥ ३ ॥ हवे धर्म ध्याननी, चोथी अणुप्पेहा कहे छे ॥ संसाराणुप्पेहा ते केहने कहिये ॥ स्वार्थरुप संसार समुद्र मांहे ॥ जन्म जरा मरण संयोग वियोग सारीरी मानसी दुख कषाय मिथ्यात्व तृष्णारुप घणा जल कल्लोलादिकनी लहेरे करी ॥ चार गति चोवीस दंडक.ने विषे परिभ्रमण करतां जगत जीवने श्री जैन धर्मरुप द्वीपानो आधार छे ॥ तथा संजमरुप नावा तिहां सुद्ध समकितरुप निर्जामक नावानो खेवणहार छे ॥ एहवी नावाये करी जीव सिद्धिरुप महा नगरने विषे पहोंचे ॥ तिहां अनंत अतुल विमल सिद्धना सुख जीव पामे ॥ ए धर्म ध्याननी चोथी अणुप्पेहा कही ॥ ४ ॥ एहवा धर्म ध्यानना गुण जाणिने सदा धर्म ध्यान ध्याइये जेम परम सुख पामीये ॥ इति धर्मध्यान संपूर्ण ॥

अथ श्री पांच बोल.

पहेलो नारकिनो द्वार ॥ १ ॥ बिजो भवनपतिनो द्वार ॥ २ ॥ त्रिजो वाणव्यंतरनो

द्वार ॥ ३ ॥ चोथो ज्योतिषीनो द्वार ॥ ४ ॥ पांचमो वैमानिकनो द्वार ॥ ५ ॥ हवे पहेलो नरकनो द्वार कहे छे ॥ पहेले नाम ॥ १ ॥ बिजे गोत्र ॥ २ ॥ त्रिजे अर्थ ॥ ३ ॥ चोथे पिंड ॥ ४ ॥ पांचमे पोलार ॥ ५ ॥ छठे अलोक ॥ ६ ॥ सातमे आधार ॥ ७ ॥ आठमे आंतरा ॥ ८ ॥ नवमे पुष्फाविकोर्ण ने आवलिका बंध ॥ ए ॥ दशमे अंधकार ॥ १० ॥ इग्यारमे नारकि ने उपजवाना स्थानक ॥ ११ ॥ बारमे क्षेत्र वेदना ॥ १२ ॥ तेरमे पनर परमाधामिना नाम ॥ १३ ॥ चौदमे जीव अजीवना परिणाम ॥ १४ ॥ पनरमे नारकि ने अवधिनुं देखवुं ॥ १५ ॥ सोलमे संघयण ॥ १६ ॥ सतरमे कोण जीव कइ नरके उपजे ॥ १७ ॥ अढारमे ॥४॥ बोल कहेवाशे ॥ पहेले नाम कहे छे ॥ घमा ॥१॥ वंशा ॥ २ ॥ शिला ॥३॥ अंजणा ॥ ४ ॥ रिठा ॥ ५ ॥ मघा ॥ ६ ॥ माघवइ ॥ ७ ॥ ए साते उंधा छत्रने आकारे छे ॥ १ ॥ बीजे गोत्र कहे छे ॥ रत्न प्रभा ॥ १ ॥ शर्कर प्रभा ॥ २ ॥ वालु प्रभा ॥ ३ ॥ पंक प्रभा ॥ ४ ॥ धूम प्रभा ॥ ५ ॥ तम प्रभा ॥ ६ ॥ तमतमा प्रभा ॥ ७ ॥ रत्न प्रभा ने स्यामाटे सोल हजार जोजननो खरकांड छे ॥ ते ॥ सोल जातिना रत्नमय छे । एकेकुं रत्न हजार हजार जोज-

ननुं जाम्हपणे छे ॥ बळया कोयला शरिखा छे । तेमांहि ७० हजार जोजननो आउ बल छे ॥ अने ॥ ७४ हजार जोजननो पंक बल छे एम त्रणे कांम्ह थइने ॥ एक लाख ने एंशी हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंम्ह जाणवो ॥ २ ॥ त्रिजे अर्थ कहे छे ॥ रत्न प्रभा ते रत्ननो पिंम्ह ने रत्ननि पिठिका । ते रत्न केहवा छे । श्याम वर्णा बल्या कोयला सरिखां छे ॥ १ ॥ शर्कर प्रभा ते कांकरानो पिंम्ह ने कांकरानि पिठिका ते कांकरा केहवा छे । लुखा निरस गोखरुना कांटा सरिखो स्परस छे ॥ २ ॥ वालु प्रभा ते वेलुनो पिंम्ह ने वेलुनि पिठिका ते वेलु केहवि छे । उन्हि धगधगति । अग्निनि परे जाज्वल्यमान छे ॥३॥ पंक प्रभा ते कादवनो पिंम्ह ने कादवनि पिठिका ते कादव केहवो छे । लोहिमय परुमय ने वज्रमय कांटा छे ॥ ४ ॥ धूम प्रभा ते धुमाम्हानो पिंम्ह ने धूमाम्हानि पिठिका ॥ ते धूमाम्हो केहवो छे तिखो तमतमो ने दरदरो छे ॥५॥ तम प्रभा ते अंधकारनो पिंम्ह ने अंधकारनी पिठिका ॥६॥ तमतमा प्रभा ते विशेषे अंधकारनो पिंम्ह ने अंधकारनी पिठिका ॥७॥३॥ चोथो पिंम्हने पांचमो पोलार ए बे द्वार भेळा कहे छे । पहेली नरके । एक लाख ने एंशी हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंम्ह छे । तेहमांथि । एक हजार जोजन उंचुं मुकिये ॥

एक हजार जोजन, निचुं मुकिये ॥ वचे १ लाख ने अठोत्तेर हजार जोजननी पोलार छे ॥ ते मांहि ॥ १३ पाथरा ने ३० लाख नरकावासा छे ॥ १ ॥ बीजी नरके एक लाख ने बत्रिश हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंड छे । तेहमांथि एक हजार जोजन ऊंचु मुकिये ॥ एक हजार जोजन निचुं मुकिये ॥ वचे एक लाख ने ३० हजार जोजननि पोलार छे ॥ तेमांहि ११ पाथरा ने ॥ २५ लाख नरकावासा छे ॥ २ ॥ त्रिजी नरके एक लाख ने अठयाविश हजार जोजननो पृथ्वी पिंड छे । तेहमांहि ॥ १ हजार जोजन ऊंचुं मुकिये ॥ १ हजार जोजन निचुं मुकिये वचे ॥ एक लाख ने छविश हजार जोजननो पृथ्विनो पिंड छे । तेमांहि ॥ ए पाथरा ने १५ लाख नरकावासा छे ॥ ३ ॥ चोथि नरके एक लाख ने २० हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंड छे ॥ तेहमांथि ॥ १ हजार जोजन ऊचुं मुकिये ॥ १ हजार जोजन निचुं मुकिये वचे ॥ एक लाख ने १८ हजार जोजननि पोलार छे । तेमांहि ॥ ७ पाथरा ने ॥ १० लाख नरका वासा छे ॥ ४ ॥ पांचमि नरके एक लाख ने अढार हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंड छे । तेहमांथि एक हजार जोजन ऊंचुं मुकिये एक हजार जोजन निचुं मुकिये ॥ वचे एक लाख ने १६ हजार जो-

जननि पोलार छे ॥ तेह्मांहि ॥ ५ पाथरुा ने ॥ ३ लाख नरकावासा छे ॥ ५ ॥ छठी नरके एक लाख ने ॥ १६ हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंरु छे ॥ तेह्मांथि । एक हजार जोजन ऊंचुं मुकिये ॥ एक हजार जोजन निचुं मुकिये वचे ॥ १ लाख ने ॥ १४ हजार जोजननि पोलार छे ॥ तेह्मांहि ॥ ३ पाथरुा ने १ लाखमां ॥ ५ ऊणां ॥ नरकावासा छे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥ १ लाख ने ॥ ८ हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंरु छे ॥ तेह्मांथि । साराबावन हजार जोजन ऊंचुं मुकिये ॥ साराबावन हजार जोजन निचुं मुकिये ॥ वचे ३ हजार जोजननो जारुो एक पाथरुो छे तेह्मांहि ॥ ५ नरकावासा छे ॥ ७ ॥ ५ ॥ छठे अलोक कहे छे ॥ पहेली नरकथि ॥ १२ जोजन जइये तिवारे त्रिछो अलोक आवे ॥१॥ बिजी नरकथि ॥ १२ जोजन ने ॥ २ त्रिया भागे त्रिछो अलोक आवे ॥ २ ॥ त्रिजी नरकथि ॥ १३ जोजन ने ॥ १ त्रिया भागे त्रिछो अलोक आवे ॥ ३ ॥ चोथि नरकथि ॥ १४ जोजन त्रिछो अलोक आवे ॥ ४ ॥ पांचमि थी ॥ १४ जोजन ने २ त्रियाभागे त्रिछो अलोक आवे ॥ ५ ॥ छठीथि ॥ १५ जोजन ने १ त्रिया भागे त्रिछो अलोक आवे ॥६॥ सातमी नरके ॥ १६ जोजने त्रिछो अलोक आवे ॥७॥६॥ सातमे

आधार कहे छे। साते नरक सेने आधारे रहि छे ॥ २० हजार जोजननो घनोदधि जाडपणे छे॥ असंख्याता जोजननो लांब पणे पहोल पणे छे ॥ असंख्याता जोजननि परिधि छे ॥ ते थिणा घी सरिखो जाणवो ॥ असंख्याता जोजननो घनवाय छे ॥ ते विघर्या घी सरिखो जाणवो ॥ असंख्याता जोजननो तनुवाय छे ॥ ते तपाव्या घी सरिखो जाणवो ॥ तेहने आधारे ७ नर्क रहि छे ॥ एकेकि नरके त्रण त्रण वळाका छे ॥ असंख्याता जोजननो आकाशास्तिकाय छे। विश हजार जोजननो घनोदधि जाडपणे छे तेहने जाता छ जोजननो रह्यो ॥ पेहली नरके छ जोजननो घनोदधि ॥ १ ॥ बिजी नरके छ जोजन ने ॥ १ त्रियोभाग ॥२॥ त्रिजी नरके छ जोजन ने ॥ २ त्रियाभागे ॥ चोथी नरके ॥ ७ जोजननो घनोदधि ॥ ४ ॥ पांचमी नरके ७ जोजन ने ॥ १ त्रियोभाग ॥ ५ ॥ छठी नरके ॥ ७ जोजन ने ॥ २ त्रियाभाग ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥ ८ जोजननो घनोदधि ॥ ७ ॥ असंख्याता जोजननो घनवाय छे तेहने जातां साडा-चार जोजननो रह्यो पहेलि नरके साडा चार जोजननो घनवाय छे ॥ १ ॥ बिजी नरके पोणा पांच जोजननो घनवाय छे ॥ २ ॥ त्रिजी नरके ॥ ५ जोजननो घनवाय छे ॥ ३ ॥ चोथी

नरके सवा पांच जोजननो घनवाय छे ॥ ४ ॥ पांचमी नरके साढा पांच जोजननो घनवाय छे ॥५॥ छठी नरके पोणा छ जोजननो घनवाय छे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ६ जोजननो घनवाय छे ॥ ७ ॥ असंख्याता जोजननो तनुवाय छे छेहडे जांता दोढ जोजननो रह्यो ॥ पहेली नरके दोढ जोजननो तनुवाय ॥ १ ॥ बिजी नरके दोढ जोजन ने १ बारियो भाग ॥२॥ त्रिजी नरके दोढ जोजन ने २ बारिया भाग ॥३॥ चोथी नरके दोढ जोजन ने ३ बारिया भाग ॥ ४ ॥ पांचमी नरके दोढ जोजन ने ४ बारिया भाग ॥५॥ छठी नरके दोढ जोजन ने ५ बारिया भाग ॥ ६ ॥ सातमी नरने २ जोजननो तनुवाय छे ॥७॥तेह ने आधारे ७ नरक रहि छे॥७॥आगमे आंतरा कहे छे॥पहेली नरके ॥ १३ पाथडा ने ॥ १२ आंतरा छे ॥ एकेका पाथडाने ॥ ११५८३ ॥ इग्यार हजार पांचसें त्यासी जोजन ने ॥ १ त्रिया भागनुं आंतरुं ॥ १ ॥ बिजी नरके ॥ ११ पाथडा ने ॥ १० आंतरा । एकेका पाथडाने ९७०० सताणुंसें जोजननुं आंतरुं ॥ २ ॥ त्रिजी नरके ९ पाथडा ने ॥ ८ ॥ आंतरा । एकेका पाथडाने ॥ १२३७५ ॥ बार हजार त्रणसें पंचोतेर जोजननुं आंतरुं ॥ ३ ॥ चोथी नरके ॥ ७ पाथडा ने ६ आंतरा छे । एकेका पाथडा ने ॥

१६१६६ ॥ सोल हजार एकसो छासठ जोजन ने ॥ २ त्रिया त्रागनुं आंतरु ॥ ४ ॥ पांचमी नरके ॥ ५ पाथडा ने ॥ ४ आंतरा ॥ अकेका पाथडाने २५२५० ॥ सवा पचीश हजार जोजननुं आंतरुं ॥ ५ ॥ छठी नरके ॥ ३ पाथडा ने ॥ २ आंतरा ॥ एकेका पाथडाने ॥ ५२५०० ॥ साडा बावन हजार जोजननुं आंतरुं ॥ ६ ॥ सातमी नरके १ पाथडो छे ॥ आंतरुं नथि ॥७॥८॥ हवे नवमे पुष्पाविकीर्ण ने आवलिका वंध नरकावासा कहे छे ॥ पहेली नरके २९९५५६७ ॥ ओगणत्रीश लाख पंचाणु हजार पाचसे सडसठ पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने ४४३३ चुमालिसे तेत्रीस पंक्तिवंध नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मळीने ३० लाख ॥ १ ॥ बिजी नरके २४९७३०५ ॥ चोविस लाख सताणु हजार त्रणसे पांच पुष्पाविकीर्ण नरका वासा छे । अने २६९५ छविसें पंचाणु पंक्ति वंध नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मळीने ॥ २५ लाख ॥ २ ॥ त्रिजी नरके १४९८५१५ चौद लाख अठाणुं हजार पांचसे पंदर पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे । अने १४८५ चौदसे पच्यासी पंक्ति वंध नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मळीने ॥ १५ लाख ॥ ३ ॥ चोथी नरके ९९९२९३ ॥ नव लाख नवाणुं

हजार बसें त्राणुं पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे । अने ७०७ सातसें सात पंक्तिबंध नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मळीने ॥ १० लाख ॥ ४ ॥ पांचमी नरके ॥ २ए९७३५ ॥ बे लाख नवाणु हजार सातसें पांत्रीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने ॥ २६५ बसें पांसठ पंक्तिबंध नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मलिने ॥ ३ लाख ॥५॥ छठि नरके ॥ एएए३२ नवाणुं हजार नवसें बत्रीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने ६३ पंक्ति बंध नरकावासा छे ॥ सर्व मली एएएएए५ ॥६॥ सातमी नरके ॥ ५ पंक्ति बंध छे ॥ साते नरकना ८३ए०३४७ ॥ त्यासी लाख नेवुं हजार त्रणसें सुमतालीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने साते नरकना ए६५३ ॥ नव हजार छसें त्रेपन पंक्ति बंध नरकावासा छे ॥ सर्व मळी ८४ लाख नरकावासा जाणवा ॥ ए ॥ दशमे अंधकार कहे छे ॥ नरकनो अंधकार ॥ १ ॥ अशुभ पुद्गलनो अंधकार ॥ २ ॥ १० ॥ इग्यारमे नारकिने उपजवाना स्थानक कहे छे ॥ कुंभिने आकारे ॥ १ ॥ घमाने आकारे ॥ २ ॥ पेटिने आकारे ॥ ३ ॥ कुंमाने आकारे ॥ एवं नाना विध विषम स्थानके उपजे ॥ ११ ॥ बारमे क्षेत्र वेदना कहे छे ॥ क्षुधा ॥ १ ॥ तृषा ॥ २ ॥ शित ॥ ३ ॥ उष्ण ॥ ४ ॥ दाह

॥ ५ ॥ ज्वर ॥ ६ ॥ भय ॥ ७ ॥ शोक ॥ ८ ॥ खरज ॥ ९ ॥ परवश ॥ १० ॥ ए १० प्रकारनि
अनंति वेदना छे ॥ १२ ॥ तेरमे ॥ १५ परमाधामिना नाम कहे छे ॥ अंब ॥ १ ॥ अंबरिस
॥ २ ॥ शाम ॥ ३ ॥ सबल ॥ ४ ॥ रुद्र ॥ ५ ॥ वैरुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महा काल ॥८॥
अशि पत्र ॥९॥ धनूष ॥१०॥ कुंभ ॥११॥ वालु ॥१२॥ वेतरणी ॥१३॥ खर स्वर ॥१४॥ महा-
घोष ॥१५॥ ॥१३॥ हवे चौदमे जीव अजीवना परिणाम कहे छे॥ जीवपरिणामना ॥१० भेद
ते ॥ गति परिणाम ॥१॥ इंद्रिय परिणाम ॥२॥ कसाय परिणाम ॥३॥ लेसा परिणाम ॥४॥ जोग
परिणाम ॥५॥ उपयोग परिणाम ॥६॥ नाण परिणाम ॥७॥ दंसण परिणाम ॥८॥ चरित्त परिणाम
॥९॥ वेद परिणाम ॥१०॥ हवे अजीव परिणामना १० भेद कहे छे ॥ बंधन परिणाम ॥ १ ॥ गति-
परिणाम ॥२॥ संठाण परिणाम ॥३॥ भेद परिणाम ॥४॥ वर्ण परिणाम ॥५॥ गंध परिणाम ॥६॥
रस परिणाम ॥७॥ स्पर्स परिणाम ॥८॥ अगुरु लघु परिणाम ॥९॥ शब्द परिणाम ॥१०॥ १४ ॥
पनरमे अवधिज्ञाने देखवुं कहे छे ॥ पहेली नरकना नारकि । जघ० साढा त्रण गाउ देखे ।
उत्० चार गाउ देखे ॥ १ ॥ बिजीना । जघ० ३ गाउ । उत० साढा त्रण गाउ देखे ॥२॥

त्रिजीना जघ० अढि गाउ । उत्० त्रण गाउ देखे ॥३॥ चोथिना । जघ० । बे गाउ । उत्० अढि गाउ देखे ॥४॥ पांचमीना जघ० दोढ गाउ। उत्० ॥ २ गाउ देखे ॥५॥ छठिना जघ०१ गाउ। उत्० दोढ गाउ देखे ॥६॥ सातमीना जघ० । अर्द्ध गाउ ॥ उत्० ॥ १ गाउ देखे ॥७॥ ॥१५॥ सोलमे संघयण कहे छे ॥ पहेली बिजी नरके छ संघयणनो धणि जाय ॥ त्रिजी नरके छेवटु वर्जिने पांच संघयणनो धणि जाय ॥ चोथिये किलकु ॥ १ ने छेवटु ॥२॥ ए ॥ २ वर्जिने ॥ ४ संघयणनो धणि जाय ॥ पांचमी नरके ॥ ३ संघयणनो धणि जाय ते किलकु ॥ १ ॥ छेवटु ॥ २ ॥ अर्द्ध नाराच ए ३ वर्जिने ॥ छठी नरके । वज्र ऋषभ नाराच संघयण ॥१॥ ने ऋषभ नाराच संघयण ॥ २ ॥ ए ॥ २ नो धणि जाय। सातमीये ॥ १ वज्र ऋषभ नाराच संघयणनो धणि जाय ॥१६॥ सत्तरमे कोण जीव केइ नरके उपजे ते कहे छे ॥ असंज्ञी तिर्यंच पहेली नरक सुधि उपजे ॥१॥ भुजपर बीजी सुधि उपजे ॥२॥ खेचर तिर्यंच त्रिजी नरक सुधि उपजे ॥३॥ थलचर तिर्यंच चोथि नरक सुधि उपजे ॥४॥ उरपर तिर्यंच पांचमी नरक सुधि उपजे ॥ ५ ॥ स्त्री छठी नरक सुधि उपजे ॥ ६ ॥ सातमी नरके जलचर मछ ने संज्ञि मनुष्य

आवि उपजे ॥ ७ ॥ १७ ॥ अढारमे अशुभ वर्ण ॥ १ ॥ गंध ॥ २ ॥ रस ॥ ३ ॥ स्पर्स भोगवता थका नारकि विचरे छे ॥ १८ ॥ इति नारकिनो बोल समाप्तं ॥ १ ॥ हवे बिजो भवनपतिनो द्वार कहे छे ॥ पहेले नाम ॥ १ ॥ बिजे चिन्ह ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण ॥ ३ ॥ चोथे वस्त्र ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक ॥ ५ ॥ छठे आत्म रक्षक ॥ ६ ॥ सातमे देवांगना ॥ ७ ॥ आठमे अणिका ॥ ८ ॥ नवमे अणिकाना अधिपति ॥ ९ ॥ दशमे उद्योत ॥ १० ॥ इग्यारमे परिषद् ॥ ११ ॥ बारमे लोकपाल ॥ १२ ॥ तेरमे त्रायत्रिंशक ॥ १३ ॥ चौदमे ४ बोल ॥ १४ ॥ पहेले नाम कहे छे ॥ असुर कुमार ॥ १ ॥ नाग कुमार ॥ २ ॥ सुवर्ण कुमार ॥ ३ ॥ विज्जु कुमार ॥ ४ ॥ अग्नि कुमार ॥ ५ ॥ द्विप कुमार ॥ ६ ॥ उदधि कुमार ॥ ७ ॥ दिशा कुमार ॥ ८ ॥ पवन कुमार ॥ ९ ॥ थणित कुमार ॥ १० ॥ १ ॥ बिजे चिन्ह कहे छे ॥ असुर कुमारने चुडामणि मुगटनुं चिन्ह ॥ १ ॥ नाग कुमारने फेणनुं चिन्ह ॥ २ ॥ सुवर्ण कुमारने गरुडनुं चिन्ह ॥ ३ ॥ विज्जु कुमारने वज्रनुं चिन्ह ॥ ४ ॥ अग्नि कुमारने कलशनुं चिन्ह ॥ ५ ॥ द्विप कुमारने सिंहनुं चिन्ह ॥ ६ ॥ उदधि कुमारने घोडानुं चिन्ह ॥ ७ ॥ दिशा कुमारने गजनुं चिन्ह ॥ ८ ॥ पवन कुमारने मगरमछनुं

चिन्ह ॥९॥ थणित कुमारने संपुष्टनुं चिन्ह ॥ १० ॥ २ ॥ हवे त्रिजे वर्ण कहे छे ॥ असुर कुमारनो श्याम वर्ण ॥ नाग कुमार ने उदधि कुमारनो धोलो वर्ण ॥ विज्जु कुमार अग्नि कुमार ने द्वीप कुमारनो रातोवर्ण ॥ सुवर्ण कुमार दिशा कुमार ने थणित कुमारनो पीलो वर्ण ॥ पवन कुमारनो निलोत्पल कमल सरिखो निलो वर्ण ॥३॥ हवे चोथे वस्त्र कहे छे ॥ राता निला पिला धोळा विविध प्रकारना ते पण संध्याना रंग सरिखा जाणवा ॥४॥ हवे पांचमे सामानिक कहे छे ॥ दक्षिण दिशना चमरेंद्रने चोसठ हजार सामानिक छे ॥ उत्तर दिशाना बलेंद्रने ॥ ६०००० साठ हजार सामानिक छे ॥ धरणेंद्रादिक ॥ १८ ॥ इंद्रने छ हजार सामानिक छे ॥ ५ ॥ छ आत्मरक्षक ते सामानिक थि चोगुणा जाणवा ॥६॥ सातमे देवांगना कहे छे ॥ चमरेंद्र तथा बलेंद्रने पांच पांच देवीओ जाणवी ॥ एकेकि देवी आठ आठ हजार रूप वैक्रेय करे धणि भोगववाने अर्थे धणि पण एटला रूप वैक्रेय करे ॥ धरणेंद्रादिक १८ इंद्रने छ छ देविओ जाणवि ॥ एकेकी देवी छ छ हजार रुप वैक्रेय करे धणि भोगववाने अर्थे धणि पण एटला रूप वैक्रेय करे ॥ ७ ॥ हवे आठमे अणिका ॥ ७ कहे छे ॥ गंधर्व ॥ १ ॥ नट ॥ २ ॥ हय ॥ ३ ॥

गय ॥ ४ ॥ रथ ॥ ५ ॥ सुन्नट ॥ ६ ॥ महीष ॥ ७ ॥ ८ ॥ नवमे बोले अणिकाना अधिपति एमज जाणवा ॥ ए ॥ हवे १० मे उद्योत कहेछे ॥ देवतानो उद्योत ॥ १ ॥ देवीउंनो उद्योत ॥ २ ॥ आन्नरणनो उद्योत ॥ ३ ॥ शुन्न पुज्जलनो उद्योत ॥ ४ ॥ १० ॥ हवे ११ मे त्रण परिषद कहेछे ॥ दक्षिण दिशाना चमरेंद्रनी ३ परिषद । समीया ॥ १ ॥ चंन्मा ॥ २ ॥ जाया ॥ ३ ॥ समीयानो ॥ २४ हजारनो परिवार ॥ १ ॥ चंन्मानो ॥ २८ हजारनो परिवार ॥ २ ॥ जायानो ॥ ३२ हजारनो परिवार ॥३॥ समीया तेन्मया आवे ने मोकल्या जाय ते साथे गुऊ वात करे ॥ १ ॥ चंन्मा तेन्मया आवे ने अणमोकल्या जाय ते साथे गुऊ वात न करे अने करणकरावण करे ॥ २ ॥ जाया अण तेन्मया आवे ने अणमोकल्या जाय एहने कामकाज दिये ॥ ३ ॥ हवे एहना नवनी कायना देवतानि ॥ ३ परिषद तेसांहि अन्यंतर परिपदना ॥ ६०००० ॥ साठ हजार ॥ १ ॥ मऊम परिषदना ॥ ७०००० ॥ सितेर हजार ॥ २ ॥ वाहिरलि परिपदना ॥ ८०००० ॥ ऐसी हजार ॥ ३ ॥ दक्षिण दिशना चमरेंद्रनि देवीउंनी ॥ ३ परिपद तेमांहि अन्यंतरनि ॥ ३५० देवीउं १ मऊम परिपदनी ॥ ३०० देवीउं ॥२॥ वाहिरली परिपदनी

॥ २५० ॥ देवीउं ॥ ३ ॥ हवे एहना नवनी कायना देवतानि देवीउंनि ॥ ३ परिषद् तेमांहि अभ्यंतरनि ॥ १७५ देवीउं ॥ १ ॥ मझमनि ॥ १५० देवीउं ॥ २ ॥ बाहिरलीनि ॥ १२५ देवीउं ॥ ३ ॥ ए सर्व परिवार दक्षिण दिशना चमरेंद्रनो जाणवो ॥ एमज उत्तर दिशना बलेंद्रनि ३ परिषद् जाणवी पण एटलो फेर ॥ पहेलीना ॥ २० हजार देवता ॥ १ ॥ बिजीना ॥ २४ हजार देवता ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥ २८ हजार देवता ॥ ३ ॥ हवे एहना नवनी कायना देवतानि ॥ ३ परिषद् ते पहेलीना ॥ ५० हजार ॥ १ ॥ बिजीना ॥ ६० हजार ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥ ७० हजार ॥ ३ ॥ बलेंद्रनि देवीउंनी ॥ ३ परिषद् ॥ पहिलीनि ॥ ४५० देवीउं ॥ १ ॥ बिजीनि ४०० देवीउं ॥२॥ त्रिजीनि ॥ ३५० देवीउं ॥३॥ हवे एहना नवनी कायना देवतानि देवीउंनि ॥ ३ परिषद ॥ पहेलीनि ॥ २२५ देवीउं ॥ १ ॥ बिजीनि ॥ २०० देवीउं ॥ २ ॥ त्रिजीनि ॥ १७५ देवीउं ॥ ३ ॥ ११ ॥ चारमे लोक पाल कहे छे । सोम ॥१॥ जम ॥ २ ॥ वरुण ॥३॥ वेसमण ॥४॥ सोमनो वारो पूर्व दिशे ॥१॥ जमनो वारो दक्षिण दिशे ॥ २ ॥ वरुणनो वारो पश्चिम दिशे ॥ ३ ॥ वेसमणनो वारो उत्तर दिशे ॥४॥ सोमने वारे सुख शाता होय ॥ २ ॥

जमने वारे मार मरकि ने मेघ घणा होय ॥ २ ॥ वरुणने वारे गरू गुंबरू ने रोग घणा होय ॥३॥ वेसमणने वारे सुगाल सुभिक्ष ने लाभ घणा होय ॥४॥१२॥ तेरमे त्रायत्रिंशक ते ॥ ३३ ते गुरु समान ॥१॥ प्रोहित समान ॥२॥ पुज्य समान ॥३॥ मित्र समान ॥४॥ पिता समान ॥५॥ आज्ञा आराधक छे ॥१३॥ चौदमे शुभ वर्ण गंध । रस । स्पर्श । भोगवता थका भवनपति विचरे छे ॥१४॥२॥ हवे त्रिजो वाणव्यंतरनो द्वार कहे छे । पहेले नाम ॥१॥ बिजे चिन्ह ॥२॥ त्रिजे वर्ण ॥३॥ चोथे वस्त्र ॥४॥ पांचमे सामानिक ॥५॥ छठे आत्म रक्षक ॥६॥ सातमे देवांगना ॥७॥ आठमे अणिका ॥८॥ नवमे अणिकाना अधिपति ॥ ९ ॥ दशमे उद्योत ॥ १० ॥ इग्यारमे परिषद ॥ ११ ॥ बारमे ॥ ४ बोल ॥ १२ ॥ पहेले नाम कहे छे । पिशाच ॥ १ ॥ भुत ॥ २ ॥ जक्ष ॥३॥ राक्षस ॥ ४ ॥ किंनर ॥ ५ ॥ किंपुरुष ॥ ६ ॥ महोरग ॥ ७ ॥ गंधर्व ॥ ८ ॥ आणपन्ने ॥ ९ ॥ पाणपन्ने ॥ १० ॥ इसीवाइ ॥ ११ ॥ भुइवाइ ॥ १२ ॥ कंदीय ॥ १३ ॥ महा कंदीय ॥ १४ ॥ कोहंरू ॥ १५ ॥ पयंगदेव ॥ १६॥ बिजे चिन्ह कहे छे ॥ पहेलाने कलववृक्षनुं चिन्ह ॥१॥ बिजाने शालिवृक्षनुं चिन्ह ॥ २ ॥ त्रिजाने वरूवृक्षनुं चिन्ह ॥ ३ ॥ चोथाने पारूलिवृक्षनु

चिन्ह ॥ ४ ॥ पांचमांने अशोक वृक्षनुं चिन्ह ॥ ५ ॥ छठाने चंपक वृक्षनुं चिन्ह ॥ ६ ॥ सातमाने नाग वृक्षनुं चिन्ह ॥ ७ ॥ आठमाने टिंबरु वृक्षनुं चिन्ह ॥ ८ ॥ ए ८ दक्षिण दि-शानां कह्या । एमज ॥ ८ उत्तर दिशाना जाणवा ॥ २ ॥ हवे त्रीजे वर्ण ते ॥ पहेला त्रिजा सातमा ने आठमा ए ॥ ४ नो श्याम वर्ण ॥ बीजानो कालो वर्ण ॥ पांचमानो निलो वर्ण ॥ चोथा ने छठानो धोळो वर्ण ॥ ३ ॥ हवे चोथे वस्त्र कहे छे ॥ निला राता पीळा ने धोला विविध प्रकारना ते पण संध्याना रंग सरिखा जाणवा ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक ते एकेकाने चार चार हजार सामानिक देवता छे ॥ ५ ॥ छठे आत्म रक्षक ते सामानिकथी चोगुणा जाणवा ॥ ६ ॥ सातमे देवांगना ते एकेकाने चार चार देवीउं छे । एकेकी देवी ॥ १ हजार रुप वैक्रेय करे धणि जोगववाने अर्थे धणि पण एटला रुप वैक्रेय करे ॥ ७ ॥ हवे ॥ ८ मे ॥ ७ अणि-का कहे छे । गंधर्व ॥ १ ॥ नट ॥ २ ॥ हय ॥ ३ ॥ गय ॥ ४ ॥ रथ ॥ ५ ॥ पायक ॥ ६ ॥ महीष ॥ ७ ॥ ८ ॥ नवमे अणिकाना अधिपति एमज जाणवा ॥ ए ॥ हवे ॥ १० मे उद्योत कहे छे ॥ देवतानो ॥ १ ॥ देवीनो ॥ २ ॥ आजरणनो ॥ ३ ॥ शुज्ज पुजलनो ॥ ४ ॥ १० ॥ हवे ११ मे

परिषद ॥ ३ ॥ समीयाना ॥ ८ हजार देवता ॥ १ ॥ चंफाना ॥ १० हजार देवता ॥ २ ॥ जायाना ॥ १२ हजार देवता ॥ ३ ॥ आववुं जावुं प्रथमनि रिते जाणवुं ॥ ३ परिषदनुं ॥ ११ ॥ वारमे शुभ वर्ण ॥ गंध ॥ रस ॥ स्पर्श ॥ भोगवता थका वाणव्यंतर विचरे छे ॥ १२ ॥ इति वाणव्यंतरनो द्वार समाप्तं ॥ ३ ॥ हवे चोथो ज्योतिषीनो द्वार कहे छे। पहेले नाम ॥१॥ बिजे वाहक ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण ॥ ३ ॥ चोथे वस्त्र ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक ॥ ५ ॥ छठे आत्म रक्षक ॥ ६ ॥ सातमे लांबपणुं ने पहोलपणुं ॥ ७ ॥ आठमे उंचपणुं ने जाडपणुं ॥ ८ ॥ नवमे पंक्ति ॥ ९ ॥ दशमे परिषद ॥ १० ॥ इग्यारमे उद्योत ॥ ११ ॥ वारमे देवीओ ॥ १२ ॥ तेरमे नित्य राहु ने पर्व राहु ॥ १३ ॥ चौदमे परिवार ॥ १४ ॥ पनरमे अणिका ॥ १५ ॥ सोलमे अणिकाना अधिपति ॥ १६ ॥ सतरमे संघयण ॥ १७ ॥ अढारमे व्याघात ॥ १८ ॥ उंगणिसमे निर्व्याघात ॥ १९ ॥ विशमे देखवुं ॥ २० ॥ एकविशमे चाल ॥ २१ ॥ बाविशमे तपवुं ॥ २२ ॥ त्रेविशमे उंचपणुं ॥ २३ ॥ चोविशमे आंतरुं ॥ २४ ॥ पच्चीशमे ४ बोल ॥ २५ ॥ पहेले नाम ते चंद्र ॥ १ ॥ सूर्य ॥ २ ॥ ग्रह ॥ ३ ॥ नक्षत्र

॥ ४ ॥ तारा ॥ ५ ॥ १ ॥ बिजे वाहक कहे छे ॥ चंद्रमा सूर्यना विमानने सोल सोल हजार देवता उपाडे छे तेहनो विवरो कहे छे ॥ चार हजार देवता सिंहने रुपे पूर्व दिशे उपाडे छे ॥ १ ॥ चार हजार देवता हाथिने रुपे दक्षिण दिशे उपाडे छे ॥ २ ॥ चार हजार देवता वृषभने रुपे पश्चिम दिशे उपाडे छे ॥ ३ ॥ चार हजार देवता घोडाने रुपे उत्तर दिशे उपाडे छे ॥ ४ ॥ एवं ॥ १६ हजार देवता चंद्रमा सूर्यना विमानने उपाडे छे ॥ आठ हजार देवता ग्रहना विमानने उपाडे छे ॥ चार हजार देवता नक्षत्रना विमानने उपाडे छे ॥ बे हजार देवता ताराना विमानने उपाडे छे । ते चारे दिशे पांचसें पांचसें एवेज रुपे जाणवा ॥ राहु ने चंद्रमानि परे जाणवुं ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण कहे छे ॥ ज्योतिषीना विमाननो ॥ मांहि कनक वर्ण ने बाहिरनो स्फाटिक रत्न समान जाणवो ॥ ३ ॥ चोथे वस्त्र पूर्वनि परे विविध प्रकारना जाणवा ते पण संध्याना रंग सरिखा जाणवा ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक देवता ॥ ४ हजार जाणवा ॥ ५ ॥ छठे आत्म रक्षक देवता ॥ १६ हजार जाणवा ॥ ६ ॥ सातमे बोले लांबपणुं ने पहोलपणुं ते चंद्रमानुं विमान ॥ एक जोजनना ६१

भाग करियें तेहवा ॥ ५६ भागनुं लांबुं ने पहोळुं छे ॥ १ ॥ सूर्य नु विमान एकसठिया ४८
भागनुं लांबुं ने पहोळुं छे ॥२॥ ग्रह नुं विमान ॥ २ गाउनुं लांबुं ने पहोळुं छे ॥ ३ ॥ नक्षत्र नुं
विमान ॥ १ गाउनुं लांबु ने पहोळुं छे ॥४॥ तारा नुं विमान अर्द्ध गाउनुं लांबु ने पहोळुं छे
॥५॥७॥ आगमे उंचपणुं ने जाडपणुं कहेछे। चंद्रमांनुं विमान एकसठिया ॥ २८ भागनुं उचुं ने
जाडुं ॥१॥ सूर्यनुं विमान एकसठिया ॥ २४ भागनुं उंचुं ने जाडुं छे ॥ २ ॥ ग्रह नुं विमान
॥ १ गाउनुं उंचुं ने जाडुं छे ॥३॥ नक्षत्र नुं विमान अर्द्ध गाउनु उंचुं ने जाडुं छे ॥४॥ तारा नुं
विमान पा गाउनुं उंचुं ने जाडुं छे ॥ ५ ॥ ८ ॥ नवमे पंक्ति कहे छे ॥ छासठ छासठनि ॥ ४
पंक्ति छे ॥ १३२ चंद्रमाने ॥ १३२ सूर्य छे ॥ ए बेहु मळीने ॥२६४॥ हवे गति कहे छे सर्वथि
मंद गति चंद्रमानि ॥ १ ॥ तेहथि सूर्यनि शीघ्र गति ॥२॥ तेहथि ग्रहनि शीघ्र गति ॥३॥
तेहथि नक्षत्रनि शिघ्र गति ॥ ४ ॥ तेहथि तारानि शीघ्र गति ॥ ५ ॥ सर्वथि थोडि रुद्धि
ताराने ॥ १ ॥ तेहथि नक्षत्रनि अधिकी रुद्धि जाणवि ॥ २ ॥ तेहथि ग्रहनि अधिक रूद्धि
जाणवि ॥ ३ ॥ तेहथि सूर्यनि अधिक रुधि जाणवि ॥४॥ तेहथि चद्रमानि अधिक रुद्धि

जाणवि ॥ ५ ॥ ए ॥ दशमे परिषद कहे ढे ॥ परिषद ३ ॥ इशा ॥ १ ॥ तुफिया ॥ २ ॥ पच्चा ॥ ३ ॥ पहेलीना ॥ ८ सहस्र देवता ॥ १ ॥ बिजीना ॥ १० ॥ सहस्र देवता ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥ १२ सहस्र देवता ॥ ३ ॥ १० ॥ इग्यारमे उद्योत कहे ढे ॥ देवतानो ॥ १ ॥ देवीनो ॥ २ ॥ आन्नरणनो ॥ ३ ॥ शुन्न पुजलनो ॥ ४ ॥ विमाननो ॥ ५ ॥११॥ बारमे देवीउ कहेढे एकेकाने चार चार देवीउ ढे ॥ एकेकि चार चार हजार वैक्रेय रूप करे ॥ धणि पण नोगववाने अर्थे एटला रूप वैक्रेय करे ॥ १२ ॥ तेरमे नित्य राहु ने पर्व राहु कहे ढे । नित्य राहु ते चंडमाने केडे ढे । ते अमावास्यानी एकमथी मांफिने एकेकि कळा ढांकतो जाय । पुनमने दिने चंडमा १६ कळा संपूर्ण थाय ॥ अने पुनमने पफवे थि एकेकि कळा दबावतो जाय । अमावास्याने दहाडे १ कळा चंडमांनि रहे ॥ अने परव राहु वेहुने आडे आवे चंडमानुं ग्रहण । जघ० ६ मासे ॥ उत्० । बेतालिश मासे आवे ॥ अने सूर्यनुं ग्रहण । जघ० ६ मासे । उत्० । अडतालीश वर्षे आवे । तेहमां नित्य राहुना विमान श्याम वर्णा ढे । अने पर्व राहुना विमान पंच वर्णा ढे ॥ ते नित्य राहुना २ विमान ॥ अने पर्व राहुना ॥ २० विमान—जंबुद्वि

पमां छे ॥ चंद्रमा सूर्यना मांमला क्षेत्र फरसे तो ॥ ५१० जोजन क्षेत्र फरसे तेमांहि ॥ १८० जोजन जंबुद्वीप मांहि फरसे अने ३३० जोजन लवण समुद्रमां फरसे। चंद्रमाना ॥ १५ मांमला छे ते मांहि ॥ ५ मांमला जंबुद्वीप मांहि करे ॥ अने १० मांमला लवण समुद्रमां करे। मांमलेनो मांमले आवे तो ॥ १५ दिने आवे ॥ सूर्यना १८४ मांमला छे तेमांहि ॥ ६५ मांमला जंबुद्वीपमां करे। अने ११९ मांमला लवण समुद्रमां करे ॥ मांमलेनो मांमले आवे तो छ मासे आवे ॥ सूर्यने मांमले ब बे जोजननुं आंतरुं ॥ चंद्रमा ने मांमले मांमले ३५ ॥ जोजनने एकसठिया ॥ ३१ भाग अने एकसठीया एक भागना ७ भाग करिये तेहवा ॥ ४ चुरणिया भागनुं आंतरुं ॥ १३ ॥ चौदमे परिवार कहे छे ॥ एक चंद्रमा ने एक सूर्यनो परिवार ॥ २८ नक्षत्र ॥ ८८ ग्रह ॥ अने छाशठ हजार नवसें पंचोतेर कोमाकोमि तारा छे ॥ एटलो परिवार जाणवो ॥ १४ ॥ पंदरमे बोले ७ अणिका कहे छे ॥ गंधर्व ॥ १ ॥ नट ॥ २ ॥ हय ॥ ३ ॥ गय ॥ ४ ॥ रथ ॥ ५ ॥ सुभट ॥ ६ ॥ वृषभ ॥ ७ ॥ १५ ॥ सोळमे अणिकाना अधिपति एमज जाणवा ॥ १६ ॥ सतरमे संघयण कहे छे। छ ये संघयणनो धणि ज्योतिषी थाय

॥ १७ ॥ अढारमे व्याघात कहे ठे ॥ व्याघात सहित आंतरुं पडे तो एक विमानथि बिजा विमानने । जघ० ॥ २६६ जोजननुं आंतरुं ॥ अने उत्० १२ हजार बसे ने ४२ जोजननुं आंतरुं ॥ १८ ॥ ओगणिशमे निर्व्याघात कहे ठे निर्व्याघात सहित आंतरुं पडे तो । जघ० ॥ ५०० धनुषनुं ॥ उत्० । विमान विमानने ॥ २ गाउनुं आंतरुं ॥१९॥ हवे विशमे देखवुं कहेठे ॥ आषाढ मासे कर्क संक्रांतिने दहाडे ॥ १८ मुहुर्त्तनो दिवश ने ॥ १२ मुहुर्त्तनि रात्रि ते दिवशे उगतो सूर्य ॥ ४७२६३ जोजनने साठिया ॥ २१ भाग वेगळेथि उगतो देखाय ॥ अने पोश मासे मकर संक्रांति ने दहाडे ॥ १२ मुहुर्त्त नो दिवश ने ॥ १८ मुहुर्त्त नि रात्रि ते दिवशे उगतो सूर्य ३१८३१ जोजनने एकसठिया ॥ ३० भाग वेगळेथि उगतो सुर्य देखाय ॥२०॥ एक विशमे चाल कहे ठे ॥ आषाढ मासे कर्क संक्रांतिने दहाडे । एकेक मुहूर्ते सूर्य पांच हजार बसें एकावन जोजनने साठिया ओगणत्रिश भाग चाले । आखे दिवश थइ ने ॥ ९४५२६ जोजनने साठिया ४२ भाग चाले । अने पोष मासे मकरसंक्रातिने दहाडे । एकेक मुहुर्ते सूर्य ॥ ५३०५ जोजनने साठिया ॥ १५ भाग चाले । आखे दिवसे थइने ॥ ६३६६३ जोजन चाले ॥२१॥ बाविशमे

तपवा कहेछे ॥ सूर्य उंचो ॥ १०० जोजन तपे छे ॥ हेठो १८०० जोजन तपे छे । अने त्रिछो ॥ ४७२६३ जोजनने साठिया ॥२१ जाग तपेछे॥२२॥त्रेविशमे उंचपणुं कहेछे। सम जुतल थकि॥७९० जोजन उंचा जश्ये तिवारे तारामंमल आवे। तिहांथि १० जोजन उंचपणे सूर्यनुं विमान छे। तिहांथि ॥ ८० जोजन उंचपणे चंद्रमानुं विमान छे। तिहांथि ॥ ४ जोजन उंचपणे नक्षत्रना विमान छे ॥ तिहांथि ॥ ४ जोजन उंचपणे बुधनो तारो छे॥ तिहांथि ॥ ३ जोजन उचपणे शुक्रनो तारो छे ॥ तिहांथि ॥ ३ जोजन उंचपणे बृहस्पतिनो तारो छे । तिहांथि ॥ ३ जोजन उचपणे मंगलनो तारो छे । तिहांथि ॥ ३ जोजन उंचपणे छेहलो शनिश्चरनो तारो आवे ए, ११० जोजनमां ज्योतिष चक्र छे ॥ २३ ॥ चोविशमे आंतरुं कहे छे । चंद्रमा चद्रमांना विमानने ॥ सूर्य सूर्यना विमान ने ॥ १ लाख जोजननुं आंतरुं छे ॥ अने चंद्रमा सूर्यना विमानने अर्द्ध लाख जोजननुं आंतरुं छे ॥ २४ ॥ पंचवीशमे वोले शुज्ज वर्ण गंध रस स्परस जोगवता थका ज्योतिषि विचरे छे ॥ २५ ॥ ४ ॥ हवे पांचमो वैमानिकनो द्वार कहे छे ॥ पहेले नाम ॥ १ ॥ विजे आधार ॥२॥ त्रिजे वर्ण ॥ ३ ॥ चोथे वस्त्र ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक ॥ ५ ॥ छठे आत्मरक्षक ॥ ६ ॥ मानमे

जारूपणुं ॥७॥ आठमे उंचपणुं ॥ ८ ॥ नवमे पुष्फावि कीर्ण विमान ॥ ९ ॥ दशमे आवलिका बंध विमान ॥ १० ॥ इग्यारमे परिषद् ॥ ११ ॥ बारमे उद्योत ॥ १२ ॥ तेरमे देवीउं ॥ १३ ॥ चौदमे लोकपाल ॥ १४ ॥ पनरमे त्रायत्रिंशक ॥ १५ ॥ सोळमे ॥ ७ अणिका ॥ १६ ॥ सतरमे अणिकाना अधिपति ॥ १७ ॥ अढारमे संघयण ॥ १८ ॥ ओगणीशमे अवधिनुं देखवुं ॥ १९ ॥ विशमे ॥ ४ बोल ॥ २० ॥ पहेले नाम ॥ कहे छे । सुधर्म ॥ १ ॥ इशान ॥ २ ॥ सनत कुमार ॥ ३ ॥ माहेंद्र ॥ ४ ॥ ब्रह्म लोक ॥ ५ ॥ लंतक ॥ ६ ॥ महा शुक्र ॥ ७ ॥ सहस्त्रार ॥ ८ ॥ आणत ॥ ९ ॥ प्राणंत ॥ १० ॥ आरण ॥ ११ ॥ अच्युत ॥ १२ ॥ नव ग्रैवेयकना नाम । भद्दे ॥ १ ॥ सुभद्दे ॥ २ ॥ सुजाए ॥ ३ ॥ सुमाणसे ॥ ४ ॥ पीयदंसणे ॥ ५ ॥ सुदंसणे ॥ ६ ॥ आमोहे ॥ ७ ॥ सुपडिबद्धे ॥ ८ ॥ जसोधरे ॥ ९ ॥ पांच अनुत्तर विमानना नाम । विजय ॥ १ ॥ विजयंत ॥ २ ॥ जयंत ॥ ३ ॥ अपराजित ॥ ४ ॥ सर्वार्थ सिद्ध ॥ ५ ॥ मुक्ति शिलाना नाम ॥ इसीतीवा ॥ १ ॥ इसिपब्भारातीवा ॥ २ ॥ तणुतीवा ॥ ३ ॥ तणुतणुतीवा ॥ ४ ॥ सिद्धितीवा ॥ ५ ॥ सिद्धालएतिवा ॥ ६ ॥ मुत्तितिवा ॥ ७ ॥ मुत्तालएतिवा ॥ ८ ॥ लोयगेतिवा

॥ ए ॥ लोगथुनिएतिवा ॥ १० ॥ लोगपडिबोहएतिवा ॥ ११ ॥ सव्वपाणभुयजीवसत्तसुहावहे
तिवा ॥ १२ ॥ १ ॥ बिजे आधार कहे छे। पहेला बे देव लोक घनोदधिने आधारे रह्या छे।
त्रिजुं चोथुं ने पांचमुं ए ॥ ३ देव लोक घनवायने आधारे रह्या छे ॥ छठुं सातमुं ने आठमुं।
ए ३ देव लोक घनोदधि घनवाय बेने आधारे रह्या छे ॥ नवमांथि ते सर्वार्थसिद्ध सुधि एक
आकाशने आधारे प्रतिष्ठित छे ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण कहे छे। पहेले बिजे देवलोके ॥ ५ वर्ण लाभे
॥ त्रिजे चोथे देव लोके ॥ १ कालो वर्जिने ॥ ४ वर्ण लाभे ॥ पांचमे छठे देव लोके ॥ ३ वर्ण
लाभे ते कालो ॥ १ ॥ निलो ए २ वर्ज्यां। सातमे आठमे ॥ २ वर्ण लाभे पीळो ॥ १ ॥ ने धोळो ॥
२ ॥ नवमांथि ते सर्वार्थसिद्धलगे ॥ १ धोळो वर्ण लाभे ॥ ३ ॥ चोथे वस्त्र कहे छे ॥ बार
देव लोकना देवताना वस्त्र विविध प्रकारना ते पण संध्याना रंग सरिखा जाणवा ॥ उपरे वस्त्रनुं
कारण नथि ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक कहे छे ॥ पहेला देव लोकना देवताने ॥ ८४००० हजार
सामानिक देवता ॥ १ ॥ बिजाने ८० हजार सामानिक ॥ २ ॥ त्रिजाने ॥ ७२ हजार सामानिक
॥ ३ ॥ चोथाने ७० हजार सामानिक ॥ ४ ॥ पांचमाने ॥ ६० हजार सामानिक ॥ ५ ॥

बठाने ॥ ५० हजार सामानिक ॥६॥ सातमाने ॥ ४० हजार सामानिक ॥ ७ ॥ आठमाने ॥ ३० हजार सामानिक ॥ ८ ॥ नवमां दशमां ने ॥ २० हजार सामानिक ॥ ९ ॥ १० ॥ इग्यारमां बारमांने ॥ १० हजार सामानिक ॥ ११ ॥१२॥५॥ बठे बोले आत्मरक्षक कहेबे। सामानिकथि चोगुणा जाणवा ॥ ६ ॥ सातमे विमानना जोंयतळीयानुं जाडपणुं कहेबे। पहेला बिजा देवलोकनुं तळीयुं ॥२७०० जोजननु जाडुं ॥ त्रिजा चोथा देवलोकनुं तळीयुं ॥२६०० जोजननुं जाडुं ॥ पांचमां बठा देवलोकनुं तळीयुं ॥ २५०० जोजननुं जाडुं ॥ सातमा आठमा देवलोकनुं तळीयुं ॥२४०० जोजननुं जाडुं ॥ नवमां दशमां इग्यारमां बारमां देवलोकनुं तळीयुं ॥ २३०० जोजननुं जाडुं ॥ नव ग्रैवेयकनुं तळीयुं ॥ २२०० जोजननुं जाडुं बे ॥ पांच अनुत्तर विमाननुं तळीयुं २१०० जोजननुं जाडुं बे ॥७॥ आठमे महोलनुं उंचपणुं कहेबे ॥ पहेला बिजा देवलोकना ॥ ५०० जोजनना उंचा महोल ॥ त्रिजा चोथा देवलोकना ॥ ६०० जोजनना उंचा महोल ॥ पांचमा बठा देवलोकना ॥ ७०० जोजनना उंचा महोल॥ सातमा आठमां देवलोकना ॥८०० जोजनना उंचा महोल ॥ नवमां दशमां इग्यारमां ने बारमां देवलोकना ॥ ९००

जोजनना उचा महोल ॥ नव ग्रैवेयकना ॥ १००० जोजनना उंचा महोल ॥ पांच अनुत्तर विमानना॥११००जोजनना उचा महोल॥ प्रतर कहेछे पहेले बिजे देवलोके॥१३ प्रतर छे॥ त्रिजे चोथे देवलोके ॥ १२ प्रतर छे ॥ पांचमे देवलोके ॥ ६ प्रतर ॥ छठे देवलोके ॥ ५ प्रतर ॥ सातमे आठमे नवमे दशमे इग्यारमे ने बारमे ए ६ देवलोके चार चार प्रतर छ॥ नवग्रैवेयकमां ए प्रतर । पांच अनुत्तर विमाननो ॥ १ प्रतर ॥ ए सर्व मळी ॥ ६२ प्रतर जाणवा ॥८॥ नवमे पुष्पाविकीर्ण विमान कहे छे ॥ ८४८९१४९ चोरासी लाख नेवासी हजार एकसो उगणपचास पुष्पाविकीर्ण विमान जाणवा ॥९॥ दशमे आवलिका वध विमान ॥७८७४ अछोतेरसो ने, चुमोतेर जाणवा ॥१०॥ हवे ११ मे परिषद कहेछे पहेला देवलोकना इन्द्रने ॥३॥ परिषद। पहेलीना १२ हजार देवता ॥वीजीना १४ हजार देवता ॥त्रिजीना ॥१६ हजार देवता ॥ १ ॥ विजा देवलोकना इंद्रने ॥ ३ परिषद ॥ १० सहस्र ॥ १२ सहस्र ॥ १४ सहस्र ॥२॥ त्रीजा देवलोकना इन्द्रने ॥ ३ परिषद ॥ ८ सहस्र ॥ १० सहस्र ॥१२ सहस्र ॥३॥ चोथे देवलोके ॥ ६ सहस्र ॥ ८ सहस्र ॥ १० सहस्र ॥४॥ पांचमे देवलोके ॥ ४ सहस्र ॥ ६ सहस्र ॥ ८

छठाने ॥ ५० हजार सामानिक ॥६॥ सातमाने ॥ ४० हजार सामानिक ॥ ७ ॥ आठमाने ॥ ३० हजार सामानिक ॥ ८ ॥ नवमां दशमां ने ॥ २० हजार सामानिक ॥ ९ ॥ १० ॥ इग्यारमां बारमांने ॥ १० हजार सामानिक ॥ ११ ॥ १२ ॥ ५ ॥ छठे बोले आत्मरक्षक कहेछे । सामानिकथि चोगुणा जाणवा ॥ ६ ॥ सातमे विमानना भोंयतळीयानुं जाडपणुं कहेछे । पहेला बिजा देवलोकनुं तळीयुं ॥२७०० जोजननुं जाडुं ॥ त्रिजा चोथा देवलोकनुं तळीयुं ॥२६०० जोजननुं जाडुं ॥ पांचमां छठा देवलोकनुं तळीयुं ॥ २५०० जोजननुं जाडुं ॥ सातमा आठमा देवलोकनुं तळीयुं ॥२४०० जोजननुं जाडुं ॥ नवमां दशमां इग्यारमां बारमां देवलोकनुं तळीयुं ॥ २३०० जोजननुं जाडुं ॥ नव ग्रैवेयकनुं तळीयुं ॥ २२०० जोजननुं जाडुं छे ॥ पांच अनुत्तर विमाननुं तळीयुं २१०० जोजननुं जाडुं छे ॥७॥ आठमे महोलनुं ऊंचपणुं कहेछे ॥ पहेला बिजा देवलोकना ॥ ५०० जोजनना ऊंचा महोल ॥ त्रिजा चोथा देवलोकना ॥ ६०० जोजनना ऊंचा महोल ॥ पांचमा छठा देवलोकना ॥ ७०० जोजनना ऊंचा महोल ॥ सातमा आठमां देवलोकना ॥८०० जोजनना ऊंचा महोल ॥ नवमां दशमां इग्यारमां ने बारमां देवलोकना ॥ ९००

जोजनना ऊंचा महोल ॥ नव ग्रैवेयकना ॥ १००० जोजनना ऊंचा महोल ॥ पांच अनुत्तर
विमानना॥११००जोजनना ऊंचा महोल॥ प्रतर कहेछे पहेले बिजे देवलोके॥१३ प्रतर छे॥त्रिजे
चोथे देवलोके ॥ १२ प्रतर छे ॥ पांचमे देवलोके ॥ ६ प्रतर ॥ छठे देवलोके ॥ ५ प्रतर ॥
सातमे आठमे नवमे दशमे इग्यारमे ने बारमे ए ६ देवलोके चार चार प्रतर छे॥ नवग्रैवे-
यकमां ए प्रतर । पांच अनुत्तर विमाननो ॥ १ प्रतर ॥ ए सर्व मळी ॥ ६२ प्रतर जाणवा ॥८॥
नवमे पुष्पाविकीर्ण विमान कहे छे ॥ ८४८९१४९ चोरासी लाख नेवासी हजार एकसो
ओगणपचास पुष्पाविकीर्ण विमान जाणवा ॥९॥ दशमे आवलिका वध विमान ॥७८७४ अ-
ढोतेरसो ने चुमोतेर जाणवा ॥१०॥ हवे ११ मे परिषद कहेछे पहेला देवलोकना इंद्रने ॥३॥
परिषद। पहेलीना १२ हजार देवता॥बीजीना १४ हजार देवता ॥त्रिजीना ॥१६ हजार देवता
॥ १ ॥ बिजा देवलोकना इंद्रने ॥ ३ परिषद ॥ १० सहस्त्र ॥ १२ सहस्त्र ॥ १४ सहस्त्र ॥२॥
त्रीजा देवलोकना इंद्रने ॥ ३ परिषद ॥ ८ सहस्त्र ॥ १० सहस्त्र ॥१२ सहस्त्र ॥३॥ चोथे देव-
लोके ॥ ६ सहस्त्र ॥ ८ सहस्त्र ॥ १० सहस्त्र ॥४॥ पांचमे देवलोके ॥ ४ सहस्त्र ॥ ६ सहस्त्र ॥ ८

सहस्त्र ॥५॥ ठठे देवलोके ॥२ सहस्त्र ॥ ४ सहस्त्र ॥ ६ सहस्त्र ॥६॥ सातमे देवलोके १ सहस्त्र ॥२ सहस्त्र ॥४ सहस्त्र ॥७॥ आठमे देवलोके ५००॥ १ सहस्त्र २ सहस्त्र ॥ ८ ॥ नवमे दशमे देवलोके २५० ॥५००॥ १००० ॥९॥ १० ॥ इग्यारमे बारमे देवलोके ॥ १२५ ॥ २५० ॥ ५०० ॥ ११ ॥ बारमे उद्योत कहेछे ॥ देवतानो ॥ १ ॥ देवीनो ॥ २ ॥ आजरणनो ॥ ३ ॥ शुज्ज पुज्ञलनो ॥ ४ ॥ ने विमाननो ॥१२॥ तेरमे देवीउं कहे छे एकेका इंद्रने आठ आठ देवीउं छे ॥ एकेकि देवी सोळ सोळ हजार रूप वैक्रेय करे धणि जोगववाने अर्थे पण एटला रूप वैक्रेय करे ॥ १३ ॥ चौदमे लोकपाल कहेछे ॥ एकेका इंद्रने चार चार लोकपाल छे ॥ वारा पूर्वेनिपरे जाणवा ॥ सोम ने जमनुं ॥ आयुष १ पल्यने १ पल्यना त्रिजा जागनुं अधिक जाणवुं ॥ वरुणनुं देशे उणा ॥ २ पल्यनुं आयुष जाणवुं ॥ वेशमणनुं पुरा बे पल्यनुं आयुष जाणवुं ॥ १४ ॥ पनरमे त्रायत्रिंशक ते पूर्वेनि परे जाणवा ॥१५॥ सोळमे अणिका ७ ते । गंधर्व ॥१॥ नट ॥२॥ हय ॥ ३ ॥ गय ॥ ४ ॥ रथ ॥ ५ ॥ पाळा ॥ ६ ॥ वृषज्ज ॥ ७ ॥ १६॥ सत्तरमे अणिकाना अधिपति एमज जाणवा ॥ १७ ॥ आढारमे संघयण कहेछे पहेलाथि ते चोथा देवलोक सुधि ॥६

संघयणनो धणी जाय ॥ पांचसे छठे देवलोके ॥१ छेवट्ठ वर्जिने पांच संघयणनो धणि उपजे॥ सातमे आठमे देवलोके ॥ ४ संघयणनो धणि जाय ते किलकु १ ने छेवट्ठ ॥ ए २ वर्जिने ॥ नवमे दशमे इग्यारमे बारमे देवलोके ॥ ३ संघयण नो धणि जाय ॥ नव ग्रैवेयकमां ॥२ संघयण नो धणि जाय ॥ पांच अनुत्तर विमानमां ॥ १ वज्र रूषभ नाराच संघयण नो धणि उपजे ॥१८॥ उगणीशमे अवधिनुं देखवुं कहे छे ॥ पहेला बिजा देवलोक ना देवता निचुं पहेली नरकना तळा सुधि देखे ॥ उंचुं पोताना विमाननी ध्वजा लगे देखे । त्रिछुं असंख्याता द्वीप समुद्र लगे देखे । त्रिजा चोथा देवलोकनां देवता निचुं बिजी नरकना तळा सुधि देखे उचुं त्रिछुं तेटलुंज देखे ॥ पांचमां छठा देवलोकना देवता निचुं त्रिजी नरकना तळा सुधि देखे। उंचुं त्रिछुं तेटलुंज देखे । सातमां आठमां देवलोकना देवता निचुं चोथि नरकना तळा सुधि देखे उंचुं त्रिछुं तेटलुंज देखे । नवमां दशमा इग्यारमां ने बारमा देवलोकना देवता निचुं पांचमी नरकना तळा सुधि देखे । उंचुं त्रिछुं तेटलुंज देखे । नव ग्रैवेयकना देवता। निचुं छठि नरकना तळा सुधि देखे उंचुं त्रिछुं तेटलुंज देखे ॥ सर्वार्थसिद्ध महा विमानना देवता

किंचित् ऊणिलोक नाळी देखे ॥ नारकि त्रापाने आकारे देखे ॥ १ ॥ भुवनपति पालाने आकारे देखे ॥ २ ॥ व्यंतर झालरने आकारे देखे ॥ ३ ॥ ज्योतिषी पम्हहाने आकारे देखे ॥ ४ ॥ १२ देवलोकना देवता मादलने आकारे देखे ॥ नव ग्रैवेयकना देवता विखर्या फूलने आकारे देखे ॥ चार अनुत्तर विमान ना देवता कुंवारीका ना कंचुवाने आकार देखे ॥ सर्वार्थसिद्धना देवता जवनालिने आकारे देखे ॥ १९ ॥ विशमे बोले शुभ वर्ण गंध रस स्पर्श भोगवता थका वैमानिक विचरे छे ॥ २० ॥ इति पांचमो वैमानिकनो द्वार समाप्तं ॥ ५ ॥ इति पांच बोल समाप्तं ॥

॥ अथ श्री त्रेवीस पदवीना बोल. ॥

तेना नाम कहे छे ॥ प्रथम ॥ ७ एकेंद्रिय रत्न ॥ ७ पंचेंद्रिय रत्न ॥ ९ महोटि पदवी । तेहमां ॥ ७ एकेंद्रिय रत्नना नाम कहे छे । चक्ररत्न ॥१॥ छत्र रत्न ॥२॥ चर्म रत्न ॥३॥ दंड रत्न ॥४॥ असि रत्न ॥ ५ ॥ मणि रत्न ॥ ६ ॥ कांगणि रत्न ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ एकेंद्रिय रत्नना नाम कह्या

सेनापति ॥ १ ॥ गाथापति ॥ २ ॥ वार्द्धिक
॥ हवे ॥ ७ पंचेंड्रिय रत्नना नाम कहे बे ॥ सेनापति ॥ १ ॥ गाथापति ॥ २ ॥ वार्द्धिक ॥ ३ ॥ पुरोहित ॥ ४ ॥ स्त्री ॥ ५ ॥ अश्व ॥६॥ गज ॥ ७ ए ॥७॥ पंचेंड्रिय रत्नना नाम कह्यां ॥ हवे ॥ ए महोटि पदवीना नाम कहेबे ॥ अरिहंतनि ॥ १ ॥ चक्रवर्त्तिनि ॥२॥ बलदेवनि ॥ ३ ॥ वासुदेवनि ॥ ४ ॥ केवलिनि ॥ ५ ॥ साधुनि ॥ ६ ॥ श्रावकनि ॥७॥ सम्यक्दृष्टिनि ॥ ७ ॥ मंमलिक राजानि ॥ ए ॥ ए ॥ ए महोटि पदवी कही ॥ एवं सर्व मळी २३ पदवी ॥ हवे ॥ १४ रत्न शुं शुं काम करे ॥ चक्ररत्न षट् खंम साधतां मार्ग बतावे ॥ १ ॥ छत्र रत्न ते ॥ ४७ कोश प्रमाणे छाया करे ॥ २ ॥ चर्मरत्न ते नदी आदे पार उतारे ॥ ३ ॥ दंमरत्न ते तमस गुफाना बार उघामे ॥ ४ ॥ असिरत्न ते शत्रुने हणे ॥५॥ मणिरत्न ते उद्योत करे ॥ ६ ॥ कांगणि रत्न ते ॥ ४ए मांमला आलेखे तथा तोला माप वधारे ॥७॥ सेनापति ते देश साधे ॥७॥ गाथापति ते धान रसवती निपजावे ॥ए॥ वार्धिक ते आवास घर निपजावे ॥ १० ॥ पुरोहित ते घाव साजा करे तथा शांतिकर्म करे विघ्न टाळे ॥११॥ स्त्रीरत्न ते जोग साधनने काम आवे ॥१२॥ अश्व ने गज बेहु चमवाने काम आवे ॥१४॥ हवे ॥ १४ रत्न किहां किहां उपजे

ते कहेछे ॥ चक्र ॥१॥ छत्र ॥२॥ असि ॥ ३ ॥ दंड ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ आयुधशाळामां उपजे ॥
चर्म मणि ने कांगणि । ए ३ लक्ष्मीना भंडारमां उपजे ॥ सेनापति ॥ १ ॥ गाथापति ॥२॥
वार्धिक ॥ ३ ॥ पुरोहित ॥ ४ ॥ ए ४ पोताना नगरमां उपजे ॥ स्त्री विद्याधरनि श्रेणिमां
उपजे ॥ अश्व नें गज । ए २ वैताढ्यने मुले उपजे ॥ हवे ॥ १४ रत्न नी कायानुं परिमाण
कहेछे ॥ चक्र छत्र ने दंड ए ॥ ३ वाम प्रमाणे । वाम ते ॥ ४ हाथ प्रमाणे । चर्मरत्न ते
॥ २ हाथ प्रमाणे ॥ खड्गरत्न ते ॥ ५० अंगुलनुं लांबू ने ॥ १६ अंगुलनुं पहोलुं । ने अर्द्ध
अंगुलनुं जाडुं ॥ मणिरत्न ॥ ४ अंगुलनुं लांबू ने ॥ २ अंगुलनुं पहोलुं ॥ कांगणिरत्न ने छ
तळां । आठ खुणां । बार हांशो । सोनीनि अहिरणने संठाणे ॥ १ अंगुलनुं लांबू पहोलुं ने
उंचुं ॥ सेंनापति ॥ १ ॥ गाथापति ॥ २ ॥ वार्द्धिक ॥ ३ ॥ पुरोहित ए ॥ ४ नी अवगाना
चक्रवर्ति प्रमाणे उंचि जाणवि ॥ स्त्रीरत्न चक्रवर्त्तिथि ४ अंगुल निचि होय ॥ अश्वरत्न
॥ १०८ अंगुलनो लांबो कानना मूलथि ते पुंछना मूललगे । अने ॥ ८० अंगुलनो उंचो ।
गजरत्न चक्रवर्तिथि बमणो उंचो होय ॥ ए ॥ २३ पदवी जे गतिमांहे थि निकल्यो ते केटलि

पद्वी पामे ते कहे छे । पहेली नरकना निकल्या १६ पद्वी पामे । ते ॥ २३ मांहेथि ॥ ७ एकेंद्रिय रत्न वर्ज्या ॥१॥ बिजी नरकना निकल्या ॥ १५ पद्वी पामे । पूर्वे ॥ १६ कहि ॥ तेहमांथि ॥ १ चक्रवर्तिनी वर्जि ॥२॥ त्रिजि नरकना निकल्या । तेर पद्वी पामे ते ॥ १५ मांथि बलदेव ने वासुदेव ए बे वर्ज्या ॥३॥ चोथि नरकना निकल्या ॥ १२ पद्वी पामे ते । तेर मांथि ॥ १ तिर्थंकर वर्ज्या ॥ ४ ॥ पांचमी नरकना निकल्या । इग्यार पद्वी पामे । ते ॥ १२ मांहेथि ॥ १ केवलि वर्ज्या ॥५॥ छठि नरकना निकल्या दश पद्वी पामे । ते साधुजी वर्ज्या ॥६॥ सातमी नरकना निकल्या ॥ ३ पद्वी पामे ॥ अश्व ॥ १ ॥ गज ॥ २ ॥ सम्यक्त्वदृष्टि ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ पद्वी पामे ॥७॥ भवनपति । वाणव्यंतर । ज्योतषी । ए ॥३ ना निकल्या । एक विश पद्वी पामे । ते वासुदेव ने ॥१॥ तिर्थकर ॥ ए २ ॥ वर्ज्या ॥ पृथ्वी । पाणी । वनस्पति । गर्भज मनुष्य । ने गर्भज तिर्यंच । एटला ना निकल्या ॥ १ए पद्वी पामे । ते २३ ॥ मांथि ॥ तिर्थंकर ॥१॥ चक्रवर्त्ति ॥ २ ॥ बलदेव ॥ ३ ॥ वासुदेव ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ वर्ज्या ॥ बेइंद्रिय । तेइंद्रिय । चौरिंद्रिय । समुर्छिम तिर्यंच ने समुर्छिम मनुष्य ॥ ए ॥ ५ ना निकल्या ॥ १७ पद्वी

पामे। ते १ए ॥ मांथि ॥ १ ॥ केवलि वर्ज्या ॥ तेउवाउ ना निकल्या ॥ ए पदवी पामे ते ॥ ७ एकेंद्रियरत्न ने हाथि १। घोमो २ ॥ ए ए ॥ पदवी पामे ॥ पनर परमाधामि ने पहेला किल्विषीना निकल्या ॥ १० पदवी पामे। ते ॥ २३ मांथि ॥ ४ उत्तम पुरुष ने ॥ १ केवलि वर्ज्या॥ उपल्या २ किल्विषीना निकल्या ॥ ११ पदवी पामे। ते ॥ १० मांथि ॥ ७ एकेंद्रिय वर्ज्या शेष ॥ ११ ॥ पामे ॥ सुधर्म १ इशान ॥२॥ ए २ ॥ देवलोकना निकल्या ॥ २३ पदवी पामे॥ त्रिजाथि ते आठमां देवलोक सुधिना तथा नव लोकांतिक ना निकल्या ॥ १६ पदवी पामे। ते २३ मांथि ॥ ७ एकेंद्रिय रत्न वर्ज्या। शेष ॥ १६ पामे ॥ नवमांथि नव ग्रैवेयक सुधिना निकल्या चौद पदवी पामे ते ॥ १६ मांथि अश्व ॥१॥ ने गज ॥२॥ ए २ वर्ज्या शेष ॥ १४ पामे ॥ पांच अनुत्तर विमानना निकल्या ॥ ० पदवी पामे। ते ॥ २३ मांथि ॥ १४ रत्न ने ॥ १ वासुदेव वर्ज्या। शेष ॥ ० पामे ॥ संज्ञिमांहि ॥ १५ पदवी लाभे ते ॥ २३ मांथि ॥ ७ एकेंद्रिय ने ॥ १ केवलिनी। ए ॥ ० वर्जी ॥ शेष १५ लाभे। असंज्ञि मांहि ॥ ० पदवी लाभे ते ॥ ७ एकेंद्रिय ने ॥ १ समकीतनी ॥ ० लाभे ॥ तिर्थंकर। तथा चक्रवर्तिमां ॥ ६

पद्वी लाभे ॥ ते तिर्थंकरनि ॥ १ ॥ चक्रवतिनि ॥ २ ॥ मंरूलिकनि ॥३॥ समकितनि ॥ ४ ॥ साधुनि ॥ ५ ॥ केवलिनि । ए ॥ ६ लाभे ॥ वासुदेवमां ॥ ३ पदवी लाभे । वासुदेवनी ॥१॥ समकितनि ॥ २ ॥ मंरूलिकनि ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ लाभे ॥ बलदेवमां पांच पद्वी लाभे । बल-देवनि ॥ १ ॥ मंरूलिकनि ॥ २ ॥ साधुनि ॥ ३ ॥ केवलिनि ॥ ४ ॥ समकित दृष्टिनि ॥५॥ ए ॥ ५ लाभे ॥ मनुष्य मांहि पद्वी ॥ १३ ॥ लाभे ॥ नव महोटि पद्वी ने सेनापति ॥१॥ गाथापति ॥ २ ॥ वार्द्धिक ॥ ३ ॥ पुरोहित ॥ ४ ॥ एवं । सर्व मळी ॥ १३ पद्वी लाभे ॥ मनुष्यणी मांहि पद्वी ॥ ५ लाभे ॥ समकितनि ॥ १ ॥ श्राविकानि ॥ २ ॥ साध्वीनी ॥ ३ ॥ केवलिनि ॥ ४ ॥ स्त्रीरत्ननी ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ इति ॥ २३ ॥ पद्वीना बोल समाप्तं ॥

॥ अथ श्री सिझणाद्वार. ॥

१ पहेली नर्कना निकल्या एक समये १० सिझे
२ बिजी नर्कना निकल्या एक० १०.
३ त्रिजि नर्कना निकल्या एक० १०.
४ चोथी नर्कना निकल्या एक० ४.

५ भवन पतिना निकल्या एक० १०.
६ भवन पतिनि देवीना निकल्या एक० ५.
७ पृथ्वीना निकल्या एक० ४ सिझे
८ पाणिना निकल्या एक० ४ सिझे
९ वनस्पतिना निकल्या एक० ६.
१० संज्ञी तिर्यंचना निकल्या एक० १० सिझे.
११ तिर्यंचणीना निकल्या एक० १०.
१२ मनुष्यना निकल्या एक० १०
१३ मनुष्यणीना निकल्या एक० २०.
१४ पुरुष मरी स्त्री थइ सीझेतो एक० १०
१५ पुरुष मरी नपुषक थइ सीझेतो एक० १०
१६ स्त्री मरी स्त्री थइ सीझेतो. एक० १०

१७ स्त्री मरी पुरुष थइ सीझे तो. एक० १०
१८ स्त्री मरी नपुषक थइ सीझेतो. एक० १०
१९ नपुसक मरी स्त्री थइ सीझेतो. एक० १०
२० नपुसक मरी पुरुष थइ सीझेतो. एक० १०
२१ नपुसक मरी नपुसक थइ सीझेतो एक० १०
२२ वाणव्यंतरना निकल्या एक० १० सिझे
२३ वाणव्यंतरनि देवीना निकल्या एक० ५
२४ ज्योतिषीना निकल्या एक० १०
२५ ज्योतिषीनी देवीना निकल्या एक० २०
२६ वैमानिकना निकल्या एक० १०८ सिझे
२७ वैमानिकनी देवीना निकल्या एक० २०
२८ स्व लिंगे सिझे तो १०८ सिझे

२९ अन्य लिंगे सिझे तो १० सिझे
३० गृहस्थ लिंगे सिझे तो ४ सिझे
३१ स्त्री लिंगे २० सिझे
३२ पुरुष लिंगे १०८ सिझे
३३ नपुंसक लिंगे १० सिझे
३४ उर्द्ध लोके ४ सिझे
३५ अधो लोके २० सिझे
३६ त्रिछा लोके १०८ सिझे
३७ उत्कृष्टि अवगाहना वाला एक० २ सिझे
३८ जघन्य अवगाहना वाला ए० ४ सिझे
३९ मझम अवगाहना वाला एक० १०८ सिझे
४० समुद्रमां २ सिझे

४१ नदी प्रमुख शेष जलमां ३ सिझे
४२ तिर्थमां १०८ सिझे
४३ अतिर्थमां १० सिझे
४४ तिर्थंकर २० सिझे
४५ स्त्री तीर्थंकर एक समय बे सिझे.
४६ अ तिर्थंकर १०८ सिझे
४७ स्वयं बुद्ध ४ सिझे
४८ प्रत्येक बुद्ध १० सिझे
४९ बुद्ध बोहि १०८ सिझे
५० एक सिद्धाते एक समये १ सिझे
५१ अनेक सिद्धा ते एक समये उत्० १०८
५२ विजय विजय प्रते एक समये

विश विश सिझे
५३ भद्रशाल वन १ नंदन वन २ सोमनस वन ३ ए ३ मा चार चार सिझे.
५४ पंडग वनमां २ सिझे
५५ अकर्म भूमिमां १० सिझे
५६ कर्म भूमिमां १०८ सिझे
५७ पहेले १ बिजे २ पांचमे ३ छठ्ठे ४ ए ४ आरे दस दश सिझे
५८ त्रिजे १ चोथे २ ए २ आरे १०८ सिझे
५९ अवसर्पिणी १ ॥ उत्सर्पिणी २ ए २ मां १०८ एक सो आठ सिझे
६० नोउत्सर्पिणी नोअवसर्पिणीमां १०८ सिझे

६१ एकथि मांडिने ३२ लगे सिझे तो० ८ समय सुधि
६२–३३ थि मांडिने ४८ सुधि सिझे तो ७ समय लगे
६३–४९ थि मांडिने ६० सुधि सिझे तो ६ समय लगे
६४–६१ थि मांडिने ७२ सुधि सिझे तो ५ समय लगे
६५–७३ थि मांडिने ८४ सुधि सिझे तो ४ समय लगे
६६–८५ थि मांडिने ९६ सुधि सिझे तो ३ समय लगे

६७–९७ थि मांमिने १०२ सुधि सिजे तो २ समय लगे	६८–१०३ थि मांमिने १०८ सुधि सिजे तो १ समय लगे

अल्पा बहुत्व ॥ सर्वथी थोमा । चोथी नारकीना निकल्या सिद्ध थाय ॥ १ ॥ तेथी त्रीजा नारकीना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ २ ॥ तेथी बीजी नारकीना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ ३ ॥ तेथी वनस्पतिना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ ४ ॥ तेथी पृथ्वि कायना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ ५ ॥ पाणीना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥६॥ तेथी भवन पतिनी देवीना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ ७ ॥ तेथी भवन पतिना देवताना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ ८ ॥ तेथी वाणव्यंतरनी देवीना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ ९ ॥ वाणव्यंतरना देवताना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ १० ॥ ज्योतषीनी देवीना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ ११ ॥ ज्योतषीना देवताना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ १२ ॥ मनुष्यणीना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ १३ ॥ मनुष्यना निकल्या स-

ख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ १४ ॥ पहेली नरकना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥१५॥ त्रिर्यंचणीना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ १६ ॥ त्रियंचना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ १७ ॥ पांच अनुंतर वेमानना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥१८॥ नव ग्रैवेयकना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ १९ ॥ बारमां देवलोकना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ २० ॥ अगीयारमां देवलोकना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ २१ ॥ दशमां देवलोकना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ २२ ॥ नवमां देव लोकना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ २३ ॥ आठमां देव लोकना निकल्या सं-ख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ २४ ॥ सातमां देवलोकना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ २५ ॥ छठा देवलोकना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ २६ ॥ पांचमां देवलोकना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ २७ ॥ चोथा देव लोकना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ २८ ॥ त्रीजा देव लोकना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ २९ ॥ बीजा देव लोकनी देवीना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥३०॥ बीजा देव लोकना देवतानां

निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥३१॥ पहेला देवलोकनी देवीना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥३२॥ पहेला देव लोकना देवतानां नीकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥३३॥

॥ इति सिझणा द्वार समाप्त. ॥

॥ अथ श्री विरह द्वार ॥

समुचय चार गतिनो विरह काल ॥ जघन्य ॥ १ समयनो ॥ उत्कृष्टो ॥ १२ मुहुर्त्तनो ॥ हवे पहेली नरके ज० ॥ १ समय० ॥ उ० २४ मुहुर्त्तनो ॥ १ ॥ विजी नरके ज० १ समयनो ॥ उ० ७ दिननो ॥ २ ॥ त्रीजी नरके ज० १ समयनो ॥ उ० १५ दिननो ३ ॥ चोथी नरके ज० १ समयनो उ० १ मासनो ४ ॥ पांचमी नरके ज० १ समयनो उ० २ मासनो ॥ ५ ॥ छठी नरके ज० १ समयनो ॥ उ० ४ मासनो ॥ ६ ॥ सातमी नरके ज० १ समयनो ॥ उ० ॥ ६ ॥ मासनो ॥ ७ ॥ उपजवानो तथा चववानो विरह पडे ॥ हवे दस भवन पतीनो ज० १ समयनो ॥ उ० २४ मुहुर्त्तनो ॥ पांच एकेद्रीय अविरहिया संख्याताने

ठामे संख्याता उपजे ॥ असंख्याताने ठामे असंख्याता उपजे ॥ अनंताने ठामे अनंता उपजे ॥ समय समय उपजे ॥ समय समय चवे ॥ त्रण विगलेंद्रीयनो ज० १ समयनो ॥ उ० अंतर्मुहुर्त्तनो ॥ समुर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रीयनो ज० १ समयनो ॥ उ० अंतर्मुहुर्त्तनो ॥ गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रीयनो ज० १ समयनो ॥ उ० १२ मुहुर्त्तनो ॥ समुर्छिम मनुष्यनो ज० १ समयनो ॥ उ० २४ मुहुर्त्तनो ॥ गर्भज मनुष्यनो ज० १ समयनो ॥ उ० १२ मुहुर्तनो वाणव्यंतर ॥ ज्योतषी ॥ वैमानिकमां पहेला ॥ बीजा देव लोक सुधीनो ॥ ज० १ समयनो ॥ उ० २४ मुहुर्तनो विरह काल ॥ त्रिजे देव लोके ॥ ज० १ समय ॥ उ० ए दिन ने वीस मुहुर्त्तनो ॥ चोथे देव लोके ॥ ज० १ समय ॥ उ० १२ दिन ने १० मुहुर्त्तनो ॥ पांचमे देवलोके ॥ ज० १ समय ॥ उ० साढा बावीस दिननो ॥ छठे देव लोके ॥ ज० १ समयनो ॥ उ० ४५ दिननो ॥ सातमे देव लोके ज० १ समयनो ॥ उ० ८० दिननो विरह काल ॥ आठमे देव लोके ज० १ समयनो ॥ उ १०० दिननो ॥ नवमे दशमे देव लोके ॥ ज० १ समयनो ॥ उ० संख्याता मासनो ज्यां लगे १ वरस न होय ॥ इग्यारमे बारमे देव लोके ज० १ समयनो ॥

उ० संख्याता वरसनो ज्यां लगें सो वरस न होय ॥ पहेली त्रिके ज० १ समयनो उ० संख्याता वर्षना सेंकडा ज्यां लगें हजार वरस न होय ॥ बीजी त्रिके ज० १ समयनो ॥ उ० संख्याता हजार वरस ज्यां लगे लाख वरस न होय ॥ त्रीजी त्रीके ज० १ समयनो ॥ उ० संख्याता लाख वरस नो ज्यां लगें क्रोड वरस न होय ॥ चार अनुत्तर विमानमां ॥ ज० १ समयनो ॥ उ० ॥ पल्यना असंख्यातमां भागनो विरहकाल ॥ सवार्थ सिद्धमां ज० १ समयनो उ० पल्यना संख्यातमा भागनो विरह काल ॥ सिद्धनो विरह ज० १ समयनो ॥ उ० ७ मासनो विरह काल ॥ चार गतिमां पंचेंद्रीय आश्री विरह काल ज० १ समयनो ॥ उ० १२ मुहुर्त्तनो ॥ सर्व इंद्र स्थानकनो विरह ज० १ समयनो उ० ६ मासनो ॥ इति श्री विरह द्वार समाप्तं ॥

॥ अथ श्री पांच देवना बोल. ॥

पहेलुं नाम द्वार ॥ १ ॥ बिजुं गुण द्वार ॥ २ ॥ त्रिजुं उववाय द्वार ॥ ३ ॥ चोथुं स्थिति द्वार ॥ ४ ॥ पांचमुं ऋद्धि तथा विकुवणा द्वार ॥ ५ ॥ छठुं चवण द्वार ॥ ६ ॥

सातमुं संचिठणा द्वार ॥ ७ ॥ आठमुं अंतर द्वार ॥ ८ ॥ नवमुं अल्प बहुत्व द्वार ॥ ९ ॥
ए ९ द्वार पांच देव उपर उतारे छे ॥ हवे पहेलुं नाम द्वार कहे छे ॥ भविय द्रव्य देव ॥ १ ॥
नर देव ॥२॥ धर्म देव ॥३॥ देवाधि देव ॥४॥ भाव देव ॥५॥१॥ हवे बिजुं गुण द्वार कहेछे ॥ मनुष्य
तथा तिर्यंच पंचेंद्रिय जेहने देवतामां उपजवुं छे तेहने भविय द्रव्य देव कहिये ॥१॥ चौद रत्न
नव निधान जेहने होय तेहने नर देव कहिये ॥२॥ साधुना सत्याविश गुणे करी सहित होय
तेहने धर्म देव कहिये ॥३॥ अढार दोष रहित ने बार गुणे करि सहित होय तेहने देवाधि देव
कहिये ॥ अढार दोष ते कहे छे ॥ अज्ञान १ क्रोध २ मद ३ मान ४ माया ५ लोभ ६ रति ७
अरति ८ निद्रा ९ शोक १० असत्य ११ चोरी १२ मछर १३ भय १४ प्राणिवध १५ प्रेम १६
क्रिडा प्रसंग १७ हास्य १८ ॥ ए १८ दोष रहित ने १२ गुणे करि सहित ॥ ते १२ गुण कहे छे ॥
जिहां जिहां भगवंत उभा रहे बेसे समोवसरे तिहां तिहां दश बोल सहित ते भगवंनथि बार
गुणो उंचो ततकाल अशोक वृक्ष थइ आवे स्वामिने छांयडो करे ॥ १ ॥ भगवंत जिहां जिहां
समोवसरे तिहां तिहां पांच वर्णा अचेत फुलनि वृष्टि थाय ढिंचण प्रमाणे ढगला थाय ॥ २ ॥

ज्ञगवंतनि जोजन प्रमाणे वाणी विस्तरे सहुना मननो संशय हरे ॥ ३ ॥ ज्ञगवंतने चोविश जोरू चामर विंजाय ॥४॥ स्फटिक रत्नमय पादपीठ सहित सिंहासन स्वामिने आगले थाय ॥५॥ ज्ञामंरूल अंबोमाने ठेकाणे तेज मंरूल बिराजे दिशोदिशना अंधकार टाळे ॥ ६ ॥ आकाशे साम्रा बार क्रोरू गेबि वाजां वागे ॥ ७ ॥ ज्ञगवंतनि उपरे त्रण छत्र उपरा उपरि बीराजे ॥८॥ अनंत ज्ञान अतिशय ॥ ए ॥ अनंत अर्चा अतिशय परम पूज्यपणुं १० अनंत वचन अतिशय ॥ ११ ॥ अनंत अपायापगम अतिशय ते सर्व दोष रहितपणुं ॥ १२ ॥ ए ॥ १२ ॥ गुणे करि सहित तथा चोत्रीस अतिशय पांत्रीश वचनातिशय आदे दइने अनंत-गुणे करी सहित होय तेहने देवाधिदेव कहिये ॥ ४ ॥ ज्ञाव देव ते केहने कहीए ॥ ज्ञवन-पति ॥ १ ॥ वाणव्यंतर ॥ २ ॥ ज्योतिषी ॥ ३ ॥ वैमानिक ॥ ४ ॥ ए ४ जातिना देवताने ज्ञावे प्रवर्ते छे तेहने ज्ञाव देव कहिये ॥ ५ ॥ २ ॥ हवे त्रिजुं उववाय द्वार कहे छे ॥ ज्ञविय द्रव्य देवमां ॥ मनुष्य तिर्यंच जुगलीया ॥ २ ॥ सर्वार्थ सिद्ध ३ ॥ ए ३ ठाम वर्जिने बाकि सर्व ठामना आवि उपजे ॥ १ ॥ नर देवमां ॥ ४ ॥ जातिना देवताने पहेली नर्क ॥

ए ५ ठामना आवि उपजे ॥२॥ धर्मदेवमां ठठी सातमी नर्के । तेउ वाउ ॥ मनुष्य तिर्यंच जुगलीया ॥ ए ६ ठाम वर्जिने शेष सर्व ठामना आवि उपजे ॥३॥ देवाधि देवमां । पहेली बीजी त्रिजी नर्क ने किल्विषी वर्जिने ॥ वैमानिक देवना आवि उपजे ४॥ नाव देवमां तिर्यंच पंचेंद्रिय १ ने संज्ञि मनुष्य ए २ ठामना आवि उपजे ॥५॥३॥ हवे चोथुं स्थिति द्वार कहे ठे नविय द्रव्य देवनि जघ० अंत० ॥ उत्० ३ पल्यनि ॥१॥ नर देवनि जघ० सातसें वर्षनि उत्० ॥ चोरासी लाख पूर्वनि ॥२॥ धर्म देवनि जघ० अंत० । उत्० देशे उणी पूर्व क्रोडिनि ॥३॥ देवाधिदेव नि जघ० बहुतेर वर्षनि ॥ उत्० ८४ लाख पूर्वनि ॥४॥ नाव देवनि जघ० दश हजार वर्षनि ॥ उत्० ३३ सागरनि ॥५॥६॥ हवे पांचमुं रूद्धि तथा विकुवणा द्वार कहे ठे ॥ नविय द्रव्य देवमां जेहने वैक्रेय लब्धि उपनि होय तेहने ॥ नर देवने तो होयज ॥ धर्म देवमां जेहने होय तेहने ॥ नाव देवने तो होयज ॥ ए ४ वैक्रेय रूप करे तो ज० ॥१॥२॥३॥ उ० संख्याता करे शक्ति तो असंख्याता रूप करवानि ठे पण करे नहि ॥ देवाधिदेव नि शक्ति घणि ठे पण करे नहि ॥ ५ ॥ हवे ठठुं चवण द्वार कहे ठे नविय द्रव्य देव चवि देयता थाय १

नर देव चवि नर्के जाय ॥२॥ धर्म देव चवी वैमानिक तथा मोक्षमां जाय ॥ ३ ॥ देवाधिदेव तो मुक्ति जाय ॥४॥ भाव देव चविने॥ पृथ्वी॥ पाणी वनस्पति बादरमां॥ ने गर्भज मनुष्य तिर्यंचमां जाय ॥६॥ हवे सातमुं संचिठणा द्वार कहे छे ॥ संचिठणा ते देवनो देवपणे रहे तो केटलो काळ रहे ते॥ भविय द्रव्य देवनि ॥ संचिठणा जघ० अंत० उत्० ३ पल्योपमनि ॥१॥ नर देवनि जघ० सातसें वर्षनि उत्० ८४ लाख पूर्वनि ॥२॥ धर्मदेवनि जघ० १ समयनि ॥ उत्० देशे उणी पूर्व क्रोडिनि ॥३॥ देवाधि देवनि जघ० बहुतेर वर्षनि ॥ उत्० ८४ लाख पूर्वनि ॥४॥ भाव देवनि जघ० दश हजार वर्षनि ॥ उत्० ३३ सागरनि ॥५॥७॥ हवे आठमुं अंतरद्वार कहे छे भवियद्रव्यदेवनुं आंतरुं पडे तो॥ जग० दश हजार वर्षने अंतर्मूहूर्त्त अधिक॥ उत्० अनंता काळनुं आंतरुं पडे ॥१॥ नरदेवनुं जघ० १ सागर झाझेरुं। उत्० अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन देशे उणु॥२॥ धर्मदेवनुं जघ० २ पल्य झाझेरुं॥ उत्० अर्ध पुद्गल परावर्त्तन देशे उणुं ॥३॥ देवाधिदेवनुं आंतरुं नथि ॥४॥ भाव देवनुं जघ० अंत० उत्० अनंता काळनुं॥८॥हवे नवमुं अल्प बहुत्व द्वार कहे छे॥ सर्वथि थोडा नर देव॥१॥

तेहथि देवाधि देव संख्यात गुणा ॥२॥ तेहथि धर्म देव संख्यात गुणा॥३॥ तेहथि त्रविय द्रव्य देव असंख्यात गुणा ॥४॥ तेहथि त्राव देव असंख्यात गुणा ॥५॥ए॥ इति पांच देवना बोल संपूर्ण॥

॥ अथ श्री दिशाणु वाइ ॥

समुचय जीव॥ सर्वेथि थोम्का पश्चिम दिशे जे त्रणि पश्चिम दिशे गौतम द्वीप छे तथा चंद्रमा सूर्यना द्वीप छे तेथि पाणि थोकुं छे। ते माटे निल फुल पण थोकि छे तेणे करि जीव थोम्का छे ॥१॥ तेथि पूर्व दिशे विशेषाहिया जे माटे गौतम द्वीप नथी ॥२॥ तेथी दक्षिण दिशे विशेषाहिया जे माटे चंद्रमा सूर्यना द्वीप पण नथि माटे ॥३॥ तेथि उत्तर दिशे विशेषाहिया जे त्रणि उत्तर दिशे संख्यातमे द्वीपे संख्याति जोजन क्रोम्का कोकिनुं मानसरोवर छे तीहां पाणी घणुं छे तेथी निलफुलना जीव घणा छे माटे ॥४॥१॥ पृथ्वी कायना जीव सर्वेथी थोम्का दक्षिण दिशे॥ जे त्रणि दक्षिण दिशे ॥ ४ क्रोकिने ६ लाख त्रवन-

पतिना नवन ले तिहां पोलार घणि ले तेथि पृथ्वि थोकि ले ॥१॥ तेथि उत्तर दिशे विशे- षाहिया जे नणि नवन पतिना नवन थोका ले ॥ ३ कोकि गाशठ लाख नवन ले तेथि पोलार थोकि ले ते नणि पृथ्वी घणि ले ॥२॥ तेथि पूर्व दिशे विशेषाहिया जे नणि नवन नथि पण चंडमा सूर्यना द्वीप ले ते नणि पृथ्वी घणि ले ॥३॥ तेथि पश्चिम दिशे विशेषाहिया जे नणि गौतम द्वीप ले ते माटे पृथ्वी घणि ले ॥४॥२॥ एमज अपकाय ॥१॥ वनस्पति काय ॥२॥ त्रशकाय ॥३॥ बेइंड्रिय ॥४॥ तेइंड्रिय ॥५॥ चौउरिंड्रिय ॥६॥ तिर्यंच पंचेंड्रिय ॥७॥ए॥७ समुच्चय जीवनि परे जाणवा ॥ए॥ तेउकाय ॥ १ ॥ मनुष्य॥२॥सिद्ध ॥ ३ ॥ ए ३॥ सर्वथि थोका दक्षिण उत्तर दिशे जे नणि दक्षिण उत्तरे क्षेत्र नाहना ले तेथि । ए ३ थोका ॥२॥ तेथि पूर्व दिशे संख्यात गुणा जे नणि क्षेत्र महोटा ले ते माटे ॥ ३ ॥ तेथि पश्चिम दिशे विशेषाहिया जे नणि पश्चिम दिशे अधो गाम विजय ले तिहां जीव घणा ले माटे ॥ ४ ॥ ॥ १२ ॥ वाउकाया जीव सर्वथि थोका । पूर्व दिशे जे नणि नुमि घणि नकोर ले ते माटे ॥ १ ॥ तेथि पश्चिम दिशे विशेषाहिया जे नणि विजय उंकी ले ते माटे ॥ २ ॥ तेथि

तेहथि देवाधि देव संख्यात गुणा ॥२॥ तेहथि धर्म देव संख्यात गुणा ॥३॥ तेहथि नविय द्रव्य देव असंख्यात गुणा ॥४॥ तेहथि नाव देव असंख्यात गुणा ॥५॥ए॥ इति पांच देवना बोल संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री दिशाणु वाद ॥

समुचय जीव ॥ सर्वथि थोमा पश्चिम दिशे जे नणि पश्चिम दिशे गौतम द्वीप ठे तथा चंद्रमा सूर्यना द्वीप ठे तेथि पाणि थोरुं ठे। ते माटे निल फुल पण थोमि ठे तेणे करि जीव थोमा ठे ॥१॥ तेथि पूर्व दिशे विशेषाहिया जे माटे गौतम द्वीप नथी ॥२॥ तेथी दक्षिण दिशे विशेषाहिया जे माटे चंद्रमा सूर्यना द्वीप पण नथि माटे ॥३॥ तेथि उत्तर दिशे विशेषाहिया जे नणि उत्तर दिशे संख्यातमे द्वीपे संख्याति जोजन क्रोमा क्रोमिनुं मानसरोवर ठे तीहां पाणी घणुं ठे तेथी निलफुलना जीव घणा ठे माटे ॥४॥१॥ पृथ्वी कायना जीव सर्वथी थोमा दक्षिण दिशे॥ जे नणि दक्षिण दिशे ॥ ४ क्रोमिने ६ लाख नवन-

पतिना भवन छे तिहां पोलार घणि छे तेथि पृथ्वि थोडि छे ॥१॥ तेथि उत्तर दिशे विशे-
षाहिया जे भणि भवन पतिना भवन थोडा छे ॥ ३ कोडि छाशठ लाख भवन छे तेथि पोलार
थोडि छे ते भणि पृथ्वी घणि छे ॥२॥ तेथि पूर्व दिशे विशेषाहिया जे भणि भवन नथि
पण चंद्रमा सूर्यना द्विप छे त भणि पृथ्वी घणि छे ॥३॥ तेथि पश्चिम दिशे विशेषाहिया जे
भणि गौतम द्विप छे ते माटे पृथ्वी घणि छे ॥४॥२॥ एमज अपकाय ॥१॥ वनस्पति काय॥२॥
त्रशकाय ॥३॥ बेइंद्रिय ॥४॥ तेइंद्रिय ॥५॥ चौउरिंद्रिय ॥६॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥७॥९॥७
समुच्चय जीवनि परे जाणवा ॥९॥ तेउकाय ॥ १ ॥ मनुष्य॥२॥सिद्ध ॥ ३ ॥ ए ३॥ सर्वथि
थोडा दक्षिण उत्तर दिशे जे भणि दक्षिण उत्तरे क्षेत्र नाहना छे तेथि । ए ३ थोडा ॥२॥
तेथि पूर्व दिशे संख्यात गुणा जे भणि क्षेत्र महोटा छे ते माटे ॥ ३॥ तेथि पश्चिम दिशे
विशेषाहिया जे भणि पश्चिम दिशे अधो गाम विजय छे तिहां जीव घणा छे माटे ॥४॥
॥ १२ ॥ वाउकाया जीव सर्वथि थोडा । पूर्व दिशे जे भणि भुमि घणि नकोर छे ते माटे
॥ १ ॥ तेथि पश्चिम दिशे विशेषाहिया जे भणि विजय उंडी छे ते माटे ॥ २ ॥ तेथि

उत्तर दिशे विशेषाहिया जे जणि जवननि पोलार छे ते माटे ॥३॥ तेथि दक्षिण दिशे विशेषाहिया जे जणि जवन ने नरका वासा घणा छे ते जणि पोलार घणि छे ते माटे वाउकाया घणा छे ॥ ४ ॥ १३ ॥ नारकि सर्वथि थोमा । पूर्व १ पश्चिम २ ने उत्तर दिशे। जे जणि तिहां पुष्पाविकीर्ण नरका वासा थोमा छे । अने ते वळी संख्याता जोजनना छे ते माटे नारकि थोमा छे ॥ ३ ॥ तेथि दक्षिण दिशे असंख्यात गुणा जे जणि कृष्णपक्षी नारकि दक्षिण दिशना उपजण हार घणा छे ते माटे ॥ ४ ॥ ए समुच्चय नारकि आश्रि कह्युं। एम प्रत्येक प्रत्येक नरके त्रण दिशना नारकि थोमा ते पूर्व १ पश्चिम २ ने उत्तरना ॥ ते थकि दक्षिण दिशना असंख्यात गुणा अधिक छे ॥ सातमी नरकना ३ दिशना नारकि थकि दक्षिण दिशना नारकि असंख्यात गुणा । सातमी नरकना दक्षिण दिशना नारकि थकि छठि नरकना ३ दिशना नारकि असंख्यात गुणा । ते थकि छठी नरकना दक्षिण दिशना नारकि असंख्यात गुणा । एणि परे पहेलि नरक सुधि जाणवुं ॥१४॥ जवनपति देवता सर्वथि थोमा पूर्व । पश्चिम दिशे २॥ तेथि उत्तर दिशे असंख्यात गुणा अधिक जे जणि ज-

वन घणा छे ते माटे ॥३॥ तेथि दक्षिण दिशे असंख्यात गुणा भवन घणा छे ते माटे॥४॥ ॥१५॥ वाणव्यंतर देवता सर्वथि थोडा पूर्व दिशे जे भणि भुमि घणि कठिन छे ते माटे ॥१॥ तेथि पश्चिम दिशे विशेषाहिया व्यंतरना नगर घणा छे ते माटे ॥ २ ॥ तेथि उत्तर दिशे विशेषाहिया ॥३॥ तेथि दक्षिण दिशे विशेषाहिया तिहां कृष्णपक्षि घणा छे ते माटे॥४॥ ॥१६॥ ज्योतिषी देवता सर्वथि थोडा । पूर्व पश्चिम दिशे जे भणि पूर्व पश्चिम दिशे चंद्रमा सूर्यना द्वीपा छे तिहां ज्योतिषी थोडा रहेछे ते माटे ॥२॥ तेथि दक्षिण दिशे विशेषाहिया जे भणि दक्षिण दिशे कृष्णपक्षी घणा छे ॥३॥ तेथि उत्तर दिशे विशेषाहिया जे भणि उत्तर दिशे मानसरोवर छे तिहां मछादिक घणा छे ते मछने ज्योतिषिना विमान ढुंकडा देखिने जाति स्मरण ज्ञान उपजे तेथि व्रतादि अंगिकार करे ते नियाणुं करिने ज्योतिषीमां उपजे ते माटे ज्योतिषी उत्तर दिशे घणा ॥ ४ ॥१७॥ सुधर्म ॥१॥ इशान ॥२॥ सनंतकुमार ॥३॥ माहेन्द्र ॥४॥ ए ॥ ४ देवलोकना देवता सर्वथि थोडा । पूर्व पश्चिम दिशे । जे भणि पूर्व पश्चिम दिशे । आवलिका बंध विमान अल्प छे ते माटे ॥२॥ तेथि उत्तर दिशे । असंख्यात गुणा जे भणि

उत्तर दिशे पुष्फाविकीर्ण विमान घणा छे ते माटे ॥३॥ तेथि दक्षिण दिशे विशेषाहिया जे जणि दक्षिण दिशे कृष्णपक्षी देवता घणा छे ते माटे ॥४॥ १८ ॥ पांचमां देवलोकथि मांझिने ८ मां देवलोक सुधिना देवता सर्वथि थोडा ॥ पूर्व १ पश्चिम २ ने उत्तर ३ ए ३ दिशाना ॥३॥ तेथि दक्षिण दिशाना असंख्यात गुणा जे जणि तिर्यंच पंचेंद्रिय प्रमुख घणा उपजे छे ते माटे ॥४॥१९॥ नवमां देवलोकथि मांझिने सर्वार्थसिद्ध विमान लगे ४ दिशे सरिखा जाणवा जे जणि सर्व ठेकाणे मनुष्य उपजे छे ते माटे ॥ २० ॥ इति दिशाणुवाइ समाप्तं ॥

॥ अथ श्री खंडा जोयणना बोल ॥

॥ खंडा जोयणादि १० बोलनो विचार विचारिये छिये जंबुद्वीप ॥१ लाख जोजननो लांबो ने पहोळो छे । ते वाटलो तेलना पुडलाने आकारे छे ॥१॥ वाटलो रथना पइडाने आकारे छे ॥२॥ वाटलो कमलनी कर्णीकाने आकारे छे॥३॥वाटलो पूर्ण चंद्रमाने आकारे छे ॥४॥ तेनि परिधि ॥ ३ लाख १६ हजार २२७ जोजन ३ कोश १२८ धनूष ने साडा तेर

अंगुल ऊाऊेरानि ढे ॥ हवे जंबुद्विप १० द्वारे करि वखाणे ढे ॥ गाथा । खंरुा १ जोयण २ वासा ३ ॥ पव्वय ४ कुरुाय ५ तिह्न ६ सेढिउ ७ ॥ विजय ८ दह ए सलिलाउ १० ॥ पिंरु एहोइ संघहणी ॥ १ ॥ ए दश द्वार ढे ॥ तेमां प्रथम खंरुा द्वार कहे ढे । जंबुद्विपना नरत सरिखा ॥ १ए० खांरुवा ढे ॥ ते केम ॥ नरतक्षेत्रनुं ॥ १ खांरुवुं ॥ चुल हिमवंत पर्वतना २ खांरुवा ॥ हेमवय क्षेत्रना ४ खांरुवा ॥ महा हिमवंत पर्वतना ८ खांरुवा ॥ हरिवास क्षेत्रना १६ खांरुवा ॥ निषढ पर्वतना ३२ खांरुवा ॥ महाविदेह क्षेत्रना ६४ खांरुवा ॥ निलवंत पर्वतना ३२ खांरुवा ॥ रमकवास क्षेत्रना १६ खांरुवा ॥ रुपि पर्वतना ८ खांरुवा ॥ एरण वय क्षेत्रना ४ खांरुवा ॥ शिखरि पर्वतना २ खांरुवा ॥ इरवत क्षेत्रनुं १ खांरुवुं एवं सर्व मळीने विखंन पहोलपणे दक्षिण उत्तरे थइने । नरत जेवरुा पहोलपणे १ए० खांरुवा थाय ॥ इति पहेलो खंरुा द्वार समाप्तं ॥ १ ॥ हवे बिजो जोयणद्वार कहे ढे ॥ जोयण कहता जंबुद्विपना चारे हांशे जोजन जोजनना खंरु करिये तवारे सातसें नेवुं क्रोरि ढपन लाख चोराणुं हजार एकसो ने पचास चोरस थाय । उपरे १

कोश पनरसें पनर धनूष वधे । उपर ६० अंगुल वधे ॥ २ ॥ इति बिजो जोयण द्वार समाप्तं ॥ हवे त्रिजो वासा द्वार कहे छे । वासा कहेता जंबुद्वीपने विषे ॥ ७ क्षेत्र ते ॥ भरत ॥ १ ॥ हेमवय ॥ २ ॥ हरिवास ॥ ३ ॥ महाविदेह ॥ ४ ॥ रमकवास ॥ ५ ॥ एरणवय ॥ ६ ॥ इरवत ॥ ७ ॥ ९ ॥ ७ क्षेत्र तथा एक महाविदेहना ४ भाग गणिये तो पूर्व महाविदेह ॥ पश्चिम महाविदेह ॥ ८ ॥ देवकुरु ॥ ९ ॥ उत्तरकुरु ॥ १० ॥ एवं ॥ ६ ने ॥ ४ भेळवतां ॥ १० क्षेत्र थाय ॥ तेहनुं विखंभपणुं ॥१॥ बाहा ॥ २ ॥ जीवा ॥ ३ ॥ धनुषपिठ ॥ ४ ॥ ९ ॥ ४ कहे छे ॥ भरतक्षेत्रना २ भेद ॥ दक्षिण भरत ॥ १ ॥ उत्तर भरत ॥ २ ॥ दक्षिण भरतनुं विखंभपणुं ॥ २३८ जोजन ने ॥ ३ कळानुं । एहनि बाहा नथि । तेहनि जीवा ॥ ९७४८ जोजन ने ॥ १२ कळा तेहनि धनुषपिठ ॥ ९७६६ जोजन ने १ कळा झाझेरि ॥ १ ॥ हवे उत्तर भरतनुं विखंभपणुं ॥ २३८ जोजन ने ३ कळानुं । तेहनि बाहा ॥ १८९२ जोजन ने साडीसात कळानि । तेहनि जीवा १४४७१ जोजन ने ॥ ६ कळा माठेरि । तेहनि धनूषपिठ ॥ १४५२८ जोजन ने ॥ ११ कळानि ॥ एवं इरवत क्षेत्रनुं पण जा-

णवुं ॥ २ ॥ १ ॥ हिमवय १ हिरणवय १ ए २ ॥ क्षेत्रनुं पहोलपणुं २१०५ जोजन ने ॥ ५
कळानुं ॥ तेहनि बाहा ॥ ६७५५ जोजन ने ३ कळा तेहनि जीवा ॥ ३७६७४ जोजन ने १६
कळा ॥ तेहनि धनूषपिठ ॥ ३८७४० जोजन ने ॥ १० कळा ॥ ४ ॥ हरिवास ॥ १ रमकवास
॥ २ ॥ ए ॥ २ क्षेत्रनुं विखंभपणुं ॥ ८४२१ जोजन ने ॥ १ कळा ॥ तेहनि बाहा ॥ १३३६१ जो-
जन ने ॥ ६ कळा ॥ तेहनि जीवा ॥ ७३९०१ ॥ जोजन ने १७ कळा तेहनि धनूषपिठ ॥
८४०१६ जोजन ने ॥ ४ कळा ॥ ६ ॥ महाविदेह क्षेत्रनुं विखंभपणुं ॥ ३३६८४ जोजन ने ॥ ४
कळा तेहनि वाहा ॥ ३३७६७ जोजन ने ॥ ७ कळा ॥ तेहनि जीवा ॥ १ लाख जोजननि ॥
तेहनि धनूषपिठ ॥ १५८११३ जोजन ने ॥ १६ कळा जाजेरि ॥ ७ ॥ देवकुरु उत्तरकुरु ए २
क्षेत्रनुं विखंभपणुं ॥ ११८४२ जोजन ने २ कळानुं ॥ तेहनि वाहा नथि । तेहनि जीवा
॥ ५३००० जोजननि ते हनि धनूषपिठ ॥ ६०४१८ ॥ जोजन ने १२ कळा ॥ ए ॥ इति त्रिजो
वासा द्वार समाप्त ॥३॥ हवे ॥४॥ चोथो पव्रय द्वार कहे छे ॥ पव्रय क० जंबुद्वीपने विषे ॥ २६९॥
पर्वत छे । ते केम ॥ ६ वर्षधर पर्वत ॥ १ मेरु ॥ चित्त १ विचित्त २ ॥ जमक २ ॥ २००

कंचनगिरि ॥ ४ गजदंतप ॥ १६ वखारा ॥ ३४ लांबा वैताढ ॥ ४ वाटला वैताढ ॥ एवं सर्व मळीने ॥ २६ए पर्वत ठे । तेहनुं उंचपणुं । उंम्रपणुं । विखंजपणुं बाहा जीवा धनूषपिठ कहे ठे । चुलहिमवंत १ शिखरि २ ए ॥ २ पर्वत ॥ सो सो जोजनना उंचा ठे ॥ अने पचीश पचीश जोजनना धरतीमां उंम्रा ठे । तेमनुं पहोलपणुं ॥ १०५२ जोजन ने १२ कळानुं ॥ तेमनि वाहा ॥ ५३५० जोजन ने ॥ १५ कळा ॥ तेमनि जीवा ॥ २४ए३२ जोजन ने अर्द्ध कळा माठेरि ॥ तेमनि धनूषपिठ ॥ २५२३० जोजन ने ॥ ४ कळा ॥ २ ॥ महाहिमवंत ने रुपि । ए ॥ २ पर्वत ॥ बसे बसे जोजनना उंचा ॥ अने । पचाश पचाश जोजनना धरतीमां उंम्रा ठे । तेमनुं विखंजपणुं ॥ ४२१० जोजन ने १० कळानुं ॥ तेमनि बाहा ॥ ए२७६ जोजन ने ॥ ए कळा ॥ तेमनि जीवा ॥ ५३ए३१ जोजन ने ६ कळा काजेरि ॥ तेमनि धनूषपिठ ॥ ५७२ए३ जोजन ने १० कळा ॥ ४ ॥ निषढ ॥ १ ॥ निलवंत ॥ २ ॥ ए ॥ २ पर्वत चारसो चारसो जोजनना उंचा ठे । अने सो सो जोजनना धरतीमां उंम्रा ठे ॥ तेमनुं विखंजपणुं ॥ १६७४२ जोजन ने ॥ २ कळानुं । तेमनि वाहा ॥ २०१६५ जोजन ने ॥ २ कळा तेमनि जीवा ॥ ए४१५६

जोजन ने ॥ २ कळा । तेमनि धनूषपिठ ॥ १२४३४६ जोजन ने ए कळा ॥ ए ॥ ६ पर्वत थया ॥ मेरु पर्वत ॥ १ लाख जोजननो छे ते मांहि ॥ १ ॥ हजार जोजननो धरतीमांहि उंडो छे। ते मांहि प्रथम २५० जोजन पृथ्वीमय छे ॥ २५० जोजन पाषाणमय छे ॥ २५० जोजन वज्र हीरामय छे ॥ २५० जोजन शर्कर पृथ्वीमय छे ॥ एवं ॥ १ हजार जोजननो उंडो छे । ए प्रथम कांड ॥ ते उपरे नवाणुं हजार जोजननो मेरु उंचो छे । ते मांहि । पोणा सोळ हजार जोजन अंक रत्नमय छे ॥ पोणा सोल हजार जोजन स्फटिक रत्नमय छे । पोणा सोल हजार जोजन पिळा सुवर्णमय छे ॥ पोणा सोल हजार जोजन रूपामय छे । ए ६३ हजार जोजननो विजो कांड ॥ ते उपरे त्रिजो कांड । छत्रिश हजार जोजननो जांबुनद राता सुवर्णमय छे ॥ एवं सर्व मळीने ॥ १ लाख जोजननो मेरु पर्वत छे ॥ ते मूल १००९० जोजन ने ॥ एक जोजनना ११ भाग करिये ॥ तेहवा १० भाग एटलो धरतीने मूळे पहोळो छे ॥ दश हजार जोजननो धरतीएं समभूतळे लांबो पहोळो छे ॥ धरतीथकि इग्यार हजार जोजन उंचा जाइये तिहां नव हजार जोजननो

लांबो ने पहोळो छे। एम इग्यार इग्यार हजारे एकेक हजार घटाडतां शिखरे १ हजार जोजननो लांबो पहोळो छे तेहनी त्रिगुणि झाझेरि परिधि छे। मेरुने ॥ ४ ॥ वन छे ॥ भद्रशाल वन ॥१॥ नंदन वन ॥२॥ सोमनस वन ॥३॥ पंडग वन ॥४॥ भद्रशाल वन ते। मेरुने चारेकोर धरती उपरे छे। ते पूर्व पश्चिमे बाविश बाविश हजार जोजननुं लांबू छे। अने अढिसो अढिसो जोजननुं उत्तर दक्षिणे पहोळुं छे। तेहने एक पद्मवर वेदिका छे॥ एक वन खंडे सघले चारेबाजु विंटि छे॥ मेरु पर्वत थकि पूर्व दिशे ॥ ५० जोजन वनमां जाय। तिहां ॥ १ ॥ सिद्धायतन छे। ते ५० जोजननुं लांबू ने ॥ २५ जोजननुं पहोळुं छे। अने ॥ ३६ जोजननुं उंचु छे। अनेक स्तंभ छे। ते सिद्धायतनने ३ बारणा छे॥ पूर्वे ॥ १ ॥ दक्षिणे ॥ २ ॥ उत्तरे ॥ ए ३ तेहना दरवाजा आठ आठ जोजनना उंचा छे। ने ॥ ४ जोजनना पहोळा छे ॥ ते सिद्धायतनना मध्य विभागने विषे एक मणिमय पिठिका छे। ते ॥ ८ जोजननि लांबि ने पहोली छे ॥ ४ जोजननि जाडपणे छे। सर्व रत्नमय छे। ते उपरे ॥ १ ॥ देवछंदो कह्यो ॥ ते ॥ ८ जोजननो लांबो ने पहोळो छे। अने ॥ ८ जोजननो झाझेरो उंचो

छे। तिहां जीन प्रतिमा छे तेहनो वर्णव देवछंदो जाव धुपना कडूछा छे। ए कह्युं तेम चारे दिशे ॥ ४ सिद्धायतन छे ते एमज जाणवा ॥ चारे दिशे मेरु पर्वत थि ॥ ५० जोजन इशान खुणे वनमां जाय तिहां ॥ ४ ॥ वावड्यिं छे ॥ मेरु पर्वत थी ॥ ५० जोजन अग्नि खुणे वनमां जाय तिहां ॥ ४ वावड्यिं छे ॥ मेरु पर्वत थी ॥ ५० जोजन नैरुत खुणे वनमां जाय तिहां ॥ ४ वावड्यिं छे ॥ मेरु पर्वत थी ५० जोजन वायव्य खुणे वनमां जाय तिहां ॥ ४ वावड्यिं छे ॥ ते एकेकि वावडि ॥ ५० जोजननि लांबि। अने २५ जोजननि पहोळी छे ॥ अने दश दश जोजननि उंडियो छे॥ ते मांहि चारे दिशे तोरण सहित छे। ते वावडियो ना नाम॥पद्मा॥ १ ॥ पद्म प्रत्रा ॥२॥ कुमुदा ॥३॥ कुमुद प्रत्रा ॥४॥ ए ॥४ वावडियो मध्ये ॥२ शक्रेंद्रना ने ॥२ इशानेंद्रना महोल छे॥ ते चारे पांचसो पांचसो जोजनना उंचा छे। अने अढिसो जोजनना लांबा ने पहोळा छे। उंचा शिखर वंध जाणवां। नद्रशाल वनमां ॥८ कुट छे॥ नद्रशाल वन थकि पांचसें जोजन मेरु उपर जइये तिहां नंदन वन आवे ते नंदन वन ॥ ५०० जोजन चक्रवाल विष्कंनपणे फरतो वाटलो वलयाने आकारे छे ते

मेरु पर्वतने ढुंकडुं छे॥ जिहां घणा देवता देवांगना हाश्य रति खेले छे॥ तिहां पण॥ ४ सिद्धायतन छे॥ १६ वावडिर्ड छे॥ ४ महोल छे। पूर्वनि परे॥ ए कुट छे॥ वलि नंदन वन थकि साडा बासठ हजार जोजन उंचा जइये। तिहां सोमनस वन आवे॥ ते॥ ५०० जोजन चक्रवाल विखंत्तपणे फरतो वाटलो वलयाने आकारे छे॥ मेरुने विंटि रह्युं छे॥ ४ सिद्धायतन छे॥ १६॥ वावडिर्ड छे॥ ४ महोल छे॥ तिहां थकि॥ ३६ हजार जोजन मेरुने शिखरे जइये तिहां पंडग वन आवे ते॥ ४ए४ जोजन चक्रवाल विखंत्तपणे फरतो वाटलो वलयाने आकारे छे॥ मेरुनि चुलिकाने विंटि रह्युं छे॥ पंडग वन ने विषे॥ १ चुलिका छे। ते ४० जोजननि उंचि छे॥ १२ जोजननि मूळे पहोळी छे। अने ४ जोजननि मथाले पहोळी छे। आठ जोजननि वचमां पहोळी छे। गायना पुंछने आकारे छे॥ सर्व वैरुलि रत्नमय छे॥ तेहने एक पद्मवर वेदिका छे उपर घणि समोरमणिक ज्ञूमिका छे। ते चुलिका उपरे १ सिद्धायतन छे॥ ते १ कोशनुं लांबुं ने। अर्ध कोशनुं पहोळुं छे अने देशेउणुं कोश उंचुं छे। अनेक स्तंज्ञा छे जाव धुपना कडछा छे॥ ते पंडग वनमां॥ ४ सिद्धायतन छे॥ १६

वावड्यिं छे ॥ ४ महोल छे ते पूर्वनि परे जाणवुं । पंडग वनमां ॥ ४ अभिषेक शिला छे तेहना नाम ॥ पंडु शिला ॥ १ ॥ पंडु कंबल शिला ॥ २ ॥ रक्त शिला ॥ ३ ॥ रक्त कंबल शिला ॥४॥ ए ४ ॥ शिला कहि ते । अर्द्ध चंद्रमा ने आकारे छे ॥ पूर्व पश्चिमनि शिला । उत्तर दक्षिणे पांचसो पांचसो जोजननी लांबि छे ॥ अने पूर्व पश्चिमे अढिसो अढिसो जोजननि पहोळी छे ॥ उत्तर दक्षिण नि शिला ते पूर्व पश्चिमे पांचसो पांचसो जोजननि लांबि छे ॥ अने उत्तर दक्षिणे अढिसो जोजननि पहोळी छे ॥ ४ जोजन नि जाडपणे छे । सर्व कनकमय छे । ए ४ ने त्रण दिशे पगथिया छे ॥ पूर्व पश्चिम नि शिला उपर बबे सिंहासन छे । अने उत्तर दक्षिणनि शिला उपरे एकेकुं सिंहासन छे ॥ ते पांचसो पांचसो धनूषना लांबा ने पहोळा छे ॥ अने २५० धनूषना उंचा छे । तिहां तिर्थंकर देवनो जन्म महोत्सव करेछे । जंबु द्विप मध्ये जघन्य २ तिर्थंकरनो । ने ॥ उत्० ४ तिर्थंकरनो जन्म महोत्सव करे छे ॥ मेरुना १६ नाम कहे छे ॥ मंदर ॥१॥ मेरु ॥२॥ मनोरम ॥ ३ ॥ सुदर्शन ॥ ४ ॥ स्वयंप्रभ ॥ ५ ॥ गिरिराज ॥ ६ ॥ रत्नोच्चय ॥ ७ ॥ तिलकोपम ॥ ८ ॥ लोकमध्य ॥ ९ ॥ लोकनाभि ॥ १० ॥ रत्न ॥ ११ ॥ सूर्यावर्त्त ॥ १२ ॥ सूर्यावरण

मेरु पर्वतने ढुंकडुं छे॥ जिहां घणा देवता देवांगना हास्य रति खेले छे॥ तिहां पण॥ ४ सिद्धायतन छे॥ १६ वावडिउं छे॥ ४ महोल छे। पूर्वनि परे॥ ए कुट छे॥ वलि नंदन वन थकि साडा बासठ हजार जोजन उंचा जश्ये। तिहां सोमनस वन आवे॥ ते॥ ५०० जोजन चक्रवाल विखंजपणे फरतो वाटलो वलयाने आकारे छे॥ मेरुने विंटि रह्युं छे॥ ४ सिद्धायतन छे॥ १६॥ वावडिउं छे॥ ४ महोल छे॥ तिहां थकि॥ ३६ हजार जोजन मेरुने शिखरे जश्ये तिहां पंडग वन आवे ते॥ ४९४ जोजन चक्रवाल विखंजपणे फरतो वाटलो वलयाने आकारे छे॥ मेरुनि चुलिकाने विंटि रह्युं छे॥ पंडग वन ने विषे॥ १ चुलिका छे। ते ४० जोजननि उंचि छे॥ १२ जोजननि मूळे पहोळी छे। अने ४ जोजननि मथाले पहोळी छे। आठ जोजननि वचमां पहोळी छे। गायना पुंछने आकारे छे॥ सर्व वैरुलि रत्नमय छे॥ तेहने एक पद्मवर वेदिका छे उपर घणि समोरमणिक भूमिका छे। ते चुलिका उपरे १ सिद्धायतन छे॥ ते १ कोशनुं लांबु ने। अर्ध कोशनुं पहोळुं छे अने देशेउणुं कोश उंचुं छे। अनेक स्तंभा छे जाव धुपना कडछा छे॥ ते पंडग वनमां॥ ४ सिद्धायतन छे॥ १६

वावरुिउं छे ॥ ४ महोल छे ते पूर्वनि परे जाणवुं । पंरुग वनमां ॥ ४ अन्निषेक शिला छे तेहना
नाम ॥ पंरु शिला ॥ १ ॥ पंरु कंबल शिला ॥ २ ॥ रक्त शिला ॥ ३ ॥ रक्त कंबल शिला ॥४॥
ए ४ ॥ शिला कहि ते। अर्द्ध चंद्रमा ने आकारे छे ॥ पूर्व पश्चिमनि शिला । उत्तर दक्षिणे पांचसो
पांचसो जोजननी लांबि छे ॥ अने पूर्व पश्चिमे अढिसो अढिसो जोजननि पहोळी छे ॥ उत्तर
दक्षिण नि शिला ते पूर्व पश्चिमे पांचसो पांचसो जोजननि लांबि छे ॥ अने उत्तर दक्षिणे
अढिसो जोजननि पहोळी छे ॥ ४ जोजन नि जारुपणे छे । सर्व कनकमय छे । ए ४ ने त्रण
दिशे पगथिया छे ॥ पूर्व पश्चिम नि शिला उपर बबे सिंहासन छे । अने उत्तर दक्षिणनि शिला
उपरे एकेकुं सिंहासन छे ॥ ते पांचसो पांचसो धनूषना लांबा ने पहोळा छे ॥ अने २५० धनूषना
उंचा छे। तिहां तिर्थंकर देवनो जन्म महोत्सव करेछे। जंबु द्वीप मध्ये जघन्य २ तिर्थंकरनो।
ने॥ उत्० ४ तिर्थंकरनो जन्म महोत्सव करे छे ॥ मेरुना १६ नाम कहे छे॥ मंदर॥१॥ मेरु ॥२॥
मनोरम ॥ ३ ॥ सुदर्शन ॥ ४ ॥ स्वयंप्रन्न ॥ ५ ॥ गिरिराज ॥ ६॥ रत्नोच्चय ॥ ७॥ तिलकोपम
॥ ८ ॥ लोकमध्य ॥ ए ॥ लोकनान्नि ॥ १० ॥ रत्न ॥ ११ ॥ सूर्यावर्त्त ॥ १२ ॥ सूर्यावरण

॥ १३ ॥ उत्तम ॥ १४ ॥ दिशादि ॥ १५ ॥ अवतंश ॥ १६ ॥ ए १६ नाम कह्या ॥ हवे चित्त ॥ १ विचित्त ॥ २ ॥ ए २ पर्वत देवकुरु क्षेत्रमां छे ॥ निषढपर्वतथकि उत्तरे ॥ ८३४ जोजन ने एक जोजनना ॥ ७ नाग करिये तेवा ४ नाग जइये तिहां सीतोदा नदीने पूर्व पश्चिमने कांठे छे ॥ २ जमक पर्वत उत्तरकुरु क्षेत्रमां छे ॥ निलवंत पर्वत थकि दक्षिणे ॥ ८३४ जोजन ने १ जोजनना ७ नाग करिये तेहवा ॥ ४ नाग जइये । तिहां सिता नदीने पूर्व पश्चिमने कांठे ॥ चित्त १ ॥ विचित्त २ ॥ जमक ३ ॥ ए ३ पर्वत १ हजार जोजनना उंचा छे अने अढिसो जोजनना धरती मांहि उंडा छे ॥ एक हजार जोजनना मूळे लांबा पहोळा छे ॥ साडासातसें जोजनना वचमां लांबा पहोळा छे । उपरे पांचसो जोजनना लांबा पहोळा छे । तेहनी त्रिगुणी झाझेरि परिधि छे ॥ ११ ॥ वसे कंचन गिरि पर्वत ते सिता सितोदा नदी नि वचे । पांच पांच द्रह छे । एवं १० ॥ एकेक द्रह पासे एकेकि कोरे दश दश पर्वत छे ॥ एम बिजी पासे पण दश दश पर्वत छे । एवं १० द्रहने बने कांठे मळीने विश विश पर्वत छे ॥ ए दश ने कांठे । बसे कंचनगिरि पर्वत थाय ॥ ते सो सो जोजनना उंचा छे । पचीश पचीश

जोजनना धरती मांहि उंडा छे ॥ मूळे सो जोजनना लांबा ने पहोळा छे ॥ वच्चे पोणोसो जोजनना लांबा ने पहोळा छे। उपरे पचाश जोजनना लांबा ने पहोळा छे। तेमनि त्रिगुणी झाझेरि परिधि छे ॥ २११ ॥ हवे ॥ ४ गजदंता कहे छे । गंध मादन ॥ १ ॥ मालवंत ॥२॥ विज्जुप्रभ ॥३॥ सोमनसप्रभ ॥४॥ निषढ थकि बे ॥ निलवंत थकि बे ॥ गजदंता निकळीने मेरु पासे चारे आविने अडकि रह्या छे । ते ३०२०९ जोजन ने ६ कळाना लांबा छे॥ निषढ अने निलवंत ने अडतां चारसो चारसो जोजनना उंचा छे । अने सो सो जोजनना धरतीमां उंडाछे । अने पांचसो पांचसो जोजनना पहोळा छे ॥ मेरु पासे जइये तिहां पांचसो पांचसो जोजनना उंचा छे । अने सवासो सवासो जोजनना धरती मांहि उंडा छे । घटता अंगुलने असंख्यातमे भागे पहोळा छे ए हस्तिना दांतने आकारे छे ॥२१५॥ सोल वखारा पर्वत ॥ चित्त ॥१॥ विचित्त ॥२॥ नलीन ॥ ३ ॥ एकसेल ॥ ४ ॥ त्रिकुट ॥ ५ ॥ वेसमण ॥ ६ ॥ अंजण ॥ ७ ॥ मायंजण ॥ ८ ॥ अंकावइ ॥ ९ ॥ पद्मावइ ॥ १० ॥ आशिविष ॥ ११ ॥ सुहावह ॥ १२ ॥ चंदे ॥ १३ ॥ सूरे ॥ १४ ॥ नागे ॥ १५ ॥ देवे ॥ १६ ॥ एवं १६ ते ॥ १६५९२ जोजन

ने २ कळाना लांबा छे। पांचसो पांचसो जोजनना पहोळा छे । निषढ निलवंत थकि निकळतां चारसो चारसो जोजनना उंचा छें । अने सो सो जोजनना धरतीमां उंन्डा छे ॥ सिता सितोदा पासे पांचसो पांचसो जोजनना उंचा छे । अने सवासो जोजनना धरती मांहि उंन्डा छे । पांचसो पांचसो जोजनना पहोळा छें वखारापर्वत घोडाना खंधनें आकारें छे ॥ २३१ ॥ चोत्रिश लांबा वैताढ तेमां ॥ १ भरतनो वैताढ ॥ १ इरवतनो वैताढ । अनें ३२ विजयना ३२ ॥ एवं ॥ ३४ वैताढ तें पचीश पचीश जोजनना उंचा छे । अने सवाछ जोजनना धरती मांहि उंन्डा छे। पचास पचास जोजनना पहोळा छे। तेमनि बाहा ४७७ जोजन ने १६ कळा फाझेरि छे । तेमनी जीवा १०७२० जोजन ने १२ कळानि । तेमनि धनूषपिठ १०७४३ जोजन ने १५ कळा । एकेके वैताढे बबे गुफा छे । तमस गुफा १ खंडप्रपात गुफा ॥ २ ॥ ए २ गुफाउं । पचास पचास जोजननि लांबिउं छे। अने १२ जोजननी पहोळिउं छे। अने आठ जोजननि उंचिउं छे । तेमांहि बबे नदी छे । तेना नाम ॥ उमगजला ॥ १ ॥ निमगजला ॥ २॥ एक विश जोजन जइये तिहां उमगजला नदी आवे । ते त्रण जोजनना पहोटमां

ठे। ते मांहि हाथि घोमा बलद मनुष्यनुं कलेवर कचरो पमे तेने त्रिणवार जमाकि उछा-
ळी नांखे ते कारणे उमगजला कहिये । तिहांथि २ जोजन आघा जइये तिहां निमग-
जला नदी ठे । ते ३ जोजनना पहोटसां ठे ते मांहि हाथि घोमा मनुष्य बलदनुं कलेवर
अनेरुं पुफल पमे तेने त्रणवार जमाकिने हेतुं बेसामे ते कारणे निमगजला कहिये ॥ शेष
॥ ३२ दिर्घ वैताढ महा विदेह क्षेत्र मांहि ठे। ते पण ए सरिखा ठे। पण वाहा जीवा धनुष-
पिठ नथि । पलंगने आकारे ठे ॥ २६५॥ हवे ४ वाटला वैताढ कहे ठे । सदावइ ॥ १ ॥
वियमावइ ॥ २ ॥ गंधावइ ॥ ३ ॥ मालवंत । ए ॥ ४ वाटला वैताढ जुगलियाना क्षेत्रमां
ठे । ते ॥ १ हजार जोजनना उंचा ठे ॥ २५० जोजनना धरती मांहि उंमा ठे । मूळे ॥ १
हजार जोजनना लांबा ने पहोळा ठे । धानना कोठारने आकारे ठे ॥ तेनि ॥ ३१६२ जो-
जन फाफेरानि परिधि ठे स्वेत वर्णे ठे ॥ एवं सर्व मळीने ॥ २६९ पर्वत थया ॥ इति ॥४
चोथो पर्वत द्वार समासं ॥४॥ हवे ५ मो कुट द्वार कहे ठे। कुमाय क०। जंबु द्वीप मांहि
॥ ५२५ कुट ठे ॥ ते मांहि ॥ ४६७ कुट पर्वत उपरे ठे । तेहनो विवरो कहे ठे ॥ ३४

दिर्घ वैताढ ॥ निषढ ॥ १ ॥ निलवंत ॥ २ ॥ मेरु ॥ ३ ॥ एवं ॥ ३७ पर्वत ॥ अने विद्यु-प्रज ॥ १ ॥ मालवंत ॥ २ ॥ ए २ गजदंता । ए ३७ पर्वत उपरे नव नव कुट ठे ॥ ३७ ने नवे गुणता ॥ ३५१ कुट थाय । चुलहिमवंत ने शिखरि । ए २ पर्वत उपरे अग्यार इग्यार कुट ठे ॥ एवं २२ ॥ महाहिमवंत ने रूपि । ए ॥ २ पर्वत उपरे आठ आठ कुट ठे । एवं १६ कुट । सोल वखारा पर्वत उपरे चार चार कुट ठे । एवं ॥ ६४ कुट ॥ सोमनस ॥१॥ गंधमादन ॥ २ ॥ ए ॥ २ गजदंता उपरे सात सात कुट ठे । एवं ॥ १४ कुट ॥ एवं सर्व मळीने ॥ ४६७ कुट पर्वत उपरना थया । अने शेष ५८ कुट भूमि उपरना ठे ते कहे ठे ॥ ३४ ॥ ऋषभकुट ते ॥ १ भरतनो ॥ १ इरवतनो । अने ३२ विजयना ३२ ॥ एवं ३४ ॥ अने भद्रशाल वनना ८ ॥ देवकुरुना ८ ॥ उत्तरकुरुना ८ एवं सर्व मळीने ५८ कुट भूमी उपरना थया ॥ एवं सर्व मळीने ॥ ५२५ कुट थया । इति ५ मो कुट द्वार समाप्तं ॥५॥ हवे ६ ठो तिर्थ द्वार कहे ठे ॥ तिहां क० । जंबुद्वीप मध्ये ॥ १०२ तिर्थ ठे । ते केम ॥ ३२ विजय ॥ १ भरत ॥ १ इरवत । एवं ॥ ३४ ठेकाणे ठे । एकेकामा त्रण त्रण तिर्थ ठे । मागध ॥ १ ॥ वरदाम ॥ २ ॥ प्रभास ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ते

अग्नि खुणे ॥ १ ॥ नैरुत खुणे ॥ २ ॥ वायव्य खुणे ॥ ३ ॥ एवं ॥ ३४ तेरी १०२ तिर्थ थाय ॥ इति छठो तिर्थ द्वार समाप्तं ॥ ६ ॥ हवे ७ मो श्रेणि द्वार कहे छे ॥ सेढिउं क० जंबु द्वीप मांहि १३६ श्रेणियो छे । ते वैताढ्य पर्वत उपरे दश दश जोजन उंचा चढिये । तिहां १ दक्षिणे ने ॥ १ उत्तरे ए बे ॥ विद्याधरनि श्रेणियो छे ॥ ते मांहि भरतना वैताढ उपरे गगन वलभादिक ॥ ५० नगर दक्षिण नि श्रेणिये छे । अने रथ चक्रवालादिक ६० नगर उत्तर नि श्रेणिये छे । एमज इरवतना वैताढ उपरे ६० नगर दक्षिण नि श्रेणिये छे । अने ५० नगर उत्तरनि श्रेणिये छे । महा विदेहना ३२ वैताढ उपरे दक्षिण उत्तरनि श्रेणिये पंचावन पंचावन नगर छे । सर्व मळीने ३७४० नगर विद्याधर नि श्रेणिये छे । एवं ३४ ढु ६८ विद्याधरनि श्रेणि छे । वळी विद्याधरनि श्रेणिथी १० जोजन उंचा चडिये तिहां आभियोगिया देवतानि ॥ २ श्रेणि आवे । दक्षिणे १ ॥ ने ॥ १ उत्तरे । एवं ३४ ढु ६८ श्रेणि आभियोगिया देवतानि छे ॥ एवं सर्व मळीने ॥ ६८ विद्याधरनि ने ॥ ६८ देवतानि । एवं ॥ १३६ श्रेणियो छे । इति ७ मो श्रेणि द्वार समाप्तं ॥७॥ हवे ८ मो विजयद्वार

कहे छे। विजय क० जंबुद्वीप मांहि ॥ ३४ विजयरूप स्थानक छे । तेना नाम। कछे ॥१॥ सुकछे ॥ २ ॥ महाकछे ॥ ३ ॥ कछगावइ ॥४॥ आवर्त्ता ॥ ५ ॥ मंगला ॥ ६ ॥ पुखला ॥७॥ पुखलावती ॥ ८ ॥ ए ॥८॥ विजय सिता महानदी ने उत्तर दिशे पूर्व महाविदेहने विषे श्री मेरु पर्वतथि मांडिने सिता मूख वन सुधि प्रथम खांडवुं जाणवुं ॥ १ ॥ वछे ॥ ए ॥ सुवछे १० महा वछे ॥ ११ ॥ वछगाइ ॥ १२ ॥ रमे ॥ १३ ॥ रमक ॥ १४ ॥ रमणिक ॥ १५ ॥ मंगलावइ ॥ १६ ॥ ए ॥ ८ विजय सिता नदीने दक्षिण पांसे सिता मूख वनथि मांडिने मेरु सुधि मायंजण वखारा पर्वत सुधि बीजुं खांडवुं जाणवुं ॥२॥ पद्मे ॥१७॥ सुपद्मे ॥१८॥ महापद्मे ॥ १९ ॥ पद्मगवाइ ॥ २० ॥ संखे ॥ २१ ॥ कुमुदे ॥ २२ ॥ नलीणे ॥ २३ ॥ नलीणावती ॥ २४ ॥ ए ८ विजय सितोदा नदीने दक्षिणने कांठे विद्युत्प्रभ गजदंता पछि अंकावति वखारा पर्वतथि ते सितोदा मूख वन सुधि त्रीजुं खांडवुं जाणवुं ॥ ३ ॥ वप्पे ॥ २५ ॥ सुवप्पे ॥ २६ ॥ महावप्पे ॥ २७ ॥ वप्पगाइ ॥ २८ ॥ वग्गु ॥ २९ ॥ सुवग्गु ॥३०॥ गंधिले ॥ ३१ ॥ गंधिलावइ ॥ ३२ ॥ ए ८ विजय ते सितोदा मुख वनथि मांडिने । सि-

तोदा नदीने कांठे देव वखारा पर्वत सुधि चोथुं खांरुवुं जाणवुं ॥ ४ ॥ ए ॥ ३२ ॥ विजय महाविदेह क्षेत्रमां ठे ते सघळी विजय ॥ १६५९२ जोजन ने २ कळा नि उत्तर दक्षिण लांबि ठे । अने २२१३ जोजन माठेरा नि पूर्व पश्चिमे पहोळीयो ठे ॥ १ भरत ॥ १ इरवत । एवं ॥ ३४ ॥ तिहां ॥ ३२ विजयनि । एक भरतनि । एक इरवतनि । ए ॥ ३४ राजधानी ठे ॥ ३४ तिमिस गुफा ॥ ३४ खंरु प्रपात गुफा ॥ ३४ कृतमाल देवता ॥ ३४ नटमाल देवता ॥ ३४ रुषभकुट एटला वाना शास्वता ठे । इति ७ मो विजय द्वार समाप्तं ॥ ७ ॥ हवे ॥ ए मो द्रह द्वार कहे ठे ॥ द्रह क० । जंबुद्वीपमां ॥ १६ ॥ द्रह ठे । तेना नाम । पद्म द्रह ॥ १ ॥ महा पद्म द्रह ॥ २ ॥ पुंरुरिक द्रह ॥ ३ ॥ महा पुंरुरिक द्रह ॥ ४ ॥ तिगिछ द्रह ॥५॥ केशरिद्रह ॥६॥ ए ॥ ६ द्रह वृषधर पर्वतना ॥ हवे ५ द्रह देवकुरुने विषे ठे । निषढ द्रह ॥ १ ॥ देवकुरु द्रह ॥ २ ॥ सूर्य द्रह ॥ ३ ॥ सुलस द्रह ॥४॥ विजु प्रभ द्रह ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ द्रह देवकुरु क्षेत्रमां सितोदा नदी नि वचे ठे । एमज उत्तरकुरु क्षेत्रने विषे सिता नदी ने मध्य भागे ॥ ५ द्रह ठे ॥ तेना नाम । निलवंत द्रह ॥१॥

उत्तरकुरु द्रह ॥ २ ॥ चंद्र द्रह ॥ ३ ॥ एरावत द्रह ॥ ४ ॥ मालवंत द्रह ॥ ५ ॥ एवं १० ने ॥ ६ उपरट्या एवं १६ द्रह थया ॥ हवे १ पद्म अने पुंडरिक द्रह ए २ द्रह ॥ १ हजार जोजनना लांबा ॥ अने ५०० जोजनना पहोळा छे ॥ १० जोजनना धरती मांहि उंडा छे । ए प्रमाणेज देवकुरु उत्तर कुरुना १० द्रह जाणवा ॥ एकेका द्रह मांहि ॥ १२०५०१२० कमळ छे । सघळा रत्नमय छे । पद्म द्रह मध्ये १ महोटुं कमळ छे ॥ ते श्रीदेवीनुं छे ॥ अने १०८ कमळ श्रीदेवीना शंगारना छे ॥ ४ कमळ महत्तरि काना छे ॥ ७ कमळ अणिकाना छे ॥ १६ हजार कमळ आत्म रक्षक देवना छे ॥ ४ हजार कमळ सामानिक देवना छे ॥ ८ हजार कमळ मांहिली परिषद्‌ना छे ॥ १० हजार कमळ वचलि परिषद्‌ना छे ॥ १२ हजार कमळ बाहिरली परिषद्‌ना छे ॥ तेने फरता ३ कोट कमळना छे ॥ तेमां ३२ लाख कमळ पहेला कोटना छे ॥ ४० लाख कमळ वचला कोटना छे ॥ ४८ लाख कमळ बाहिरला कोटना छे । एवं सर्व मळीने १२०५०१२० कमळ थया ते मांहि महोटुं कमळ ॥ १ जोजननुं लांबुं ने पहोळुं छे । अर्द्ध जोजननुं जाडुं छे १० जोजननुं पाणि मांहि उंडुं छे बे गाउ पाणीथी उंचु छे ॥ १०

जोजन सर्वांगे ऊाझेरुं कहेलुं ठे। ते कमळनुं वज्र रत्नमय मूल ठे। रिष्ट रत्नमय कंद ठे। वैरुलि रत्न-
मय निलवरणा वाहेरला पानमा ठे। जंबुनंद राता रत्न सुवर्णमय मांहिला पानमा ठे ॥ तपाव्या
सोनामय केशरा ठे। नाना प्रकारना मणिमय ते उपरे पाखमियो ठे। सोनानि कर्णिका ठे। बे कोश-
नि कर्णिका लांबि ने पहोळी ठे ॥ एक कोशनो जारूपणे मोमो ठे ते उपरे घणुं रमणिक ठे ;
तेना मध्य देश न्नागे श्री देवीनुं घर ठे। ते १ कोशनुं लांबु ने अर्ध कोशनुं पहोळुं ठे ॥ अने देशे
उणुं कोश उंचुं ठे अनेक स्तंजा ठे उंपाव्या सुवर्ण सरिखा सोन्ने ठे ते जोवा योग्य ठे ॥ ते
जुवनने ३ वारणा ठे ॥ पूर्वे ॥ १ ॥ दक्षिणे ॥ २ ॥ उत्तरे ॥ ३ ॥ ते वारणा ॥ ५०० धनुपना
उंचा ठे। अढिसे धनुषना पहोळा ठे। ते जुवनमां एक मणि पिठिका ठे। त ५०० धनुषनि
लावि ने पहोळी ठे ॥ २५० धनूषनी उंचो ठे। ते मणि पिठिका उपरे १ देवशय्या रहेवानो
पलंग ठे ॥ हवे महा पद्म द्रह ॥ १ ॥ महा पुंडरिक द्रह । ए ॥ २ द्रह ॥ एकेको २ हजार
जोजनो लांबो ने १ हजार जोजननो पहोळो ठे। अने १० जोजननो धरती मांहि उंडो ठे॥
महा पद्म द्रहमां ह्रींदेवी रहे ठे ॥ महा पुंडरिक द्रहमां बुद्धि देवी रहे ठे ॥ एहना कमळ

श्रीदेवीनि परे जाणवा। पण कमळनुं मान बमणुं जाणवुं। ते मांहि महोटुं कमळ ॥२ जोजननुं लांबुं ने पहोळुं छे ॥ अने १ जोजननुं जाडुं छे ॥ हवे तिगिछ द्रह ॥ १ ॥ केशरि द्रह ॥२॥ ए २ द्रह एकेको ४ हजार जोजननो लांबो ने ॥ २ हजार जोजननो पहोळो छे ॥ १० जोजननो धरती मांहि उंडो छे ॥ तिगिछ द्रहमां धृति देवी रहे छे । केशरि द्रहमां कीर्त्ति देवी रहे छे । एहनुं महोटुं कमळ ॥ ४ जोजन नुं लांबुं ने पहोळुं छे । अने २ जोननजुं जाडुं छे । कमळ श्रीदेविनि परे जाणवा । एम सोळे द्रहना ॥ १२०५०१२० कमळने १६ गुणाकरतां शाश्वता कमल ॥ १९२८०१९२० कमल थाय ॥ अने ५ द्रह देव कुरुमां ॥ ५ ॥ उत्तर कुरुमां ए १० द्रह धरती उपरे छे ॥ तेहने नामे देवना नाम छे । एक पल्यनुं आयुष छे । अने चुलहिमवंत पर्वत उपरे पद्म द्रह छे तिहां श्रीदेवीनो वास छे । शिखरि पर्वत उपरे पुंडरिक द्रह छे ॥ तिहां लक्ष्मी देवीनो वास छे महा हिमवंत पर्वत उपरे महापद्म द्रह छे ॥ तिहां ह्रींदेवीनो वास छे । रूपि पर्वत उपरे । महा पुंडरिक द्रह छे तिहां बुद्धि देवीनो वास छे । निषढ पर्वत उपरे तिगिछ द्रह छे तिहां धृति देवीनो वास छे ॥ नि-

लवंत पर्वत उपरे केशरि द्रह छे । तिहां कीर्ति देवीनो वास छे ॥ ए ६ देवीयो भवन
पतिनी जातिनि जाणवि । तेहनुं आयुष १ पल्यनुं छे ॥ इति ए मो द्रह द्वार समाप्तं
॥ ए ॥ हवे दशमो सलिला द्वार कहे छे ॥ सलिलाउ क० जंबुद्वीप मध्ये ॥ १४५६०९०
नदियो छे ॥ ते मांहि पद्म द्रहने पूर्व दिशिने तोरणेथि गंगा नदी निकळी ॥ ५०० जोजन
पूर्व साहमि गइ । तिहां गंगा वर्तन कुट छे तिहां अफलाणी । तिहांथि दक्षिण दिशे
चालि ते ५२३ जोजन ने ३ कळा दक्षिण दिशे पर्वत उपरे गइ । तिहां महोटा घमाना
मुखमांथि पाणि पडे छे ते मोतिना हार सरिखुं महा मघरमछना मुखने आकारे प्रनालि
जीभीका मांथि कांइक अधिक १०० जोजन उंचेथि पाणि पडे छे । ते जीभीका अर्द्ध जो-
जननि लांबि छे । अने सवाछ जोजननि पहोळी छे ॥ प्रनालि मघरमछना मुख विकस्या
तेहने संठाणे छे सर्व वज्रमय छे । आछी तेजवंत छे ॥ ते मांहिथि पाणि पडे छे ॥ तिहां
१ महोटो गंगा प्रपात नामा कुंड छे । ते कुंड ॥ ६० जोजननो लांबो ने पहोळो छे ॥ १०
जोजननो उंडो छे । ते कुंडनि रूपामय उपकंठपालि छे । वज्र पाषाणमय तलुं छे । सुखे

सांहि उत्तरिये । नाना मणि रत्ने करि बांध्यो छे कांठो जेहनो ॥ वज्रमय तळुं छे सुवर्ण-
नो मध्य भाग छे ॥ रूपानि वेलु छे । गंभिर शितल जळ छे अने ते कमळ पानके ढांयुं
छे । घणा उत्पल कमळ छे । कुमुद नलीन पुंडरिक शतपत्र सहस्त्रपत्र कमळ घणा छे ।
गंगा कुंडने ३ बारणा छे । त्रण दिशे पगथीया छे । पूर्व दिशे ॥ १ ॥ दक्षिण दिशे ॥
२ ॥ पश्चिम दिशे ॥ ३ ॥ पगथीयानो वर्णन जेम पाषाण तेहनो उपल्यो भाग रिष्ट
रत्नमयं छे । वैरुलि रत्नमय स्तंभा छे । सोना रुपाना पाटिया छे । लोहिताक्ष रत्नमय
खिला छे । वज्रमय सांधो जडि छे । मणिना आलंबन पकडवा ने पगथिया आगले प्र-
त्येक प्रत्येक तोरण छे । ते मणि सुवर्ण मुक्ताफल हारे करि शोभे छे । ते गंगा प्रपात कुं-
डनि वचे ॥ १ गंगा द्वीप नामा द्वीपो कह्यो ते ८ जोजननो लांबो ने पहोळो छे ॥ २
कोश पाणिथकि उंचो छे। सर्व रत्नमय छे । गंगा द्वीप उपरे घणुं रमणिक छे । ते उपर १ गंगा
देवीनुं भवन कह्युं । ते १ कोशनुं लांबु ने अर्द्धकोशनुं पहोळुं छे अने देशे उणुं कोश उंचुं छे ।
अनेक स्तंभा छे तेहनो वर्णन श्रीदेवीनि परे जाणवो। गंगानो शास्वतो नाम छे । ते गंगा प्रपात

कुंभना दक्षिण दिशना वारणाथि गंगा नदी निकळीने । उत्तर भरत मध्ये वहेति थकि ७ हजार नदी साथे खंभ प्रपात गुफाने । वैताढ पर्वतने हेठे थइने ॥ दक्षिणार्द्ध भरत मांहि वहेति विजी ७ हजार नदी भळीति थकि सर्वे ॥ १४ हजार नदीने परिवारे जगती ने भेदिने पूर्वना लवण समुद्र मांहि भळी एमज सिंधु पण पश्चिम दिशे जाणवि । सलिलाउ क० । जंबु द्धिप मांहि १४५६०९० नदियो छे । तेहनो विवरो कहे छे ॥ गंगा ॥ १ ॥ सिंधु ॥ २ ॥ रत्ता ॥ ३ ॥ रतवइ ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ नदीयो मूल थकि निकळता सवाछ जोजननि पहोळीउ । अने अर्द्ध गाउनि उंडियो छे । छेहडे समुद्रमां भळता साडाबासठ जोजननि पहोळि अने अढि जोजननि उंडियो छे । एकेकिनो चौद चौद हजार नदियोनो परिवार जाणवो ॥ सर्व मळीने ॥ १४ ॥ चोकुं ॥ ५६००० हजार नदियो थइ ॥ हवे रोहिया १ रोहितंसा २ ए २ नदि हेमवय क्षेत्रमां छे । अने सुवर्ण कुला १ ने रूपकुला ॥ ए २ नदीयो हिरणवय क्षेत्रमां छे एवं ४ नदी निकलतां साडा बार जोजननि पहोळी अने १ गाउनि उंडियो छे ॥ छेडे समुद्रमां भळतां ॥ सवासो जोजननि पहोळी अने अढि जोजननी उंडियो छे ।

एकेकिनो अठ्याविश अठ्याविश हजार नदीयोनो परिवार जाणवो सर्व मळीने एक लाख ने १२ हजार नदीयो थइ ॥ हवे हरिकंता ॥ १ ॥ हरिसलिला ॥ २ ॥ ए नदीयो हरिवास क्षेत्रमां छे ॥ अने नरकंता ॥ १ ॥ नारिकंता २ ए ॥ २ नदीयो रमकवास क्षेत्रमां छे ॥ ए ४ नदीयो मूळे निकळतां पचीश पचीश जोजननि पहोळीयो छे । अने ॥ २ गाउनि उंडियो छे । छेडे समुद्रमां मळतां । अढिसो अढिसो जोजननि पहोळीयो छे । अने पांच पांच जोजननि उंडियो छे ॥ एकेकि नदीनो परिवार छपन छपन हजार नदीयोनो जाणवो । एवं ४ थइने ॥ २ लाख ने २४ हजार नदीयो थइ ॥ सिता ॥ १ ॥ सीतोदा ॥ २ ॥ ए ॥ २ नदीयो महा विदेह क्षेत्रमां छे । ते मूळे ॥ पचास पचास जोजन नि पहोळीयो छे । चार चार गाउनि उंडियो छे ॥ छेडे समुद्रमां मळतां । पांचसो पांचसो जोजननि पहोळीयो छे । दश दश जोजननि उंडियो छे ॥ एकेकिनो पाच लाख ने बत्रिश हजारनो परिवार छे ॥ एवं २ नो परिवार १० लाख ने ६४ हजार नदियोनो जाणवो ॥ महा विदेह क्षेत्रनि १६ विजयमां । गंगा ॥ १ सिंधु ॥ २ ॥ ते ॥ १६ छ

विजयमां । रता ॥ १ ॥ रत्तवइ ॥ २. ३े ते पण ॥ १६ ॥ ५ ॥
वत्रिश थइ । अने ॥ १६ विजयमां ६४ नदीयो छे ॥ ६४ नुं पहोळपणुं नरत नि गंगा नि परे
३२ थइ एवं महा विदेह क्षेत्रमां ६४ नदीयोनो परिवार जाणवो चोसठ ने १४ हजारे
जाणवुं । ते एकेकिनो चौद चौद हजार नदीयो थाय । अने देव कुरुनि ८४ हजार अने उत्तर कुरुनि
गुणतां ८ लाख ने ए६ हजार नदीयो थाय । अने ८ लाख ने ए६ हजार मांहि नेळविए एटले
८४ हजार । एवं १ लाख ने ६८ हजार अने ८ लाख ने ए६ हजार मांहि नेळविए एटले शेष १२
॥ १० लाख ने ६४ हजार थाय एटलो परिवार सीता सीतोदानो जाणवो अने शेष १२
नदीयोनो परिवार ३ लाख ने ए२ हजार एवं सर्व मळीने १४ लाख ५६ हजार नदीयो थाय ।
अने ए० महोटी नदीयो जाणवी ॥ हवे १२ अंतर नदीयो महा विदेह क्षेत्रमां छे ते ॥
८ ॥ विजयनुं ॥ १ खांरूवुं ते मांहि ॥ ३ नदीयो ॥ पूर्व महा विदेहने उत्तर ने खांरूवे ॥ ३
अने दक्षिणने खांरूवे ॥ ३ ए ६ ॥ एमज पश्चिम महा विदेहने उत्तर खांरूवे ॥ ३ अने
दक्षिणने खांरूवे ॥ ३ एवं १२ अंतर नदीयो छे ते एकेकि सवासो सवासो जोजननि पहो-
ळीयो छे । अने अढि अढि जोजननि ऊंडीयो छे ॥ १६५ए२ जोजन ने २ कळानि लां-

बियो छे ॥ ते १२ अंतर नदीना नाम कहे छे॥ गाहा वइ ॥ १ ॥ दहा वइ ॥२॥ पंका वइ ॥ ३ ॥ तत जला ॥ ४ ॥ मत जला ॥ ५ ॥ उमत जला ॥ ६ ॥ खिरोदा ॥ ७ ॥ सिंह सोया ॥ ८ ॥ अंतो वाहिणी ॥ ए ॥ उमि मालिनी ॥ १० ॥ फेण मालीनी ॥११॥ गंभीर मालिनी ॥ १२ ॥ एवं सर्व थइ महोटि नदीयो ॥ १४ ॥ ६४ ॥ १२ ॥ थइने ए० नदीयो थइ। एहनो परिवार सर्व नदीयोनो थइने ॥ १४५६०ए० नदीयो थाय ॥ इति १० मो सलिला द्वार द्वेपथि समास्तं ॥ १० ॥ इति खंभाजोयण समास्तं ॥

॥ अथ श्री योनी पदनो थोकडो ॥

श्री पन्नवणाजी सूत्र पद ए मे योनी नो अधिकार चाल्यो छे योनी त्रण प्रकारनी छे–१. शीतयोनी, २. उष्णयोनी, ३. शीतोष्णयोनी, हवे तेनो विस्तार कहे छे–पहेली नरकथी त्रीजी नरक सुधी शीतयोनीया, चोथी नरके शीतयोनीया घणा, अने उष्णयोनीया थोडा, पांचमी नरके उष्णयोनीया घणा अने शीतयोनीया थोडा, छठी नरके

उष्णयोनीया, सातमी नरके महा उष्ण योनीया. अग्नि वर्जीने चार स्थावर, त्रण विग्ले-न्द्रिय, समुच्चय तिर्यंच अने मनुष्यमां त्रण योनी पामे. तेउकायमां एक उष्णयोनी संन्नि तिर्यंच संन्नि मनुष्य अने देवतामां योनी एक शीतोष्णनी. हवे तेनो अल्प बहुत्व कहे-छे—सर्वथी थोडा शीतोष्णयोनीया, तेथी उष्ण योनीया असंख्यात गुणा, तथा अयोनी-या सिद्ध भगवंत अनन्त गुणा. तेथी शीत योनीया अनन्त गुणा. वळी योनी त्रण प्रकारे कही छे—१. सचेत, २. अचेत, ३. ने मिश्र. नारकी अने देवतामां योनी एक अ-चेत. पांच स्थावर, त्रण विग्लेंद्रिय समुच्चय तिर्यंच; अने समुच्चय मनुष्यमां योनी त्रण पामे छे. हवे संन्नी तिर्यंच अने संन्नी मनुष्यमां योनी एक मिश्र. हवे तेनो अल्पबहुत्व कहे छे. सर्वथी थोडा मिश्र योनीया अनंता गुणा. वळी योनी त्रण प्रकारनी—१. संवुडा, २. वियडा, ३. संवुडा वियडा. संवुडा कहेतां ढांकी, वियडा कहेतां उघाडी, संवुडा वि-यडा कहेतां कांइक ढांकी अने कांइक उघाडी. हवे पांच स्थावर देवता अने नारकीमां योनी एक संवुडा, त्रण विग्लेन्द्रिय समुच्चय तिर्यंच अने समुच्चय मनुष्यमां त्रण योनी

पामे. संज्ञी तिर्यंच अने संज्ञी मनुष्यमां योनी एक संवुडा वियडा. हवे तेनो अल्पबहुत्व कहे छे. सर्वथी थोडी संवुडा वियडा, तेथी वियडा योनीया असंख्यातगुणा, तेथी अयोनीया अनन्तगुणा, तेथी संवुडा योनीया अनन्तगुणा. वळी योनी त्रण प्रकारनी छे:—१. संखा कहेतां शंखने आकारे, २. कछा कहेतां काचबाने आकारे, ३. वंशपत्ता कहेतां वांसना पांदडाने आकारे. चक्रवर्तिनी स्त्रीरत्ननी योनी शंखने आकारे ते योनीवाळी स्त्रीने संतान न थाय ५४ सलाखा पुरुषनी मातानी योनी काचबाने आकारे होय, अने सर्व मनुष्यनी मातानी योनी वांसना पांदडांने आकारे होय. ॥ इति श्री योनी पदनो थोकडो संपूर्ण. ॥

॥ अथ श्री तेर बोलनो थोकडो ॥

श्री पन्नवणा सूत्र पद पंदरमे तेर बोलनो विवरो चाल्यो ते कहे छे. श्री वीर भगवानने गौतम स्वामी वंदणा नमस्कार करीने एम पुछे छे के, हे भगवान ! पहले बोले—सो

वर्षना जुग केटला ? संवछर केटला ? अयन केटला ? रुतु केटली ? मास केटला ? पक्ष केटला ? अनवारूीयां केटलां ? दिन केटला ? पहोर केटला ? मुर्हुत केटलां ? घरूी केटली ? अने श्वासोश्वास केटला ? उत्तर—। सो वरसना वोस जुग थाय, सो वरसना सो संवछर थाय, बसे अयन थाय. रुतु छसो थाय, महीना बारसे थाय, पक्ष चोवीसे थाय, अठवारूीयां अरूतालीसें थाय, दिवस छत्रीस हजार थाय, पहोर बे लाख ने अठ्यासी हजार थाय, मुर्हुत दश लाख ने ऐंसी हजार थाय, घरूी एकवीस लाख ने साठ हजार थाय, श्वासोश्वास चारसें ने सात क्रोरू अरूतालीस लाख चालीस हजार थाय ॥ वीजे बोले एक दिवस शुरू समकित सहित रागद्वेष रहित क्षमा दया सहित पोषो करे तो शुं फळ थाय ? उ०—सत्यावीसे करोरू पल्योपम, सत्तोतेर करोरू पल्योपम, सीत्तेर लाख पल्योपम, सित्तोतेर हजार पल्योपम सातसे, सीत्तेर पल्योपम अने एक पल्योपमना नव भाग करीए तेमांथी आठ भाग ऊाऊेरा शुभ देवतानुं आउखुं वांधे ॥ त्रीजे बोले एक पहोरनो शुरू समकीत सहीत संवर करे तो तेनुं शुं फळ थाय ? उ०—त्रणसे करोरू पल्योपम, छेतालीस करोरू पल्योपम, वावीस

हजार पल्योपम, बसें ने बावीस पल्योपम अने एक पल्योपमना आठ भाग करीए तेमांथी सात भाग झाझेरा शुभ देवतानुं आउखुं बांधे ॥ चोथे बोले एक मुहुर्त शुद्ध समकीत सहीत सामायक करे तो तेनु शुं फल थाय? उ०—बाणु करोड पल्योपम, उगण साठ लाख पल्योपम, पचीस हजार पल्योपम, नवसेंने पचीस पल्योपम अने एक पल्योपमना सात भाग करीए तेमांथी त्रण भाग झाझेरा शूभ देवतानुं आउखुं बांधे ॥ पांचमे बोले एक घडीनो संवर करे तो शूं फळ थाय? उ०—बेंतालीस करोड पल्योपम, उगणत्रीस लाख पल्योपम, बार हजार नवसेंने सडसठ पल्योपम अने एक पलना छ भाग करीए तेमांथी चार भाग झाझेरा शुभ देवतानुं आउखुं बांधे ॥ छठे बोले एक नवकारशी तप करे तो शुं फळ थाय? उ०—उगणत्रीश लाख त्रेसठ हजार बसें ने सडसठ एक पळनो चोथो भाग शुभ देवतानुं आउखुं बांधे ॥ सातमे बोले एक अनुपुर्वी गणे तो शुं फळ थाय? उ०—पांचसे सागरना पाप नासे. आठमे बोले एक ऊणोदरी तप करे तो? उ०—सो वरसना पाप नासे. नवमे बोले एक उपवास करे तो? उ०—हजार वरसना नारकीना पाप नासे. दशमे बोले एक छठ

करे तो ? उ०—एक लाख वरसना नारकीना पाप नासे अग्यारमे बोले एक अठम करे तो ? उ०—एक करोड़ वरसना नारकीना पाप नासे॥ बारमे बोले चार तथा पांच उपवास करे तो ? उ०—क्रोडान क्रोड़ वरसना नारकीना पाप नासे. तेरमे बोले एक घड़ीना श्वासोश्वास केटला थाय ? उ०—एक हजार आठसे साड़ी बेतालीस थाय. बे घड़ीना श्वासोश्वास त्रण हजार सातसें ने तोंतेर थाय. एक दीवस रातना श्वासोश्वास एक लाख तेर हजार एकसो ने नेवु थाय. पोरसीना श्वासोश्वास पंदर हजार ने बाणु थाय. पंदर दिवसना श्वासोश्वास सोल लाख सत्ताणु हजार आठसे ने पचास थाय. एक मासना श्वासोश्वास त्रीस लाख पंचाणु हजार सातसें थाय. नव मासना श्वासोश्वास त्रण करोड़ चौद लाख दस हजार बसें ने पचीस थाय. एक वरसना श्वासोश्वास चार करोड़ सात लाख अड़तालीस हजार चारसें थाय. सो वरसना श्वासोश्वास चारसें करोड़ सात करोड़ अड़तालीस लाख ने चालीस हजार थाय॥ हवे श्वासोश्वास उपर सुख दुखनी वातो कहे छे. ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्तिनुं आउखु सातसे वरसनुं हतुं. तेना श्वासोश्वास अठावीसे करोड़ वावन करोड़ आड़त्रीस लाख एंसी हजार थाय.

श्वासोश्वास पुरा करीने सातमी नरके अपइठाण नरकावासे तेत्रीस सागरोपमनी स्थतीए गया. त्यां मनुष्यना नवमां ब्रह्मदत्त चकवर्ति ए श्वासोश्वास लीधा ते अकेक श्वासोश्वास उपर नरकमां केटलुं दुख परे छे ते कहे छे. अगीआर लाख छपन हजार नवसें ने पचास पल्योपम एक पल्योपमनो त्रीजो नाग ऊझेरो नरकमां दुःख नोगवे छे. हवे सुख आश्री कहे छे. धना अणगारे नव मास संजम पाळ्यो तेना श्वासोश्वास त्रण करोड पचास लाख एकसठ हजार ने त्रणसें थाय. ते धन्ना अणगार एटला श्वासोश्वास संजम पाळी सर्वार्थ-सिद्धे सुख पाम्या. ते मनुष्यना एक श्वासोश्वास उपर एक सो करोड पल्योपम, सात करोड पल्योपम, सत्ताणु लाख पल्योपम, छनुं हजार पल्योपम, नवसें अठाणुं पल्योपम; एक पल्योपमनो छठो नाग माठेरो एटलुं सुख नोगवे ॥ पुंडरीक अणगारे त्रण दिवस संजम पाळ्यो तना श्वासोश्वास त्रण लाख, ओगण चालीस हजार पांचसें ने सित्तेर श्वासोश्वास लीधा. एक श्वासोश्वास उपर सर्वार्थसिद्धमां ते अणगार नव हजार करोड पल्योपम सत्या-वीस करोड पल्योपम छोंत्तेर हजार करोड पल्योपम आठसें ने एकसठ पल्योपम अधीक

॥ अथ श्री छकायना भवनो थोकडो ॥

श्री गौतम स्वामि वीर जगवानने वंदणा नमस्कार करी पूछे छे के, हे जगवान ! छकायना जीव अंतर मुहूर्तमां केटला जव करे ? श्री वीर जगवान कहे के हे गौतम ! पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायरो ए जघन्य एक जव करे, उत्कृष्टा बार हजार आठसें चोवीस जव एक अंतर मुहूर्तमां करे. अने वनस्पतिना वे जेद ते प्रत्येक अने साधारण. हवे प्रत्येक जघन्य एक जव उत्कृष्टा बत्रीस हजार जव करे अने साधारण जघन्य एक जव अने उत्कृष्टा पांसठ हजार पांचसे छत्रीस जव करे. बेइंद्रिय जघन्य एक जव अने उत्कृष्टा एंसी जव करे. तेइंद्रिय जघन्य एक जव अने उत्कृष्टा साठ जव करे. चौरिंद्रिय जघन्य एक जव अने उत्कृष्टा चालीस जव करे. असंज्ञी तिर्यंच जघन्य एक जव अने उत्कृष्टा चो-

॥ अथ श्री छ लेश्यानो थोकडो. ॥

श्री उत्तराध्ययन सूत्र अध्यन चोत्रीसमे छ लेश्यानो थोकडो चाल्यो छे तेमां प्रथम लेश्याना अगीयार द्वार कहे छेः—१. नाम, २. वर्ण, ३. रस, ४. गंध, ५. स्परस, ६. परीणाम, ७. लक्षण, ८. स्थानक, ९. स्थिति, १०. गति, ११. चवन, ए अगीयार नाम कह्यां, हवे तेंनो विस्तार कहे छे. १ प्रथम नाम द्वार कहे छे—कृष्ण लेश्या १, नील लेश्या २, कापुत लेश्या ३, तेजु लेश्या ४, पद्म लेश्या ५, अने शुक्ल लेश्या ६ ॥ २ बीजो लेश्याना वर्ण नो द्वार कहे छे—कृष्ण लेश्यानो वर्ण (रंग)—जेवो पाणी सहित मेघ काळो, जेवां पाडानां शींगडां काळां, जेवां अ.ोठानां बीज काळां, जेवुं गाडानुं खंजन, आंखनी कीकी ए करतां अनन्त गुणो काळो. १. नील लेश्यानो वर्ण—जेवो अशोक वृक्ष नीलो, जेवी चास पक्षीनी पांख,

जेवुं वैरुर्य रत्न एथी अनन्त गुणो नील लेश्यानो नीलो वर्ण छे. २, कापुत लेश्या नो वर्ण जेवां अळशीना फुल, जवी कोयलनी पांख, जेवी पारेवानी ड्रोक कांइक राती, कांइक काळी ए करतां अनन्त गुणो अधिक कापुत लेश्यानो वर्ण जाणवो. ३. तेजु लेश्यानो वर्ण जेवो उगतो सूर्य रातो, जेवी सुडानी चांच, जेवी दीवानी शीखा ए करतां अनन्त गुणो अधिक रातो. ४. पद्म लेश्यानो वर्ण—जेवी हडताळ, जेवी हळदर, जेवां शणनां फूल, ए करतां अनन्त गुणो अधिक पीळो. ५ शुक्ल लेश्यानो वर्ण—जेवो शंख, जेवु अंक रत्न, जेवुं मोगरानुं फूल, जेवुं गायनुं दुध, जेवो रुपानो हार ए करतां अनन्त गुणो अधिक स्वेत ॥६॥ ३ त्रीजो लेश्या ना रस नो द्वार कहे छे—कृष्ण लेश्या नो रस जेवो कडवो तुंबडो, जेवो कडवो लींबडानो रस, जेवो रोहीणी नामे वनस्पतिनो रस, एथी अनन्त गुणो अधिक कडवो रस. १. नील लेश्या नो रस—जेवो सूंठनो तीखो रस, जेवो पीपर—मरीनो रस, एथी अनन्त गुणो अधिक तिखो रस. २ कापुत लेश्या नो रस—जेवो कुणी काची केरीनो रस, जेवां काचां कोठनो रस, एथी अनन्त गुणो अधिक खाटो रस ३. तेजु लेश्या नो

रस—जेवो पाका आंबानो रस, जेवो पाका कोठानो रस, एथी अनन्त गुणो कांइक खाटो ने कांइक मीठो रस.४. पद्म लेश्या नो रस—जेवो वारुणीनो रस, जेवो आशप (सरखा) नो रस, जेवो मधुनो रस एथी अनन्त गुणो मधुरो रस. ५. शुक्ल लेश्या नो रस—जेवो खजुरनो-रस, जेवो द्राक्षनो रस, जेवो दुधनो रस, जेवो साकरनो रस एथी अनन्त गुणो अधिक मीठो रस ॥६॥ ४ चोथो लेश्या ना गंधनो द्वार कहे छे—जेवो गायना मडानो, कुतरानां मडानो, सर्पना मडानो एथी अनन्त गुणो अधिक अप्रसस्थ, प्रथम त्रण माठी लेश्यानो गंध जाणवो.१. जेवो कपुर, केवडो, प्रमुख सुगंधी पदार्थ वाटतां (घुंटतां) जेवी सुगंध नीकळे ते करतां अनन्त गुणो प्रसस्थ त्रण सारी लेश्यानो गंध जाणवो ॥५ पांचमो लेश्या ना स्परस नो द्वार कहे छे—जेवी करवतनी धार, जेवी गायनी जीभ, जेवुं मुंझनुं तथा वांसनुं पांन, ते करतां अनन्त गुणो माठी अप्रसस्थ लेश्यानो स्परस जाणवो. १. जेवी बुर नामे वनस्पति, जेवुं माखण, जेवां सरसवनां फूल, जेवुं मखमल ए करतां अनन्त गुणो अधिक प्रसस्थ लेश्यानो स्परस सुंवाळो जाणवो ॥२॥ ६ छठो लेश्याना परिणाम नो द्वार कहे छे—लेश्या त्रण प्रकारे

प्रणमे—जघन्य, मध्यम, अने उत्कृष्ट. तथा नव प्रकारे प्रणमे ते उपर त्रण कही तेना अकेकना त्रण त्रण ज्ञेद थाय. जेमके, जघन्यनो जघन्य, जघन्यनो मध्यम, जघन्यनो उतकृष्ट ए रीते दरेकना त्रण त्रण ज्ञेद करतां नव ज्ञेद थाय. एम नवना सत्यावीस ज्ञेद थाय, एम सत्तावीस ना एकाशी ज्ञेद थाय, एम एकाशीना बसे ने त्रेंतालीस ज्ञेद थाय, एटले ज्ञेदे लेश्या परिणमे॥ ७ सातमो लेश्यानां लक्षणनो द्वार तेमां प्रथम कृष्ण लेश्या नां लक्षण कहे छे—पांच आश्रवनो सेवनार, त्रण अगुप्तिवंत, छकाय जीवनो हींसक, आरंज्ञनो तिव्र परीणामी तथा द्वेषी, पाप करवामां सहासीक, निठोर परिणामी, जीवहीसा शुग रहित करनार, अजीतेन्द्री एवा जोगे करी सहित होय तने कृष्ण लेश्यानुं लक्षण जाणवुं. नील लेश्या नां लक्षण कहे छे—इर्ष्यावंत, अमृखवंत, तप रहित, मायावी, पाप करतां लाजे नहीं, गृधी, धूतारो, प्रमादी, रसनो लोलपी, मायानो गवेष, आरज्ञनो अत्यागी, पापने विषे सहासीक, ए नील लेश्यानां लक्षण जाणवां. कापुत लेश्यानां लक्षण कहे छे—वांका बोलो, वांकां काम करनार, माया करीने हरखाय, सरळपणा रहित, मोढे जुदो अने

रस—जेवो पाका आंबानो रस, जेवो पाका कोठानो रस, एथी अनन्त गुणो कांइक खाटो ने कांइक मीठो रस.४. पद्म लेश्या नो रस—जेवो वारुणीनो रस, जेवो आशप (सरखा) नों रस, जेवो मधुनो रस एथी अनन्त गुणो मधुरो रस. ५. शुक्ल लेश्या नो रस—जेवो खजुरनो-रस, जेवो द्राक्षनो रस, जेवो दुधनो रस, जेवो साकरनो रस एथी अनन्त गुणो अधिक मीठो रस ॥६॥ ४ चोथो लेश्या ना गंधनो द्वार कहे छे—जेवो गायना मडानो, कुतरानां मडानो, सर्पना मडानो एथी अनन्त गुणो अधिक अप्रसस्थ, प्रथम त्रण माठी लेश्यानो गंध जाणवो.१. जेवो कपुर, केवडो, प्रमुख सुगंधी पदार्थ वाटतां (घुंटतां) जेवी सुगंध नीकळे ते करतां अनन्त गुणो प्रसस्थ त्रण सारी लेश्यानो गंध जाणवो ॥५ पांचमो लेश्या ना स्परस नो द्वार कहे छे—जेवी करवतनी धार, जेवी गायनी जीभ, जेवुं मुंजनुं तथा वांसनुं पांन, ते करतां अनन्त गुणो माठी अप्रसस्थ लेश्यानो स्परस जाणवो. १. जेवी बुर नामे वनस्पति, जेवुं माखण, जेवां सरसवनां फूल, जेवुं मखमल ए करतां अनन्त गुणो अधिक प्रसस्थ लेश्यानो स्परस सुंवाळो जाणवो ॥२॥ ६ छठो लेश्याना परिणाम नो द्वार कहे छे—लेश्या त्रण प्रकारे

प्रणमे—जघन्य, मध्यम, अने उत्कृष्ट. तथा नव प्रकारे प्रणमे ते उपर त्रण कही तेना अकेकना त्रण त्रण भेद थाय. जेमके, जघन्यनो जघन्य, जघन्यनो मध्यम, जघन्यनो उतकृष्ट ए रीते दरेकना त्रण त्रण भेद करतां नव भेद थाय. एम नवना सत्यावीस भेद थाय, एम सत्तावीस ना एकाशी भेद थाय, एम एकाशीना बसे ने त्रेंतालीस भेद थाय, एटले भेदे लेश्या परिणमे ॥ ७ सातमो लेश्यानां लक्षणनो द्वार तेमां प्रथम कृष्ण लेश्या नां लक्षण कहे छे—पांच आश्रवनो सेवनार, त्रण अगुप्तिवंत, छकाय जीवनो हींसक, आरंभनो तिव्र परीणामी तथा द्रुषी, पाप करवामां सहासीक, निठोर परिणामी, जीवहींसा शुग रहित करनार, अजीतेंद्री एवा जोगे करी सहित होय तने कृष्ण लेश्यानुं लक्षण जाणवुं. नील लेश्या नां लक्षण कहे छे—इर्ष्यावंत, अमृखवंत, तप रहित, मायावी, पाप करतां लाजे नहीं, गृधी, धूतारो, प्रमादी, रसनो लोलपी, मायानो गवेष, आरंभनो अत्यागी, पापने विषे सहासीक, ए नील लेश्यानां लक्षण जाणवां. कापुत लेश्यानां लक्षण कहे छे—वांका बोलो, वांकां काम करनार, माया करीने हरखाय, सरळपणा रहित, मोढे जुदो अने

पुठे जुदो, मिथ्या खोटां वचननो बोलनार, चोरी मछरनो करनार, ए कापुत लेश्यानां लक्षण जाणवां. तेजु लेस्यानां लक्षण कहे छे—मर्यादावंत, माया रहित, चपळपणा, रहित कतोहळ रहित, विनयवंत, दमीतेंद्री, शुभ जोगवंत, उपध्यान तप सहित, दृढ धर्मी, प्रीय धर्मी, पाप थकी बीहे, ए तेजुलेश्यानां लक्षण जाणवां. पद्म लेश्यानां लक्षण कहे छे—क्रोध, मान, माया, लोभ, पातळा कर्या छे. प्रशांत चित्त आत्मानो दमणहार, योग, उपध्यान सहित होय, थोमाबोलो, उपशांत जीतेंद्रि, ए पद्म लेश्यानां लक्षण जाणवां. शुकल लेश्यानां लक्षण कहे छे—आर्तध्यान, रौद्रध्यान, सर्वथा रहित, धर्म ध्यान, शुकल ध्यान सहित, दश प्रकारनी चित्त समाधिए करी सहित, आत्मानो दमणहार, इत्यादिक शुकल लेश्यानां लक्षण जाणवां. आठमो लेश्याना स्थानकनो द्वार कहे छे—असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना जेटला समय थाय तथा असंख्याता लोकना जेटला आकाश प्रदेश थाय, एटलां लेश्यानां स्थानक जाणवां. ए. नवमो लेश्यानी स्थितिनो द्वार कहे छे—कृष्ण लेश्यानी स्थिति जघन्य अंतर मुहूर्तनी, उत्कृष्टी ३३ सागरोपम ने अंतर मुहूर्त अधिक; नील ले-

श्यानी स्थिति जघन्य अंतर मुहुर्तनी, उत्कृष्टी दश सागरोपम ने पलनो असंख्यातमो नाग अधिक; कापुत लेश्यानी स्थिति जघन्य अंतर मुहूर्तनी, उत्कृष्टी त्रण सागरोपम ने पलनो असंख्यातमो नाग अधिक; तेजु लेश्यानी स्थिति जघन्य अंतर मुहूर्तनी, उत्कृष्टी वे सागर ने पलनो असंख्यातमो नाग अधिक; पद्म लेश्यानी स्थिति जघन्य अंतर मूहूर्तनी उत्कृष्टी दश सागरोपम ने अंतर मुहूर्त अधिक; शुक्ल लेश्यानी स्थिति जघन्य अंतर मुहूर्तनी, उत्कृष्टी ३३ सागरोपम ने अंतर मुहूर्त अधिक. ए समुच्चय लेश्यानी स्थिति कही, हवे चार गतिनी लेश्यानी स्थिति कहे छे. प्रथम नारकीनी लेश्यानी स्थिति कहे छे– कापुत लेश्यानी स्थिति जघन्य दश हजार वर्षनी, उत्कृष्टी त्रण सागरोपम ने पलनो असंख्यातमो नाग, नील लेश्यानी स्थिति जघन्य त्रण सागर ने पलनो असंख्यातमो नाग, उत्कृष्टी दश सागर ने पलनो असंख्यातमो नाग; कृष्ण लेश्यानी स्थिति जघन्य दशसागर ने पलनो असंख्यातमो नाग, उत्कृष्टि तेत्रीस सागर ने अंतर मुहूर्त अधिक ए नारकीनी लेश्या कही. हवे मनुष्य तीर्यंचनी लेश्यानी स्थिति कहे छे–पहेली पांच लेश्यानी

स्थिति जघन्य उत्कृष्टी अंतर मुहूर्त्तनी, शुक्ल लेश्यानी स्थिति केवळी आश्री जघन्य अंतर मुहूर्तनी, उत्कृष्टी नव वर्ष उणी पूर्व क्रोमनी. हवे देवतानी लेश्यानी स्थिति कहे-छे–नवनपति, वाणव्यंतर ए बेमां कृष्ण लेश्यानी स्थिति जघन्य दश हजार वर्षनी, उत्कृष्टी पलना असंख्यातमा नागनी; नील लेश्यानी स्थिति जघन्य कृष्ण लेश्यानी उत्कृष्टी स्थिति थी एक समय अधिक ने उत्कृष्टी पलनो असंख्यातमो नाग; कापुत लेश्यानी स्थिति जघन्य नील लेश्यानी उत्कृष्टी स्थिति थी एक समय अधिक, उत्कृष्टी पलना असंख्यातमा नागनी; तेजुलेश्यानी स्थिति जघन्य दश हजार वर्षनी; नवनपति वाणव्यंतरनी उत्कृष्टि बे सागर ने पलनो असंख्यातमो नाग अधिक; वैमानिक देवनी पद्म लेश्यानी स्थिति जघन्य तेजुलेश्यानी उत्कृष्टी स्थिति थी एक समय अधिक, वैमानिक नी उत्कृष्टी दश सागर ने अंतर मुहूर्त अधिक, वैमानिकनी शुक्ल लेश्यानी स्थिति जघन्य पद्म लेश्यानी उत्कृष्टि स्थिति थी एक समय अधिक, उत्कृष्टि तेत्रीस सागर उपर अंतर मुहूर्त अधिक.

१०. दशमो लेश्यानी गतिनो द्वार कहे छे–कृष्ण, नील, कापुत ए त्रण अप्रसस्थ अधम

लेश्या तेणे करी जीव डुर्गति जाय. तेजु, पद्म, शुक्ल ए त्रण धर्म लेश्या, तेणे करीने जीव सुगतिए जाय. ११. अगीआरमो लेश्याना चवननो द्धार कहे ठे—सघळी लेश्या प्रथम प्रणमती वखते कोइ जीवने उपजवुं के चववुं नथी ॥ तथा लेश्याना ठेल्ला समये कोइ जीवने उपजवुं के चववुं नथी ॥ परन्नवने विषे केम चवे ते कहे ठे—लेश्या परन्नवनी आवी थकी अंतर मुहूर्त गया पठी शेष अंतर मुहूर्त्त आउखा आफ्ता रहे थके जीव परलोकने विषे जाय. ॥ इति श्री लेश्यानो थोकमो संपूर्ण. ॥

॥ अथ श्री चार कषायनो थोकडो. ॥

श्री पन्नवणाजी सूत्र पद चौदमे कषायनो वर्णव चाल्यो ठे. कषाय १६ प्रकारे कही ठे—१ पोताने माटे, २. परने माटे, ३. तडुन्नया कहेतां वन्ने माटे, ४. खेत कहेतां उघाफी जमीनने माटे ५. वथ्थु कहेतां ढांकी जमीनने माटे, ६. शरीर माटे, ७. उपधिने माटे, ८. निरर्थकपणे, ए. जाणतां, १०. अजाणतां, ११. उपशांतपणे, १२. अणुपशांतपणे, १३ अनंतानुवंधी क्रोध,

१४. अप्रत्याख्यानी क्रोध, १५. प्रत्याखानी क्रोध, १६. संजलनो क्रोध, एवं १६. ते १६ समुच्चय जीवआश्री अने चोवीश दंडक आश्री एम २५ ने १६ सोले गुणतां ४०० थाय. हवे कषायना दळीआ कहे छे—चणीआ, उपचणीआ, बांध्या, वेदया, उदीरीया; निर्जर्या एवं छ. ते भूतकाळ, वर्तमानकाळ, अने भविष्यकाळ आश्री एम ६ ने ३ त्रणे गुणतां १८ थाय. ते एक जीव आश्री अने १८ बहु जीव आश्री एवं ३६ थाय ते समुच्चय जीव आश्री, अने चोवीश दंडक आश्री, एम ३६ ने २५ से गुणतां ९०० थाय. अने ४०० उपर कह्या ते मळी कुल १३०० क्रोधना, १३०० मानना, १३०० मायाना, अने १३०० लोभना, एवं सर्व मळी ५२०० थाय ॥ इति कषायनो थोकडो संपूर्ण. ॥

॥ अथ श्री संजयाना बोल ॥

गाथा ॥ पन्नवणा १ वेय २ रागे ३ ॥ कप्प ४ चरित ५ पडिसेवणा ६ नाणे ७ ॥
तिहेय ८ लिंगे ९ शरीरे १० ॥ खेत ११ काल १२ गइ १३ संजम १४ निकासे १५ ॥ १ ॥

जोगु १६ उवजोगे १७ कसाए १८ ॥ लेशा १९ परिणाम २० बंध २१ वेदेय २२ ॥ कम्मोदीरणा २३ उव संप जहणा २४ ॥ सन्नाय २५ आहारे २६ ॥ २ ॥ नव २७ आगरिसे २८ कालं २९ तरेय ३० ॥ समुघाय ३१ खेत ३२ फुसणाय ३३ ॥ नावेय ३४ परिमाणे ३५ खलु ॥ अपाबहुच्च ३६ संजयाणं ॥ ३ ॥ इति गाथा त्रण संपूर्ण ॥

॥ ३ ॥ उपली त्रण गाथानो अर्थ विस्तारी कहे छे ॥

१ पन्न० ॥ सामायक चारित्रना बे नेद । एक थोमा कालनुं ते प्रथम जिनेश्वरने तथा चर्म जिनेश्वरने वारे ॥ १ ॥ बीजुं घणा कालनुं ते बावीस जिनने वारे । तथा महा विदेह क्षेत्रे ॥ २ ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय ना बे प्रकार । एक अतीचार सहित ने पंच महाव्रत आरोपीए । बीजुं अतीचार रहित ने पंच महाव्रत आरोपीए २ । परिहार विसुध चारित्रना बे प्रकार । एक तप करवा पेठो ॥ १ ॥ बीजो परिहार विसुध चारित्र सेवीने नीकळ्यो ते २ ॥ ३ ॥ सूक्ष्म संपराय चारित्रना बे प्रकार । एक उपसम श्रेणीथी पमतो ॥ १ ॥ बीजो क्षपक श्रे-

णीए चरूतो ॥ २ ॥ ४ ॥ यथाख्यात चारित्रना बे प्रकार । एक छद्मस्थ ॥१॥ बीजो केवळीनो ॥ २ ॥

२ सामायक ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय २ सवेदी ने अवेदी बे जो अवेदी होय तो । उपसम वेदीने क्षीण वेदि होय । अने सवेदी होय तो । त्रणे वेदमां होय। अने परिहार विसुध सवेदी होय पण अवेदी न होय । सवेदी होय तो पुरुष १ ॥ पुरुष नपुंसक । ए बे वेदमां होय॥ सूक्ष्म संपराय १ अने जथाख्यात ए ॥२॥ अवेदी होय उपसम ने क्षीणवेदी होय

३ आगला ॥ ४ चारित्र ॥ सरागी । अने जथाख्यात वीतरागी ते उपसम ने क्षीण रागी होय ॥

४ स्थीती कल्प ॥१॥ अस्थीती कल्प ॥२॥ जिनकल्प ॥ ३ ॥ स्थिवर कल्प ॥ ४ ॥ कल्पातीत ॥५॥ तेमां स्थीती कल्पमां ॥ ५ चारित्र लाभे ॥ अस्थीती कल्पमां ३ चारित्र लाभे सामायक ॥ १ ॥ सुक्ष्म संपराय ॥२॥ जथाख्यात । ए ३ ॥ लाभे जिनकल्प अने स्थिवरकल्प ए ॥ २ मां आगल्या ॥ ३ चा० लाभे ॥ कल्पाती-तमां ॥ ३ चारित्र लाभे सा० ॥ सु० ॥

जथाख्यात । ए ३ लाभे ॥

५ पुलाक ॥ १ ॥ वकुस ॥ २ ॥ प्रति से
वणा ॥ ३ ॥ कषाय कुसील ॥ ४ ॥ नि-
ग्रंथ ॥ ५ ॥ स्नातक ॥ ६ ॥ तेमां । पुलाक
॥ १ ॥ वकुस ॥ २ ॥ प्रति सेवणा ॥३॥
ए ३ मा बे चारित्र लाभे । सामा० ॥१॥
छेदो० । ए २ चारित्र लाभे । कषाय कु-
शीलमां आगल्या ॥ ४ चारीत्र लाभे ।
निर्ग्रंथमां ने स्नातकमां । एक जथाख्यात
चारित्र लाभे ॥

६ हवे प्रतिसेवणा द्वार कहे छे । प्रतिसे-
वीमां आगल्या ॥ २ चारित्र लाभे ॥
तेमां पण मुल गुण उत्तर गुण प्रति-
सेवीमां बे आगल्या चारित्र लाभे ॥
अने अप्रतिसेवीमां तो ॥ ५ चारित्र लाभे

७ हवे ज्ञान द्वार कहे छे । आगल्या ॥ ४
चारित्रमां ॥ २ ज्ञान ॥ ३ ॥ ज्ञान ॥ ४
ज्ञान लाभे । जथाख्यातमां ज्ञान ५ ज-
जना । अज्ञान एके चारित्रमां लाभे नही
। हवे केटलुं जणे । सामा० ॥१॥ छेदो०
२ । सूक्ष्म० ३ । जथाख्यात ॥ ४ । ए ॥
४ चारित्र जघन्य ॥ ८ प्रवचनमाता ।
जणे । उत्० ॥ १४ पूर्व पुरा जणे । परि-
हार वीसुध नवमा पूर्वनी त्रिजि आचार

वहु जणे । ज० । देशे जणा ॥ १० पुर्व जणे ॥

८ हवे तीर्थद्वार कहे छे ॥ तीर्थमां पांच चारित्र लाभे । अतीर्थमां ३ चारित्र लाभे ते सामा० ॥१॥ सुक्ष्मसंपराय ॥२॥ जथाख्यात ३ । तिर्थंकर प्रत्येकबूधमां ॥ पण एज ३ चारित्र लाभे ॥

ए हवे लिंगद्वार कहे छे । द्रव्यलिंग आश्री सलिंगमां ॥ ५ चारित्र लाभे । अन्य लिंग ग्रहलिंगमां । परिहार वीसुध वरजीने ॥ ४ चारित्र लाभे । भावलिंग आश्री सलिंगमां ५ चारित्र लाभे । अन्यलिंग ग्रहलिंगमां एके चारित्र लाभे नही ॥

१० हवे सरीरद्वार कहे छे । सामा० । छेदो० । ए २ मां ॥ ३ शरीर ॥ ४ शरीर तथा ॥ ५ शरीर पण लाभे । पाछला ॥ ३ चारीत्रमां ॥ ३ शरीर लाभे ते ॥ उदारीक ॥ १ ॥ तेजस ॥ २ ॥ कार्मण ॥ ३ ॥

११ हवे क्षेत्रद्वार कहे छे । कर्म भुमीमां जन्म छत आश्री ॥ ५ चारित्र लाभे । अकर्म भुमीमां एके चारित्र न लाभे ॥ साहारणआश्री कर्म भुमीमां अकर्म भुमीमां परीहार वीसुध वरजीने ॥ ४ चारीत्र लाभे ॥

१२ हवे कालद्वार कहेछे । अवसर्पिणी ॥
उत्सर्पिणी ॥ ए २ मां ॥ ५ चारित्र लाभे
। नोअवसर्पिणी नोउत्सर्पिणीमां । छे-
दोप० । परिहार० । ए २ वरजीने ॥ ३
चारित्र लाभे ॥
तेमां अवसर्पिणी काळमां जन्म आश्री
॥ १ । २ ॥ आरामां एके चारित्र न लाभे
॥ ३। ४॥ आरामां ॥ ५ ॥ चारित्र लाभे
। पांचमां आरामां ॥२ चारित्र लाभे । सा-
मा० ॥ १॥ छेदो० ॥२ ॥ ए ॥ २ चारित्र
लाभे। छठे आरे एके न लाभे ॥ हवे उत
आश्री ॥ १ । २ ॥ आरामां एके चारित्र

न लाभे ॥ ३ । ४ । ५ ॥ आरामां ॥ ५ चा-
रित्र लाभे ॥ छठा आरामा एके चारित्र
लाभे नही । साहारण आश्री परिहार
वीसुध वरजीने ॥ ४ चारित्र लाभे । हवे
चढता काळमां । जन्म आश्री ॥ १ आरे
एके चारित्र न लाभे ॥ २ । ३ । ४ ॥ आ-
रामां ॥ ५ चारित्र लाभे ॥ ५ । ६ ॥ आरा-
मां एके चारित्र लाभे नही । हवे उत
आश्री ॥ १ । २ ॥ आरामां एके चारित्र
न लाभे ॥ ३ । ४ ॥ आरामां ॥ ५ चारि-
त्र लाभे ॥ ५ । ६ ॥ आरामां एके चा-
रित्र न लाभे । हवे साहारण आश्री प-

रिहारवीसुध वरजीने ॥ ४ ॥ चारित्र लाभे । नोउत्सर्पिणी नोअवसर्पिणीमां । जन्म छत आश्री ॥ ६ जुगलीयाना क्षेत्रमां एके चारित्र न लाभे ॥ पंचमहाविदेह क्षेत्रमां । छेदो० । परिहार विसुध वरजीने ॥ ३ चारित्र लाभे । हवे साहारण आश्री परिहार वीसुध वरजीने ॥ ६ अकर्म भूमि १ महाविदेह एवं ७ क्षेत्रमां ॥ ४ चारित्र लाभे ॥

१३ हवे गति द्वार कहे छे । नरक ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ मनुष्य । ए ३ ॥ गतिमां न जाय । १ देव गतिमां जाय । तेमां । सामा० छेदो० । ए २ आराधक आश्री जघन्य । पहेले देवलोके उत्० । अनुत्तर विमाने जाय । परिहार वीसुध । जघन्य० ॥ १ देवलोके जाय । अने । उत्० । आठमे देवलोके जाय । सूक्ष्म संपराय ॥ १ ॥ जथाख्यात ॥ २ ॥ ए ॥ २ ज० । उ० । अनुत्तर विमाने जाय । अने जथाख्यात वाळो मोक्ष पण जाय । हवे आराधक पांच पदवी पामे । इंद्रनी ॥ १ ॥ सामानीक नी ॥ २ ॥ त्राय त्रिंसकनी ॥ ३ लोक पाळनी ॥ ४ ॥ अहमेंद्रनी ॥५॥ पदवी पामे । तेमां । सामा० ने छेदो० ।

ए २ ॥ पांच पदवी पामे । परिहार विसुध
१ अहमेंद्रनी वरजीने ॥ ४ पदवी पामे
। सूक्ष्म संपरायने जथाख्यात । ए २ ॥
१ अहमेंद्रनी पदवी पामे । हवे विराध-
क आश्री पांचे चारित्रवाळा । ज० । भ-
वन पतीमां जाय । उ० । पेहेले देव
लोके जाय । पदवी पांच मांहेली एके न
पामे ॥ हवे स्थिति कहे छे । आवता भव
आश्री । आगल्या २ ॥ चारित्रनी । ज०
बे पल्यनी । उ० ॥ ३३ सागरनी । परि-
हार वीसुधनी । ज० बे पल्यनी उ० ॥
१८ सागरनी ॥ सूक्ष्मम संपराय । जथा-
ख्यात । ए २ चारित्रनी । जघन्य० उत्-
कृष्टी ॥ ३३ सागरनी ॥
१४ हवे संजमठाण द्वार कहे छे । आगल्या
॥ ३ चारित्रना असंख्याता स्थानक ।
सूक्ष्म संपरायना असंख्याता स्थानक
अंतर्मु० काळ प्रमाणे समय २ प्रते चा-
रित्रनी विशुद्धिना विशेषभावथी ते
असंसय थाय अने जथाख्यातनुं एकज
स्थानक ॥ हवे अल्प बहुत्व । सर्वथी
थोडा । जथाख्यातना स्थानक ॥ १ ॥
तेथी सूक्ष्म संपरायना असंख्यात गुणा
॥ २ ॥ तेथी परिहार वीसुधना असं-

ख्यात गुणा ॥ ३ ॥ तेथी । सामा० ।
ने छेदोप० मांहोमांहि तुल्य ने असं-
ख्यात गुणा ॥ ४ ॥

१५ हवे निकास द्वार कहे छे । पांचे चारित्रना अनंतापर्यव जाणवा ॥ सामायक. ॥ १ ॥ छेदोप० ॥ २ ॥ परिहार वीसुध ॥ ३ ॥ साथे छठाण वडियो ॥ उपल्या २ थी अनंत गुणहीण ॥ १ ॥ छेदोपस्था० सामायक० । छेदो० । परिहार वीसुध साथे छठाण वडियो । उपल्या ॥ २ थी अनंत गुण हीण ॥ २ ॥ हवे परिहार वीसुध ॥ सामा० । छेदोप० । परिहार वीसुध साथे ॥ छठाण वडियो । उपला २ थी अनंत गुण हीण ॥ ३ ॥ हवे सुक्ष्म संपराय । सामायक । छेदोप० । परिहार वीसुधथि अनंत गुण अधिक । पण ॥ नो तुल्य० । सूक्ष्म संपराय । सूक्ष्म संपराय साथे ॥ छठाण वडीयो । जो हीणो होय तो । अनंत गुणहीणो । जो अधिको होय तो अनंत गुण अधिक । अने तुल्य पण होय । अने जथाख्यातथि अनंत गुण हीण ॥ जथाख्यात आगल्या ॥ ४ थी अनंत गुण अधिक ॥ जथाख्यात जघा

ख्यात साथे तुल्य ॥ हवे अल्प बहुत्व । सर्वथी थोडा सामायक । छेदोपस्थापनीक ना ज० पर्यव ॥ मांहोमांहि तुल्य तेथी परिहार वीसुधना । ज० पर्यव अनंत गुणा । तेथी परिहार वीसुधना । उ० पर्यव अनंत गुणा ॥ तेथी सामायक० छेदोपस्थापनिय ना ॥ उत्० पर्यव अनंत गुणा अने मांहोमांहि तुल्य । तेथि सूक्ष्म संपरायना । ज० पर्यव अनंत गुणा । तेथी सूक्ष्म संपरायना उ० पर्यव अनंत गुणा॥तेथी जथाख्यातना ज०।उ०। पर्यव अनंत गुणा ने मांहोमांहि तुल्य ॥

१६ हवे जोग द्वार कहे छे । पांचे चारित्र सजोगीमां ते मन जोग ॥ १ ॥ वचन जोग ॥२॥ काय जोग ॥ ३ मां आगल्या चारित्र ॥ ४ लाभे ॥ अने अजोगीमां एक जथाख्यात लाभे ॥

१७ हवे उपयोग द्वार कहे छे । सागार उपयोगमां पांचे चारित्र लाभे । अणागार उपयोगमां सूक्ष्म संपराय वरजीने ॥ ४ चारित्र लाभे ॥

१८ हवे कषाय द्वार कहे छे । आगल्या ॥ ४ चारित्र स कसाई । एक छेहलो अकसाई । आगल्या ॥ ३ चारित्रमां । संज

लनो क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोन ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ लान्ने । अने सूक्ष्म संपरायमां । १ संजलनो लोन लान्ने । जथाख्यात उपसमने क्षिणकसाई होय ॥

१ए हवे लेश्या द्वार कहे बे । सलेसीमां पांचे चारित्र लान्ने । अलेसीमां एक बेलो । सामा० ॥ बेदोपस्थापनीयमां लेश्या ॥ ॥६॥ लान्ने । परिहार वीसुद्धमां पाबली ॥ ३ लेश्या लान्ने ॥ उपल्या ॥ २ मां १ सुक्ल लेश्या लान्ने ॥

२० हवे परिणाम द्वार कहे बे । वर्द्धमान परिणाममा पांचे चारित्र लान्ने । हायमान परिणाममां आगल्या ॥ ४ ॥ चारित्र लान्ने ॥ अवस्थित परिणाममां ॥ सूक्ष्म संपराय वरजीने ॥ ४ चारित्र लान्ने ॥ तेमां आगल्या ॥ ४ नी जघन्य वृद्धी ॥ १ समो ॥ उत्० ॥ अंतर्मुहू० । अने जथाख्यातनी ॥ ज० उ० वृद्धि । अंतर्मु० । हवे हायमानमां आगल्या ॥ ४ नी ज० ॥ १ ॥ समो । उ० अंतर्मु० । हवे अवस्थितमां आगल्या ॥ ३ नो । ज० ॥ १ ॥ समो । उ० ॥ ७ सम० ॥ जथाख्यातनी । ज० ॥ १ समो । उत-

कृष्टी । देशे ऊणा पूर्व क्रोमनी ॥

२१ हवे बंध द्वार कहे छे । आगल्या ॥ ३ ॥ चारित्र ॥ ७ कर्म तथा ॥ ८ ॥ कर्म बांधे ॥ ७ बांधे तो आउखु वरजीने । सूक्ष्म संपराय ॥ ६ कर्म बांधे । आउखु मोहनी वरजीने। जथाख्यात एक साता वेदनीय बांधे अथवा अबंध पण होय ॥

२२ वेद द्वार कहे छे आगल्या ॥ ४॥ चारित्र आठे कर्म वेदे ॥ अने जथाख्यात सात कर्म वेदे । मोहनीय वरजीने । तथा ॥ ४ वेदे तो । वेदनी ॥ १ ॥ आयु ॥ २॥ नाम ॥ ३ ॥ गोत्र० ए ४ वेदे ॥

२३ हवे उदीरणा द्वार कहे छे । आगल्या ३ चारित्र ॥ आठ कर्मनी उदीरणा करे ॥ ७ नी करे तो आउखु वरजीने ॥ ६ नी करे तो वेदनी वरजीने ॥ सूक्ष्मम सं-पराय ॥ ६ कर्मनी उदीरणा करे । आ-उखु ॥ मोहनी वरजीने ॥ ५ नी करे तो । आउखु मोहनी वेदनी वरजीने । जथाख्यात ॥ ५ नी उदीरणा करे । तथा ॥ २ नी करे तो । नाम १ ॥ गोत्र । ए २ ॥ नी उदीरणा करे ॥

२४ हवे उवसंपजहणा द्वार कहे छे । सामा यक चारित्रवाळो चरूे तो । छेदो० । सू-

क्ष्म संपरायपणुं पामे । अने पमे तो अ-
संजति० ने श्रावकपणुं पामे ॥ १ ॥ बेदो०
। चमे तो परिहा० । सूक्ष्म० पणुं पामे ।
पमे तो सामा० । असंजती० ने श्रावक-
पणुं पामे ॥ परिहा० चमे नही । पमे तो
। बेदो० । असंजतीपणुं पामे ॥ सूक्ष्म संप०
चमे तो जथाख्यात पणुं पामे पमे तो ।
सामा० । बेदो० । असंजमपणुं पामे जथा-
ख्यात चमे तो मोक्षमां जाय । पमे तो ।
सूक्ष्म० । असंजमपणुं पामे ॥

२५ हवे सन्ना द्वार कहे बे । सनावउतामां ।
आगल्या ॥ ३ चारित्र लाजे । नोसना-
वउतामां । पांचे चारित्र लाजे ॥

२६ हवे आहार द्वार कहे बे । पांचे चारित्र
आहारकमां लाजे । एक जथाख्यात अ-
णाहारकमां पण होय ॥

२७ हवे जव द्वार कहे बे । सामा० । बेदो०
। ज० ॥ १ जव ॥ उत्कृष्टा ॥ ८ जव करे
। बाकी ॥ ३ चारित्रवाळा ज० १ जव ।
उ० ॥ ३ जव करे ॥

२८ हवे आकर्ष द्वार कहे बे । एक जव आश्री
सामायक० ॥ जघन्य ॥ १ वार आवे
॥ उत्० प्रत्येकसें ॥ ए०० वार आवे
॥ १ ॥ बेदो० ॥ ज० ॥ १ ॥ उत्० वी-

सपहुत्तं १२० ॥ २ ॥ परिहार० । ज० १
॥ उत्० ३ ॥ ३ ॥ सूक्ष्म० । ज० १ उ०
४ ॥ ४ ॥ जथाख्यात । ज० ॥ १ ॥ उ०
२ ॥ ५ ॥ हवे घणा नव आश्री सामा०
। ज० ॥ २ वार आवे ॥ उ० प्रत्येक ह-
जारवार आवे ॥ १ ॥ छेदो० ज० २ ॥
उत्० ९६० ॥ २ ॥ परिहा० ज० २ उ०
७ ॥ ३ ॥ सूक्ष्म० । ज० २ ॥ उ० ९ ॥
४ ॥ जथाख्यात । ज० २ ॥ उ० ५ ॥५॥
२९ हवे स्थिती द्वार कहे छे। एक वचन
आश्री । सामा० छेदो० । ज० ॥ १ समय।
उ० । देशे उणी पूर्व कोमनी । परिहा०।
ज० ॥ १ समो उ० २९ वरस उणी पूर्व
कोम ॥ सूक्ष्म० । ज० ॥ १ समो । उ० ।
अंतर्मु० ॥ जथाख्यात ज० ॥ १ समो ।
उ० । देशे उणी पूर्व कोम ॥ घणा नव
आश्री । सामायकनि । ज० उ० । सर्वे
काळ ॥ छेदोप० । ज० ॥ २५० वरस ।
उ० ५० लाख कोम सागर ॥ परिहा० ।
ज० ॥ २०० वरस। उ० देशे उणी ॥ २
पूर्व कोम ॥ सूक्ष्म० । ज० १ समो । उ० ।
अंतर्मु० ॥ जथाख्यात ज० । उ० । सर्वे-
काळ ॥
३० हवे अंतर द्वार कहे छे। एक वचन

सपहुत्तं १२० ॥ २ ॥ परिहार० । ज० १
॥ उत्० ३ ॥ ३ ॥ सूक्ष्म० । ज० १ उ०
४ ॥ ४ ॥ जथाख्यात । ज० ॥ १ ॥ उ०
२ ॥ ५ ॥ हवे घणा जव आश्री सामा०
। ज० ॥ २ वार आवे ॥ उ० प्रत्येक ह-
जारवार आवे ॥ १ ॥ छेदो० ज० २ ॥
उत्० ९६० ॥ २ ॥ परिहा० ज० २ उ०
७ ॥ ३ ॥ सूक्ष्म० । ज० २ ॥ उ० ९ ॥
४ ॥ जथाख्यात । ज० २ ॥ उ० ५ ॥५॥

२९ हवे स्थिती द्वार कहे छे। एक वचन
आश्री । सामा० छेदो० । ज० ॥ १ समय।
उ० । देशे उणी पूर्व क्रोडनी। परिहा०।
ज० ॥ १ समो उ० २९ वरस उणी पूर्व
क्रोड ॥ सूक्ष्म० । ज० ॥ १ समो । उ० ।
अंतर्मु० ॥ जथाख्यात ज० ॥ १ समो ।
उ० । देशे उणी पूर्व क्रोड ॥ घणा जव
आश्री । सामायकनि । ज० उ० । सर्वे
काळ ॥ छेदोप० । ज० ॥ २५० वरस ।
उ० ५० लाख क्रोड सागर ॥ परिहा० ।
ज० ॥ २०० वरस। उ० देशे उणी ॥ २
पूर्व क्रोड ॥ सूक्ष्म० । ज० १ समो । उ० ।
अंतर्मु० ॥ जथाख्यात ज० । उ० । सर्वे-
काळ ॥

३० हवे अंतर द्वार कहे छे। एक वचन

क्ष्म संपरायपणुं पामे । अने पमे तो अ-संजति० ने श्रावकपणुं पामे ॥ १ ॥ छेदो० । चमे तो परिहा० । सूक्ष्म० पणुं पामे । पमे तो सामा० । असंजती० ने श्रावकपणुं पामे ॥ परिहा० चमे नही । पमे तो । छेदो० । असंजतीपणुं पामे ॥ सूक्ष्म संप० चमे तो जथाख्यात पणुं पामे पमे तो । सामा० । छेदो० । असंजमपणुं पामे जथाख्यात चमे तो मोक्षमां जाय । पमे तो । सूक्ष्म० । असंजमपणुं पामे ॥

२५ हवे सन्ना द्वार कहे छे । सनावजतामां । आगळ्या ॥ ३ चारित्र लाभे । नोसनावजतामां । पांचे चारित्र लाभे ॥

२६ हवे आहार द्वार कहे छे । पांचे चारित्र आहारकमां लाभे । एक जथाख्यात अणाहारकमां पण होय ॥

२७ हवे जव द्वार कहे छे । सामा० । छेदो० । ज० ॥ १ जव ॥ उतकृष्टा ॥ ८ जव करे । बाकी ॥ ३ चारित्रवाळा ज० १ जव । उ० ॥ ३ जव करे ॥

२८ हवे आकर्ष द्वार कहे छे । एक जव आश्री सामायक० ॥ जघन्य ॥ १ वार आवे ॥ उत० प्रत्येकसें ॥ ९०० वार आवे ॥ १ ॥ छेदो० ॥ ज० ॥ १ ॥ उत० वी-

सपहुत्तं १२० ॥ २ ॥ परिहार० । ज० १
॥ उत्० ३ ॥ ३ ॥ सूक्ष्म० । ज० १ उ०
४ ॥ ४ ॥ जथाख्यात । ज० ॥ १ ॥ उ०
२ ॥ ५ ॥ हवे घणा जव आश्री सामा०
। ज० ॥ २ वार आवे ॥ उ० प्रत्येक ह-
जारवार आवे ॥ १ ॥ छेदो० ज० २ ॥
उत्० ९६० ॥ २ ॥ परिहा० ज० २ उ०
७ ॥ ३ ॥ सूक्ष्म० । ज० २ ॥ उ० ९ ॥
४ ॥ जथाख्यात । ज० २ ॥ उ० ५ ॥५॥

२९ हवे स्थिती द्वार कहे छे। एक वचन
आश्री । सामा० छेदो० । ज० ॥ १ समय ।
उ० । देशे उणी पूर्व क्रोडनी । परिहा० ।
ज० ॥ १ समो उ० २९ वरस उणी पूर्व
क्रोड ॥ सूक्ष्म० । ज० ॥ १ समो । उ० ।
अंतर्मु० ॥ जथाख्यात ज० ॥ १ समो ।
उ० । देशे उणी पूर्व क्रोड ॥ घणा जव
आश्री । सामायकनि । ज० उ० । सर्वे
काळ ॥ छेदोप० । ज० ॥ २५० वरस ।
उ० ५० लाख क्रोड सागर ॥ परिहा० ।
ज० ॥ २०० वरस। उ० देशे उणी ॥ २
पूर्व क्रोड ॥ सूक्ष्म० । ज० १ समो । उ० ।
अंतर्मु० ॥ जथाख्यात ज० । उ० । सर्वे-
काळ ॥

३० हवे अंतर द्वार कहे छे। एक वचन

आश्री । पांचे चारित्रनुं । ज० ॥ अंतर्मु० उ० । अर्द्ध पुद्गल देशे उणुं आंतरुं पडे । बहुवचन आश्री सामा० ज० । उ० । अंतर नथि ॥ १ ॥ छेदो० । ज० ॥ ६३००० वर्ष ॥ उ० ॥ १८ क्रोडा क्रोड सागरनुं । २ ॥ परिहा० । ज० ॥ ८४००० वर्ष । उ० ॥ १८ क्रोडा क्रोड सागरनुं ॥ ३ ॥ सूक्ष्म० जघन्य १ समय ॥ उ० । ६ मासनुं ॥ ४ ॥ जथाख्यातनुं ज० । उ० । आंतरु नथी ॥ ५ ॥

३१ हवे समुद्घात द्वार कहे छे । सामा० । छेदो० । ए ॥ २ मां ६ समुद्घात लाभे । परिहार० ॥ ३ समुद्घात पहेली लाभे । सूक्ष्म० समुद्घात नथी । जथाख्यातमां ॥ १ केवळ समुद्घात लाभे ॥

३२ हवे क्षेत्रद्वार कहे छे । लोकने संख्यातमे भागे के असंख्यातमे भागे के घणे संख्यातमे भागे के घणे असंख्यातमे भागे के सर्व लोकने विषे चारित्र लाभे? उत्तर । लोकना असंख्यातमां भागमां तो आगल्या ४ चारित्र लाभे ॥ अने एक जथाख्यात० असंख्यातमे भागे । घणे असंख्यातमे भागे । ते सर्व लोकने विषे लाभे ॥

३३ हवे फरसना द्वार कहे छे ते क्षेत्र द्वारनी
परे जाणवो ॥
३४ हवे भाव द्वार कहे छे । सामा० । छेदो० ।
परिहा० । सूक्ष्म० ए ॥ ४ मां भाव १
क्षउपसम लाभे । जथाख्यातमां ॥ २ भाव
लाभे । उपसम ने क्षायक ए ॥ २ लाभे ॥
३५ हवे परिमाण द्वार कहे छे । हवे पडि-
वजमाण आश्री जो होय तो । सामा०
ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० प्रत्येक हजार
॥ छेदो० । परीहार० । ज० ॥ १ ॥ २ ॥
३ ॥ उत्० । प्रत्येकसें ॥ सूक्ष्मसंपराय
। ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० ॥ १६२ ते

॥ १०८ क्षपक ॥ ५४ उपसम० । जथा-
ख्यात । ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उत्० ॥
१६२ ते ॥ १०८ ॥ क्षपक० ॥ ५४ उपसम०
॥ पूर्व पडिवजमाण आश्री जो होय तो
। सामा० । ज० । प्रत्येक हजार क्रोड ।
उत्० । प्रत्येक हजार क्रोड । छेदो० ज०
। प्रत्येकसें क्रोड । उ० प्रत्येकसे क्रोड ॥
परिहार वीसुध । ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥
उत्० । प्रथक हजार ॥ सूक्ष्म० ज०
॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० । प्रत्येकसे ॥
जथा ख्यात । ज० । प्रत्येक क्रोड । उ०
प्रत्येक क्रोड ॥

३६ अल्प बहुत्व द्वार कहे छे। सर्वथी थोडा सूक्ष्म संपराय ॥ १ ॥ तेथी परिहार० संख्यात गुणा ॥ २ ॥ तेथी जथाख्यात० संख्यात गुणा ॥३॥ तेथी छेदो० संख्यात गुणा ॥४॥ तेथी सामा०। संख्यात गुणा लाभे ॥५॥ इति संजयाना बोल संपूर्ण॥

॥ अथ श्री नियंठाना बोल. ॥

गाथा ॥ पन्नवणा १ वेय २ रागे ३ ॥ कप्प ४ चरित्त ५ पडिसेवणा ६ नाणे ७ ॥ तीत्थेय ८ ॥ लिंगे ९ शरीरे १० ॥ खेत्त ११ काल १२ गइ १३ संजम १४ निकासे १५ ॥ १ ॥ जोगु १६ वउगे १७ कसाए १८। लेशा १९ परीणाम २० बंध २१ वेदेय २२। कम्मोदीरणा २३ उवसंपजहणा २४। सन्नाय २५ आहारे २६ ॥ २ ॥ भव २७ आगरीसे २८ कालं २९ तरेय ३० ॥ समुग्घाय ३१ खेत ३२ फुसणाय ३३ ॥ भावेय ३४ परीमाणे ३५ खलु। अप्पा बहुत्त ३६ नीयंठाणं ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ उपली ३ गाथानो अर्थ विस्तारी कहे छे.

१ हवे पन्नवणा द्वार कहे छे । पुलाक ॥१॥ बकुस ॥ २ ॥ प्रति सेवणा ॥ ३ ॥ कषाय कुशील ॥ ४ ॥ नीग्रंथ ५ सनातक ६ ॥ पुलाक ते सढुंसा धानना पुळानी परे ॥ १ ॥ बकुस ते सढुंसा धाननी परे ॥ २ ॥ प्रतीसेवना ते मसळ्या धाननी परे ३ कषाय कुशील ते उपण्या धाननी परे ॥ ४ ॥ नीयंठो ते कणकी सहित कणनी परे ॥ ५ ॥ सनातक ते अणीसुध चोखानी परे ॥ ६ ॥ पुलाकना वे भेद । लबद्धी पुलाक ते चक्रवर्तिनी सेन्या चूरण करण सक्ती संपन्न ते लबद्धी

पुलाक ॥ १ ॥ प्रतिसेवणा पुलाक ते मुळ गुण उतर गुणमां दोष लगाडे । मुळ गुण ते पांच आश्रव मांहेलो अनेरो दोष लगाडे । उतर गुण दोष ते दश पचखाण मांहेलो अनेरो दोष लगाडे ॥ ते ॥ पुलाकना पांच भेद ॥ ज्ञान पुलाक ॥ १ ॥ दर्शन पुलाक ॥ २ ॥ चारित्र पुलाक ३ लिंग पु० ॥ ४ ॥ यथा सूक्ष्म पुलाक ॥ ५ ॥ पुलाक ते ज्ञानादि अतीचार सेववे करी संजम सार रहित करे तेने पुलाक कहीये ॥ १ ॥ बकुस ते शरीर बकुस ॥ शरीरनी सुश्रूषा विभूषा

करे ते ॥ १ ॥ उपकरण बकुस ते ऊल-
हलतां उपकरण करे । उपकरणादि अ-
ऋिक संग्रहे वस्त्र पात्रादि प्रक्षालनादि
करे ॥श॥ बकुस ना ५ नेद आनोग बकुस
॥ १ ॥ अणानोग बकुस ॥ २ ॥ संवूरु
बकुस ॥ ३ ॥ असंवूरु बकुस ॥ ४ ॥
जथा सूक्ष्म बकुस ॥ ५ ॥ जाणीने दोष
लगारु ते आनोग बकुस ॥ १ ॥ अण-
जाणे दोष लगारु ते । अणानोग बकुस
॥ २ ॥ गनो दोष लगारु ते संवूरु ब-
कुस ॥ ३ ॥ प्रकट दोष लगारु ते अ-
संवूरु बकुस ४ यथा सुक्ष्म ते ॥ किंचित्

दोष लगारु ते यथासुक्ष्म बकुस ॥ ५ ॥
सातिचार नीरतीचार बेने नेला स-
डुसा धानना परे । संजमने काबरुं करे
ते बकुस ॥ २ ॥ प्रतिसेवना कुसीलना
५ नेद ॥ ज्ञान प्रतिसेवना ॥ १ ॥ द-
र्शण प्रतिसेवना ॥ २ ॥ चारित्र प्रतिसे-
वना ॥ ३ ॥ लिंग प्रतिसेवना ४ जथा
सूक्ष्म प्रतिसेवना ॥ ५ ॥ इंड्रियादि
वस्य अने पिंरु विसुध्यादि सुमती ना-
वना तपपरुीमां अनी ग्रहित एटले
उत्तर गुण मुळ गुण विराधता सर्वज्ञ
नी आज्ञाथी । न्यूनाधिक प्रवर्त्ते ते

प्रतिसेवना ज्ञानादि ५ जाणवा ॥ ३ ॥ कषाय कुसील ते । संजल ना कषायने उदये करी कुत्सित जेहने सील स्वज्ञाव कषाय उदय थाय । अप्रशस्तपणुं थाय ते माटे कषाय कुसील । दोष लगाम्वा सरीखा निमित्तवासी परिणाम थाय । पण प्रवर्त्तन सहेजमां दोष न लगामे ॥ ते कषाय कुसीलना ५ ज्ञेद । ज्ञान कषाय कुसील १ दर्शन कषाय कुसील ॥ २ ॥ चारित्र कषाय कुसील ३ लिंग कषाय कुसील ॥ ४ ॥ यथा सूक्ष्म कषाय कुसील ॥ ५ ॥ ४ ॥ हवे नियंठो ते मोह-

नी कर्मथी नीकल्यो संपूर्ण ग्रंथ रहित ॥ उपसमीत ॥ १ ॥ यथा निर्मल क्षायक ज्ञाविक २ कषाय वरजित वीतरागात्र-स्थायेवर्त्ते ते ॥ मुनीनो प्रथम समय ते पढम समय नियंठो ॥ १ ॥ अपढम समय ते बीजा समयादिके वर्त्ते ने अपढम समय नियंठो ॥ २ ॥ ते गुण स्थानकने पर्यंत वर्त्ति समयनो ते चरम समय नीयंठो ॥ ३ ॥ ते गुणठाणाना ठेला समयथी पूर्वला समय वर्त्ति ते अचरम समय नीयंठो ॥ ४ ॥ यथा सुक्ष्म ते गुणठाणाना सर्व समय वर्त्ती ते यथा

करे ते ॥ १ ॥ उपकरण बकुस ते ऊल-
हलतां उपकरण करे । उपकरणादि अ-
धिक संग्रहे वस्त्र पात्रादि प्रक्षालनादि
करे ॥२॥ बकुस ना ५ भेद आभोग बकुस
॥ १ ॥ अणाभोग बकुस ॥ २ ॥ संवूड
बकुस ॥ ३ ॥ असंवूड बकुस ॥ ४ ॥
जथा सूक्ष्म बकुस ॥ ५ ॥ जाणीने दोष
लगाडे तें आभोग बकुस ॥ १ ॥ अण-
जाणे दोष लगाडे ते । अणाभोग बकुस
॥ २ ॥ छानो दोष लगाडे ते संवूड ब-
कुस ॥ ३ ॥ प्रकट दोष लगाडे ते अ-
संवूड बकुस ४ यथा सुक्ष्म ते ॥ किंचित्
दोष लगाडे ते यथासुक्ष्म बकुस ॥ ५ ॥
सातिचार नीरतीचार बेने भेला स-
दुसा धानती परे । संजमने काबरुं करे
ते बकुस ॥ २ ॥ प्रतिसेवना कुसीलना
५ भेद ॥ ज्ञान प्रतिसेवना ॥ १ ॥ द-
र्शण प्रतिसेवना ॥ २ ॥ चारित्र प्रतिसे-
वना ॥ ३ ॥ लिंग प्रतिसेवना ४ जथा
सूक्ष्म प्रतिसेवना ॥ ५ ॥ इंद्रियादि
वस्य अने पिंड विसुध्यादि सुमती भा-
वना तपपडीमां अभी ग्रहित एटले
उत्तर गुण मुळ गुण विराधता सर्वज्ञ
नी आज्ञाथी । न्यूनाधिक प्रवर्त्ते ते

प्रतिसेवना ज्ञानादि ५ जाणवा ॥ ३ ॥
कषाय कुसील ते । संजल ना कषायने
उदये करी कुत्सित जेहने सील स्वभाव
कषाय उदय थाय । अप्रशस्तपणुं थाय
ते माटे कषाय कुसील । दोष लगाडवा
सरीखा निमित्तवासी परिणाम थाय ।
पण प्रवर्त्तन सहेजमां दोष न लगाडे ॥
ते कषाय कुसीलना ५ भेद । ज्ञान कषा-
य कुसील १ दर्शन कषाय कुसील ॥ २ ॥
चारित्र कषाय कुसील ३ लिंग कषाय
कुसील ॥ ४ ॥ यथा सूक्ष्म कषाय कु-
सील ॥ ५ ॥ ४ ॥ हवे नियंठो ते मोह-

नी कर्मथी नीकळ्यो संपूर्ण ग्रंथ रहित ॥
उपसमीत ॥ १ ॥ यथा निर्मल क्षायक
भाविक २ कषाय वरजित वीतरागाव-
स्थायेवर्त्ते ते ॥ मुनीनो प्रथम समय
ते पढम समय नियंठो ॥ १ ॥ अपढम
समय ते बीजा समयादिके वर्त्ते ने अप-
ढम समय नियंठो ॥ २ ॥ ते गुण स्था-
नकने पर्यंत वर्ति समयनो ते चरम स-
मय नीयंठो ॥ ३ ॥ ते गुणठाणाना छे-
ला समयथी पूर्वला समय वर्ति ते अच-
रम समय नीयंठो ॥ ४ ॥ यथा सुक्ष्म
ते गुणठाणाना सर्व समय वर्त्ती ते यथा

सुक्ष्म नीयंठो ॥ ५ ॥ ५ सनातक ते घाति कर्म मळ पखाळवाथी टाळवाथी परम पवित्र नाह्यानी परे उज्वल परीणामी रूपातीत ध्यानी ॥ ते सनातक पंच नाम विख्यात अछवी ते जोग नीरुंध्या माटे अठवी ॥ १ ॥ असवल ते निरती चार काबरास रहित ते माटे असबल ॥ २ ॥ घनघाति कर्म क्षय करया ते माटे अकर्मांस ॥ ३ ॥ संसुद्धनाणदंसण धरे । अरहाजीन केवळी ते । सम्यक् शुद्ध निर्दोष ज्ञान दर्शनना धरणहार ॥ अरहाजीने ते रहस्य छानी वात नही ते राग द्वेषना जीतनार माटे केवळी कहीये ॥ ४ ॥ अपरीसावी ते नवा कर्म आवे नही ते माटे अपरीसावी सर्व योगनारुंधवाथी ५ ॥ ६ ॥ ए नामनी प्रज्ञापना परुपणा द्वार किंचित् निरुपणं ॥

२ वेद द्वार । आगला ४ सवेदी ॥ उपल्या २ अवेदी ॥ तेमां पुलाक । स्त्रि वेदमां नही । पुरुष ॥ १ ॥ पुरुष नपुंसक ॥ २ ॥ ए २ मां होय । बकुस ने प्रतिसेवना । ३ वेदमां होय । कषाय कुशील सवेदी होय तो त्रणे वेदमां होय । अने अवेदी होय तो उपसम ने क्षीण वेदमां

होय ॥ निर्ग्रंथ उपसम ने क्षीण वेदमां होय ॥ सनातक क्षीण वेदमां होय । ए द्वा०॥२॥

३ राग द्वार आगल्या ४ नीयंठा सरागी ॥ नीर्ग्रंथ ने सनातक क्षीण रागी होय ए॥३॥

४ कल्प द्वार ॥ स्थिति कल्प ॥ १ ॥ अस्थिति कल्प ॥ २ ॥ जिन कल्प ॥३॥ स्थिवर कल्प ॥ ४ ॥ कल्पातीत ५ तेमां स्थिति कल्प अस्थिति कल्प मां ६ ए नीयंठा लाभे ॥ जिन कल्प मांही बीजो त्रिजो चोथो ए ३ नियंठा लाभे ॥ स्थिवर कल्पमां आगल्या ४ नीयंठा लाभे । कल्पातीत मां उपल्या ३ नीयंठा लाभे ।४।

५ चारित्र द्वार । सामायक ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय ॥ २ ॥ ए २ मां आगल्या ४ नियंठा लाभे । परीहार विसुद्ध ॥३॥ सुक्ष्म संपराय ॥ ४ ॥ ए २ मां कषाय कुसिल नीयंठो लाभे । जथाख्यात चारित्रमां उपल्या २ नीयंठा लाभे । ए ॥५॥

६ प्रतिसेवी द्वार । आगल्या ३ नीयंठा प्रतिसेवी ॥ उपल्या ३ नियंठा । अप्रतिसेवी । तेमां पुलाक मूळ गुण उत्तर गुणमां दोष लगाडे । बकुस उत्तर गुण मां दोष लगाडे । प्रतिसेवना मूळ गुण उत्तर गुणमां दोष लगाडे । उपल्या ३

नीयंठा दोष न लगाडे। ए द्वार ॥ ६ ॥

७ नाण द्वार आगल्या २ नीयंठामां ज्ञान २ तथा ३ ॥ अने चोथा पांचमां नीयंठामां । २ ज्ञान ॥ ३ तथा ४ ॥ सनातकमां १ केवळ ज्ञान । पुलाक जणे तो जघन्य नवमां पूर्वनी त्रीजी आचार वस्तु सुधी । उत्त० नव पूर्व पूरा जणे ॥ १ ॥ वकुस ने प्रतिसेवना जणे तो ज० ८ प्रवचन माता । उत्० १० पूर्व पुरा जणे ॥ कषाय कुशील नीयंठो ज० ८ प्रव० उ० १४ पूर्व पूरा जणे ॥ सनातक तो श्रुतथी अधिक छे सर्वज्ञ छे ॥७॥

८ तिर्थ द्वार । तिर्थ ॥१॥ अतिर्थ ॥ २ ॥ तिर्थंकर ॥ ३ ॥ प्रत्येक बुद्ध ए ४ मां छए नीयंठा लाभे । बाकि २ मां उपल्या ३ नीयंठा लाभे । ए द्वार ८ मो ॥

ए लिंग द्वार द्रव्यथी । सलिंग । अन्य लिंग । ग्रह लिंग । ए ३ लिंगमां छ ए नीयंठा लाभे ॥ अने भावथी अन्य लिंग ग्रह लिंगमां एके न लाभे ने सलिंगमां छए लाभे ॥ ए द्वार ए मो ॥

१० सरीर द्वार ॥ पुलाकमां ३ शरीर लाभे ॥ बकूस ने प्रतिसेवना । ए २ मां ३ शरीर लाभे ॥ उदारीक ॥ १ ॥ तेजस ॥

२ ॥ कार्मण ॥ ए ३ लाभे । तथा ४ लाभे तो वैक्रेय वध्युं ॥ अने कषाय कुशीलमां शरीर ॥ ३ । ४ । ५ ॥ लाभे । अने निर्ग्रंथ ने स्नातकमां शरीर ३ लाभे ॥ उदारीक तेजस कार्मण ॥ ए द्वार १०॥

११ क्षेत्र द्वार । जन्म आश्री कर्म भूमिमां छए नीयंठा लाभे । अकर्म भूमीमां एके न लाभे । छत आश्री पण छए लाभे । साहारण आश्री पुलाक वरजीने ५ नीयंठा ॥ कर्म भूमी अकर्म भूमी बने मां ४ लाभे ए द्वार ११ मो ॥

१२ काळ द्वार समुचे अवसर्पिणी ॥ उत्सर्पिणी ॥ नो अवसर्पिणी नो उत्सर्पिणीमां ६ नीयंठा लाभे । तेमां अवसर्पिणी उत्तरतो काळ तेमां ६ आरा तिहां जन्म आश्री पहेला ने बीजा आरामां एके न लाभे । त्रीजा ने चोथा आरामां ६ नीयंठा लाभे ॥ पांचमां आरामां ३ नीयंठा लाभे । बीजो । त्रीजो । चोथो ए ३ लाभे । छठा आरामां एके नही । छत आश्री पहेला बीजा आरामां एके नही त्रीजा चोथा पांचमा आरामां छ ए नीयंठा लाभे । छठा आरामां एके न लाभे । सा-

हारण आश्री पुलाक वरजीने ५ नी-
यंठा ठ ए आरामां लाभे । चऋता का-
ळमां जन्म आश्री पहेले आरे एके
नही ॥ बीजे त्रीजे चोथे आरे ६
नीयंठा लाभे । पांचमे ठठे आरे एके
नही । ठत आश्री पहेले बीजे
आरे एके नही ॥ त्रीजे चोथे आरे
६ नीयंठा लाभे । पांचमे ठठे आरे
एके नही । साहारण आश्री । पु-
लाक वरजीने ठ ए आरामां ५ नियं-
ठा लाभे । नो उत्सार्पिणी नो अवस-
र्पिणी काळ । ते हेमवय ॥ १ ॥ एरण-
वय ॥ २ ॥ हरीवास ॥ ३ ॥ रमकवास
॥ ४ ॥ देवकुरु ५ उत्तरकुरु ॥ ६ ॥ ए
६ क्षेत्रमां जन्म ठत आश्री एके नही
। अने साहारण आश्री पुलाक वरजीने
५ नीयंठा लाभे ॥ पांच महा वीदेह
क्षेत्रमां ॥ जन्म ठत आश्री ठ ए नीयंठा
लाभे । साहारण आश्री पुलाक वरजीने
५ नीयंठा लाभे ॥ ए द्वार १२ मो ॥
१३ गति द्वार । आगल्या ५ नीयंठा आरा-
धक ते एक वीमानीक देव गतिमां
जाय । सनातक मोक्ष जाय । तेमां पुलाक
ज० पहेले देवलोके जाय । उ० आठमे

देव लोके जाय । बकुस ने प्रतिसेवना ज० पहेले देवलोके जाय । उ० । बारमे देवलोके जाय । कषाय कुशील ज० पहेले देवलोके जाय । उ० अनुत्तर विमानमां जाय ॥ नियंठो ज० उ० अनुत्तर विमानमां जाय ॥ सनातक मोक्षमां जाय । आराधक पदवी पांच पामे ॥ इंद्रनी ॥ १ ॥ सामानीकनी २ त्रायत्रिंसकनी ॥ ३ ॥ लोकपाळनी ॥ ४ ॥ अहमेंद्रनी ॥ ५ ॥ ए ५ मांहेली आगल्या ३ नीयंठा पदवी ४ पामे ॥ एक अहमेंद्रनी नही । कषाय कुशील पदवी ५ पामे । नीग्रंथ एक पदवी अहमेंद्रनी पामे ॥ सनातक मोक्ष जाय । वीराधक आगल्या ५ नीयंठा ज० भवनपति मां जाय उ० पहेले देवलोके जाय। पदवी ५ मांहेली एके न पामे । देवतामां जाय तिहां स्थिति केटली पामे ॥ पुलाक ज० प्रत्येक पल्यनी। उ०। १८ सागरनी पामे। बकुस ने प्रतिसेवना ज० प्रत्येक पल्यनी उ० २२ सागरनी पामे। कषाय कुशील ज० प्रत्येक पल्यनी उ० ३३ सागरनी पामे ॥ निर्ग्रंथ ज० उ० ३३ सागरनी पामे । सनातक मोक्ष जाय ॥

१४ संजम स्थान द्वार। आगल्या ४ नीयंठा नां असंख्याता संजम स्थानक ते ॥ परिणाम ना स्थानक छे। अने निर्ग्रंथ ने सनातकनुं एकेकुं स्थानक छे । अल्पबहुत्व ॥ पहेले बोले सर्वथी थोड़ा निर्ग्रंथ ने स्नातकना स्थानक बंने मांहो मांही तुल्य ॥ १ ॥ तेथी बीजे बोले पुलाकना स्थानक । असंख्यात गुणा ॥ २ ॥ तेथी त्रीजे बोले बकुसना स्थानक असंख्यात गुणा ॥ ३ ॥ तेथी चोथे बोले प्रतिसेवना ना स्थानक असंख्यात गुणा ॥ ४ ॥ तेथी पांचमे बोले । कषाय कुशीलना स्थानक असंख्यात गुणा ॥ ५ ॥ ए द्वार १४ मो ॥

१५ निकास द्वार ते पर्यव द्वार एकेका नियंठाना अनंता पर्यव छे पुलाक । पुलाक साथे छठाण वडीया । पुलाक बकुस प्रतिसेवना थी अनंत गुण हीणा ॥ कषाय कुशील साथे छठाण वडीया ॥ उपल्या बेथी अनंत गुण हीणा ॥१॥ हवे बकुस ॥ पुलाक अनंत गुण अधिक ॥ बकुस प्रतिसेवना कषाय कुशील साथे छठाण वडीया ॥ उपल्या बेथी अनंत गुण हीणा ॥ २ ॥ प्रतिसेवना पुलाकथी

अनंत गुण अधिक ॥ बकुस प्रतिसेवना कषाय कुशील साथे छठाण वड़िया । ऊपल्या बेथी अनंत गुण हीणा ॥ ३ ॥ कषाय कुशील आगल्या ४ साथे छठाण वड़िया ॥ ऊपल्या बेथी अनंत गुण हीणा ॥ ४ ॥ निर्ग्रंथ ने स्नातक । आगल्या चारथी अनंत गुण अधिक ने मांहोमांही तुल्य ॥ ६ ॥

अल्प बहुत्व द्वार ॥ पहेले बोले सर्वथी थोड़ा पुलाक ने कषाय कुशील ना जघन्य पर्यव मांहोमांही तुल्य ॥१॥ तेथी बीजे बोले पुलाकना उत्कृष्टा पर्यव अनंत गुणा ॥ २ ॥ तेथी त्रीजे बोले बकुस ने प्रतिसेवना ना जघन्य पर्यव मांहोमांही तुल्य ने अनंत गुणा ॥ ३ ॥ तेथी चोथे बोले बकुसना उत्कृष्टा पर्यव अनंत गुणा ॥ ४ ॥ तेथी पांचमे बोले प्रतिसेवना ना उ० पर्यव अनंत गुणा ॥ ५ ॥ तेथी छठे बोले कषाय कुशीलना पर्यव उ० अनंत गुणा ॥६॥ तेथी निर्ग्रंथ ने स्नातक ना उ० पर्यव मांहोमांही तुल्य ने अनंत गुणा ॥ ७ ॥ छठाण वड़िया ते सुं ? हीणो होय के अधिको होय । जो हीणो होय तो अनंत भाग

॥ १ ॥ असंख्यात जाग ॥ २ ॥ संख्यात जाग ॥ ३ ॥ संख्यात गुण ॥ ४ ॥ असंख्यात गुण ॥ ५ ॥ अनंत गुण हीण ॥ ६ ॥ अधिक होय तो । अनंत जाग ॥ १ ॥ असंख्यात जाग ॥ २ ॥ संख्यात जाग ॥ ३ ॥ संख्यात गुण ॥ ४ ॥ असंख्यात गुण ॥ ५ ॥ अनंत गुण अधिक ॥ ६ ॥ ए षट गुण हानी वृद्धि जाणवी । ए द्वार १५ मो ।

१६ जोग द्वार आगल्या ५ नीयंठा । सयोगी होय तो ३ जोग होय । ने छठो स्नातक सयोगी होय तो ३ जोग होय ॥ अजोगी होय तो जोग एके नही ॥१६॥

१७ उपयोग द्वार । छए नीयंठामां साकार उपयोग ने अणाकर उपयोग बंने लाजे । ए द्वार १७ मो ॥

१८ कषाय द्वार । आगली ३ चोकडीमां एके नीयंठो न लाजे । संज्वलनी १ चोकडी आगल्या त्रण नीयंठामां होय अने कषाय कुशीलमां संज्वलना चारे होय । अने जो ३ होय तो क्रोध वरजीने ॥ बे होय तो मान वरजीने । ने एक होय तो माया वरजीने तेमां क्रोध मान मायानी जजना लोजनी नीयमा

होय ॥४॥ निर्ग्रंथ उपसम तथा क्षीण कषाइ होय । स्नातक क्षीण कषाइ होय ॥ ए द्वार १८ मो थयो ॥

१९ लेस्या द्वार । आगल्या ३ नियंठामा उपली ३ लेस्या होय । कषाय कुशीलमां ६ लेस्या होय ने निर्ग्रंथने सुक्ल लेस्या । स्नातकमां परम सुक्ल लेस्या ॥ अने अलेसी पण होय ॥ ए द्वार १९ ॥

२० परिणाम द्वार । छए नीयंठा मां वर्द्धमान परिणाम होय तो आगल्या ४ मां ॥ जघन्य १ समो उ० अंतर मुहूर्त्त । उपल्या २ ना जघन्य उत्कृष्ट अंतरमुहूर्त्त । हायमान परिणाम । आगल्या ४ ना । ज० एक समो । उ० । अंत० उपल्या २ ना हायमान परीणाम होय नही । अवस्थित परिणाम आगल्या ४ ना ज० १ समो उ० ७ समा । निर्ग्रंथ ज० १ समो उ० अंत० स्नातकना ज० अंतरमु० उ० देसे उणी पूर्व क्रोड़ ए द्वार ॥२०॥

२१ बंध द्वार । पुलाक ७ कर्म बांधे । आउखुं वरजीने ॥ बकुस ने प्रतिसेवना ७ । ८ कर्म बांधे । ७ बांधे तो आउखुं वरजीने कषाय कुशील ६ ॥ ७ ॥ ८ कर्म बांधे । ७ कर्म बांधे तो आउखुं वरजीने

॥ १ ॥ असंख्यात भाग ॥ २ ॥ संख्यात भाग ॥ ३ ॥ संख्यात गुण ॥ ४ ॥ असंख्यात गुण ॥ ५ ॥ अनंत गुण हीण ॥ ६ ॥ अधिक होय तो । अनंत भाग ॥ १ ॥ असंख्यात भाग ॥ २ ॥ संख्यात भाग ॥ ३ ॥ संख्यात गुण ॥ ४ ॥ असंख्यात गुण ॥ ५ ॥ अनंत गुण अधिक ॥ ६ ॥ ए षट गुण हानी वृद्धि जाणवी । ए द्वार १५ मो ।

१६ जोग द्वार आगल्या ५ नीयंठा । सयोगी होय तो ३ जोग होय । ने छठो स्नातक सयोगी होय तो ३ जोग होय ॥ अजोगी होय तो जोग एके नही ॥१६॥

१७ उपयोग द्वार । छए नीयंठामां साकार उपयोग ने अणाकर उपयोग बंने लाभे । ए द्वार १७ मो ॥

१८ कषाय द्वार । आगली २ चोकडीमां एके नीयंठो न लाभे । संज्वलनी १ चोकडी आगल्या त्रण नीयंठामां होय अने कषाय कुशीलमां संज्वलना चारे होय । अने जो ३ होय तो क्रोध वरजीने ॥ बे होय तो मान वरजीने । ने एक होय तो माया वरजीने तेमां क्रोध मान मायानी भजना लोभनी नीयमा

होय ॥४॥ निर्ग्रंथ उपसम तथा क्षीण कषाइ होय । स्नातक क्षीण कषाइ होय ॥ ए द्वार १८ मो थयो ॥

१९ लेस्या द्वार । आगल्या ३ नियंठामा उपली ३ लेस्या होय । कषाय कुशीलमां ६ लेस्या होय ने निर्ग्रंथने सुक्ल लेस्या । स्नातकमां परम सुक्ल लेस्या ॥ अने अलेसी पण होय ॥ ए द्वार १९ ॥

२० परिणाम द्वार । छए नीयंठा मां वर्द्धमान परिणाम होय तो आगल्या ४ मां ॥ जघन्य १ समो उ० अंतर मुहूर्त्त । उपल्या २ ना जघन्य उत्कृष्ट अंतरमुहूर्त्त । हायमान परिणाम । आगल्या ४ ना । ज० एक समो । उ० । अंत० उपल्या २ ना हायमान परीणाम होय नही । अवस्थित परिणाम आगल्या ४ ना ज० १ समो उ० ७ समा । निर्ग्रंथ ज० १ समो उ० अंत० स्नातकना ज० अंतरमु० उ० देसे उणी पूर्व क्रोड़ ए द्वार ॥२०॥

२१ बंध द्वार । पुलाक ७ कर्म वांधे । आउखुं वरजीने ॥ बकुस ने प्रतिसेवना ७ । ८ कर्म वांधे । ७ वांधे तो आउखुं वरजीने कषाय कुशील ६ ॥ ७ ॥ ८ कर्म वांधे । ७ कर्म वांधे तो आउखुं वरजीने

६ कर्म बांधे तो- आयुष तथा मोहनी
वरजीने ॥ निर्ग्रंथ १ साता वेदनी कर्म
बांधे । स्नातक १ साता वेदनी बांधे ने
सनातक अबंधक पण होय ॥ ए २१ मो ॥
२२ वेद द्वार ॥ आगल्या ४ आठे कर्म वेदे ॥
निर्ग्रंथ मोहनी कर्म वरजीने ७ कर्म वेदे
सनातक ४ कर्म वेदे । वे० आ० ना० गो०
ए ४ वेदे ॥ ए द्वार २२ मो ॥
२३ उदीरणा द्वार । पुलाक ६ कर्मनी उदी-
रणा करे आउखुं १ वेदनी २ वरजीने ॥
वकुस ने प्रतिसेवना आठ कर्मनी उदी
रणा करे । अने जो ७ नी करे तो
आउखुं वरजीने ६ नी करे तो आउखुं
वेदनी वरजीने । कषाय कुशील ८ कर्म
नी उदीरणा करे ७ नी करे तो आउखुं
वरजीने ६ नी करे तो आयुष वेदनी
वरजीने ॥ ५ नी करे तो मोहनी
आउखुं वेदनी वरजीने । अने नीर्ग्रंथ
आउखुं वेदनी मोहनी ए ३ वरजीने
पांच कर्मनी उदीरणा करे । तथा
नाम गोत्र २ नी उदीरणा करे । स्नातक
नाम गोत्रनी उदीरणा करे तथा न-
पण करे ॥ उदीरणा ॥ २३ ॥
२४ उवसंपजहणा द्वार । पुलाक चके तो

कषाय कुशील पणुं पामे। अने जो पके तो असंजति पणुं पामे ॥ १ ॥ बकुस चके तो प्रतिसेवना ने कषाय कुशील पणुं पामे ॥ अने जो पके तो असंजति ने श्रावकपणुं पामे ॥ २ ॥ प्रतिसेवना चके तो कषाय कुशीलपणुं पामे ॥ अने जो पके तो बकुस ॥ १ ॥ असंजति ॥ २ ॥ श्रावकपणुं ३ पामे ३ कषाय कुशील चके तो नीर्ग्रंथपणुं पामे। अने जो पके तो पुलाक ॥ १ ॥ बकुस २ प्रतिसेवना ॥३॥ असंजति ४ श्रावक ५ ए ५ थाय ॥४॥ निर्ग्रंथ चके तो स्नातकपणुं पामे। अने जो पके तो कषाय कुशीलपणुं पामे अ-संजति पण थाय ॥ ५ ॥ स्नातक मोक्ष जाय पण पकवुं नथी ॥ ए ॥ २४ ॥

२५ संज्ञा द्वार। बीजो १ त्रीजो २ ॥ चोथो ३ ॥ ए ३ नीयंठा सनावउता मां होय। नोसनावउता मां ६ नीयंठा लाने ए ॥२५॥

२६ आहार द्वार ॥आगल्या ५ नियंठा आहारक होय ।ठठो नीयंठो स्नातक आहारक ने अणाहारक होय ॥ए द्वार ॥२६॥

२७ नव द्वार । पुलाक ज० १ नव करे ॥ उ० ३ नव करे ॥ बकुस ॥ १ ॥ प्रतिसेवना ॥ २ ॥ कषाय कुशील ॥ ३ ॥ ए

३ ॥ज०॥ १ भव उ० ८ भव करे। निर्ग्रंथ
ज० ॥ १ भव ॥ उ० ॥ ३ भव करे स्नातक
मोक्षमां जाय। ए द्वार २७ मो ॥

२८ आकर्ष द्वार। आकर्ष १ भवे पुलाक
ज० १ वार ॥ उ० ३ वार आवे। बकुस
प्रतिसेवना ॥ कषाय कुशील ॥ ज० ॥१॥
उ० प्रत्येक सो ९०० वार आवे ॥ निर्ग्रं-
थ० ज० १ उ० २ वार आवे। स्नातक
ज० उ० १ वार आवे। घणा भव
आश्री ॥ पुलाक ज० २ वार उ० ७
वार आवे। बकुस ॥ १ ॥ प्रतिसेवना
॥ २ ॥ कषाय कुशील ए ३ ॥ ज० २
उ० प्रत्येक ७२००० हजार वार आवे।
निर्ग्रंथ ज० २ उ० ५ वार आवे। स्ना-
तकने पुनर्भव छे नही। ए द्वार ॥२८ मो॥

२९ स्थिति द्वार स्थिति १ भव आश्री।
पुलाकनी ज० अंत०। उत्० अं०।
बकुस प्रतिसेवना कषाय कुशीलनी
ज० १ समो उ० देसे उणी पूर्व क्रोड ॥
निर्ग्रंथनी। ज० १ समो। उ० १ अंतमु०।
स्नातकनी ज० १ अंत०। उ० देशे उणी
पूर्व क्रोड। घणा भव आश्री। पुलाक
ने निर्ग्रंथनी। ज० १ समो उ० १ अंत०
बाकी ने सर्वथा काळ ए २९ मो ॥

३० अंतर द्वार । अंतर एक जीव आश्री आगल्या ५ नियंठाने । ज० अंत० । उ० अर्द्ध पुद्गल देसे उणुं आंतरुं पडे । स्नातकने आंतरुं नथी । हवे घणा जीव आश्री । पुलाकने ज० १ समो ॥ उ० संख्याता वर्षनुं । निर्ग्रंथने ज० १ समो । उ० ६ मासनुं ॥ शेष बाकिने आंतरु नथी । ए द्वार ३० मो थयो ॥

३१ समुद्घात द्वार । समुद्घात पुलाकमां त्रण वेदनी कषाय मारणांतिक ए ॥ ३ लाभे ॥ बकुस ने प्रतिसेवना मां पांच समुद्घात । वेदनी १ कषाय २ मारणां-

तिक ॥ ३ ॥ वैक्रेय ॥ ४ ॥ तैजस ॥ ५ ॥ ए ५ ॥ कषाय कुशीलमां ६ समुद्घात । केवळ वरजीने । निर्ग्रंथमां समुद्घात नथी । स्नातकमां ॥ १ केवळ समुद्घात लाभे । ए द्वार ३१ मो ॥

३२ क्षेत्र द्वार । ते ६ नियंठा लोकने संख्यातमे भागे होय के असंख्यातमे भागे के घणे संख्यातमे भागे के घणे असंख्यातमे भागे के सर्व लोकमां होय तेनो उत्तर ॥ ॥ आगल्या ५ नियंठा लोकने असंख्यातमे भागे होय ॥ शेष ४ बोले न होय ॥ स्नातक लोकने असंख्यातमे

भागे घणे असंख्यातमे भागे ने सर्व लोकमां होय ए द्वार ३२ मो ॥

३३ फरसना द्वार ॥ ते पण क्षेत्र द्वारनी परे कहेवो एमज फरसे ॥ ए द्वार ३३ मो ॥

३४ भाव द्वार ॥ आगल्या ४ नियंठा क्षयोपसम भावे होय । निर्ग्रंथ उपशम १ क्षायक २ भावे होय । स्नातक १ क्षायक भावे होय ए द्वार ३४ मो ॥

३५ परिमाण द्वार पडिवज्जमाण ते नवीन थाता होय ते वर्तमान आश्री एक समे जो होय तो । पुलाक बकुस प्रतिसेवना ज० होय तो ॥ १ ॥ २ ॥ २ ॥ उ० प्रत्येक सो । कषाय कुशील ज० होय तो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० प्रत्येक हजार ॥ निर्ग्रंथ ज० होय तो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० ॥ १६२ ॥ तेमां ॥ १०८ ॥ क्षपकश्रेणीना अने ५४ उपसम श्रेणीना ॥ स्नातक ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० १०८ पुव्वपडिमज्जमान आश्री पुलाक होय तो । ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० । प्रत्येक हजार ॥ बकुस ने प्रतिसेवना होय तो ज० प्रत्येकसें क्रोड ॥ उ० प्रत्येकसें क्रोड । कषाय कुशील होय तो । ज० प्रत्येक हजार क्रोड । उ० प्रत्येक हजार क्रोड ।

निर्ग्रंथ ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० प्र-
त्येकसें ॥ स्नातक । ज० प्रत्येक क्रोम
उत्कृष्टा प्रत्येक क्रोम होय ए द्वार ३५ मो ॥
३६ अल्प बहुत्व द्वार । सर्वथी थोमा नि-
ग्रंथ १ तेथी पुलाक संख्यात गुणा ॥
॥२॥ तेथी स्नातक संख्यात गुणा ॥ ३ ॥
तेथी बकुस संख्यात गुणा ॥ ४ ॥ तेथी
प्रतिसेवना संख्यात गुणा ॥ ५ ॥ तेथी
कषाय कुशील संख्यात गुणा ॥६॥ ए ठ
नियंठानो अधिकार । सूत्र श्री नगवति
शतक २५ मे उद्देशे ठठे वे ॥

॥ इति श्री नियंठा बोल समाप्त. ॥

॥ अथ श्री षट् द्रव्यना बोल ॥

परिणाम जीवमुत्तं ॥ सपएसाएगखेत्त किरियाय ॥ निच्चंकारणकत्ता ॥ सव्वगयमियरे- हिंअप्पवेसा ॥ १॥ ए गाथा । हवे एहनो अर्थ कहे वे । शिष्य आत्मार्थी पंचांग नम्रता करि पुछे वे जे । हे स्वामिन् । षट् द्रव्यमां परिणामि द्रव्य केटला । अने अपरिणामि द्रव्य केटला । गुरु कहे वे ॥ हे आयुष्मन् शिष्य निश्चय नये षट् द्रव्य । पोत पोताने स्वन्नावे

स्वरूपे पोत पोताना गुण पर्यायनि परिणति रूपे ठ ए स्वजाव परिणामि । अने व्यवहार नये ॥ एक जीव ॥ १ ॥ ने पुद्गल ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ विजाव परिणामि । शेष ॥ ४ ॥ द्रव्य । अपरिणामि ॥ १ ॥ हवे ठ द्रव्यमां ॥ एक जीवास्तिकाय । जीवद्रव्य चैतन्य । शेष ॥५॥ जड । अजीव द्रव्य ॥ २ ॥ हवे ठ द्रव्यमां मूर्तिरूपी एक पुद्गल द्रव्य मुर्ति ॥ शेष ॥ ५ ॥ अमूर्ति ॥ ३ ॥ ठ द्रव्यमां एक काळ द्रव्य अप्रदेशी । एक समय द्रव्य ठे माटे ॥ शेष ५ सप्रदेशी ॥ धर्म । अधर्म । असंख्यात प्रदेशी ॥ आकाश लोकालोक प्रमाणे ठे माटे अनंत प्रदेशी ॥ पुद्गल द्रव्य । एक परमाणुं यावत् अनंताणुक खंध माटे । अनंत प्रदेशी । एक जीवात्मा असंख्यात प्रदेशी ॥ ४ ॥ ठ द्रव्य निश्चय नये एक । ठये द्रव्य अनेक । धर्म० अधर्म० । द्रव्यथि एक । गुण पर्याय प्रदेश थि अनेक । गुण अनंता । पर्याय अनंता । प्रदेश असंख्याता ॥ आकाशना प्रदेश पण अनंता । काळ द्रव्य । वर्त्तना लक्षणे एक ॥ गुण पर्याय समयथि अनेक । गुण अनंता । पर्याय अनंता । समय अनंता ते केम एक आवलिका ना चोथा असंख्यात प्रमाणे समय थाय । एम यावत् दश कोमाकोमि

सागरोप मां ॥ एक उत्सर्पिणी ॥ दश कोडाकोडि सागरोपमे ॥ एक अवसर्पिणी । विश कोडाकोडि सागरोपम नो एक काळचक्र थाय ॥ ते एक काळचक्र ना असंख्याता असंख्यात छेदे समय थाय ॥ एहवा अनंता छेदे काळ चक्रे एक पुद्गल परावर्त्तन थाय ॥ एहवा अनंता पुद्गल परावर्त्तन नो अतीतकाळ गयो । वर्त्तमानकाळ एक समय ज ॥ अनंत पुद्गल परावर्त्तन नो आगमियो काळ आवशे । एम त्रण काळना समय अनंता ॥ हवे पुद्गल द्रव्य ॥ पुरण गलन स्वभावे एक ॥ गुण पर्याय प्रदेशथि अनेक ॥ गुण अनंता ॥ पर्याय अनंता ॥ प्रदेश अनंता ॥ अनंता परमाणुवा ॥ अनंता द्वि प्रदेशीया । अनता त्री प्रदेसीया अनंता चौ प्रदेशीया । अनंता पंच प्रदेशीया । एमयावत् अनंता संख्यात प्रदेशीया ॥ अनता असख्यात प्रदेशीया अनंता अनंत प्रदेशीया खंध छे ते माटे । एक अनंत प्रदेशिया खंधमां अनंत प्रदेशीया प्रदेश छे माटे पुद्गल अनंत प्रदेशी छे । जीवास्तिकाय चैतन्य लक्षण । द्रव्यथि एक छे । गुण पर्याय प्रदेशथि अनेक ॥ गुण अनंता ॥ प्रदेश एक जीवना असख्याता एहवा आत्म द्रव्य छे ॥ अने व्यवहार नये ॥ धर्म० । अधर्म० । आकाश० । ए त्रणे । एक । अने काळ ॥१॥

पुद्गल ॥ जीव । ए ३ द्रव्य अनेक छे । सकल नुं भिन्न भिन्न प्रवर्त्तन अवस्था पण छे माटे अनंत ॥५॥ छ द्रव्य मां क्षेत्र आधार पात्र समान ते एक आकाश द्रव्य क्षेत्र । शेष ५ ॥ द्रव्य क्षेत्री आध्येय रहेवा योग्य वस्तु छे माटे ॥ ६ ॥ छ द्रव्य निश्चय स्वरूपे पोतपोतानि क्रिया रूपे तो षट् द्रव्य सक्रिय चलण सहाय रूप क्रिया॥ स्थिर सहाय ॥ अवकाश । आ-श्रय रूप । वर्त्तना प्रावर्त्तना रूप पुरण गलन हानि वृद्धि रूप उपयोग चैतन्य रूप क्रिया ए सक्रिय ॥ अने व्यवहार नये गमनागमन पर रूप चलण क्रिया आश्रि पुद्गल ने जीव । ए २ ॥ सक्रिय । शेष ॥ ४ द्रव्य अक्रिय ॥ ७ ॥ छ द्रव्यमां निश्चय नये छए नित्य । छए अनित्य ॥ ते केम धर्मना । अधर्मना । चार गुण । पर्यायमां खंध लोक प्रमाणे नित्य छे । अने देश प्रदेश ॥ अगुरु लघु । ए ३ पर्याय अनित्य छे ॥ आकाशमां ॥ ४ गुण लोकालोक प्र-माणे खंध नित्य छे । देश प्रदेश अगुरु लघु अनित्य छे । काळद्रव्यना ॥ ४ गुण नित्य ॥ ४ पर्याय । अनित्य । पुद्गल द्रव्यना ॥ ४ ॥ गुण नित्य ॥ ४ ॥ पर्याय अनित्य ॥ जीवद्रव्यना ॥ ४ ॥ गुण ॥ ३ ॥ पर्याय नित्य । अगुरु लघुपर्याय अनित्य ॥ ८ ॥ छ द्रव्यमां एक जीव

कारण छे । एटले जीव ने पांचे द्रव्य कारण रूप छे ॥ जीव तो कारणी छे ॥ पांच द्रव्य अकारणी छे ॥ ए ॥ छ द्रव्यमां । स्वरुप । चलण स्वभाव । स्थिर स्वभाव । अवकाश दान । नवीन पुराण स्वभाव । पुरण गलन स्वभाव ॥ उपयोग लक्षण । चैतन्य स्वभाव छ ए स्वभावना कर्ता छे ॥ अने व्यवहार नये एक जीव द्रव्य परभाव रूपनो कर्ता छे । शेष ५ द्रव्य अकर्ता छे ॥ १० ॥ छ ए द्रव्यमां सर्व व्यापी एक आकाश द्रव्य लोकालोक प्रमाणे छे माटे ॥ शेष ५ द्रव्य लोक व्यापी छे ॥ ११ ॥ इयर अप्पवेसाके० । यद्यपि छ ए द्रव्य एक क्षेत्रमां खिर निरनि परे एकठा मळी रह्या छे तो पण एक बिजामां कोइ कोइमां भळे नहि ए द्रव्यनो विचार ॥ हवे धर्मास्ति काय ते केहने कहिये ॥ धर्म ते चलण स्वभावरूप ॥ गतिमान् पुरुषवत् ॥ अस्ति के० त्रण काळमां छे ॥ काय के० असंख्य प्रदेशनो समूह ॥ तेने धर्मास्ति काय द्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूपि ॥१॥ अचैतन्य ॥२॥ अक्रिय ॥३॥ चलण सहाय ॥४॥ तेना पर्याय पण ४ ॥ स्कंध ॥१॥ देश ॥ २ ॥ प्रदेश ॥ ३ ॥ अगुरु लघु ॥ ४ ॥ १ ॥ एम अ० कहेता नहि धर्म के० चलण स्वभाव प्रतिपक्ष ते स्थिर स्वभाव ॥

स्थितिमान् पुरुषवत् ॥ अस्ति के० त्रण काळमाँ छे ॥ काय के० असंख्य प्रदेशनो समूह ॥ तेने अधर्मास्तिकाय द्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूपि ॥१॥ अचैतन्य ॥२॥ अक्रिय ॥३॥ स्थिर सहाय ॥ ४ ॥ तेना पर्याय पण ४ ते पूर्ववत् ॥ २ ॥ आ के० सर्व दिशे ॥ काश के० प्रकाश अवगाह आश्रय दानरूप ॥ भितमां खीलीनी पेठे ॥ अस्ति के० त्रण काळमां छे ॥ काय के० अनंत प्रदेशनो समूह ॥ तेने आकाशास्ति काय द्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूपि ॥ १ ॥ अचैतन्य ॥ २ ॥ अक्रिय ॥ ३ ॥ अवकाश दान ॥ ४ ॥ तेना पर्याय ४ पूर्ववत् ॥ ३ ॥ जीव ने पुद्गल उलट पालट करे तेने काळ कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूपि ॥ १ ॥ अचैतन्य ॥ २ ॥ अक्रिय ॥ ३ ॥ वर्त्तना लक्षण ॥ ४ ॥ तेना पर्याय ४ अतित ॥ १ ॥ अनागत ॥ २ ॥ वर्तमान ॥ ३ ॥ अगुरु लघु ४ ॥ ४ ॥ समये समये हानि वृद्धिरूप स्वभाव ॥ अस्ति के० त्रण काळमां छे ॥ काय के० बेथि मांडि अनंत प्र-देशनो समूह तेने पुद्गलास्ति काय द्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ रूपि ॥ १ ॥ अचैतन्य ॥ २ ॥ सक्रिय ॥ ३ ॥ पुरण गलण ॥ ४ ॥ तेना पर्याय ४ ॥ स्कंध ॥ १ ॥ देश ॥ २ ॥

प्रदेश ॥ ३ ॥ अगुरु लघु ॥ ४ ॥ तथा बिजा पण पर्याय ४ ॥ वर्ण ॥ १ ॥ गंध ॥ २ ॥ रस ॥ ३ ॥ स्पर्श ॥ ४ ॥ ५ ॥ द्रव्य प्राण भाव प्राणे करि जीवे ते जीव ॥ अस्ति के० त्रण काळमां छे ॥ काय के० असंख्य प्रदेशनो समूह तेने जीवास्ति काय द्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ केवळ ज्ञान ॥ १ ॥ केवळ दर्शन ॥ २ ॥ स्वरूप रमण । स्थिरता चरण ॥ ३ ॥ क्षायक अनंत शक्ति ॥ ४ ॥ तेना पर्याय ४ अव्या बाध ॥ १ ॥ अनावगाह ॥ २ ॥ अ-मूर्ति ॥ ३ ॥ अगुरु लघु ॥ ४ ॥ ६ ॥ एम पुद्गलनो विचार ॥ एक परमाणुमां ५ वर्ण मांहिलो १ वर्ण ॥ बे गंध मांहिलो १ गंध ॥ पांच रस मांहिलो १ रस ॥ ८ स्पर्श मांहिला २ स्पर्श ॥ बे परमाणु मळे त्यारे द्वि प्रदेशी खंध थाय ॥ तेमां २ वर्ण ॥ २ गंध ॥ २ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ त्रण परमाणु मळे त्यारे त्रि प्रदेशी खंध थाय ॥ तेमां त्रण वर्ण ॥ २ गंध ॥ ३ रस ४ स्पर्श ॥ ते शित ॥ १ ॥ उष्ण २ । स्निग्ध ॥ ३ ॥ लुख ॥ ४ ॥ चार परमाणु मळे त्यारे चतुः प्रदेशी खंध थाय ॥ तेमां ४ वर्ण ॥ २ गंध ॥ ४ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ पंच परमाणु मळे त्यारे पंचप्रदेशी खंध थाय ॥ तेमां ५ वर्ण ॥ २ गंध ५ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ एम ठ

सात आठ यावत् संख्यात असंख्यात अनंत प्रदेशी खंधमां यावत् चोथे अनंते अन्नव्य जीवथि अनंत गुण अधिक ॥ सिद्ध ने अनंत मे नागे जेटा परमाणु मळे त्यारे उदारिक ग्रहण योग्य वर्गणा थाय लेवा योग्य ॥ एम अनंत गुण अधिक वर्गणा मळे अग्रहण-योग्य वैक्रेय नि वर्गणा थाय ॥ एम अनंत गुणे वैक्रेय ग्रहण योग्य वर्गणा थाय ॥ एम आहारक वर्गणा ॥ तैजस वर्गणा ॥ नाषा वर्गणा ॥ ५ ॥ श्वासोश्वास वर्गणा ॥ ६ ॥ मनो-वर्गणा ॥ ७ ॥ कार्मण वर्गणा ॥ ८ ॥ ए ८ वर्गणा मांहि ॥ पहेलीथी बिजी वर्गणा अनंत गुणी ॥ बीजीथि त्रिजी अनंत गुणी ॥ एम आठे वर्गणा जाणवी ॥ तेमां उदारिक ॥ ॥ १ ॥ वैक्रय ॥ २ ॥ आहारक ॥ ३ ॥ तैजस ॥ ४ ॥ ए ४ मां ५ वर्ण ॥ २ गंध ॥ ५ रस ८ स्पर्श ॥ अने नाषा ॥ १ ॥ उश्वास ॥ २ ॥ मनो ॥ ३ ॥ कार्मण ॥ ४ ॥ ए ४ वर्गणामां ५ वर्ण २ गंध ॥ ५ रस ॥ ४ स्पर्श ए ४ वर्गणा अगुरु लघु नी जाणवी ॥ हवे षट् द्रव्यमां आठ आठ पक्ष कह्या छे ॥ नित्य ॥१॥ अनित्य ॥ २ ॥ एक ॥ ३ ॥ अनेक ॥ ४ ॥ सत् ॥ ॥ ५ ॥ असत् ॥ ६ ॥ वक्तव्य ॥ ७ ॥ अवक्तव्य ॥ ८ ॥ धर्म अधर्मादि षट् द्रव्यमां ॥

नित्य ॥ अनित्य ॥ एक अनेक ॥ ए ४ पक्ष तो पूर्वे कह्या ॥ तेमज सत् ते छ द्रव्य पोत पोताना द्रव्य ॥ क्षेत्र ॥ काळ ॥ भाव रूपे छता छे ॥ तेमां धर्मास्ति कायनो स्व द्रव्य ॥ चलण सहाय गुण ॥१॥ अधर्मास्ति कायनो स्व द्रव्य स्थिर सहाय गुण ॥२॥ आकाश० स्व द्रव्य अवकाश दान गुण ॥३॥ काळ० स्व द्रव्य वर्तना लक्षण गुण ॥४॥ पुद्गल० स्वद्रव्य पूरण गलन गुण ॥ ५ ॥ जीवास्ति काय स्व द्रव्य उपयोग लक्षण गुण ॥ ६ ॥ एम छ द्रव्य स्व क्षेत्र ॥१॥ धर्म० अधर्म० स्व क्षेत्र असंख्यात प्रदेशी ॥२॥ आकाश० स्व क्षेत्र अनंत प्रदेशी ॥ ३ ॥ काळनो स्व क्षेत्र एक समय ॥ ४ ॥ पुद्गलनो स्व क्षेत्र एक परमाणु एहवा अनंता ॥ ५ ॥ जीवनो स्व क्षेत्र असंख्य प्रदेशी ॥ ६ ॥ एम छ द्रव्यनो काळ ॥ पोतपोताना अगुरु लघुनि समय समयनी प्रणति फरे छे ते छ द्रव्यनो स्वकाळ ॥ छ द्रव्यनो स्वभाव ते छ ए द्रव्यमां पोतपोताना ४ बोल पोतपोतामां छे अने बिजा द्रव्यना ४ बोल तेमां नथि ॥ जेम धर्मास्ति कायमां पोताना द्रव्य क्षेत्र काळ भाव ए ४ बोल छे ॥ बीजा ५ द्रव्यना नथि ॥ एम छ ए द्रव्यमां पोतपोताना ४ बोल छे ॥ बिजा ५ना नथि ॥

सात आठ यावत् संख्यात असंख्यात अनंत प्रदेशी खंधमां यावत् चोथे अनंते अन्नव्य जीवथि अनंत गुण अधिक ॥ सिद्ध ने अनंत मे नागे जेठा परमाणु मळे त्यारे उदारिक ग्रहण योग्य वर्गणा थाय लेवा योग्य ॥ एम अनंत गुण अधिक वर्गणा मळे अग्रहण-योग्य वैक्रेय नि वर्गणा थाय ॥ एम अनंत गुणे वैक्रेय ग्रहण योग्य वर्गणा थाय ॥ एम आहारक वर्गणा ॥ तैजस वर्गणा ॥ नाषा वर्गणा ॥ ५ ॥ श्वासोश्वास वर्गणा ॥ ६ ॥ मनो-वर्गणा ॥ ७ ॥ कार्मण वर्गणा ॥ ८ ॥ ए ८ वर्गणा मांहि ॥ पहेलीथी बिजी वर्गणा अनंत गुणी ॥ बीजीथि त्रिजी अनंत गुणी ॥ एम आठे वर्गणा जाणवी ॥ तेमां उदारिक ॥ ॥ १ ॥ वैक्रय ॥ २ ॥ आहारक ॥ ३ ॥ तैजस ॥ ४ ॥ ए ४ मां ५ वर्ण ॥ २ गंध ॥ ५ रस ८ स्पर्श ॥ अने नाषा ॥ १ ॥ उश्वास ॥ २ ॥ मनो ॥ ३ ॥ कार्मण ॥ ४ ॥ ए ४ वर्गणामां ५ वर्ण २ गंध ॥ ५ रस ॥ ४ स्पर्श ए ४ वर्गणा अगुरु लघु नी जाणवी ॥ हवे षट् द्रव्यमां आठ आठ पक्ष कह्या छे ॥ नित्य ॥ १ ॥ अनित्य ॥ २ ॥ एक ॥ ३ ॥ अनेक ॥ ४ ॥ सत् ॥ ॥ ५ ॥ असत् ॥ ६ ॥ वक्तव्य ॥ ७ ॥ अवक्तव्य ॥ ८ ॥ धर्म अधर्मादि षट् द्रव्यमां ॥

नित्य ॥ अनित्य ॥ एक अनेक ॥ ए ४ पक्ष तो पूर्वे कह्या ॥ तेमज सत् ते ६ द्रव्य पोत पोताना द्रव्य ॥ क्षेत्र ॥ काळ ॥ भाव रूपे छता छे ॥ तेमां धर्मास्ति कायनो स्व द्रव्य ॥ चलण सहाय गुण ॥ १ ॥ अधर्मास्ति कायनो स्व द्रव्य स्थिर सहाय गुण ॥ २ ॥ आकाश० स्व द्रव्य अवकाश दान गुण ॥३॥ काळ० स्व द्रव्य वर्तना लक्षण गुण ॥ ४ ॥ पुद्गल० स्वद्रव्य पूरण गलन गुण ॥ ५ ॥ जीवास्ति काय स्व द्रव्य उपयोग लक्षण गुण ॥ ६ ॥ एम ६ द्रव्य स्व क्षेत्र ॥१॥ धर्म० अधर्म० स्व क्षेत्र असंख्यात प्रदेशी ॥२॥ आकाश० स्व क्षेत्र अनंत प्रदेशी ॥ ३ ॥ काळनो स्व क्षेत्र एक समय ॥ ४ ॥ पुद्गलनो स्व क्षेत्र एक परमाणु एहवा अनंता ॥ ५ ॥ जीवनो स्व क्षेत्र असंख्य प्रदेशी ॥ ६ ॥ एम ६ द्रव्यनो काळ ॥ पोतपोताना अगुरु लघुनि समय समयनी प्रणति फरे छे ते ६ द्रव्यनो स्वकाळ ॥ ६ द्रव्यनो स्वभाव ते ६ ए द्रव्यमां पोतपोताना ४ बोल पोतपोतामां छे अने बिजा द्रव्यना ४ बोल तेमां नथि ॥ जेम धर्मास्ति कायमां पोताना द्रव्य क्षेत्र काळ भाव ए ४ बोल छे ॥ बीजा ५ द्रव्यना नथि ॥ एम ६ ए द्रव्यमां पोतपोताना ४ बोल छे ॥ बिजा ५ना नथि ॥

सात आठ यावत् संख्यात असंख्यात अनंत प्रदेशी खंधमां यावत् चोथे अनंते अजव्य जीवथि अनंत गुण अधिक ॥ सिद्ध ने अनंत मे जागे उंठा परमाणु मळे त्यारे उदारिक ग्रहण योग्य वर्गणा थाय लेवा योग्य ॥ एम अनंत गुण अधिक वर्गणा मळे अग्रहण-योग्य वैक्रेय नि वर्गणा थाय ॥ एम अनंत गुणे वैक्रेय ग्रहण योग्य वर्गणा थाय ॥ एम आहारक वर्गणा ॥ तैजस वर्गणा ॥ जाषा वर्गणा ॥ ५ ॥ श्वासोश्वास वर्गणा ॥ ६ ॥ मनो-वर्गणा ॥ ७ ॥ कार्मण वर्गणा ॥ ८ ॥ ए ८ वर्गणा मांहि ॥ पहेलीथी बिजी वर्गणा अनंत गुणी ॥ बीजीथि त्रिजी अनंत गुणी ॥ एम आठे वर्गणा जाणवी ॥ तेमां उदारिक ॥ ॥ १ ॥ वैक्रय ॥ २ ॥ आहारक ॥ ३ ॥ तैजस ॥ ४ ॥ ए ४ मां ५ वर्ण ॥ २ गंध ॥ ५ रस ८ स्पर्श ॥ अने जाषा ॥ १ ॥ उश्वास ॥ २ ॥ मनो ॥ ३ ॥ कार्मण ॥ ४ ॥ ए ४ वर्गणामां ५ वर्ण २ गंध ॥ ५ रस ॥ ४ स्पर्श ए ४ वर्गणा अगुरु लघु नी जाणवी ॥ हवे षट् द्रव्यमां आठ आठ पक्ष कह्या छे ॥ नित्य ॥ १ ॥ अनित्य ॥ २ ॥ एक ॥ ३ ॥ अनेक ॥ ४ ॥ सत् ॥ ॥ ५ ॥ असत् ॥ ६ ॥ वक्तव्य ॥ ७ ॥ अवक्तव्य ॥ ८ ॥ धर्म अधर्मादि षट् द्रव्यमां ॥

नित्य ॥ अनित्य ॥ एक अनेक ॥ ए ४ पक्ष तो पूर्वे कह्या ॥ तेमज सत् ते ७ द्रव्य पोत पोताना द्रव्य ॥ क्षेत्र ॥ काळ ॥ भाव रूपे छता छे ॥ तेमां धर्मास्ति कायनो स्व द्रव्य ॥ चलण सहाय गुण ॥ १ ॥ अधर्मास्ति कायनो स्व द्रव्य स्थिर सहाय गुण ॥ २ ॥ आकाश० स्व द्रव्य अवकाश दान गुण ॥३॥ काळ० स्व द्रव्य वर्तना लक्षण गुण ॥ ४ ॥ पुद्गल० स्व-द्रव्य पूरण गलन गुण ॥ ५ ॥ जीवास्ति काय स्व द्रव्य उपयोग लक्षण गुण ॥ ६ ॥ एम ७ द्रव्य स्व क्षेत्र ॥१॥ धर्म० अधर्म० स्व क्षेत्र असंख्यात प्रदेशी ॥२॥ आकाश० स्व क्षेत्र अनंत प्रदेशी ॥ ३ ॥ काळनो स्व क्षेत्र एक समय ॥ ४ ॥ पुद्गलनो स्व क्षेत्र एक परमाणु एहवा अनंता ॥ ५ ॥ जीवनो स्व क्षेत्र असंख्य प्रदेशी ॥ ६ ॥ एम ७ द्रव्यनो काळ ॥ पोतपोताना अगुरु लघुनि समय समयनी प्रणति फरे छे ते ७ द्रव्यनो स्वकाळ ॥ ७ द्रव्यनो स्वभाव ते ७ ए द्रव्यमां पोतपोताना ४ बोल पोतपोतामां छे अने बिजा द्रव्यना ४ बोल तेमां नथि ॥ जेम धर्मास्ति कायमां पोताना द्रव्य क्षेत्र काळ भाव ए ४ बोल छे ॥ बीजा ५ द्रव्यना नथि ॥ एम ७ ए द्रव्यमां पोतपोताना ४ बोल छे ॥ बिजा ५ना नथि ॥

एम स्वभाव ए सत् पक्ष कह्यो ॥ अने असत् ते अछता द्रव्य क्षेत्र काळ भाव पर द्रव्य-
ना अछता रूपे तो असत् छे ॥ जेम धर्म० द्रव्य अधर्मादि ५ पर द्रव्यना द्रव्य क्षेत्र काळ
भावे असत के० अछतो छे ॥ एम छ ए द्रव्यमां जाणवुं ॥ छ द्रव्यमां वक्तव्य ते
वचनथी कहेवा योग्य एहवा अनंता स्वभाव एक एक द्रव्यमां छे ॥ अने अवक्तव्य के०
वचनथी कहेवाय नहि केवळज्ञाने जणाय एहवा अनंता धर्म स्वभाव एक एक द्रव्यमां
रह्या छे ॥ एम अनंता गुण पर्याय पण कहेवा ॥ सर्व पदार्थ केवळिये दीठा तेने अनं-
त मे भागे अभिलाष्यवाक वर्गणा योग्य॥ अनभिलाष्यने अनंतमे भागे ते अभिलाष्य ॥
वळी अभिलाष्यने अनंतमे भागे वक्तव्य कह्या ॥ तेने अनंतमे भागे गणधर महाराजे
सूत्र गुंथ्या छे ॥ तेथि असंख्यातमे भागे हमणा आगम रह्या छे ॥ ए ७ पक्ष ॥ वळी
नित्य अनित्य पक्षथि उपनि चोभंगी कहे छे ॥ अनादि अनंत ते जेनि आदिने अंत
नथि ते प्रथम भांगो ॥ १ ॥ जेनि आदि नथि ने अंत छे ते अनादि सांत बिजो भांगो ॥
॥ २ ॥ जेनि आदि छे ने अंत पण छे ते सादि सांत त्रिजो भांगो ॥ ३ ॥ जेनि आदि छे

पण अंत नथि ते सादि अनंत चोथो भांगो ॥ ४ ॥ धर्मास्ति कायमां ४ गुण अनादि सांत भांगो नथि ॥ पर्याय ४ खंध ॥ १ ॥ देश ॥ २ ॥ प्रदेश ॥ ३ ॥ अगुरु लघु ॥ ४ ॥ ए ४ सादि सांत त्रिजे भांगे छे सिद्धना जीवमां धर्मास्ति काय ना प्रदेश सादि अनंत चोथे भांगे छे॥ एमज अधर्म द्रव्यमां॥ आकाशमां पण ए रीते जाणवुं पण एटलो विशेष खंध अनादि अनंत पहेले भांगे जाणवो॥ काळ द्रव्यमां गुण ४ अनादि अनंत छे पहेले भांगे॥ अने पर्यायमां अतीत काळ अनादि सांत बिजे भांगे छे॥ वर्तमान काळे सादि सांत त्रिजे भांगे छे ॥ अनागत काळ सादि अनंत चोथे भांगे छे॥ पुद्गल द्रव्यमां ४ गुण अनादि अनंत प्रथम भांगे छे॥ जीव पुद्गलनो संबंध अभव्य जीवने अनादि अनंत प्रथम भांगे छे॥ अने पुद्गल खंधथि ते सादि सांत त्रिजे भांगे छे॥ जघन्य १ समय उत्कृष्टो असंख्य काळ ते माटे सादि सांत भांगो सादि अनंत भांगो पुद्गलमां नथि॥ अने भव्य जीवने पुद्गलनो संबंध अनादि सांत चोथे भांगे छे॥ जीव द्रव्यमां गुण ४ अनादि अनंत प्रथम भांगे छे॥ जीवने कर्मनो संयोग ॥ भव्य जीवने अनादि सांत जे कारणे के वारे कर्मथि छुटशे ॥

नरक तिर्यंचना नव करवा ते सादि सांत त्रिजे नांगे जाणवा ॥ अने जीवमां सिद्धपणु प्रकटे ते सादि अनंत चोथे नांगे जाणवुं ॥ एम षट द्रव्यनो विचार लेश मात्र छे ॥ आत्म द्रव्यनो विचार ॥ आत्मा ३ ॥ एक बहिरात्मा ॥ १ ॥ बीजो अंतरात्मा ॥ २ ॥ त्रिजो परमात्मा ॥ ३ ॥ तेमां बहिरात्मा ते ॥धन॥ स्वजन॥ शरीर ॥कर्म ॥ सर्व पर वस्तु पुद्गलिक माहरि अने हुं पण एहनो एहवी परिणामनि लौल्यतापणे ॥ अज्ञान मोह मिथ्यात्वे परिणम्यो॥ तेने बहिरात्मा कहिये॥ दुहा॥ पुद्गलसु रातो रहे ॥ जाणे एह निधान तस लाने लोन्यो रहे ॥ सो बहिरात्म अनिधान ॥ १ ॥ पुद्गल विषय विलास द्रव्य कुटुंबादि मां रातो ने रातो तलालीन परिणामे ॥ मग्न रहे एह पुद्गल मनोज्ञ मळे थके जाणे जे एह उपरांत बिजुं कांइ निधान नथि॥ ते पुद्गलना लान मांज लोनि रहे ॥ तेनुं नाम बहिरात्मा॥ ते पहेला गुणठाणा थि त्रिजा गुणठाणा सुधि जाणवो ॥ १ ॥ हवे बीजा अंतरात्मानुं लक्षण कहे छे ॥ दुहा ॥ पुद्गल खल संगी परे ॥ सेवे अवसर देख ॥ तनुं अशक्तज्युं लकडी ॥ ज्ञान नेद पद लेख ॥ १ ॥ पुद्गल नो संबंध खल निच दुर्जन—मनुष्यनि

संगति सरिखो जाणे ॥ पण अण चाह्ये पुद्गलनो संग करे ॥ जेम शरिरे असमर्थ लाकडि राखे ते लाजतो थको ॥ पण समर्थाइ यें राखे नहि ॥ तेम परिणाम थि ज्ञान सम्यक्त्वे करि पुद्गलीक वस्तु जीव वस्तुनो भेद करि ॥ अंतरंग परिणाम थि ॥ उ-दासी परिणामे ॥ आत्मीक वस्तु न्यारि उंलखि ने ॥ तेनुं ध्यान करण रुचि वाळा ने ॥ अं-तरात्म पद प्रकटे ॥ ते चोथे गुणठाणे थि मांडिने १२ मां गुणठाणा सुधि जाणवो ॥ २ ॥ हवे त्रीजा परमात्मानुं लक्षण कहे छे ॥ दुहो ॥ प्यारो आप स्वरूप मे ॥ न्यारो पुद्गल खेल ॥ सो परमात्मा जाणिये ॥ नहि जस भव को मेल ॥ १ ॥ आत्म स्वरूपने विषे मग्न ॥ दुहो ॥ समता रमता उर्द्धता ॥ ज्ञायकता सुख भास ॥ वेदकता चैतन्यता ॥ ए सव जीव विलास ॥१॥ एटला बोल प्रगट थया छे ॥ शुद्ध प्रणतिये अने पुद्गलना खेलथि न्यारो ॥ दुहो ॥ तनता मनता वचनता ॥ जडता जड ममेल ॥ लघुता गुरुता गमनता ॥ ए अजीव के खेल ॥ १ ॥ ए सर्व पर वस्तु मात्र कर्म चैतन्यताथि न्यारो रहे जहने पुनरपि भवादि सर्व मेल रहित ने परमात्मा ॥ तेरमे चौदमे गुणठाणे तथा सिद्धने परमात्मा कहिये ॥ ३ ॥ तेमां द्रव्यात्मा

असंख्यात प्रदेशी ॥ बहिरात्मानि प्रणतिये परिणम्यो ते बहिरात्मा ॥ एमज अंतरात्मा परमात्मा पण कहिये॥१॥एमज कषायात्मा ते निश्चय व्यवहार सर्व रिते बहिरात्माज कहिये ॥ २ ॥ योगात्मा निश्चय नये तो बहिरात्मा ॥ व्यवहार नये शुद्ध योग ते अंतरात्मा ॥ अशुद्ध योग ते बहिरात्मा ॥ ३ ॥ उपयोग आत्मा तेमां ज्ञानात्माना उपयोगमां ४ ज्ञान अंतरात्मा ॥ केवळज्ञान परमात्मा ॥ दर्शन आत्मामां ३ दर्शननो उपयोग शुद्ध प्रणतिये अंतरात्मा ॥ अशुद्ध प्रणतिये बहिरात्मा ॥ केवळ दर्शननो उपयोग ते परमात्मा ॥ ३ ॥ अज्ञाननो उपयोग ते बहिरात्मा ॥ ४ ॥ ज्ञानात्मामां ४ ज्ञान अंतरात्मा ॥ केवळज्ञान परमात्मा ॥ ५ ॥ दर्शन आत्मामां ३ दर्शन शुद्ध प्रणतिये अंतरात्मा ॥ अशुद्ध प्रणतिये बहिरात्मा ॥ केवळ दर्शन ते परमात्मा ॥ ६ ॥ चारित्र आत्मामां ॥ ५ ॥ चारित्र क्षयोपशमनि परिणतिये अंतरात्मा ॥ अने जथाख्यात चारित्र क्षायक केवळी चारित्रनि परिणतिनि अपेक्षाये ॥ परमात्मा ॥ ७ वीर्यात्मामां ॥ बाळ वीर्यनि परिणति ते ॥ बहिरात्मा ॥ बाळ पंडित वीर्यनी श्रावकनि शुद्धपरिणति ते अंतरात्मा ॥ अशुद्ध परिणति ते बहि-

पंडित वीर्य अंतरात्मा
रात्मा ॥ पंडित वीर्य क्षयोपशम परिणतिनि अपेक्षाये छद्मस्तनुं पंडित वीर्य अंतरात्मा
अने क्षायक केवळी पंडित वीर्यनि परिणतिनी अपेक्षाये परमात्मा ॥ ८ ॥ ए आठ आ-
त्मा नो लेश मात्र अधिकार कह्यो ॥ षट् द्रव्य ॥ आत्म बोधनो विचार लेश मात्र
निरुपणे ॥ विस्तार रुचिये ॥ सात नय चार प्रमाण चार निक्षेप ॥ ॥ षट उपक्रम
नव अनुगम ॥ ओघनिष्पन ॥ नाम निष्पन ॥ सूत्रलायक निष्पन ॥ निक्षेप निर्युक्ति ॥
स्याद्वादि ॥ असंख्य प्रदेशी ॥ अनंत नयात्मक वाणी सिद्धांतनि ॥ विस्तार रुचिनो
वर्णव करतां पार न पामिए पण सारभूत एटलुं जे असंख्य प्रदेशी अनंत केवळ ज्ञान ॥
अनंत केवळ दर्शन ॥ अनंत स्वरूप स्थिरता रमण ॥ अनंत क्षायक शक्ति अनंत परम-
क्षमा अनंत परम मार्दव ॥ परमार्यव । परम संतोष । परम समता ॥ परम शीतल दसा
॥ परम शांति ॥ परम दांति । परम क्षायक सम्यक्त ॥ परम क्षायक भाव ॥ परम शुद्ध
परिणामिक भावमयि ॥ शुद्ध सत्तानि रासि । निस्पृहि ॥ स्वतंत्री । इच्छा रोध निरासंसी
॥ नाहं मम ॥ अरागी अद्वेषी अमोहि अविकारी ॥ सहजानंदि स्वरुप विलासी ॥ स्वरूप

॥ अथ श्री रूपि अरूपीना बोल. ॥

॥ गाथा ॥ कम्मठ पावठाणाय ॥ मणवयं जोगाय कम्मदेहा ॥ एसाचौफासा ॥ घणतणवाय घणोदही ॥ १ ॥ उरालाय चौदेहा ॥ पुग्गलथ्थियकाय दव्वलेसा ॥ तह काय जोगोय ॥ नायव्वा अठ फासा ॥ २ ॥ धम्मा धम्मागासा ॥ जीव अढ्ढापावठाणावत्तिय ॥ दिठिपचुगणा ॥ उवउंग नावलेसाय ॥ ३ ॥ उग्गहासन्ना बुही ॥ चौचौ एगेगसठीय ॥ ए ए सव्वन्नणीया ॥ अरु वितथ्थनायव्वा ॥ ४ ॥ ए चार गाथानो अर्थ कहे ठे ॥ कर्म ॥ ७ ॥ पाप ॥ १७ ॥ मन जोग ॥ १ ॥ वचन जोग ॥ १ कार्मण शरीर ॥ १ ॥ ए ॥ २७ ॥ बोलमां ४ स्पर्श लाभे ॥ २ ॥ घन वाय ॥ १ ॥ तनवाय ॥ १ ॥ घनोदधि ॥ १ ॥ उदारिक ॥ १ ॥ वैक्रय ॥ १ ॥ आहारक ॥ १ ॥ तेजस । ए ४ शरीर ॥ पुद्गलास्तिकाय ॥ १ ॥ द्रव्य लेशा ६ ॥ काय जोग ॥ १ ॥ ए १५ ॥ बोलमां ॥ ७ ॥ स्पर्श लाभे ॥ २ ॥ ए ४४ बोल रूपिना जाणवा ॥ धर्मास्ति काय ॥ १ ॥ अधर्मास्ति काय ॥ १ ॥ आकाशास्ति काय ॥ १ ॥ जीव ॥ १ ॥

काळ ॥ १ ॥ अढार पापनि निवृत्ति १७ ॥ दृष्टि ३ ॥ उठाण ॥ १ ॥ कम ॥ १ ॥ बळ ॥ १ ॥ वीर्य ॥ १ ॥ पुरुषाकार प्राक्रम ॥ १ ॥ उपयोग १२ ॥ भाव लेश्या ६ ॥ अवग्रह ॥ १ ॥ इहा ॥ १ ॥ अवाय ॥ १ ॥ धारणा ॥ १ ॥ संज्ञा ॥ ४ ॥ उत्पातनी ॥ १ विनयनी ॥ १ ॥ कर्मनी ॥ १ ॥ पारिणामिनी ॥ ए ४ बुद्धि ॥ ए ॥ ६१ ॥ बोल अरूपीना जाणवा ॥ इति रूपी अरूपीना बोल समाप्तं. ॥

॥ अथ श्री पच्चीस बोलनो थोकडो. ॥

॥ १ पहेले बोले महावीर प्रभुए एका एक दीक्षा लीधी अने मोक्ष पण एकाएक गया. उर्ध्वलोके स्वार्थ सिद्ध विमान एक लाख जोजननुं छे, त्रिछा लोके जंबुद्वीप एक लाख जोजननो छे, अधो लोके सातमी नरके अपइठाण नरकावासो एक लाख जोजननो छे. चित्रा नक्षत्र, शांति नक्षत्र, आरद्रा नक्षत्र ए त्रण नक्षत्रनो एकेको तारो कह्यो छे. २ बीजे बोले धर्मकरणी करती वखते बे दीशा सन्मुख बेसी करवी ते पूर्व अने उत्तर.

मोक्ष कर्ता ॥ स्वरुप मोक्ष नोक्ता ॥ स्वरुप तत्व रमणीय ॥ तत्वानंदि । तत्व विश्रामि ॥ स्वरुप स्थायि ॥ तत्व विलासी तत्वानुनवी ॥ अछेद अनेद ॥ अप्रतिहत अविनासी ॥ अजरअमर ॥ निःकलंकी ॥ अगम्य अलक्ष अकल अगोचर अगाध॥ सच्चिदानंद पूर्णानंद पूर्णब्रह्म ॥ आत्म द्रव्य अनंत गुणी ॥ अनंत परयायमयि ॥ अनंत शुद्धात्म धर्ममयि ॥ आत्म सत्तानि सदहणा प्ररुपणा स्पर्शना करवी ॥ एहवी शुद्ध सत्ता ॥ केवळ ज्ञानादि ॥ आत्म द्रव्य ने न माने तेनी साध्य शुन्य साधना क्रिया जेम घृत अथवा लुण विना रसवति न सोने ॥ तेम सत्ताये केवळ ज्ञान न माने ॥ ते जीव पूर्वे तेटली क्रीया करे ॥ द्रव्य ज्ञाननो अन्यास करे ॥ पण जो केवळ ज्ञानज सत्ताए नथी ॥ ने बीजा द्रव्य तो जरु छे ! तेवारे शुं प्रगट थशे ते माटे शुद्ध सत्ता प्रगट करवी ॥ तेज कारज विना तो करणी सर्वे शुनाश्रव पुन्य फळनी दाता छे ॥ ते तो परनाव छे अनंत वार जीव पाम्यो ॥ ते पाम्यानुं शुं आश्चर्य छे ॥ ते माटे आचारांग नंदि मोक्षमार्गाध्ययन नगवति पन्नवणा अनुयोगद्वारादि दशवैकालिक आठमां ध्ययनादि ॥ सकळ आगमनी शाखे ॥ आत्मार्थि

मोक्षार्थि निर्जरार्थिने तो ॥ एकांतहित ॥ पार्श्वमणी चिंतामणी रसकुंपि अमृत रस कुंभ ॥ चित्रावेली कल्पवेली तथातरु ॥ सीद्ध मंत्रथी अधिक अनोपम ॥ सार सर्व ज्ञाननुं तत्व ए जे केवळ ज्ञान सत्ताए मानिने ॥ शक्ति प्रमाणे शुद्ध व्यवहार क्रिया करीने शुद्ध सत्ता प्रगट करवि ॥ ए सर्वे सद्दहणाथी ॥ क्रोडि गमे युक्ति वाळा मळे ॥ सद्दहणा सत्ताना प्रति पक्षे पण न चळवुं ॥ फरी फरीने जीवने आत्म द्रव्यनी शुद्ध केवळ श्रद्धा थवी महा दुर्लभ छे ॥ ते माटे ज्ञानामृतमां झीली ॥ सकळ जंतुनी रक्षा करी गुणीना गुणग्राम करी ॥ आत्मानी निंदा करी ॥ सकळ जीवने उपगार बुद्धि चितवी ॥ सर्व इर्ष्या कोइ जीवना अवर्णवाद मात्रनो निषेध करी ॥ सकळ उपगारी पुरुषनो क्षण क्षण उपगार समरी ॥ सरल स्वभावी उदासी भावे रहिने ॥ पूर्वे अनंत जीव सत्ताने वर्या वरे छे आगमी ए काळे वरसे ॥ घणुं शुं कहिए ॥ ए विचारणा तो पोताना जीवने हाथ छे ए सिखामण प्रमाण करे ॥ तेहना सकळ कार्य सिद्ध थाय ॥ इति षट् द्रव्य वीचार सपूर्ण ॥

॥ अथ श्री रूपि अरूपीना बोल. ॥

॥ गाथा ॥ कम्मठ पावठाणाय ॥ मणवयं जोगाय कम्मदेहा ॥ एसाचौफासा ॥ घणतणवाय घणोदही ॥ १ ॥ उरालाय चौदेहा ॥ पुग्गलथ्थियकाय दव्वलेसा ॥ तह काय जोगोय ॥ नायव्वा अठ फासा ॥ २ ॥ धम्मा धम्मागासा ॥ जीव अठ्ठापावठाणावत्तिय ॥ दिठिपचुठाणा ॥ उवउंग नावलेसाय ॥ ३ ॥ उग्गहासन्ना बुही ॥ चौचौ एगेगसठीय ॥ ए ए सव्वन्नणीया॥ अरु वितथ्थनायव्वा॥४॥ए चार गाथानो अर्थ कहे छे ॥ कर्म ॥८ ॥ पाप ॥१८ ॥ मन जोग॥ १ ॥ वचन जोग ॥ १ कार्मण शरीर ॥ १ ॥ ए ॥३०॥ बोलमां ४ स्पर्श लाभे ॥१॥ घन वाय ॥ १ ॥ तनवाय ॥ १ ॥ घनोदधि ॥ १ ॥ उदारिक ॥ १ ॥ वैक्रय ॥ १ ॥ आहारक ॥ १ ॥ तेजस । ए ४ शरीर ॥ पुद्गलास्तिकाय ॥ १ ॥ द्रव्य लेशा ६ ॥ काय जोग ॥ १ ॥ ए १५ ॥ बोलमां ॥ ८ ॥ स्पर्श लाभे ॥ २ ॥ ए ४४ बोल रूपिना जाणवा ॥ धर्मास्ति काय ॥ १ ॥ अधर्मास्ति काय ॥ १ ॥ आकाशास्ति काय ॥ १ ॥ जीव ॥ १ ॥

काळ ॥ १ ॥ अढार पापनि निवृत्ति १८ ॥ दृष्टि ३ ॥ उठाण ॥ १ ॥ कम ॥ १ ॥ बळ ॥ १ ॥ वीर्य ॥ १ ॥ पुरुषाकार प्राक्रम ॥ १ ॥ उपयोग १२ ॥ भाव लेश्या ६ ॥ अवग्रह ॥ १ ॥ इहा ॥ १ ॥ अवाय ॥ १ ॥ धारणा ॥ १ ॥ संज्ञा ॥ ४ ॥ उत्पातनी ॥ १ विनयनी ॥ १ ॥ कर्मनी ॥ १ ॥ पारिणामिनी ॥ ए ४ बुद्धि ॥ ए ॥ ६१ ॥ बोल अरूपीना जाणवा ॥ इति रूपी अरूपीना बोल समाप्तं. ॥

॥ अथ श्री पचीस बोलनो थोकडो. ॥

॥ १ पहेले बोले महावीर प्रभुए एका एक दीक्षा लीधी अने मोक्ष पण एकाएक गया. उर्ध्वलोके स्वार्थ सिद्ध विमान एक लाख जोजननुं छे, त्रिछा लोके जंबुद्वीप एक लाख जोजननो छे, अधो लोके सातमी नरके अपइठाण नरकावासो एक लाख जोजननो छे. चित्रा नक्षत्र, शांति नक्षत्र, आरद्रा नक्षत्र ए त्रण नक्षत्रनो एकेको तारो कह्यो छे. २ बीजे बोले धर्मकरणी करती वखते बे दीशा सन्मुख बेसी करवी ते पूर्व अने उत्तर.

बे प्रकारे धर्म कह्यो छे; गृहस्थ धर्म अने साधु धर्म. बे प्रकारे जीव कह्या छे, सिद्धना जीव अने संसारी जीव. बे प्रकारे दुःख कह्युं छे, ते शारीरिक दुःख अने मानसिक दुःख. पूर्वा फाल्गुणी नक्षत्र, उत्तरा फाल्गुणी नक्षत्र, पूर्वा भाद्रपद अने उत्तरा भाद्रपद ए चार नक्षत्रना ब बे तारा कह्या छे. ३ त्रीजे बोले श्रावक त्रण मनोरथ चिंतवे ते एवी रीते के, हे भगवान ! हुं आरंभ अने परिग्रह क्यारे छांडीश ? हे भगवान ! हुं पंच महा व्रतधारी क्यारे थइश ? हे भगवान ! हुं आलोयणा करी संथारो क्यारे करीश ? ते वखतने धन्य छे. त्रण प्रकारना जीन कह्याः—१. अवधीज्ञानी जीन, २. मनःपर्यवज्ञानी जीन, ३. केवळज्ञानी जीन. त्रण प्रकारना पात्र साधुने खपे ते—१. माटीनुं, २. तुंबडानुं, ३. काष्टनुं. सात नक्षत्रना त्रण त्रण तारा कह्या छे. अभिच, श्रवण, अश्वनी, भरणी, मृगशर, पुष्प, ज्येष्ठा ए सात नक्षत्र. ४ चोथे बोले श्रावकने चार विसामा कह्या छे भार वहेनारने दृष्टांते. एवी रीते के भार एक खभेथी बीजे खभे ले ते एक विसामो १, कोइ जग्याए उंटले के चोतरे बोजो मुकीने पीशाब करवा जाय के झाडे फरवा जाय ते बीजो विसामो.

२, गाम दुर होय रस्तामां धर्मशाळा के जदनुं देवळ आवे त्यां रात रहे ते त्रीजो विसा-
मो. ३, पोताने के धणीने त्यां भार मूके ते चोथो विसामो, ४. हवे ए दृष्टांत श्रावकना
उपर उतारे छे. ते जेम भार लीधो तेम श्रावक ने बोजो ते अढार पाप रुप. तेना चार
विसामा नीचे प्रमाणे—श्रावक आठम, पाखी अपवास, एकासणुं करे ते पाप रूप
बोजो—एक खांधेथी बीजे खांधे लेवा रुप ते पहेलो विसामो. केमके अपवास
कर्यो ते पोतानी जात ने माटे खावानु वध कर्युं अथवा पाप बंध कर्युं पण बीजाने माटे
करवुं पडे छे, तेथी पहेलो विसामो जाणवो. १, श्रावक एक सामायक बे सामायाक अथवा
बे घडीनुं चार घडीनुं देशावगासिक करे ते बीजो विसामो जाणवो. केमके एटलो वखत
पाप मांथी रोकायो. २, श्रावक आठम पाखीना पोषध करे ते रात रहेवा रुप त्रीजो विसा-
मो ३, श्रावक आलोयणा करी संथारो करे ते वारे सर्व पापथी निवर्त्यो ए भार घेर मु-
कवा रुप चोथो विसामो, ४. श्रावकने चार प्रकारनुं रात्रिभोजन कह्युं छे ते जेमके
रात्रिए रांधे अने दिवसे खाय ते अशुद्ध. १, दीवसे रांधे अने रात्रिए खाय ते पण अ-

शुद्ध. २, रात्रे रांधे अने रात्रे खाय ते पण अशुद्ध. ३, दीवसे रांधे अने दीवसे खाय ते शुद्ध. ४, वळी एज चार भांगा बीजी रीते कहे छेः—अंधारी जग्याए रांधे अने अजवाळे खाय ते अशुद्ध. १, अजवाळामां रांधे अने अंधारी जगाए खाय ते पण अशुद्ध. २, अंधारी जग्याए रांधे अने अंधारी जग्याए खाय ते पण अशुद्ध. ३, अजवाळी जग्याए रांधे अने अजवाळी जग्याए खाय ते शुद्ध. ४. पुर्वाषाढा नक्षत्र, उत्तराषाढा नक्षत्र, अनुराधा नक्षत्र ए त्रणना चार चार तारा कह्या छे. ५ पांचमे बोले समकितना लक्षण पांच. संम १, संवेग २, निर्वेग ३, अनुकंपा ४, आस्ता ५. पांच समकितना दुषण कह्या छे ॥ मिथ्यात्वी ए बोलाव्या पहेलां पोते तेने बोलावे ते. १. मिथ्यात्वीना सामुं वारंवार जोवुं ते. २. मिथ्यात्वीने पहोंचाडवा जवुं ते. ३. कामविना तेना मकान उपर जवुं ते. ४. वारंवार तेना मकान उपर जवुं ते. ५. ए पांच दुषण. पांच समकितना भुषण कहे छे. धर्मने विषे चतुराइ राखे ते समकितनुं भुषण. १. जीनशासन ने अनेक रीते दीपावे ते, २. साधुनी सेवा करे ते. ३. धर्मथी डगताने स्थीर करे ते. ४. साधु साधर्मीनी वैयावच्च करे ते.

५ ए पांच भूषण जाणवा. शरीर मांहेथी पांच ठेकाणेथी जीव नीकळे ते कहे छे. पगने तळीएथी नीकळे ते नरके जाय. १. जांगेथी नीकळे ते तीर्यंचमां जाय २. छातीएथी नीकळे ते मनुष्यमां जाय, ३. मस्तकेथी नीकळे ते देवलोकमां जाय. ४. अने सर्वांगथी नीकळे ते मोक्ष जाय. ५. पांच प्रकारे जीव धर्म न पामे ते कहे छे—अहंकारी. १ क्रोधी. २. रोगी ३. प्रमादी. ४. आळसु. ५. पांच नक्षत्रना पांच पांच तारा कह्या छे ते रोहीणी. १ पुनर्वसु २. धनिष्टा. ३. विशाखा. ४ हस्त. ५॥ ६ छठे बोले छ प्रकारे साधु आहार करे ते कहे छे—क्षुधावेदनी समावा ने माटे. १. वैयावच्च करवा ने माटे. २. इरीयासुमति शोधवा ने माटे. ३. संयमना निर्वाह ने माटे. ४. आयुष्य नचावववा ने माटे. ५ रात्रीए धर्म जागरण करवा ने माटे. ६॥ छ धर्म ना देव॥ गुरु ना नाम कहे छे—जैन धर्ममां देव अरिहंत, गुरु निग्रंथ. १. बोद्ध मतमां देव बुद्ध, गुरु फुंगी. २. शीव मतमां देव रुद्र, गुरु योगी. ३ देवी मतमां देवी धर्म, गुरु वैरागी. ४. न्याय मतमां देव जगतकर्ता, गुरु संन्यासी. ५ मीमांशक मतमां देव अलख, गुरु दरवेश. ६. समकीत नी छ जतना कहे छे—अन्य तीर्थी-

ना गुणग्राम न करे. १. अन्य तीर्थीने माने वांदे ने पूजे नहि. २. अन्य तीर्थीए बोलाव्या विना पोते बोले नहि. ३. वारंवार ए साथे अलाप सलाप करे नहि. ४. अन्य तीर्थीने तरण तारण मानी अन्न पाणी आपे नहि, (दयाबुद्धी अनुकंपानो आगार) ५. अन्य तीर्थीने धर्मबुद्धि ए वस्त्र पात्र आपे नहि साता नीमीते आपे. ६. छ लेश्याना विचार कहे छे. कृष्ण लेश्या वाळाने जीव हींसा करवानी ईच्छा होय. १. नील लेश्या वाळाने चोरीनी इच्छा होय. २. कापुत लेश्या वाळाने मैथुन नी इच्छा होय. ३. तेजु लेश्या वाळाने तपश्चर्या करवानी इच्छा होय. ४. पद्म लेश्या वाळाने दान देवानी इच्छा होय. ५. शुक्ल लेश्या वाळाने मोक्षनी इछा होय. ६. कृतिका, अश्लेषा ए बे नक्षत्रना छ छ तारा छे. ७ सातमे बोले सात कारणे छद्मस्त जाणवो. प्राणातीपात लगाडे. १. मृषावाद लगाडे. २. अदत्तादान लगाडे. ३. शब्द रुप गंध रस स्पर्श तेनो स्वाद ले. ४. पूजा सत्कार वांछे. ५. निर्वद्य परुपे पण सावद्य लागे. ६. जेवुं परूपे तेवुं करी शके नहि, ए सातवाना जेनामां होय ते छद्मस्त जाणवो. सात प्रकारे आउखुं घटे ते कहे छे. ध्रास्को पडवाथी मरे. १. शस्त्रथी मरे.

२. मंत्र मुठथी मरे. ३. घणे आहारे अजीर्णथी मरे. ४. शुलादीक वेदनाथी मरे. ५. सर्पादीक करडेथी मरे. ६. श्वासोश्वास रुंधावाथी मरे. ७. ए सात प्रकारे आउखु तुटे. ७. हवे सात नय कहे छे. निगम नय. १. संग्रह नय. २. व्यवहार नय. ३. रुजु सुत्र नय. ४. शब्द नय. ५. समीरूंढ नय. ६. एवंभूत नय ७. ए सात प्रकारे नय कह्या. मघा नक्षत्रना सात तारा कह्या छे. ८ आठमे बोले आचार्यनी आठ संपदा. आचार संपदा. १. शरीर संपदा. २. सूत्र संपदा. ३. वचन संपदा. ४. प्रयोग संपदा. ५. मति संपदा. ६. संग्रह संपदा. ७. वाचना संपदा. ८. एकल विहारी साधु साध्वीना आठ अवगुण कह्या छे तेना नाम—क्रोधी होय ते एकलो रहे १, अहंकारी होय ते एकलो रहे २. कपटी होय ते एकलो रहे. ३ लोभी होय ते एकलो रहे. ४ पाप करवामां आशक्त होय ते एकलो रहे. ५. कतोहली मश्करो होय ते एकलो रहे. ६ धुतारो होय ते एकलो रहे. ७ माठा आचारनो धणी होय ते एकलो रहे ८. आठ गुणनो धणी एकलो होय तेना नाम—संयमने विषे दृढ प्रणामनो धणी गुरुनी आज्ञा लइ एकलो रहे. १ घणा सूत्रनो जाण एकलो रहे. २. जघन्य दश

पूर्वनो जाणेलो उत्कृष्ट चउद पूर्वनो जाणेलो एकलो रहे. ३. चार ज्ञाननो धणी एकलो रहे. ४. महा बळनो धणी एकलो रहे. ५. क्लेश रहीत होय ते एकलो रहे. ६. संतोषी होय ते एकलो रहे. ७. धैर्यवंत होय ते एकलो रहे ८. आठ ठेकाणे मनुष्य (घेलापणुं) उत्पन्न थाय ते कहे छे नरनारी पर्स्पर वातो करे त्यारे घेला. १, बाळकने रमाडे त्यारे घेला. २. क्लेश करे त्यारे घेला. ३, दारु जांग केफी पदार्थ पीए त्यारे घेला. ४ पेच बंध पाघडी बांधीने फरे त्यारे घेला. ५. अरीसामां मुख जुए त्यारे घेला. ६. शयन समय घेला. ७. होळीमां पुरुषो अने आषाढी पुनमे स्त्रीउं. ८. देखता आठ प्रकारे अंध कह्या ते कहे छे. कामांध ॥१॥ क्रोधांध ॥२॥ कृपणांध ॥३॥ मानांध ॥४॥ मद्यांध ॥५॥ चोरांध ॥६॥ जुगट्यांध ॥ ७ ॥ चुगल्यांध ॥ ८ ॥ ए आठ आंधळा जाणवा । आठ महा पापी कहे छे—आत्मघाती महा पापी. १ विश्वासघाती महा पापी. २, गुण उळवनार महा पापी ३. गुरु द्रोही महा पापी. ४, कुडी साक्षी पुरे ते महा पापी. ५, खोटी सलाह आपे ते महा पापी. ६. पच्चखाण वारंवार जांगे ते महा पापी. ७, हींसामय धर्म परुपे ते महा पापी

८ ॥ ९ नवमे बोले नव प्रकारे शरीरमां रोग उपजे ते कहे छे—घणुं खाय तो रोग उपजे. १, अजीरणमां खाय तथा घणुं बेसी रहे तो रोग उपजे. २, घणुं ऊंघे तो रोग उपजे. ३, घणुं जागे तो रोग उपजे ४, दिशा रोके तो रोग उपजे. ५. पिशाब रोके तो रोग उपजे. ६, घणुं चाले तो रोग उपजे. ७, अणगमती वस्तु भोगवे तो रोग उपजे. ८, वारंवार विषय सेवे तो रोग उपजे. ९. नव बोल समजवाना कह्या ते कहे छे—रजपुतने क्रोध घणो. १. क्षत्रीयने मान घणुं. २ गुणकाने माया घणी. ३ ब्राह्मणने लोभ घणो. ४. मित्रने राग घणो. ५. इयोक ने द्वेष घणो. ६. जुगारीने शोच घणो. ७. चोरनी माताने चिंता घणी ८. कायरने भय घणो. ९ ॥ १०. दशमे बोले नारकीना जीवने दश प्रकारनी वेदना कहे छे—अनंती भूख. १ अनंती तरस. २. अनंती टाढ. ३ अनंती गरमी. ४. अनंतो दाघ ५. अनंतो भय, ६. अनंतो ज्वर ७. अनंती खरज ८. अनतो परवश पणो. ९. अनंतो शोक १० दश प्रकारे श्रावकने पस्तावुं पडे ते कहे छे. साधुनी जोगवाइ होय अने प्रश्नादीक पूछे नहि तो साधु विहार कर्या पछी पस्तावुं पडे. १. वखाण वाणी सांभळे नहि तो पस्तावुं

पमे. २. सामायिक पमिक्कमणुं करे नहि तो पस्तावुं पमे. ३. आहार पाणी असुझतो होय तो पस्तावुं पमे. ४. नणवानी जोगवाय होय अने नणे नहि तो पस्तावुं पमे. ५. साधर्मीनि खबर ले नही तो पस्तावुं पमे ६. धर्म जागरण जागे नहि तो पस्तावुं पमे. ७ साधुनी विनय नक्ति करे नहि तो पस्तावुं पमे. ८. साधुनी सार संनाळ ले नहि तो पस्तावुं पमे ९. साधु विहार करी जाय ने खबर न पमे तो पस्तावुं पमे. आ दस कारणे देवतानुं आयूष्य बंधाय ॥ १०. दश प्रकारे ज्ञानमां वृद्धि करनार नक्षत्रनां नाम. मृगसर १. आर्द्रा. २. पुष्प. ३. पूर्वा नाद्रपद. ४. पूर्वा षाढा ५. पूर्वाफाल्गुनी ६. मूळ. ७. अश्लेषा. ८. हस्त. ९. चित्रा. १० ए दश नक्षत्रमां ज्ञान नणे तो वृद्धि थाय ने विघ्न जाय. ११ अगीआरमे बोले महावीरना ११ गणधरना नाम कहे छे इंद्रनुती. १. अग्निनुति. २. वायूनुति. ३. व्यक्त. ४. सुधर्मा स्वामी ५. मंमित पुत्र. ६. मौरीपुत्र. ७. अकंपीत. ८. अचळ न्राता. ९. महेतार्य. १०. प्रनाश. ११. अगिआर बोले ज्ञान वधे ते कहे छे. उद्यम करता ज्ञान वधे. १. निद्रा तजे तो ज्ञान वधे. २. अणोदरी करे तो

ज्ञान वधे ३. थोडुं बोले तो ज्ञान वधे. ४. पंडितनी सोबत करे तो ज्ञान वधे. ५. विनय करे तो ज्ञान वधे ६. कपट रहित तप करे तो ज्ञान वधे ७. संसार असार जाणे तो ज्ञान वधे. ८, मांहोमांही चर्चा वार्ता करे तो ज्ञान वधे. ९. ज्ञानी पासे जणे तो ज्ञान वधे १०. इंद्रीयोना विषय नो त्याग करे तो ज्ञान वधे ११ मुळनक्षत्र ना अगी-आर तारा छे. १२. बारमे बोले बार कारणे आत्मानुं परम कल्याण थाय ते कहे छे— समकित निर्मळ पाळे तो आत्मानुं परम कल्याण थाय—श्रेणीक राजानी पेरे १ नीयाणा रहीत करणी करे तो परम कल्याण थाय—तामली तापसनी पेरे २ मन वचन कायाना जोग कबजे राखे तो परम कल्याण थाय—गजसुखमाल मुनि नी पेरे. ३ छती शक्तिए क्षमा करे तो परम कल्याण थाय—परदेशी राजानी पेरे. ४. पांच इंद्री ने दमन करे तो परम कल्याण थाय—धर्मरुची अणगारनी पेरे. ५. साधुनो शुद्ध आचार पाळे तो परम कल्याण थाय—धना अणगार नी पेरे ६. धर्म उपर श्रद्धा प्रतित राखे तो परम कल्याण थाय—वरुण नाग नतुयाना मित्रनी पेरे. ७. माया कपट छांडे तो परम कल्याण थाय—मल्लिनाथ ना छ

मीत्रनी पेरे. ७. आश्रवमां संवर निपजावे तो परम कल्याण थाय–संजति राजानी पेरे. ए. रोग आवे हाय उंय न करे तो परम कल्याण थाय–अनाथी निग्रंथनी पेरे. १० परिसह आव्या समन्नाव राखे तो परम कल्याण थाय–मेतारज मुनि नी पेरे ११. तृष्णा उत्पन्न थइ तेने पाछी वाळे तो परम कल्याण थाय–कंपील केवळीनी पेरे. १२॥१३ तेरमे बोले तेर तणखा कहे छे–जन्मरुपी रु अने मरण रुपी तणखो. १, संजोग रुपी रु अने विजोग रुपी तणखो २, शाता रुपी रु अने अशाता रुपी तणखो. ३. संपदा रुपी रु अने आपदा रुपी तणखो. ४. हरख रुपी रु अने शोग रुपी तणखो. ५. शील रुपी रु अने कुशील रुपी तणखो. ६. ज्ञान रुपी रु अने अज्ञान रुपी तणखो ७, समकित रुपी रु अने मिथ्यात्व रुपी तणखो. ७. संजम रुपी रु अने असंजम रुपी तणखो ए. तपस्या रुपी रु अने क्रोध रुपी तणखो. १०. विवेक रुपी रु अने अन्निमान रुपी तणखो. ११. स्नेह रुपी रु अने माया रुपी तणखो. १२. संतोष रुपी रु अने लोन्न रुपी तणखो. १३. ए तेर तणखा. हवे तेर काठीआ कहे छे. जुगार. १. आळस. २. शोक. ३. न्नय. ४. वीकथा. ५. कौतक. ६. क्रोध ७. कृपण बुद्धि. ७. अज्ञान. ए. वहेम. १०. निद्रा. ११ मद. १२. मोह.

१३. ए तेर काठीआ. १४ चौदमे बोले व्याख्यान सांजळनार ना १४ गुण कहे छे—ज्ञक्तिवंत होय. १. मीठा बोलो होय. २. गर्व रहीत होय. ३ सांजळ्या उपर रुची होय. ४. चपळता रहित एकाग्र चित्ते सांजळनार होय. ५ जेवुं सांजळे तेवुं पूछनार ने अद्धार कहे. ६. वाणीने प्रकाशमां लावनार होय. ७. घणा शास्त्र सांजळीने तेना रहस्यनो जाण होय. ८ धर्म कार्यमां आळस न करनार होय. ९, धर्म सांजळता निद्रा न करनार होय १०, बुद्धिवंत होय ११, दातार गुण होय. १२, जेनी पासे धर्म सांजळे तेना गुणनो फेलावो करनार होय. १३, कोइनी निंदा न करे तेमज तेमनो वादविवाद न करे. १४ ॥ १५ पंदरमे बोले वनीत शिष्यना पंदर गुण कहे छे—गुरुथी नीचा आसने वेसवा वाळो होय. १, चपळ पणा रहित होय. २ माया रहित होय. ३. कतोहळ रहित होय. ४. करकस वचन रहित होय. ५ लांबो वखत पहोचे तेवो क्रोध न करनार होय. ६ मित्र साथे मित्रता राखे. ७ सुत्र ज्ञाणी मद न करे. ८. आचार्यादिकनी निंदा न करे. ९. शिखामण देनार उपर क्रोध न करे. १०. पुंठ पाछळ वालेसरीना गुण बोले. ११. कलेश ममता रहित होय. १२ तत्वनो जाण

होय. १३. विनयवंत होय. १४. लज्जावंत इंद्रिनो दमनार होय. १५ ॥ १६. सोळमे बोले सोळ प्रकारना वचन जाणवा ते कहे छे–एक वचन घट, पट, वृक्ष. १. द्विवचन घटौ, पटौ, वृक्षौ. २. बहुवचन घटा, पटा, वृक्षा. ३. स्त्री लींगे वचन॥ कुमारी, नगरी, नदी. ४. पुरुष लिंगे वचन देव, नर, अरिहंत, साधु. ५. नपुंसक लिंगे वचन कपट, कमळ, नेत्र. ६. अतीत काळ वचन (गयो काळ) करेलुं, थएलुं. ७. अनागत काळ वचन (आवतो काळ) करशे, थशे, जांगशे. ८. वर्तमानकाळ वचन॥ करे छे, थाय छे, जणे छे. ९. परोक्ष वचन ए कार्य तेणे कर्युं. १०. प्रत्यक्ष वचन एमज छे. ११. उपनित वचन ए पुरुष रुपवंत छे. १२. अपनीत वचन जेम ए पुरुष कुरुपवंत छे. १३. उपनीत अपनीत वचन जेम ए रुपवंत पण कुशीलिउं छे. १४. अपनीत उपनीत वचन जेम ए पुरुष कुशीलिउं पण रुपवंत छे. १५. अध्यात्म वचन जग्न बोले (तुटेलुं वचन) रु वाणीआनी पेरे रु पा. १६ ॥ १७ सतरमे बोले सतर प्रकारनो संयम कहे छे–पृथ्वीकायनी दया पाळवी ते संयम. १. अपकायनी दया पाळवी ते संयम. २. तेउकायनी. ३. वायुकायनी. ४. वनस्पतिकायनी. ५, बे-

इंद्रीयनी. ६. तेइंद्रीयनी. ७. चउरींद्रीयनी. ८ पचेंद्रीयनी. ए. अजीव कायनी. १०. पेहानी. ११. उपेहानी. १२. पमजणानी. १३. परीठावणीया. १४. मन, १५. वचन. १६. काया. १७ ए सत्तर प्रकारनो संयम. १८. अढारमे बोले अढार द्रव्य दीशा कहे छे—पूर्व १, पश्चिम २, उत्तर ३, दक्षिण ४, इशान खूणो ५, अग्निखूणो. ६, नैऋत्य खूणो. ७, वायव्य खूणो. ८, विदीशीना आठ आंतरा ए बधा थइने सोळ अने उंची सत्तर अने नीची अढार, ए अढार ॥ अढार जाव दिशा कहे छे—पृथ्वी १ अप. २. तेउ. ३. वायु. ४. अग्रबिआ. ५. मूळबिआ. ६. पोरबिआ ७. खंध बीआ. ८ बेइंद्रीय. ए. तेइंद्रीय. १० चउरींद्रीय. ११. पंचेंद्रीय. १२. तिर्यच. १३. कर्मभुमी. १४ अकर्मभुमि. १५. छपन अंतरद्वीपा. १६. देवता. १७. नारकी. १८. ए अढार ॥ १ए ओगणीसमे बोले काउसग्ग ना ओगणीस दोष कहे छे—ढींचण उपर एक पग राखीने काउसग्ग करे तो दोष. १ काया आघी पाछी हलावे तो दोष. २. उठींगण दे तो दोष. ३. माथु नमावी उभो रहे तो दोष. ४. बे हाथ उंचा राखे तो दोष. ५. मोढे माथे उढे तो दोष. ६. पग उपर पग राखे तो दोष

७. शरीर वांकु राखे तो दोष. ८. साधुनी बराबर रहे तो दोष. ९. गामानी ऊधनी पेरे ऊनो रहे तो दोष. १० केमेथी वांको ऊनो रहे तो दोष, ११. रज हरण ऊंचो राखे तो दोष. १२. एक आसने न रहेतो दोष. १३. आंख ठेकाणे न राखे तो दोष. १४. माथुं हलावे तो दोष. १५. खोंखारो करे तो दोष. १६. मील हलावे तो दोष. १७. मरके तो दोष. १८. शून्य चित्त राखे तो दोष. १९ ॥ २० वीसमे बोले वीस प्रकारे जीव तिर्थंकर गोत्र बांधे ते कहे छेः—अरिहंतना गुण ग्राम करे तो कर्मनी क्रोड खपावे, उत्कृष्ट रस आवे तो तिर्थंकर गोत्र बांधे १, सिद्धना गुणग्राम करे तो, २ सिद्धांतना गुणग्राम करे तो ३, गुरुना गुणग्राम करे तो ४, स्थिवरना गुणग्राम करे तो ५, बहुसूत्रीना गुणग्राम करे तो ६, तपस्वीना गुणग्राम करे तो ७, ज्ञान उपर उपयोग वारंवार राखे तो ८, शुद्ध समकित पाळे तो ९, विनय करे तो १०, बे वखत पडिक्कमणुं करे तो ११, वृत पच्चखाण चोख्खां पाळे तो १२, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यावे तो १३, बार भेदे तप करे तो १४, सुपात्रने दान दे तो १५, वयावच्च करे तो १६, सर्व जीवने सुख उपजावे तो १७, अपूर्व

ज्ञान जणे तो १७, सूत्रनी नक्ति करे तो १ए, तिर्थंकरनो मार्ग दीपावे तो २०, ए विस २१ एकवीशमे बोले श्रावकना एकवीश गुण कहे ले:–अक्षुद्र १, जशवंत २, सौम्य प्रकृति ३, लोकप्रिय ४, स्वनाव आकरो नहि ५, पापथी मरे ६, श्रद्धावंत ७, लब्धलक्ष ७, लज्जावंत ए, दयावंत १०, मध्यस्थ ११, गंनीर १२, सौम्य दृष्टि १३, गुणरागी १४, धर्म कथक १५, साचानो पक्ष करनार १६, शुद्ध विचारी १७, घरमानी रीते चालनार १७, विनयवंत १ए, कोधेला गुणने नुले नही २०, परहितकारी २१, ए एकवीश. २२ बावीसमे बोले बावीस जण साथे वाद न करवो ते कहे ले:–धनवंत साथे १, बळवंत साथे २, घणा परिवार साथे ३, तपस्वी साथे ४, हलका माणस साथे ५, अहंकारी साथे ६, गुरु साथे ७. स्थीवर साथे ७, चोर साथे ए, जुगारी साथे १०, रोगी साथे ११, क्रोधी साथे १२, जुठाबोला साथे १३, कुसंगी साथे १४, राजा साथे १५, शीतळ लेशावाळा साथे १६, तेजु लेशावाळा साथे १७, मोढे मीठाबोला साथे १७, दानेश्वरी साथे १ए, ज्ञानी साथे २०, गुणका साथे २१, बाळक साथे २२, ए बावीस. २३ त्रेवीसमे बोले पांच इंद्रीयना त्रेवीश

त्रिषय कहे बेः--श्रोतेंद्रियना त्रण त्रिषय–जीव शब्द १, अजीव शब्द २, मिश्र शब्द ३; चक्षु इंद्रियना पांच विषय–काळो १, पीळो २, लीलो ३, रातो ४, धोळो ५; घ्राणेंद्रीयना बे विषय–सुर्ज्ञी गंध १, दुर्ज्ञीगंध २, कुल दश. फरस इंद्रीयना आठ विषय ते खरखरो ११, सुंहाळो १२, हलको १३, ज्ञारे १४, टाढो १५, उनो १६, लुखो १७, चीकणो १८; रसइंद्रीयना पांच विषय–तीखो १९, कम्रवो २०, कषायलो २१, खाटो २२, मीठो २३. २४ चोवीसमे बोले चोवीस टोटा कहे बेः–ज्ञणवा गणवानी आळस करे तो ज्ञाननो टोटो बहु सूत्रीनी शाख. १, साधु साध्वीना दर्शन न करे तो समकितनो टोटो–सोमिल ब्राह्मणनी शाख. २, वखतसर पम्रीक्कमणुं न करे तो वृत पच्चखाणनो टोटो–उत्तराध्ययन अध्य० २९ नी शाख. ३. साधु साध्वी मांहोमांही वयावच्च न करे तो तीर्थनो टोटो–ठाणांगनी शाख ४. तपस्यानी ने आचारनी चोरी करे तो देवतामां उंची पदवीनो टोटो–दशवैकालिक, ज्ञगवतीनी शाख ५, कठण कलुश ज्ञाव राखे तो शीतळतानो टोटो–समवायंगनी शाख ६, अजतनाथी चाले तो जीव दयानो टोटो–दशवैकालीकनी शाख ७, रुपनो ने

योवन नो मद करे तो शुभ कर्मनो टोटो–पन्नवणानी शाख. ७, मोटानो विनय न करे तो तीर्थंकर नी आज्ञानो टोटो--व्यवहार सूत्रनी शाख. ८, माया कपट करे तो जश कीर्तिनो टोटो--आचारंगनी शाख. १०, पाछली रात्रे धर्म जाग्रिका न जागे तो धर्म ध्याननो टोटो नीशीथनी शाख. ११, क्रोध क्लेश करे तो स्नेह भावनो टोटो–चेफा कुर्णीकनी शाख. १२, मन उंचु नीचुं करे तो अक्कलनो टोटो–भृगु प्रोहीतनी शाख. १३, स्त्रीना लालचुने ब्रह्मचर्यनो टोटो–उत्तराध्ययन नी शाख. १४, साधु–साध्वी, श्रावक–श्राविका मांहोमांही हेत मेळाप न राखे तो जैन धर्मनो टोटो–शंख पोखलीजीनी शाख. १५, सुपात्र ने उलट भावे दान न आपे तो पुण्य प्रकृति नो टोटो–कपीला दासीनी शाख. १६, साधु गाम नगर विहार न करे तो धर्म कथानो टोटो–शेलक राजऋषिनी शाख. १७, भणे गणे नहि तो जीनशासन नो टोटो–समाचारीनी शाख. १८, व्रत पच्चखाणनी आलोयणा करे नहि तो मोक्षना सुखनो टोटो–पार्श्वनाथनी वसे छप्पन साध्वीनी शाख. १९, अरीहंत, धर्म, ने चार तीर्थना अवर्णवाद बोले तो सत् धर्मनो टोटो–ठाणांगनी शाख २०,

त्रिषय कहे छेः--श्रोतेंद्रियना त्रण विषय-जीव शब्द १, अजीव शब्द २, मिश्र शब्द ३; चक्षु इंद्रियना पांच विषय-कालो १, पीळो २, लीलो ३, रातो ४, धोळो ५; घ्राणेंद्रीयना बे विषय-सुर्गी गंध १, दुर्गीगंध २, कुल दश. फरस इंद्रीयना आठ विषय ते खरखरो ११, सुंहाळो १२, हलको १३, नारे १४, टाढो १५, ऊनो १६, लुखो १७, चीकणो १८; रसइंद्रीयना पांच विषय-तीखो १९, करूवो २०, कषायलो २१, खाटो २२, मीठो २३. २४ चोवीसमे बोले चोवीस टोटा कहे छेः-नणवा गणवानी आळस करे तो ज्ञाननो टोटो वहु सूत्रीनी शाख. १, साधु साध्वीना दर्शन न करे तो समकितनो टोटो-सोमिल ब्राह्मणनी शाख. २, वखतसर पडीक्कमणुं न करे तो वृत पच्चखाणनो टोटो-उत्तराध्ययन अध्य० २९ नी शाख. ३. साधु साध्वी मांहोमांही वयावच्च न करे तो तीर्थनो टोटो-ठाणांगनी शाख ४. तपस्यानी ने आचारनी चोरी करे तो देवतामां ऊंची पदवीनो टोटो-दशवैकालिक, नगवतीनी शाख ५, कठण कलुश नाव राखे तो शीतळतानो टोटो-समवायंगनी शाख ६, अजतनाथी चाले तो जीव दयानो टोटो-दशवैकालीकनी शाख ७, रुपनो ने

योवन नो मद करे तो शुज कर्मनो टोटो–पन्नवणानी शाख. ७, मोटानो विनय न करे तो तीर्थंकर नी आज्ञानो टोटो--व्यवहार सूत्रनी शाख. ९, माया कपट करे तो जश कीर्तिनो टोटो--आचारंगनी शाख. १०, पाछली रात्रे धर्म जाग्रिका न जागे तो धर्म ध्याननो टोटो नीशीथनी शाख. ११, क्रोध क्लेश करे तो स्नेह जावनो टोटो–चेत्रा कुर्णीकनी शाख. १२, मन उंचु नीचुं करे तो अक्कलनो टोटो–जृगु प्रोहीतनी शाख. १३, स्त्रीना लालचुने ब्रह्मचर्यनो टोटो–उत्तराध्ययन नी शाख. १४, साधु–साध्वी, श्रावक–श्राविका मांहोमांही हेत मेळाप न राखे तो जैन धर्मनो टोटो–शंख पोखलीजीनी शाख. १५, सुपात्र ने उलट जावे दान न आपे तो पुण्य प्रकृति नो टोटो–कपीला दासीनी शाख. १६, साधु गाम नगर विहार न करे तो धर्म कथानो टोटो–शेलक राजऋषिनी शाख. १७, जणे गणे नहि तो जीनशाशन नो टोटो–समाचारीनी शाख. १८, वृत पच्चखाणनी आलोयणा करे नहि तो मोक्षना सुखनो टोटो–पार्श्वनाथनी वसें छप्पन साध्वीनी शाख. १९, अरीहंत, धर्म, ने चार तीर्थना अवर्णवाद बोले तो सत् धर्मनो टोटो–ठाणांगनी शाख २०,

साधुनुं वचन माने नहि तो ऊंची गतिनो टोटो–ब्रह्मदत्तनी शाख. २१, साधु–साध्वी, गुरु–गुरुणीनी आज्ञा उल्लंघे तो आराधकपणानो टोटो–सुकुमालीकानी साख तथा खंधकजीनी शाख. २२, भगवान ना वचन उपर श्रद्धा न राखे तो शुद्ध मार्गनो टोटो–जमालीनी शाख. २३, भणेलुं वारंवार संभारे नहि तो मेळवेली विद्यानो टोटो–जव रुषिनी शाख. २४ ॥ २५ पचीसमे बोले साढापचीश–आर्य देश तथा तेनी नगरीना नाम कहे छे–मगध देश–राजग्री नगरी १, अंग देश–चंपानगरी २, वंग देश–तामलीक नगरी ३, कलींग देश–कंचनपुर नगर ४, काशी देश–वणारसी नगरी ५, कोशळ देश–अयोध्या नगरी ६, कुरु देश–गजपुर नगरी ७, कुषवर्त देश–सोरीपुर नगरी ८, पंचाळ देश–कंपीलपुर नगरी ९, जंगल देश–हइछत्ता नगरी. १०, कह्न देश–कोसंबी नगरी ११, सांडील देश–नंदीपुर नगरी १२, माळव देश–भदिलपुर नगरी १३, वह्न देश–वैराटनगरी १४, दशारण देश–मृगावती नगरी १५, वरण देश–छत्तापुर नगरी १६, विदेह देश–शिवावती नगरी १७, सिंध देश–वितीभय पाटण नगरी १८, सौवीर देश–मथुरा नगरी १९, विदेह देश–मीथीला नगरी २०, सुरसेन देश–पावापुर नगरी

२१, अंग देश–मांसपुर नगरी २२, पाटण देश–कांकावती नगरी २३, कुणाल देश–सावथी नगरी २४, सोरठ देश–द्वारका नगरी २५, केकार्ध देश–सितांबीका नगरी २६, ए साडीपचीस आर्य देश. ॥ इति श्री पचीस बोलनो थोकडो समाप्तः ॥

॥ श्री वाटे वहेतां जीवना बोल ॥

वाटे वहेतां जीवने समकित चार लाभे ते वेदक वर्जीने १ वाटे वहेतां जीवने शरीर बे लाभे तेजस ने कारमण २ वाटे वहेतां जीवने गुणस्थानक त्रण लाभे पहेलुं बीजु ने चोथु ३ वाटे वहेतां जीवने जोग एक लाभे ते कारमण ४ वाटे वहेतां जीवने उपयोग दस ॥ मनपर्यव ने चक्षु दर्शन ए बे वर्जीने ५ वाटे वहेतां जीवने लेश्या ठ ६ वाटे वहेतां जीवने दृष्टि बे लाभे ते समदृष्टि ने मिथ्यादृष्टि ७ वाटे वहेतां जीवमां अज्ञान त्रण लाभे ८ वाटे वहेतां जीवमां समुद्घात बे पहेली लाभे ए वाटे वहेतां जीवमां ज्ञान चार लाभे मन पर्यव टाळीने १० वाटे वहेता जीवमां दर्शन त्रण चक्षुदर्शन

वर्जिने ११ वाटे वहेतां जीवमां वेद त्रण लाभे १२ वाटे वहेतां जीवमां प्रर्याप्ति एके नहि १३ वाटे वहेतां जीवनी स्थिती जघन्य एक समयनी उत्कृष्टि चार समयनी १४ वाटे वहेतां जीवमां कषाय चार लाभे १५ वाटे वहेतां जीवमां इंद्री एके नहि १६ वाटे वहेतां जीवमां जीवना भेद सात अपर्याप्ता लाभे १७ वाटे वहेतां जीवमां समकिती अने मिथ्यात्वी १८ वाटे वहेतां जीवमां प्राण एक आयुष्य लाभे १९ वाटे वहेतां जीवमां असंनी ने संनी बे लाभे २० वाटे वहेतां जीवमां त्रस स्थावर ए बे लाभे २१ वाटे वहेतां जीवमां आत्मा सात ते चारित्र आत्मा वर्जिने २२ वाटे वहेतां जीवमां चारित्र एके नहि २३ वाटे वहेतां जीवमां संज्ञा चार लाभे २४ वाटे वहेतां जीव एक अनासका होय २५ वाटे वहेतां जीवमां करण अठयावीस लाभे २६ वाटे वहेतां जीवमां हेतु तेत्रीस लाभे २७ वाटे वहेतां जीवमां सुक्ष्म ने बादर बे लाभे २८ वाटे वहेतां जीवमां अणाहारीक पणु लाभे २९ वाटे वहेतां जीवमां किरीया एके नहि ३० वाटे वहेतां जीवमां जोग एक कारमणनो ३१ वाटे वहेतां जीव मन रहित होय ३२ ॥ वाटे वहेतां जीवना बोल समाप्तं. ॥

॥ अथ श्री प्रमाण बोधनो थोकडो ॥

भव्य जीवना बोधने अर्थे ३ प्रकारना अंगुल तथा ३ प्रकारना पल्योपम नुं मान सूत्र अनुयोग द्वारथी कहे छे॥ तेमां प्रथम ३ प्रकारना अंगुलना नाम॥ आत्म अंगुल ॥ १ ॥ उत्सेधांगुल ॥२॥ प्रमाणांगुल ॥३॥ आत्म अंगुलनुं मान कहे छे ॥ भरतादि १५ क्षेत्र छे ॥ तिहां जे काळे जे आरे जे मनुष्य होय ॥ ते मनुष्य पोतपोताने १२ अंगुले १ मुख थाय ॥ अने ९ मुखे एक पुरुषनुं उंचपणानुं मान थाय ॥ एटले १२ नवा १०८ आत्म अंगुलनो पुरुष उंचो होय ॥ ते पुरुष ने प्रमाणोपेत कहिये ॥१॥ मान युक्त पुरुष केहने कहिये॥ पुरुष प्रमाणे उंडि कुंडि होय तेने जले करि परिपूर्ण भरिये ॥ तेमां पुरुष बेसे ॥ तेवारे एक द्रोण प्रमाणे जल कुंडि मांहिथि बाहिर निकळे ॥ तथा एक द्रोण प्रमाणे जले करि कुंडि उणि होय ते कुंडिमां ते पुरुष बेसे परिपूर्ण जले भराय॥ तेने मानोपेत पुरुष कहिये ॥ द्रोण ते केवडो होय ते कहे छे ॥ बे असलीये १ पसली थाय ॥ बे पसलीये १ सइ थाय॥ चार सइये १ कुडव थाय ॥ चार कुडवे १ पाथो थाय ॥ चार पाथे १ आढो थाय ॥ चार

आढे १ द्रोण थाय ॥ ए द्रोणनुं मान कह्युं ॥ ए रीते मानोपेत पुरुष कहिये ॥१॥ उन्मान-युक्त पुरुष केहने कहिये ॥ जे पुरुष तोळ्यो थको अर्द्ध भार थाय तेने उन्मान युक्त पुरुष कहिये ॥ अर्द्ध भारनुं मान कहे छे ॥ एक हजार ने पचाश पले अर्द्ध भार थाय ॥ ए अर्द्ध भारनुं मान कह्युं ॥ ३ ॥ प्रमाण मान उन्मान युक्त लक्षण साथियादिक व्यंजन मस तिलादिक ॥ गुण क्षमा दानादिक सहित जे पुरुष होय ते उत्तम पुरुष जाणवो ॥ उत्तम पुरुष १०८ आत्म अंगुलनो उंचो होय ॥१॥ मध्यम पुरुष १०४ आत्म अंगुलनो उंचो होय ॥२॥ जे पुरुष १०८ आत्म अंगुल थि न्युनाधिक होय ॥ स्वर आदेय वचन १ सत्वधीर्य ॥ २ ॥ सार ते रूपादि ॥ ए ३ गुणे वर्जित होय ते परनो दास किंकर थाय ॥ एहवा ६ आत्म अंगुले १ पगना मध्य भागनुं पहोळपणुं थाय ॥ बे पगे १ वेंत थाय ॥ बे वेंतें ॥ १ हाथ थाय ॥ बे हाथे १ कुक्षि थाय ॥ बे कुक्षिये १ धनुष थाय ॥ बे हजार धनूषे १ गाउथाय ॥ चार गाउ ए १ जोजन थाय ॥ जे काळे मनुष्यनुं आत्म अंगुल होय ते आत्म अंगुले ते वखतना ॥ नगर ॥ गाम वन ॥ कुवा ॥ तळाव ॥ वाव ॥ गढ ॥ पोळ ॥ कोठा ॥ थान ॥ रथ ॥ गाडादिक ७३ बोलना

नाम कह्यां छे ॥ १ ॥ उत्सेधांगुलनुं मान कहे छे ॥ अनंता सुक्ष्म परमाणुवा भेळा करिये ॥
त्यारे १ व्यवहारि प्रमाणुं थाय ॥ तथा जाळीने विषे सूर्यना किरण तेमां रज उडती देखाय
॥ ते रजनो अनंतमो भाग तेने व्यवहारि परमाणु कहिये ॥ अन्यमति रजना तेत्रिशमां
भागने परमाणु कहे छे ॥ ते व्यवहारि परमाणु ॥ शस्त्रादी कोइ प्रकारे छेदाय नहि ॥ अग्निमां
बळे नहि ॥ पाणीमां चाल्यो जाय पण भिंजाय नहि ॥ गंगा महानदीनो प्रवाह उंचो चुलहिम-
वंत पर्वतथि पडे छे ते प्रवाह साहमो चाल्यो जाय पण खलाय नहि ॥ घात पामे नहि ॥ पाणिना
बिंदुमां रहे पण पाणि न थाय ॥ ते अति तिखे शस्त्रे करि देवतानी शक्तिये छेदता एक खंडनो
बिजो खंड न थाय ॥ तेने तत्वज्ञाता परमाणु कहे छे ॥ एहवा अनंता व्यवहारि परमाणु
एकठा मळे तेवारे १ उष्णसन्नियो थाय ॥ आठ उष्णसन्निये १ सणसन्नियो थाय ॥ आठ
सणसन्निये १ उर्द्धरेणु थाय ॥ आठ उर्द्धरेणुये १ त्रशरेणु ॥ बेंद्रीयादिक त्रश जीवने चा-
लता रज उडे ते त्रसरेणु कहेवाय ॥ आठ त्रशरेणुये १ रथरेणु ॥ रथादिक हिंडता रज उडे
ते रथरेणु थाय ॥ आठ रथरेणु ए १ देवकुरु उत्तरकुरु ना जुगलीया मनुष्यना वाळाग्रनुं

जारूपणुं थाय ॥ आठ देवकुरु उत्तर कुरुना वाळाग्रे १ हरिवास रमकवास क्षेत्रना जुगलियाना वाळाग्रनुं जारूपणुं थाय ॥ आठ हरिवास रमकवासना वाळाग्रे १ हेमवय एरणवय क्षेत्रना जुगलियाना वाळाग्रनुं जारूपणुं थाय ॥ आठ हेमवय एरणवयना वाळाग्रे १ पूर्व पश्चिम महाविदेह क्षेत्रना मनुष्यना वाळाग्रनुं जारूपणुं थाय ॥ आठ पूर्व पश्चिम महाविदेहना वाळाग्रे १ भरत इरवतना मनुष्यना वाळाग्रनुं जारूपणुं थाय ॥ एहवा ८ वाळाग्रे १ लिख थाय ॥ आठ लिखे १ जु थाय ॥ आठ जुये १ जवमध्य थाय ॥ आठ जव मध्ये १ अंगुल थाय ॥ ६ अंगुले १ पग थाय ॥ १२ अंगुले १ वेंत थाय ॥ २४ अंगुले १ हाथ थाय ॥ ४८ अंगुले १ कुक्षि थाय ॥ ९६ अंगुले १ धनूष थाय ॥ २ हजार धनुषे १ गाउ थाय ॥ ४ गाउ ए १ जोजन थाय ॥ ए उत्सेधांगुले २४ दंडकनी अवघेणा वर्णवी छे ॥ प्रमाणांगुलनुं मान कहे छे ॥ भरतादिक चक्रवर्तीनुं कांगणिरत्न होय ॥ ते ८ सोनइया भार छे ॥ सोनइयानुं तोल कहे छे ॥ ४ मधुरत्रिफले ॥ १ स्वेत सरसव थाय ॥ १६ सरसवे १ अरूद थाय ॥ २ अरूदे १ गुंजा थाय ॥ ५ गुंजाये १ मासो थाय ॥ १६

मासे १ सोनइयो थाय ॥ एहवा ८ सोनइया भारनुं कांगणिरत्न होय ॥ तेने ठ तळा ॥ ८
खुणा ॥ १२ हांश ठे ॥ सोनीनी अहिरणने संठाणे ठे ॥ ते कांगणिरत्न नी एकेकी हांश
उत्सेधांगुलनि पहोळी ठे ॥ अने जे उत्सेधांगुल ते समण भगवंत महावीरनुं अर्द्धअंगुल
थाय ॥ तेने हजार गुणुं करिये ॥ तेवारे १ प्रमाणांगुल थाय ॥ एटले महावीरस्वामीना पांचसे
आत्मअंगुले १ प्रमाणांगुल थाय ॥ एहवा ६ प्रमाणांगुले १ पग थाय ॥ १२ अंगुले १ वेंत थाय
॥ २४ अंगुले १ हाथ थाय ॥ ४८ अंगुले १ कुक्षि थाय ॥ ९६ अंगुले १ धनूष थाय ॥ २ हजार
धनूषे १ गाउ थाय ॥ ४ गाउये १ जोजन थाय ॥ ए प्रमाणांगुले ॥ पृथ्वी ॥ पर्वत ॥ विमान ॥
नरकावासा ॥ द्वीप ॥ समुद्र ॥ नरक ॥ देवलोक ॥ लोक ॥ अलोक ॥ शास्वती जमीन रत्न
प्रभादिक २८ बोलनुं तथा द्वीपसमुद्रादि ॥ २८ बोलनुं ॥ लांब पणुं ॥ पहोळपणुं ॥ उंच-
पणुं ॥ उंडपणुं ॥ परिधि प्रमुखना मान वर्णव्या ठे ॥ ३ ॥ ए ३ प्रकारना अंगुल कह्या ते
प्रत्येक प्रत्येकना त्रण त्रण भेद ॥ श्रेणिअंगुल ॥१॥ प्रतरांगुल ॥ २ ॥ घनांगुल ॥३॥ तीहां
असत्कल्पनाये श्रेणि ते असंख्याता जोजन कोडाकोडि प्रमाणे लांबी ॥ अने एक आ-

जाडपणुं थाय ॥ आठ देवकुरु-उत्तर कुरुना वाळाग्रे १ हरिवास रमकवास क्षेत्रना जुगलियाना वाळाग्रनुं जाडपणुं थाय ॥ आठ हरिवास रमकवासना वाळाग्रे १ हेमवय एरणवय क्षेत्रना जुगलियाना वाळाग्रनुं जाडपणुं थाय ॥ आठ हेमवय एरणवयना वाळाग्रे १ पूर्व पश्चिम महाविदेह क्षेत्रना मनुष्यना वाळाग्रनुं जाडपणुं थाय ॥ आठ पूर्व पश्चिम महाविदेहना वाळाग्रे १ भरत इरवतना मनुष्यना वाळाग्रनुं जाडपणुं थाय ॥ एहवा ८ वाळाग्रे १ लिख थाय ॥ आठ लिखे १ जु थाय ॥ आठ जुये १ जवमध्य थाय ॥ आठ जव मध्ये १ अंगुल थाय ॥ ६ अंगुले १ पग थाय ॥ १२ अंगुले १ वेंत थाय ॥ २४ अंगुले १ हाथ थाय ॥ ४८ अंगुले १ कुक्षि थाय ॥ ९६ अंगुले १ धनूष थाय ॥ २ हजार धनुषे १ गाउ थाय ॥ ४ गाउ ए १ जोजन थाय ॥ ए उत्सेधांगुले २४ दंडकनी अवघेणा वर्णवी छे ॥ प्रमाणांगुलनुं मान कहे छे ॥ भरतादिक चक्रवतीनुं कांगणिरत्न होय ॥ ते ८ सोनइया भार छे ॥ सोनइयानुं तोल कहे छे ॥ ४ मधुरत्रिफले ॥ १ स्वेत सरसव थाय ॥ १६ सरसवे १ अरुद थाय ॥ २ अरुदे १ गुंजा थाय ॥ ५ गुंजाये १ मासो थाय ॥ १६

मासे १ सोनइयो थाय ॥ एहवा ८ सोनइया ज्ञारनुं कांगणिरत्न होय ॥ तेने ६ तळा ॥ ८ खुणा ॥ १२ हांश छे ॥ सोनीनी अहिरणने संगाणे छे ॥ ते कांगणिरत्न नी एकेकी हांश उत्सेधांगुलनि पहोळी छे ॥ अने जे उत्सेधांगुल ते समण ज्ञगवंत महावीरनुं अर्द्धअंगुल थाय ॥ तेने हजार गुणुं करिये ॥ तेवारे १ प्रमाणांगुल थाय ॥ एटले महावीरस्वामीना पांचसे आत्मअंगुले १ प्रमाणांगुल थाय ॥ एहवा ६ प्रमाणांगुले १ पग थाय ॥ १२ अंगुले १ वेंत थाय ॥ २४ अंगुले १ हाथ थाय ॥ ४८ अंगुले १ कुक्षि थाय ॥ ९६ अंगुले १ धनूष थाय ॥ २ हजार धनूषे १ गाउ थाय ॥ ४ गाउये १ जोजन थाय ॥ ए प्रमाणांगुले ॥ पृथ्वी ॥ पर्वत ॥ विमान ॥ नरकावासा ॥ द्वीप ॥ समुद्र ॥ नरक ॥ देवलोक ॥ लोक ॥ अलोक ॥ शास्वती जमीन रत्न प्रज्ञादिक २८ बोलनुं तथा द्वीपसमुद्रादि ॥ २८ बोलनुं ॥ लांब पणुं ॥ पहोळपणुं ॥ उंच-पणुं ॥ उंरूपणुं ॥ परिधि प्रमुखना मान वर्णव्या छे ॥ ३ ॥ ए ३ प्रकारना अंगुल कह्या ते प्रत्येक प्रत्येकना त्रण त्रण ज्ञेद ॥ श्रेणिअंगुल ॥१॥ प्रतरांगुल ॥ २ ॥ घनांगुल ॥३॥ तीहां असत्कल्पनाये श्रेणि ते असंख्याता जोजन कोडाकोडि प्रमाणे लांबी ॥ अने एक आ-

काश प्रदेश नि पहोळी ॥ जाम्रपणे लोकांत सुधि होय तेने श्रेणि कहिये ॥ १ ॥ ते श्रेणिने श्रेणि गुणो करिये तेने प्रतर कहिये ॥ २ ॥ ते प्रतरने श्रेणि गुणो करिये तेने घन कहिये ॥ ३ ॥ ते घनीकृत लोक ने संख्यात गुणो करियें ॥ तेवारे संख्याता लोक अलोकमां थाय ॥ ते संख्याता लोकने असंख्यात गुणा करिये त्यारे असंख्याता लोक अलोकमां थाय ॥ ते असंख्याता लोकने अनंत गुणा करिये ॥ तेवारे अनंता लोक अलोकमां थाय ॥ अने ते अनंता लोकना जेटला आकाश प्रदेश छे ॥ तेटला निगोदना एक शरीर मांहि निगोदिया जीव छे ॥ असंख्याता सुक्ष्म निगोदे १ बादर निगोद थाय ॥ एक निगोदमां अनंता जीव जाणवा ॥ ए ३ प्रकारना अंगुल कह्या ॥ ३ प्रकारना पल्योपमनुं मान कहे छे ॥ तेमां पल्योपमना ३ भेद ॥ उद्धार पल्योपम ॥ १ ॥ अद्धापल्योपम ॥ २ ॥ क्षेत्रपल्योपम ॥ ३ ॥ एक एकना बबे भेद ॥ सुक्ष्म ने बादर प्रथम बादर उद्धार पल्योपमनुं स्वरूप कहे छे ॥ एक जोजननो उत्सेधांगुले लांबो पहोळो ने उंडो एहवो १ पालो कलपिये ॥ तेनि त्रि गुणी जाझेरी परिधि होय ॥ ते पालो देवकुरु उत्तरकुरुना जुगलीयाना मस्तकना केश ते एक दिनथि

मांझिने ७ दिनना उग्या वालाग्र करि त्नरिये॥ एह्वो तो ठांसी त्नरिये के ॥ अग्निमांहि बळे नहि ॥ वायरे करी उझे नहि॥ पाणीयें करी सझे नहि ॥ पोलारना अत्नावथि विध्वंशे नहि ॥ डुर्गंध थाय नहि ॥ चक्रवतीनुं सैन्य उपर चाले तोपण नमे के ऊोले नहि ॥ गंगानदीनो प्रवाह उपर चाले तोपण पाणि मांहि त्नेदाय नहि ॥ पालामांथि समये समये एक एक वाळाग्र काढिये ॥ एम काढतां जेटले काळे पालो खाली थाय ॥ बाकी एके रज रहे नहि ॥ तेटला काळने बादर उद्धार पल्योपम कहिये ॥ ते पल्योपम संख्यात समयनो जाणवो ॥ एह्वा दश कोमाकोमि पल्योपमे १ बादर उद्धार सागरोपम थाय ॥ केवळ परूपणा मात्र ठे ॥ ए बादर उद्धार पल्योपम ॥ १ ॥ सुक्ष्म उद्धार पल्योपमनुं मान कहे ठे ॥ जेम एक जो-जननो पालो कल्पिये ते पूर्ववत् ॥ ते पाला मांहि देव कुरु उत्तर कुरु ना जुगलीयाना मा-थाना केश एक दिनथी सात दिनना उग्या वालाग्र लइये ॥ एकेका वालाग्रना असंख्या-ता खंम करिये ॥ ते खंम केवमा नाह्ना थाय ॥ चक्षु इंद्रियनि अवघेणा थि असंख्या-तमे त्नागे अने नाह्ना सुक्ष्म वनस्पति जीवना शरीरनी अवघेणा थि असंख्यात गुणा

महोटा ॥ अने जेवडुं एक बादर पृथ्वी कायना जीवनुं शरीर तेवडा वालाग्रना खंड ना-
हना थाय ॥ ते वालाग्रना खंड अग्निये बळे नहि ॥ वायरे उडे नहि ॥ ते वालाग्रने खंडे
करि पालो ठांसी नरिये ॥ ते पाला मांहिथी ॥ समये समये एकेको वालाग्रनो खंड का-
ढिये ॥ एम काढतां जेटले काळे ते पालो खाली थाय ॥ तेटला काळने सुक्ष्म उद्धार
पल्योपम कहिये ॥ ए पल्योपम असंख्याता समयनो थाय एहवा दश कोडाकोडि पल्यो-
पमे १ सुक्ष्म उद्धार सागरोपम थाय ॥ ए सागरोपमे द्वीप समुद्रनुं मान वर्णव्युं छे ॥
अढि उद्धार सागरोपमना जेटला समय थाय तेटला द्वीप समुद्र त्रिण लोकमां छे ॥ जं-
बुद्वीप एक लाख जोजननो लांबो ने पहोळो एम ठाम बमणो लवण समुद्र बे लाख
जोजननो ॥ धातकि खंड ४ लाख जोजननो ॥ एम ठाम बमणा असंख्याता द्वीप समुद्र
जाणवा ॥ ए सुक्ष्म उद्धार पल्योपम ॥ २ ॥ अद्धा पल्योपमनुं स्वरूप कहे छे तेना २ भेद
॥ सुक्ष्म ने बादर तेमां बादर अद्धा पल्योपम केहने कहिये ॥ एक जोजननो लांबो पहोळो
ने उंडो चारे हांशे सरखो पूर्ववत् पालो कलपीये देवकुरु उत्तरकुरु जुगलीया मनुष्यना वा-

ळाग्रे करी पालो ठांसी जरिये ॥ पछी सोसो वर्षे एकेको वालाग्र काढिये ॥ एम काढतां जेटले काळे ते पालो खाली थाय ॥ तेटला काळने बादर अद्धा पल्योपम कहिये ॥ ए पल्य संख्याता क्रोडि वर्षे थाय ॥ एहवा दश क्रोडाक्रोडि बादर अद्धा पल्योपमे १ बादर अद्धा सागरोपम थाय ॥ केवल प्ररूपणा मात्र छे ॥ १ ॥ सुक्ष्म अद्धा पल्योपमनुं स्वरूप कहे छे ॥ एक जोजननो लांबो पहोळो ने उंडो पालो पूर्ववत् कलपिये ॥ तेहमां पूर्ववत् देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रना जुगलीयाना वालाग्रने असंख्याता खंड करि जरिये ॥ पालामां-थि सोसो वर्षे एकेक खंड काढिये ॥ जेटले काळे ते पालो खालि थाय ॥ तेटला काळने सुक्ष्म अद्धा पल्योपम कहिये ॥ एहवा दश क्रोडाक्रोडि पल्योपमे १ सुक्ष्म अद्धा सागरो-पम थाय ए सागरोपम ॥ नारकी ॥ तिर्यंच ॥ मनुष्य ॥ देवता ॥ ए ४ गतिना आयुष वरणव्या छे ॥ २ ॥ २ ॥ क्षेत्र पल्योपम कहे छे ॥ क्षेत्र पल्योपमना २ भेद ॥ सुक्ष्म ने बादर ॥ तेमां बादर क्षेत्र पल्योपम केहने कहिये ॥ एक जोजननो लांबो पहोळो ने उंडो पूर्व-वत् पालो कलपिये ॥ तेमां पूर्ववत् देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रना जुगलीयाना माथाना वालाग्रे

नरिये ते पाला मांहिला वालाग्रना फरस्या आकाश प्रदेशने समये समये अपहरता जेटले काळे ते पालो खालि थाय ॥ तेटला काळने ॥ बादर क्षेत्र पल्योपम कहिये ॥ ए पालो खालि थतां असंख्याति अवसर्प्पिणी उत्सर्प्पिणी वहिजाय ॥ एहवा दश कोडाकोडि पल्योपमे १ बादर क्षेत्र सागरोपम थाय ॥ केवल प्ररूपणा मात्र छे मतांतरे जीव द्रव्यना परिणाम दाख्या छे ॥ १ ॥ सुक्ष्म क्षेत्र पल्योपमनुं स्वरूप कहे छे ॥ एक जोजननो लांबो पहोळो ने उंचो पूर्ववत् पालो कलपिये ॥ तेमां देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रना जुगलियाना वाळाग्रना असंख्याता खंड करि नरिये ॥ ते पाला मांहिला वाळाग्रना फरस्या आकाश प्रदेश तथा अण फरस्या आकाश प्रदेश छे ते फरस्या अण फरस्या आकाश प्रदेशने समये समये अप हरिये ॥ जेटले काळे पालो खालि थाय ॥ तेटला काळने १ सुक्ष्म क्षेत्र पल्योपम कहिये ॥ एहवा दश कोडाकोडि सुक्ष्म क्षेत्र पल्योपमे १ सुक्ष्म क्षेत्र सागरोपम थाय ॥ ए सागरोपमना द्रष्टिवाद सूत्रे नाव वरणव्या छे ॥२॥ ए ३ प्रकारना अंगुल तथा ३ प्रकारना पल्योपमनुं मान कह्युं ॥ इति प्रमाणबोध समाप्तः ॥

॥ अथ श्री चौद बोलनो अल्प बहुत्व ॥

सर्वथी थोमा संज्ञी पचेंद्रिय प्रयाप्ता ॥१॥ तेथी संज्ञी पचेंद्रिय अप्रयाप्ता असंख्यात गुणा ॥२॥ तेथी चौरंद्रिय प्रयाप्ता संख्यात गुणा ॥३॥ तेथी असंज्ञी पचेंद्रिय प्रयाप्ता विषे साहिया ॥४॥ तेथी बेरेंद्रिय प्रयाप्ता विषे साहिया ॥५॥ तेथी तेरेंद्रिय प्रयाप्ता विषे साहिया ॥६॥ तेथी असंज्ञी पचेंद्रिय अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ॥७॥ तेथी चोरेंद्रिय अप्रयाप्ता विषे साहिया ॥८॥ तेथी ते-रेंद्रिय अपर्याप्ता विषे साहिया ॥९॥ तेथी बेरेंद्रिय अपर्याप्ता विषे साहिया ॥१०॥ तेथी एकेंद्रिय बादर पर्याप्ता अनंतगुणा ॥११॥ तेथी एकेंद्रियबादर अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ॥१२॥ तेथी सुक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा ॥१३॥ तेथी सुक्ष्म एकेंद्रिय पर्याप्ता संख्यात गुणा ॥१४॥

॥ अथ श्री श्वासोश्वासनो थोकडो. ॥

श्री पन्नवणाजी सूत्र पद सातमे श्वासोश्वासनो अधिकार चाल्यो छे तेमां नारको अने देवता केवी रीते श्वासोश्वास लीए छे? वीर प्रभुए कह्युं के हे गौतम! नारकीना जीव निरंतर धमणनी पेरे श्वासोश्वास लीए छे. असुरकुमारना देवता जघन्य सात थोक,

उतकृष्टा एक पक्ष जाजेरो श्वासोश्वास लीए छे. वाणव्यंतर ने नवनीकायना देवता जघन्य सात थोक, उतकृष्टा प्रत्येक मुहूर्त. ज्योतिषी ज० अने० उ० प्रत्येक मुहूर्त, पहेले देवलोके ज० प्रत्येक मुहूर्त अने उ० बे पक्षे. बीजे देवलोके ज० प्रत्येक मुहूर्त जाजेरे. उ० बे पक्ष जाजेरे. त्रीजे देवलोके ज० बे पक्षे, अने उ० सात पक्षे. चोथे देवलोके ज० बे पक्षे जाजेरे. अने उ० सात पक्ष जाजेरे. पांचमे देवलोके ज० सात पक्षे. उ० दश पक्षे. छठे देवलोके ज० दश पक्षे. उ० चौद पक्षे. सातमे देवलोके ज० चौद पक्षे उ० सत्तर पक्षे, आठमे देवलोके ज० सत्तर पक्षे, उ० अढार पक्षे. नवमे देवलोके ज० अढार पक्षे, उ० ओगणीस पक्षे. दशमे देवलोके ज० ओगणीस पक्षे. उ० वीस पक्षे. अगियारमे देवलोके ज० वीस पक्षे. उ० एकवीस पक्षे. बारमे देवलोके ज० एकवीस पक्षे, उ० बावीस पक्षे. पहेली त्रीकमां ज० बावीस पक्षे, उ० पचीस पक्षे. बीजी त्रीकमां ज० पचीस पक्षे, उ० अठावीस पक्षे. त्रीजी त्रीकमां ज० अठावीस पक्षे, उ० एकत्रीस पक्षे. चार अनुत्तर विमानमां ज० एकत्रीस पक्षे. उ० तेत्रीस पक्षे. सर्वार्थ सिद्धमां ज० अने उ० तेत्रीस पक्षे. एम तेत्रीस पखवाडीये श्वास उंचो ले अने तेत्रीस पखवाडीए श्वास नीचो मुके. ॥ इति श्री श्वासोश्वासनो थोकडो संपूर्ण. ॥

पुस्तक मंगावनारने सूचना.

उतराध्ययनजी सूत्र पाका पूंठानुं	६—८	रासरास (केशराजजी कृत)	१—८
आचारंग सूत्र मूळ साथे भाषांतर	४—०	दशवैकालिक सूत्र.	२—४
सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र	०—४	बृहतकल्प (छेद सूत्र)	१—४
जैन पाठमाळा आवृत्ती चोथी	०—१२	वैराग्यशतक भाषांतर	१—४
जैन स्तुति आवृत्ती सातमी	०—९	नरचंद्र जैन ज्योतिष	१—८
उतराध्ययन सूत्र मुळपाठ	०—८	धर्मतत्व संग्रह.	१—०
ढालसागर (हरीवंश प्रबंध.)	३—०	उपासकदसासूत्र मूळ अर्थ भावार्थ सहित	

उपरनां पुस्तको विगेरे शास्त्री अने गुजरातीमां मळे छे सविस्तर लिस्ट जुदु छपायेल छे. निचेना शिरनामे पत्र लखवाथी वी. पी. रजीस्टर करी मोकलवामां आवशे.

श्री [illegible] नाथदास शाह.

[illegible] पोळ—अमदावाद

॥ इति श्रीसिद्धांतप्रकरणसंग्रह समाप्त ॥

अमदावाद-टंकशाळ धी युनियन प्रिन्टींग प्रेस कंपनी लीमीटेडमां
शाह मोहनलाल चीमनलाले छाप्युं.